# পরীক্ষিত মুস্তিযোগ।

নিয়ানাখার, চিকিৎসাখার এবং প্রকীর্ণ অংশ অর্থাৎ পরিভাষার জ্ঞাতব্য বিষয় সকল যথায়খ সন্ধিবেশিত।



গশেষর দরীকর্থর নিবাসী বন্দ্যয়তীয় শ্রীকাসীপ্রসন্ন বিদ্যারত কর্তৃক সংগৃহীত।

( কলিকাতা, গরাণহাটা ট্রাট ৪০ নং প্রেনালয় হইতে ) জীন্সিংহকুমার হোষ কর্তৃক প্রকাশিত।

অখন সংকরণ।

'জ ২০ লং ভবনে কমদাকান্ত মন্ত্রে বিব্যাস হাসা মুক্তিত। ১২৯৪ লাদ।

## ভূমিকা।

ধ্বনাৰাশান্ত্ৰেয়্ বিদোদযান্তং ন ভেষু কিঞ্ছি বি দৃষ্টমন্তি। চিকিৎ,সিতজ্যোভিষ্ডদ্ৰবাদাঃ পদে পদে গ্ৰহায়মাবছন্তি।।"

ষাবতীর শান্তের নথা বে চিকিৎসালাত্র সর্বান্তের, ভাষা পালার বন্ধ লাক স্কলার্চ্চ বন্ধ লাক বিধার করিব। থাকেন। বন্ধতঃ ইবার কল বেরপা প্রভাক প্রথাপিত হর, অবা কিছুই তক্রণ নহে। এই লাল্র জীবনান্তর্গর জাবনারক। বন্ধ প্রতান্তর্গর জাবনারক। বন্ধ প্রতান্তর্গর জাবনারক। বন্ধ প্রতান্তর ও আশু কলপ্রান্ধ, আবার ভাষার ব্যয়ে অন্যান্ধর উবধানি অপেক। মুর্তিযোগ বিলেব উপকারী। অভাবিধি সর্ব্যান্তর্গরাই ভিকিৎসা করা যার। এরপে মুর্তিযোগ বিলেব উপকারী। অভাবিধি সর্ব্যান্তর করে বাই কেথিয়া আদি বহু পরিক্রমে সংগ্রহ করিব। ইবা প্রকাশিত করিবার। বার্লিয়া আদি বহু পরিক্রমে সংগ্রহ করিব। ইবা প্রকাশিত করিবার। পালীপ্রামে যে সক্ষম আদিজে চিকিৎসক আহেন, ইহা বারা যে উর্যানির্নার বিশেব উপকার দর্শিবে, ভাষা বলা বার্ল্জারার যার বিশেবতঃ গুরহণাপ এই প্রত্বের এক একথানি প্রবের রাখিকে চিকিৎসক্ষের সাহাব্য ব্যভিরেকেও রোগের প্রতীকার করিতে পারিবেক্ষ রাজ্য নাই। একংগ সাগরে সাগুলগ কর্ত্বক গুরীত হুইলেই জর্ম সক্ষম বার্ধ করিব। কিয়ধিক্যিতি।

জ্ঞীকালীপ্ৰসন্ন বিধ্যারত্বস্য । নাং বংশাবর বারীকরত্ব ।

### বিজ্ঞাপন।

আমি এই "নায়ু র্বেদোক্ত পরীক্ষিত মুটিবোগ"নামক পুত্রশানি যশোহর নজিকপুর নিবাণী প্রীপুক্ত বাবু কালী-প্রান্ধ বিদারত্ব মহালয়ের নিকট হইতে কালীরাইট পরিদ ক্রিরীয়া লইলাম। ইহাতে ঠাহার নাম ব্যক্তিত অন্য কোনকাপ স্বন্ধ বা সম্পর্ক রহিল না। এবং এই গ্রন্থ ক্রমন্ত্র করিয়া কালীরাইট ১৮৪৭ সালের ২০ আইনানুসারে ক্রেকেট্রি করিলান। আমার বিনানুষ্তিতে কেই এই পুত্রক ছালিলে আইনানুসারে দগুনীয় হইতে হইবে।

> ঞীনৃগিংককুমার **যোব** একাশক।

## দ্রফব্য।

আমি এই "আয়ুর্কেদোক্ত পরীক্তি মুটিবোগের" কাপীরাইট বন্ধ প্রীরক্ত বাবু নৃশিংহকুমার ঘোষ মহাশয়কে বিক্রা করিলান, ইহাতে আযার নাম ব্যতীত অন্য কোন সম্পর্ক রহিল না।

> **জ্রীকালীগুসন্ন বিদ্যারত।** দলিকপুর, বন্দো<del>হর</del>

## স্চীপর ।

#### سببتا

## লৃক্ণাখ)য়ি :

| विवर                               | 취하  | বিশ্ব                                     | 7             |
|------------------------------------|-----|---|---------------|
| <b>च</b> ्द्रत्त्रीर्गः            | >   | কমিজ জুরের সক্প                           | - 4           |
| ্রের উ <b>ংপ</b> ষ্টি              | *1  | <b>छ</b> न <i>(</i> भाकांतिक बृद्द्रत स्थ | Mary .        |
| শ্বর হুইবার কার্প                  | **  | নিবম জুর কথন                              | 4.            |
| র্ব উৎপত্তির পূক্ষসক্ষ             | 21  | বিষৰ মুরের জেদ কথক                        |               |
| ক্ষ্টের ভেদ কথন                    | **  | সম্ভত ভুরের শহণ                           | 50            |
| ক্তুর আরম্ভ লক্ণ                   | 21  | সতত মুরের সক্ষ                            | 37            |
| বাত্তিক জুরের লক্ষ্                | ₹   | ঐকাছিক মুরের নক্ষ্                        | 78            |
| পৈত্ৰিক ব্যৱের লকণ                 | ,,  | <b>ज़</b> जीत चुरत्त सक्त ं               | 21            |
| মৈষিক স্থারের লক্ষণ                | ,   | চাতুর্থক স্থারের লক্ষণ                    | 94            |
| ৰাড গৈতিক স্ববের লক্ষ্ণ            | 30  | বলাগক স্কুবের লক্ষণ                       | 58            |
| নাত সৈখিক স্বরের লকণ               | 34  | প্রদেশক স্থারের লক্ষ্                     | •             |
| িড় প্রৈশিক স্থবের লক্ষণ           | 31  | সংস্থান্ধ আনুরের সক্ষণ                    | by            |
| শ্যারিপ'ডিক স্বরের লক্ষণ           | 9   | ান ধাতৃগত স্থারর লক্ষণ                    | 10.7          |
| ারিশাতিকের ভেদ কর্মন               | (1) | রক গাড়ুগত খুনের লকণ                      | 14            |
| সিএুক সাহিপাতিক করের               |     | মাংসগত ফুরের লকণ                          | 8-3-          |
| ল ক্ষণ ,                           | 22  | মেদোগত জ্বারের লকণ                        | 38            |
| তণ্ড্ৰিক সামিপাতিক লকণ             | 19  | অভিগত মুরের চিহু                          | 99            |
| চিত্র বিজয় সান্দ্রিপাতের লক্ষণ    | ,,  | মজ্জাগিত স্থারর দক্ত                      | 911           |
| कर्छ कृष्णि गानिशा उत्तित्र लक्ष   | 14  | ওক্রগত কুরের লক্ষণ                        | 34            |
| কৰিক সামিপাতিক দকণ                 | 91  | क्रक के देशकुक जुड़ शक्का                 | 9+            |
| কিশ্বৰ্গ সাহিপাতিকের লক্ষণ         |     | जन्दर्भगं भूत सम                          | ₩.            |
| কাহাৰ সাহিপাতের সক্ষণ              | 21  | বহিৰ্কোগ ক্ষয়ের লক্ষ্                    | 40.2          |
| <b>শাগন্ধ সারি</b> ণাডিকের লক্ষণ   | >>  | আম জ্বের লক্ষণ                            | 79.5          |
| ক্তর্ম নেত্র লামিশ্যক্তিকের লক্ষ্য | **  | নিরাম অন্তের লক্ষ্ণ                       | 4             |
| লুক্তৰ্কীৰ সাধিপাতিকের লক্ষণ       | 33  | शहामान खटहरू नक्न                         | \$ pert       |
| প্ৰভাগ সাহিপাতের লকণ               | >>  | গম্ভীর ছবের লক্ষণ                         | 10            |
| শ্রহাপ সারিপাতের সক্ষণ             | 21  | ম্বরের উপত্রব কর্মন                       | 24            |
| শৃষ্টিন্যান নামিশাতের নকণ          | 19  | ब्दन क्षाप्य क्षेत्र (मनम क्यू            | N 1           |
| না দ্বিগাতিক স্বরেছ ভোগকাল         | нр  | ₹रांद्र नमञ                               | 110           |
| নারিশাভিকের নাব্যানাধ্য            |     | क्रज़न्न माध्यमाथा निर्वत                 | Phys<br>April |
| <b>भश्र</b> म                      | Œ   | चत्र (भागत्वत्र क्षयमानम्                 | 28            |
| ,जाशक्षक करतत मध्य                 | 12  | चत्र (माहदनत विकोशनक्।                    | 79-6          |
| এনিশ্রন্থ স্থারের লক্ষণ            | **  | च्यत मूर्जित गर्भन                        | 100           |
| अस्ति अर्थन पातत सम्पन             | 93  | শ্কবিয়োগ                                 | 40            |

## 大学 (利益)

| वर्ष                            | नुकी | বিৰয় •                                 | 101  |
|---------------------------------|------|---|------|
| क्लिंग्र कांत्रग                | 3.   | বিউক্সজীর্বের লক্ষণ                     | 54   |
| ণাডজনিত অফটির দক্ষণ             | 97   | অন্তীৰ রোগের অসাধ্য কথম                 | 54   |
| গ্রিট ছবিত অফচির নদ্র্ণ         | ė.   | অঞ্জীৰ রোগের আরোগ্য চি                  | Ę 17 |
| শ্ৰুক জনিত অক্তির দক্ষণ         | ,,   | অজীৰ্ হইতে অন্যাব্য রোগে                | 1র   |
| শাক ভয়ানিজ অকচিয় দক্ষণ        | 29   | উৎপত্তি                                 | 19   |
| ক্লিদোৰ জনিত অকচির দক্ষণ        | 10   | क्रियिद्वांश वर्षन                      | 51   |
| বিত্তীসার রোগ                   | **   | ক্ৰিমি বোগেৰ কাৰণ                       |      |
| <b>দাড়ী</b> সার উৎপত্তির কারণ  | 55   | পুরীবল জিমির কাবণ ও                     | ٠    |
| প্রতীসারের পূর্ব দক্ষণ          | F9   | <b>अस्</b> न                            | "    |
| অতীসারের ভেদ কথন                | **   | রজজ জিমির কারণ ও লখণ                    | 131  |
| শানু জনিত অতীসায়ের লক্ষ্য      | 12   | रुक्क किपिय गंक्य छ कातून               | **   |
| পিত্রাতীসায়ের দক্ষণ            | 3.   | অৰ্শবাগ ব্যুষ                           | 51-  |
| রেখা জনিত অত সাবের শক্ষণ        | 1)   | অর্শের স্বরূপ নির্ণৰ                    | 69   |
| ক্ৰিদেৰক বা সাহিশাতিক অৰ্থ      | ी    | অর্থেব ভেদ কথন                          | 91   |
| माह्यव नक्ष                     | 27   | অৰ্শরোৎগৰ কারণ                          | ř1   |
| শোকাদিজ অতীয়ারের লক্ষ্         | 91   | অৰ্ণ/ৰাগের পূৰ্ব্য লক্ষ্                | **   |
| আমাজীসাবের লক্ষণ                | 51   | বাতজ অংশের লক্ষণ                        |      |
| রক্তবিদারের লক্ষণ               | 20   | পিতল আখ্র লকণ                           | 52   |
| শভীনাবেৰ অসাধ্য চিছু            | 12   | বফল অর্শের দলপ                          | ,,   |
| অহনীরোগ                         | 30   | িলোবজ ও সহজ অভেন্ন                      |      |
| <b>এইংনী রোণের উৎপত্তির কার</b> | ۹,,  | ক্ ক্                                   | 27   |
| থেছনী গোচোৰ স্থপ কথন            | ,    | মা°সাকুর (বলির) লক্ষণ                   | 22,  |
| প্রহণী উৎশান্তির পূর্বে নকণ     | **   | অৰ্শেব সাখ্যাসাধ্য কথম                  | 20   |
| অন্ত্ৰীয় ভেদ কথন               | *1   | ভগৰ্শব                                  | 19   |
| যাক্তৰ আহণীর উৎপত্তির কারণ      | t ". | ভগন্দরের হরপ নির্ণয় ও বে               | 57   |
| শিক্তল গ্রহণী উৎপত্তির কারণ     | *1   | <b>रूभं</b> म                           | 27   |
| क्रका धोर्गे। उदग्वित कात्रन    |      | <b>उगम्बत शंक(कत संदर्भ क</b>           |      |
| ংশতঙ্গ এছণীর লক্ষ্ম             | 58   | स अस्त                                  | 70   |
| শিষক অহনীর লকণ                  | 19   | ভগলরের অসংধ্যাদি কথন                    | 23   |
| কৈবিক গ্ৰহণীৰ লক্ষণ             | 11   | উপদংশ ( গর্মি )                         | 36   |
| সারিপাতিক এছণীয় নকণ            | 20   | উপদংশেব কৰণ নিৰ্বয় ও                   | 1    |
| ,কুংঞ্ছ গ্রহণীর সভগ             | .,   | তেম কথন                                 | 43.  |
| व्यक्तीर्वाताम                  | 30   | An all and a second                     | 10   |
| क्षिकीर्ग स्तारमंत्र काञ्चल 🗸   | **   | Section in the complete of the contract |      |
| क्रिकेल द्वारणंत माधात्रन मकन   | ,,   |   | 6.0  |
| ন্ত্ৰীপের ভেদ কথন               | - 11 | কাসের অবর্ণ কথন                         | 14   |
| जामध्यीर्वत्र शक्त              | •    | without and a section                   | 17   |
| निर्वासीतर्थ नकन                | >0   |   | 37   |

144 প্তিল ক্লানের সক্ষ বিকাশীলৈর মারক্ত ক্ষ শৈষ্টিক কালের লক্ষ্য वहराजम द्वांग टेम विक काटमप्र शक्त ব্য ভেবের কারণ ও স্থ**রণ** कार्य को जात समान নিৰ্ব 93 কর কালের লক্ষ খরতভান রোগের ডেক কর্মশূ কালের অসাধ্যাতি কথন বাতজনিত হয়ছেকের লং ৰকা ও ক্তরোগাদি কগন শিক্ষমিত সরাভেদের লক্ষ वक्तात्रसद्धन निर्गत র্মেশজ অরজেদের লক্ষণ 99 यक्षां केंद्रशक्ति क्षयंत्र सक्तव ত্রিদোরজনিত স্বরুতেদের বিক্সার লকণ 22 শিক জানিত বৰ্ষাৰ লক্ষ্ \* ক্ৰম কর ভেমের লক্ষ মশ্বৰ বি অন। দল দি কথন শেলাজনিত স্বরুচ্চেনের কর व्यमानि। विवे क्ये (३१८ ५५ প্ৰত্যেকের অসাধ্য ক্ষম मक्र र्ग ७ दन्ना ग শাত হোগে বিশ্ব উরঃকত বোগ 91 डेब्राक्षडामित्र मादामादा পাণুর পৃথ্যাবছা वर्षम ₹1 পাত্ৰোলোৰ জেন কৰ্মৰ **बिका**(द्वाप বাতজনিত পাও র সক্র হিজার স্বরূপ নির্ণয শিভয়নিত শাওুৰ লক্ষ হিকা ও স্বালের উৎপত্তির কারণ ১৮ क्ला शाक्ष व मक्त विकास (क्षतंत्रधन ত্রিদোশক পাঞ্র সক্ষ হিকার পূর্কাবছা 21 সৃতিকা ভক্ষক পাঞ্চল कार्यका हिकारा गण्य পাত্র অসাধ্য কথন गमनो विकास लक्त 39 ক্ষা হিঞার নকণ कामनाद्रांश روز গ্সীরা হিকার লক্ষ্ कामभात जनावा रचन वहाहिकात लक्ष्म কৃত্ব কামলা হ্মীখক বোগ ভিকার সাধাসাধা কথন \*\* রস্ক শিক্ত রোগ श्रीमहता ग 80 স্থাস রোগ উৎপঞ্জির নিরুগণ ও রকপিতের পুর্বারশ পিত্ৰাদি ভেদে রক্তপিকে বরুণ নির্বর 19 म प्राप শ্বানারোগ অভিযার পূর্ব্ধ লক্ষণ 98 রুক্তপিতের উদ্ধ ও পর্যো পানের প্রকার জেন 12 गाविच क्यम वसमिदित्य समान 11 ব্ৰুপিডের উপলগ্ন कि चौरमन जरून 13 বুক্তশিভের পনাধ্যাদি हिंद्यपीरगर नक्ष्य इकि (नवि) हो। श 事事中 电视外流 甲甲甲 स्वित्र प्रवंश क्षान । 电海 增长剂表中中的

| ₩09°   | 例中            | <b>斯</b> 斯   |                |
|--|---------------|--|----------------|
| : निमम   | পৃথা          | न्दि <del>गव</del>   | estant,        |
| हर्षित शृंगीतम   | 400           | মূদ্রাখাওরোগ   | 14             |
| থাওক ছড়ির লক্ষণ   | 71            | ৰুতাহাতের কারণ   | 9.9            |
| গৈৰজ হৰিৱ লক্ষ   | 21            | ৰুৱাধাতের ডেন কৰ্মন  | 91             |
| (京京市 王衛州 中中村   | 13            | গুত্রালায়েড্র সাধবিশ লক্ষণ  | 19             |
| ক্রিখোনজনিত ছর্নির লক্প                                  | 10            | যুৱাৰাডের অসান্য কৰ্ম  | 71             |
| অগ্ৰাপ্তক ছাৰ্মিব লক্ষ্                                  | 4₽            | क्टडार्ग   | *>             |
| ক্ৰিশিক ছবিটি লক্ষ্                                      | >>            | ক্ষােগের অৰশ নিৰ্দ   | 4              |
| ছাৰ্ম্মৰ অসংখ্য কৰ্মন                                    | **            | কারণ নিত্রণ  | h9             |
| माब्द्रांग   | 8.            | ছলেগের ভেদ কথন   | 89             |
| লাহুলোগের কেন কথন  | 1             | জ্যোগের সাধারণ শক্ষ  | ,,,            |
| স্তির সক্ষ   | 29            | श्चाद्वीर्थ  | 47             |
| शारकत जानां कर्यन  | 85            | প্রকারে প্রার্থির কাবৰ   | 11             |
| काटमक द्वार्थ  | **            | প্রজ্যের কেন্দ্র কাইন<br>তথ্য জনিবার পূর্ববশ্  | 11             |
| অদেহত্যোগের অরপ্রকারণ                                    | विश्व-        | उन्स छात्रवाद शृज्यदेश   | 34             |
| ·····································                    |               | allo made allocated as at at a   | . 17           |
| MERE WESTE   | 20            | পৈতিকালি ভেন্নে কল্পের   | ,              |
| स्टार किया है।<br>जीवारित न कर्म<br>जीवारित नक्षि स्टापर | ક્ષર          | কারণ নির্ণর  | 12             |
| न्यास्थार्य रक्षिर व्यवस                                 | 39            | करकात माधामाधा कथन   | - 49-          |
| ব্যক্তমনিত শেহ চতুষ্টৰ                                   | 27            | পূলবোগ   | 17             |
| কক্সমতি দশ্বিৎ মেছ<br>প্রমেষেক উপত্রব                    | ąJ            | শুলরোগেব ভেদ কথন   | 7):            |
|  | 84            | শতক্ষমিত শুলের কারণ  | .0             |
| প্রায়েকের তথ্য কথ্য                                     | 1.9           | লক্ষ   | - **           |
| আমেৰ রোগের পীতকা<br>আমেৰের পীতকার সক্ষণ                  | 27            | গৈতিক খুলের কারণ ও   | न क्या         |
| এ পীড়কার অসাধ্য কথন                                     | F3            | মৈথিক পুলেৰ কারণ এ   |                |
|  | £8            | <b>科学</b> 4  | 89             |
| नशूरवर   | 95            | जिल्लाक्क भूरकत्र काल्य अ  | 1              |
| মুক্তম বোগ   | 9.9<br>(m.m.) | To the same of the | -              |
| ৰ্জকৃপেট্ৰ লকণ কথন ও ক                                   |               | আইজ খুসের সক্র   | 89             |
| নিৰ্গন্ন   | 31            | राज्यसम्बामि भूगमत विश   |                |
| म्बन्त्र ह एक रथन  | 83            | भूनद्वीरगंत्र माशामाधाः  | <b>平司</b> 司 21 |
| वृत्यकरमञ्जू अकन्।<br>सम्बद्धिः (अस्तिकः सम्बद्धः        | "             | পরিবাদ ব্ররোগ  | 18             |
| ক্ষেত্রী (পার্বরি / রোগ<br>ক্ষত্রী উৎপত্তির কারণ         | 5 <b>4</b>    | পরিগাম শুনের বরণ এ   |                |
| 'লব্রী উৎপত্তির পূর্বলকণ                                 | **            | কারণ বিশ্ব   | 39             |
|  | F.0           | বাতিক পরিগাম খুলের স   | T-12-          |
| শ্বাসীর ভেত কথম  | i i           | গৈতিক পরিণাম খুলের:  | Antaly t       |
| শাৰ্মীৰ সামাৰ্য লক্ষ্                                    | - 0           | লৈখিক পরিশাম খুলের স   | W4 +4          |
| প্রতিষ্ঠার প্রকাশ কর্মন<br>শিক্ষার জেলা                  | +8            | ৰাতাশন্তৰ ৰাত্ৰাপ্তৰ 🐠   | विद्या         |
| THE R. P. LEWIS CO., LANSING, MICH.                      | R4            | यक्ष गरियोच चंटलक स्थान  | t              |

|   | 100       | l'a                         | 12         |
|---|-----------|-----------------------------|------------|
| <b>विका</b> शे                            | 4         | <b>िरियम</b>                | 261        |
| भौतिगीत मुरमत मनाथा कथेव                  | 4.        | मनक्षपित जानां(वत् सकत      | 10         |
| च्या एक जूं महत्र। शं                     |           | मुख्य रिक्रांग              | 50         |
| डेमार जिल्लाम                             | 45        | মুক্তি শরণ ও কারণ           | n          |
| উদ্বেশ্বের কারণ                           |           | মূচ্ছ বি জেদ কথ্য           | 92         |
| মারু বিঃসর্ব রোধক্ষমিড                    |           | মুদ্ধ হৈরাগের পৃথ্যবিদ্ধা   |            |
| উদাবর্জের লকণ                             | 4.0       | ৰ'তিক কৃষ্ণ কোনোর লক্ষ্     | 19         |
| স্থারোগজনিত উদাবর্তের                     |           | গৈতিক মুন্দ্ৰ হৈছাগোর সক্ষণ | 21         |
| शक्र                                      | "         | ক্লজ মুদ্ধার স্কণ           | 48         |
| পুরীবরোধক্ষমিত উদাবর্তের                  |           | कि। मध्य पृष्ठी द्रासम्ब    | 73         |
| ल <b>क</b> र्ग                            | <b>7%</b> | রক্তমানিত মৃহ্ছার কাবণ      | 39         |
| <del>জুরারোধ<b>জ</b>নিত উলাবর্ত্তের</del> |           | বিবজনিত ও মন্ত্রপানজনিত     |            |
| रूपान                                     | 54        | মঞ্চাব লকণ                  | 99         |
| অঞ্জেবিজনিত,উদাবর্ত্তের                   | + 0       | ত্রদ তল্পা ও সন্যাস রোগ     | **         |
| नक्ष                                      |           | ज्याद्वीमं कथेन             |            |
| হাঁচি রোধন্দনিত উদাবর্ত্তের               |           | ভক্তারোগ ধৰম                | 64         |
| ল'ক্ষণ                                    | *1        | ন্নান্ত্ৰোগ কথন 💛           | 7>         |
| উন্দারনোধজনিত উদাবর্তের                   |           | মদাভাবাদি হোগ               | đn.        |
| नक्ष                                      | 17        | দদ তার রোগের স্বপ ও ক       | ারণ        |
| ন্দিরোধজনিত উদাবর্ত্বের                   |           | প্ৰভৃতি নিৰ্ণৰ              | **         |
| नक्श                                      | 1)        | ৰাতিক মদাভাৰরোগের দক        | 4 43       |
| শুক্রবেরাধজনিত উদাবর্ত্তেন                |           | পিডক মদাত্যবের লকণ          | 10         |
| ज्ञानम्                                   | άR        | ককর মদাত্যরের লকণ           | 79         |
| কুশায়োগ ক্ষতিত উদাবর্তের                 |           | ত্রিদোৰজ মদাত্যদের লকণ      | 18         |
| লক্ষ্য                                    | 21        | शेत्रमहरतार्थ कथन           | 91         |
| ভূঞারোধজনিও উদাবর্ভের                     |           | শাৰাজীৰবোগ কথন              | 49         |
| नक्ष                                      | >>        | পানবিভ্ৰমবোগ কৰন            | >>         |
| নিশ্বাসরোগজনিত উদাবর্তের                  |           | শানাভারাদির ক্লাধ্য কর্থ    | <b>ल</b> 🔑 |
| স্পুন                                     | 19        | উত্থাদরোগ                   |            |
| বিরারোধক্ষবিত উদাবর্তের                   |           | উত্থাদের অবশ নির্ণর         | 27         |
| म प्रश्                                   | 5,        | উত্থাদের ভেদ কর্মন          | 431        |
| ৰায়ুক্তবিত উদাবৰ্তের কারণ ও              |           | উশাদরোবোর কারণ              | 199        |
| ज्यान                                     | **        | উহ্নাদের সামান্য লক্ষ্      | 29.        |
| <u> লানাহয়োগ</u>                         | 27        | উন্নাদের অসংগ্য কৰ্মৰ       | *          |
| व्यानाहरूत्र व्यवश निर्नत्र 🗢             |           | অপশ্রেরাগ                   | 10         |
| कर्मस्र                                   | 17        | অপাশায়ের বর্গ নির্ণর 🕸     |            |
| শ্বামাহের ভেদ কর্থন                       | 93        | कांबुश                      | 45         |
| भीषक्रेति ज्ञाबाद्यत कांत्र थ             | ŧ         | অপন্যার উৎপত্তির পুর্বত্তিপ | - th       |
| 744                                       | *>        | অপস্থান্তের সাধান্য সন্ধ    | 'n         |
|   |           |                             |            |

| <b>शिर्धा</b>                           | 'শৃষ্ঠা | <del>, स्व</del> न्त्र          | - Table    |
|---|---------|---------------------------------|------------|
| चनकारतत चनावा क्वेंच                    | 65      | डेक्स(क्यू प्रार्थ क            |            |
| উপর জোদ                                 | 94      | কার্ <b>প</b>                   | 94         |
| উদর্ক্ষেয়েশের কারণ                     | p3      | উক্তন্তের সাধারণ                |            |
| উদরব্যোগের ভেদ কর্মন                    |         | स कर्म                          | 80         |
| উদৰ্যোগের সামান্য লক্ষ্                 | 78      | উক্তপ্তের নাৰ্যানাধ্য           |            |
| <b>छेन्द्रद्रारग</b> ङ्ग जनाशाहि कथे    | F 10    | কৰ্ম                            | 39         |
| শোশ রোগ                                 | 85      | আসবাত ব্লোগ                     | **         |
| শোদের বরপ ও কারণ                        | 1.2     | আহবাড়ের স্বরণ ও কারণ           | fr         |
| নিৰ্ণৰ                                  | +5      | আসবাডের সামান্য সক্ষ            | 1 17       |
| শৌখের ভেদকথন                            |         | . আম্বাতের সাধ্যাদাধ্য          |            |
| শোপ ক্ষিবার পূর্বকণ                     | 19      | কৰ্মন                           | 46         |
| শোষ্টের সাধান্য লক্ষণ                   | ++      | <b>मू बाजा</b> ग                | 29         |
| লোখের উপত্রৰ                            |         | মুখবোগের সরশ 🐞                  |            |
| कथम                                     | 99      | কারণ                            | **         |
| শোধের অসাধ্য কর্মন                      | 97      | মুৎরোগের <b>ভেদকর্</b> ন        | 29         |
| क्रीचे ( क्रुड़ है) व्याम               | 64      | ওষ্ঠগত মুখবোগ                   | <b>»</b> 1 |
| ক্লম্মি (কুরও) বোগ<br>ক্রতের অরপ ও কারণ | 17      | দৰগত মুখ্যোগ                    | 31         |
| ক্রণ্ডের ভেদকখন                         | 77      | জিহ্বাগত মুখরোগ                 | 31         |
| নাতিক বৃদ্ধির লক্ষণ                     | 32      | ভালুগত দুখরোগ                   | <b>P</b> 1 |
| পৈত্তিক কুরণ্ডের লক্ষণ                  | ,,,     | কণ্ঠগত সুধ্যোগ                  | PH         |
| লৈখিক কুবভের লকণ                        | 17      | দর্শর মুখরোগ                    | +1         |
| রক্তম কুরতের দক্ষণ                      | 13      | कर्या विश्व कथन                 | 1.2        |
| श्रामाञ्च कृत्रत्वत न कर्ग              | 84      | <b>मामाद्रांग</b>               | **         |
| মুত্তজ কুরতের লকণ                       | 91      | গীনসংখ্যাগের কারণ               | 18         |
| অব্রজনিত কুর্তের লক্ষ                   | **      | পৃতিনক্সরোগের কারন              | ,,         |
| গ্ৰুণ ওরোগ                              | 13      | নাসিকাশকরেগগ                    |            |
| গ্লগতের শ্রণ কারণ ও                     | 18      | <b>हैं।</b> हिट्लांग            | n          |
| नक्ष्यापि                               | 48      | <b>ण विं</b> द्रवाश             |            |
| গ্ৰহালারে।গ কর্মন                       | 17      | (नजरज्ञा श                      | **         |
| শৰ্দরোগ কখন                             | fr      | ८मक्टब्राइग्स कांत्रन           | 31         |
| দীপদ (গোদ) রোগ কথন                      | 60      | <b>व्यवदर्शादगंत्र (काममध्य</b> | 40         |
| ৰাভব্যাহিলোগ                            | 28      | শিরেরোগ কথন                     | 39         |
| ্ৰাভব্যাধির বরণ ও কারণ                  | 17      | সমশিন্তরোগ কর্মন                | 29         |
| শাতব্যাধির সক্ষ                         | фb      | বিজ্ঞোটক ব্লোগ কৰ্মন            | 12         |
| শান্তরক রোগ                             | 19      | বসস্তয়োগ                       | ط          |
| বাতরভের বরণ ও কারণ                      | 99      | ৰনজের অন্তর্গ ও কাছুল           | *          |
| বাতরজের লক্ষ                            | 69      | বলশ্ব হইবার পুর্বাবদা           | 30         |
| <b>केमसभा</b> ता                        | 64      |                                 | 42.4       |

|                               |            |                              | W    |
|-------------------------------|------------|------------------------------|------|
| <del>*****</del>              | HIM.       | *Aur                         | 竹都   |
| अंगररेराक्षत्र चवर्ण क सक्त   | **         | बंकेकृत्येत्र सम्भवं         | 494  |
| वेनदेखेड मावामावा क्वन        | 12         | वर्षाचा कुट्छेड्र सक्तन      | 19   |
| ব্ৰণ্ডে। গ্ৰহণ                | 9.5        | किष्टिय कुट्छेंद्र सम्बन     | 34   |
| <b>च</b> नद्राग               | 90         | বৈশালিক ফুঠের দক্ষণ          | **   |
| ক্ষমরোধার উৎপত্তি             | 19         | অলস্ক কুঠের লখন              | 19   |
| ক্তৰৱোধের কেণ্ কৰৰ            | 7.7        | <b>শক্তম ওলের লক্ষণ</b>      | >0   |
| चनक्षरगाद वांगरकत्र आर        | 414        | চর্যাদলের ককার্য             | 437  |
| পৰি                           | , 19       | পামা কুঠের লকণ               | 59   |
| দুবিত অনুস্তার সক্ষ           | >>         | কল্ছ কুঠেব ক্ষণ              | 25   |
| व्यम्बद्धांभ                  | 77         | विरक्षां हे कुर छे द्र न क्य | 71   |
| व्यन इट्डाइगड़ प्रवर्ग ७ कार् | 14 98      | সতাক কুঠের লকণ               | 17   |
| বাদরবোগেব (ঋদ কথন             | 93         | কাপাদ কুর্ফের সভাগ           | 1>   |
| ৰাতিক প্ৰদায়র লক্ষণ          | 13         | উড়ম্ব কৃষ্ঠের লক্ষণ         | 21   |
| रेगंडिक धारतङ नक्त            |            | মণ্ডল ফুল্ডর লক্ষণ           | **   |
| লৈ যিক প্ৰদৰেৰ লক্ষ্          | 21         | क्रवाक्तिक्त कृट्छेन नक्ष    | 99   |
| সামিশাতিক প্রদরের লক্ষ্       | 5 1        | পুগুরীক কুট্টের লক্ষণ        | 99   |
| বৃদ্ধিপার অদরের লক্ষ্         | **         | मिश्र कृष्ठित्र जन्मन        | 1,   |
| अपू विश्ववि नथन               | ,          | কাক্য কু, ঠর লক্ণ            | 5-4  |
| व्यक्टबर कमाश्र क्थेन         | 94         | for a second second second   | **   |
| হতিহা রোগ                     | 37         | খিতিবোগ কৰন                  | 13   |
| স্তিকারোগের অবণ 🐠             |            | সংক্রামক রোগ কর্মম           | 91   |
| <b>কাৰ্</b> ণ                 | 29         | আমরকরোগেৰ ব্ৰপ নিৰ্          | F #2 |
| স্তিকারোগের সাধারণ            |            | আময়ক কবিবার কাবণ 🗸          | 12   |
| <b>新山田</b>                    | <b>5</b> } | আমবক ক্ষরিবার নিবম           | 84   |
| স্থাতিকার অসাধ্য কথ্          | <b>*</b> # | পীজ। ব্লন্ধিব নিষ্ম          | 49   |
| क्रस्वार्थ                    | 40         | আমরডের সাধারণ লক্ষ্          | 20   |
| इट्डेन कारण                   | 12         | कामग्रहक्त क्षरंत मक्ष्      | **   |
| কুট জৰিবার পূৰ্কাৰছা          | 99         | অ্যিরুক্তের স্থাকণ           | ъ\$  |
| ছাটেৰ কেদ কৰ্মন ও ৰাত্ৰা      | मि         | আমরভের কুলকণ ও অসার          | T    |
| ক্ষেদে ত।হাদের কারণ           | **         | ক্পন                         | M,   |
| শিৱজনা ভূষের সক্ষ             | ,,,        | <b>७५कामी</b> ह्या ग         | μΦ   |
| ব্যতিক কুঠের লকণ              |            | উৎকাশীৰ সমৰ্গ 🗢 কারণ         |      |
| কৃষজ্বনিত কুঠের লক্ষণ         | ,13        | F-1-                         | 99   |
| वाहिणाचिक कर्त्वत नकन         | >9         | উৎকাশীৰ কল্প                 | #£   |
| ৰাজলৈজিক, ৰাজীয় বিক ও        | শিক্ত      | উৎকাশীর সাধ্যসাধা কথ্য       | 14   |
| ् क्रिकि शर्वत्र शक्त         |            | काडेन्नरवार्ग                | LIP. |
| विगमकानिटकरम स्टबंब           |            | चक्रहीदज्ञाग                 | 48   |
| ्रे श्री <b>भा</b> ष          | 11-        | ুখুড়রীর অরণ ও কারণ বিশ্     | K ps |

|                              | i de Tarre | AND                                 |             |
|------------------------------|------------|-------------------------------------|-------------|
| AND THE                      | 44         |                                     |             |
| (API                         | 햇눼         | रियंत्र                             | क्ष         |
| ভূমানীয় পঞ্চৰ               | ~=         | ৰণভাৱেগুৱাৰ লক্ষ্                   | - 71        |
| সুঙ্গীর সাংগ্রাণ্য কর্ম      | 9.0        | <b>द्री</b> शंद्राश                 | 5-8-        |
| <b>किसा</b> द्वांग           | 19         | শ্লীহার আকার কথন                    |             |
| ব্যস্থানিত জিলাবোগ           | - 5        | श्रीदात सर्पा                       | 17          |
| देशक्षिण किसादवार्थ          | 142        | श्रीशतक जातिह कांश्रम               | 70          |
| লৈখিক জিলায়োগ               | =          | वृद्धिशाध द्वीरात गचन               | 3.          |
| चनान यामक किसाडाणे           | 33         | প্ৰীহার অসাধ্য কৰম                  | 77          |
| वैशिक्सिक नायक किल्लाह्याः   | t ,,       | পা্ষিবসৰ বা জলবসন্ত                 | 77          |
| मस्यद्वा भ                   | 9.0        | জনবস্থের সম্রপ                      |             |
| ক্তুরেবেশর কারণ              | *>         | अन्तरमञ्जूत छछारकात सक्त            | **          |
| मान्य मस्दर्भन               | • ,        | জনবসংস্তর ক্লোটসাস্থার              |             |
| ক্রি <b>মি</b> সন্তব্        | 19         | ল ক্ষ্ প                            | **          |
| ক্ষমক দন্তরোগ                | "          | পাণিবসন্তের তেদক্ষ্                 | 25          |
| मसुर्थ                       | 7          | স্তুপ'হত পানিবসন্ত                  | 3)          |
| <b>क्श्रभर्</b> तः           | 66         | তীক্বার্থ জনবসন্ত                   | 9.0         |
| <b>কা</b> গালিকা             | 19         | রুছপ্রক্ত জ্বলবস্তম                 | 97          |
| <b>चारम्</b> डक              |            | জ্বৰস্ভ মিবপণ                       | *1          |
| <b>बङ्</b> खखरता ग           | -          | ভগাউচ রোগ                           | <b>5</b> 8, |
| शक्क कर्या ग                 | 1          | ভগাউচার <b>অবশ</b>                  | 7           |
| श्वकरणत चत्रश क्थन           | *7         | এনটেচা উৎপত্তি কারণ                 | - ,,        |
| শক্ষাক্তের কেদকথন            | ,          | ওলাউঠাৰ গুণ্ডাবস্থা                 | 3 1         |
| ভব শোকানিক ধ্ৰুতজ্           | 85         | ওলাউঠার পুৰুদ্পণ                    | 93          |
| ৰাথনিক অথবা বিৰেবভাজন        |            | ওবাউচার সক্ষণ                       | 29          |
| ন্ত্ৰীনহ নহস্পনিভৰ্ভভৰ্      | 92         | oলাউচার অলাখ্য ক <b>থ</b> ন         | 24          |
| পিওল ব্যুক্তল                |            | (बरमार्काम                          | 38          |
| <b>७.क.करक शंकर्यक</b>       | 2.5        | বিজ্ঞবিত্যাগ                        | 1,9         |
| দিলয়োগল বিভাজদ              | 21         | विक्रमिद्र चड्डण क्यंब              | 26          |
| কাৰ্যোগজ বস্তস্              | 79         | িক্ৰবিত্ৰ ডেল কৰ্মন                 | 77          |
| महन्न रक्षणप                 | 75         | বাতিক বিক্ৰমিয় লক্ষণ               | 24          |
| ৰক্ষদের সাধ্যালাধ্য বৰন      | 21         | পৈডিক বিক্ৰবিদ্ধ লক্ষ্প             | 99          |
| শীঃভারোগ                     | 17         | লৈখিক বিশ্ৰুধির লক্ষ্               | 57          |
| শ্বাচ্যায় ব্যৱপ কথ্য        | Fa         | বিজ্ঞাধির পঞ্চাবস্থা                | 9,5%        |
| পাচড়ার কারগনিদর্শন          | 87         | আগ্রন্থ বিজ্ঞবি                     | -           |
| প্রিকার সামারণ সক্ষণ         | ble.       | বিজ্ঞানির পাখ্য ক্রিয়াল প্রন্      | 384         |
| ुर्गाहकात्र मानारामाना अन्तर | 52         | कदरहाश                              |             |
| ৰাওয়োগ                      | 34         | क्षरतार्गत त्यम क्षेत्र             |             |
| नांकरतारंशत चळन              | 27         | ভয়ব্যেটেশ্য লক্ষণ                  |             |
| শ্বাক্তরাণ কবিবাদ কারণ       | 10         | कश्रद्धारतम् स्थित्राम्बर्गः सम्बर् |             |

|                          |         |                                | *                       |      |
|--------------------------|---------|--------------------------------|-------------------------|------|
| THE REAL PROPERTY.       | · •     | 1 191                          |                         | _    |
| विमर्ग द्यान             | 1.0     | eigne f                        |                         | 394  |
| দীব্দের কারণ             | ,       | , बुवक्रम्, व                  |                         | 39%  |
| बीमदर्गद्रं दखर कथर      |         | , বুঝাগাওঁ (                   |                         | 242  |
| ৰীসৰ্গ উৎপত্তির বাড়ু বি | धर्मन । |                                | পাৰ্যা হিকিৎয়া         | - de |
| শান্তিক বীসপের লক্ষ্য    | 2       |                                |                         | 319  |
| ্লৈক্ষিক বীসপের লক্ষণ    | ,       | , পত্নিরো                      | টিবিৎসা                 | 21b  |
| লৈ যিক বীসপেন্নি লক্ষ্   |         | ্ৰাট্টাৰাকা                    | চিকিৎনা                 | 346  |
| সাহিপাতিক দীনপের ধ       | RTP4 ,  | ं चन्दीर्न हिर्द               | <b>ক্</b> ৎসা           | 36-9 |
| শান্তশৈত্তিত বা আগ্নের   | रीय 💮   | কৃষিচিকিৎ                      | भा                      | 56-5 |
| শের দক্ষণ                |         | - পাত্ত স                      | গ্ৰদা চিকিৎদা           | 56-9 |
| বাতলৈখিক বা অস্থাব্য     | रीम∗ः   | ্হিকাতি বৰ্ম                   | <b>ৰ চিকিৎসা</b>        | 200  |
| র্শের দক্ষণ              |         | ্ পূৰ ও পাই                    | লোম পুলচিবিৎসা          | 51-5 |
| শিভ সৈখিক বা কর্ম্বৰ     | दीन-    | ভূষাটিকিং                      | না                      | 246  |
| পের সক্ষণ                | 3 **    | অঞ্চ চিটি                      | <b>के</b> रमा           | 334  |
| ক্তজ বীনৰ্শের সক্ষ       | •       | ্ছৰ্দি চিকিৎ                   | ON!                     | 299  |
| ৰীসপের উপদর্গ            | 13      | অপকার চি                       | <b>विद्या</b>           | 326  |
| ৰীসপের সাখ্যাসাধ্য দি    | ৰ্গ "   | कात्रांग हि                    | केरमा 🗸                 | 225  |
| বাদ# বোগ                 | 5+2     | ্ৰুড় চিকিৎ                    | স                       | 3,44 |
| বিষয়বিত হোগ কথব         | 5+3     | ক্ৰিণ্ডৰ চিৰি                  | <b>ছ</b> <স্বা          | 4+8  |
| বিষেত্র সাধারণ সঞ্চণ     | 1,0     | क्रमसम्भ ( ग                   | র্মি ) চিকিৎসা          | 3.46 |
| বিষেত্র সাধ্যাদি কথন     | 504     | ্লীপদ। গে                      | in )ठिकि <b>्न</b> ।    | 3.09 |
| বিৰপ্ৰয়োগকারীর লক্ষ্    | 1 19    | - অমশিত চি                     | <b>কিৎ</b> সা           | No.  |
| সূত্যু লক্ষ্য পৰ্যাৎ হাউ | मृहके   | অন্তর্মন্ধি চি                 | কিৎসা                   | 453  |
| ্রভুর শরীক্ষা            | 2+8     | আমর্ক টি                       | কিংলা                   | 232  |
| জিলা ও নেরপরীকা          | 5.2     | ৰাতয়ক চি                      | কংগা                    | 100  |
|                          |         | ৰাত চিকিৎন                     | 71                      | 428  |
| व्यष्ट्रगीनाशास ।        |         | শোখ চিকিং                      | tग\                     | 3.58 |
| বব্যের 🐠 ও অনুপা         | म       | অৰ্দ্ধিত চিকি                  | <b>্ল</b>               | 334  |
| <b>ৰিক্ল</b> শণ          | 550     | প্ৰণচী চিকিং                   | <b>।</b> मा             | 330  |
| -                        |         | <b>লাহবাত চি<sup>চ</sup></b>   | <b>বিৎসা</b>            | 70   |
| किंकिश्नावादि ।          |         | উদরী চিকিৎ:                    |                         | 3.9  |
| <b>बृह्मिक्टिम्</b>      | 252     | ৰক্ত ও প্লীহ                   | চিকিৎসা                 | 3.50 |
| স্বয়াতীয়ার চিকিৎসা     | 518     | উত্থাস রোগে                    | ার চিকিৎসা              | 440  |
| আহনী চিকিৎনা             | 3414    | এখা চিকিৎস                     | ri                      | 488  |
| ক্ষাস্টিকিংসা            | 29.4    | <mark>क्क्यू स्थारशंत्र</mark> | <b>টিকি</b> ৭সা         | 440  |
| শৃক্ষা ছিকিৎসা           | 366     | यामारकार्य,                    | रांगाच्छ 🗢 मानः         |      |
| শ্বাস শ্বাসক্ষিত্র       | 166     | লিয়া রুখ                      | <b>अद्या</b> र डिक्सिस् | 447  |
| मर्ल क्रिकिश्या          | Sele    | निद्धारतांचे :                 | টিবিশ্বা                | •    |
|                          |         |                                |                         |      |

#### , **41746**)

| _                       | -7448          | Company or                         | _            |
|-------------------------|----------------|------------------------------------|--------------|
| 'क्षिपं                 | शुक्री         | <b>"</b> निवश्च                    | পৃষ্ঠা       |
| ইক্সিশিক ডিকিৎসা        | રેર૧           | <b>२७मानीनाइ अनीद वृक्ष्</b> री    | <b>h</b>     |
| শিক্তক চিবিবদা          | 着きを            | চিক্ৰিন্যা                         | 2.43         |
| ৰূপহা চিকিংসা           | 300            | দ্বী পোকার ঔষধ                     | 14.          |
| গ্যহ চিকিৎসা            | 405            | 'টি ক্যব্যোগ চিকিৎসা               | 240          |
| লক্ষরোগ চিকিৎসা         | 202            | ৰালকের ভালুদেশে এণ হৰ্ব            | हेंट्ड       |
| ৰসন্তরোগ চিবিৎসা        | \$ 24          | ্ৰ ত'হার ঔবধ                       |              |
| र्गावियम्ख हिकिपमा      | ₹#3            | केर्टिय केर्ट                      | >05          |
| টংকালী ডিকিৎসা          | 3 ÷ 8          | भूम्रकः ( क्वेमरका ) हिकिया        | সা ২০১       |
| ও মাউঠা চিকিৎসা         | 291            | দক্তৰভাষ্টি চিকিৎসা                | 182          |
| উদাৰ্জ ৪ আনাহ চি        | किट्डा २७६     | ছ্য ভোলা, হুখে ঈণ্ডে পৌ            | 196          |
| देख्यत्व विष ५ हेड्य    | र निवा         | হ্বদা ও ছম্মাণ্ডৰ চিবিং            |              |
| <b>সংশ্ৰ</b> প          | 205            | নাডিলাখ চিকিৎনা                    | 244          |
| উক্তক্ত ডিকিংমা         | Right          | পার্থ বাধা চিকিৎসা                 | ,,           |
| কর্ণবোগ চিকিৎস          | 3.46           | ना काठाह केरम                      | in .         |
| ্ৰেট্ৰ উদক্ত লীড        | গি'ন্ত         | শিক দির। রক্তমার, রক্তমু           | <b>a</b> 8   |
| টিকিৎসা                 | 250            | যুৱ≊ <b>ক</b> চি <sup>®</sup> কৎসা | 202          |
| <b>শ্লগত ও গত থাল</b> া |                | চুলণাকার ঔবধ                       | f+           |
| চিকিৎসা                 | >8∙            | (लाहे कें।लाज खेरम                 | ት <b>ሲ</b> ሲ |
| কেঁঠেবছ চিকিৎসা         | 2.83           | ৰমন রোগের চিকিংলা                  | -            |
| গৰ্ডলাবের বক্তমাৰ দ     | দ্ধ করার       | रूप धाग(वज्र केवद                  | 244          |
| এবং গঠ বা হওবা          |                | कामा द्यादगण क्षेत्र               |              |
| -িজবিচিকিৎসঃ            |                | েট ৰামডানি চিকিৎসা                 | 51           |
| বিসর্গ, বিশ্বেরটিক,রণ   |                | বহাকালে শিশুদের উদর                |              |
| <b>অন্তর গ টিবি</b> ংন! | 3.85           | करेंग्ल डिक्टिश्ला                 | 189          |
| পীচড়া চিকিৎনা          | 288            | বস্ত্যুটিকিৎকা                     | 10           |
| बङ्गसङ्ग हिकिदमः        | 2 FE           | রাবি চিকি <b>ণ</b> না              | и            |
| প্রকাতক ভিকিৎসা         | ≥84            | বশকর ঔষধ                           | 346          |
| আৰু দহ†ডায় ঔবণ         | 3.85           | বাত্ৰ্যাধি চিকিৎসা                 | 345          |
| रेक्स किन (दमना हिन्दिः | η) <b>43</b> 6 | नामाचन छे-४७नसेनुकारि              | কিংলা,       |
| কদ সহ শিক দুকৌ          |                | বাজজনি ভ কামজ চিবিৎস               | 17 20        |
| <b>টিকিৎ</b> মা         | r de           | <b>ब</b> र् किंक्शिम               | >9           |
| কাটা খালের চিকিংসা      | 259            | (মুখ্চিকবিবের চিকিৎসা              | 2,00         |
| ভাউর রোগের চিকিৎ        |                | ুলৈল্ভা বা শেখিয়াছিডে             |              |
| ঞাতধর গোড়া কুলিলে      |                | কামডাইলে ভিকিৎস                    | 144          |
| গলকেখ কুলিলে ভা         |                | ভথাবাগ ডিকিৎসা                     | 445          |
| স্কুরে বা পুথাকে কা     |                | বদান্ত্যর চিকিৎসা                  | Je.          |
| ভাহার ঔষণ               | 2.90           | মুখরোগ চিকিৎলা ও গুরু              |              |
| ব্যক্তা ভিক্তিশা        | 4.83           | श्रा क <u>क्षेत्र</u> ण केरव       | 1,675        |
|                         | -              |                                    |              |

| 7                            |       |  | -                |
|------------------------------|-------|--|------------------|
| P41                          | 461   | (Rell)                                 |                  |
| দীলি দিখের মুখে তাণ ধ্রুলে   | 4**   | বৰ্ণন লোবন দানুবাকি                    | 2.00             |
| ्रे <b>व</b> य               | 1,50  | ভূতি শোৰন                              | 4.730            |
| লী সহবাদে উপছ কাটলে          | •     | বিবল শোধৰ                              | 34               |
| चेत्रम                       | 77    | যাক্ষিক শোধন                           | **               |
| যেকোরোগ তিকিৎনা              | 19    | হীত্রাকন শোধন                          | 10               |
| হুকুবৰ্দ ও হস্ত'ডেদ চিকিংশা  | 93    | प्राच्छगाडे (माध्य                     | M                |
| রাত্তিকাণা চিকিংনা           | 148   | কড়ি লোগখ                              | A jee            |
| লোঘোৎপাটন ঔৰব                | 20    | त्रजाक्षम (भागम                        | 20               |
| विजीदहारगंत ने यम            | 3,54  | रिकृत श्यापन                           | -01              |
| শিক্ষি বাহে কাৰ্ডাইলে        |       | লিগাকতু শোধৰ                           | 14               |
| - के दर                      | 13    | ৰেণিয়াঞ্ন লোছাগঃ ইভ                   | व्यक्ति ्        |
| হাত পা স্থানা চিকিংসা        | -     | 'শৌগম                                  | 49-5             |
| লীলোকের তাশ হব্ব স্থান       |       | <b>मेच</b> ्रणायम                      | 5-9              |
| ক্রিবার ঔবণ                  | 27    | पर्न (नाथन पात्र <b>रक्षन</b> ्हि      | 51               |
| জন রুদ্ধি করণ ও পাঁড়িড ছনে: | Ť     | রক্ষত শোৰ্যাদি                         | 154              |
| <b>छे राम</b>                | 166   | তাৰু শোধনাদি                           | 91               |
| স্তিকা চিকিৎসা               | ,,,   | সীসু ও বছলোধন দারণা                    | Pres P           |
| क्षमत्र हिक्शिशा             | •,    | শৌহ শোধনাদি                            | # <sup>\$1</sup> |
| আগবন পুড়িলে ভাষার           |       | মণ্ড লোগন                              | 200              |
| চিকিং <b>লা</b>              | £ 984 | দ্ণিতুকাৰি শৌশশ                        | 50               |
| নশ্যোত চিকিৎসাল              |       | বিব ৩ উপবিদ শোধদ                       | 15-4             |
|                              |       | सदर्गाम (जांध्य                        | 100              |
| व्यकीर्ग भ्रःभ ।             |       | মুখীকীর শোধন                           | × 44             |
| পারদ লোধনাদি                 | 250   | আন্ধ্ৰিকা লোগৰ                         | - 89             |
| রুস্কিন্দুর প্রস্ত প্রধানী   | 998   | রু <b>ছ</b> দারকাদি শোধন               | 430              |
| ৰস কৰ্ম                      | 77    | বার্থজির কারণ :                        | te.              |
| च्यामिविद्रम                 | 846   | পিতর্জির করিণ                          | 70/              |
| সর্কাপত্তরে রস               | 19    | সেমার্ডির কারণ                         | 49.2             |
| রুক্ত'হ                      | 49    | ৰাৰ্দম্যের উপায়                       | 49               |
| স্বাকারণ পদ্ধতি              | ২৭৯   | পিট দ্যমের উপার                        | 95               |
| গৃন্ধক শোধন                  | 19    | কৰ দৰদের উপান্ন                        | , all            |
| শীরক শোধন মারণাদি            | 1.0   | चारमञ् अर्थ-                           | *                |
| रेनकास माधन                  | 2,99  |  | 484              |
| আন লোখন বারগালি              | 22    | হৈওল মাধার ৩৭৬                         | 44               |
| হারিজাল শোষল মরেণ            |       | আহারীর জন্মের নিশিক                    | 하 =              |
| ्र <b>क्षा</b> रि            | **    |  | 124              |
| इनगानिका खक्छ वानानी         | 3.92  |  | , <sub>76</sub>  |
| चन्द्राणिकां (मात्रम         | 19    | वावि क्षांत्रप्रशब्दे क्ल <sup>ज</sup> | 3,318            |

| ME!                      | *    | <b>18</b> 1             | 3    |
|--------------------------|------|-------------------------|------|
| विषश                     | न्तर | Ting                    | ŊĠI  |
| ধ্বিক মার্জবের কর        | 144  | <b>चंदर्ग</b>           | 201  |
| শ্রিছ্ড বল্লখারণের ক্ল   | 21   | ৰধুন্তপুদ               | fp.  |
| खेबरवंद्र भावां निव्यक्ष | 17   | শ্বশাপ্যুল              | pa.  |
| महाद्यामा विश्व          | 34£  | <b>দৃহংশঞ্চুল</b>       | 99   |
| ्माडामिश <sup>्</sup>    | 97   | পঞ্জিছ                  | 14   |
| बस्याविश्व               | #8   | <b>ं क</b> र्मन         | 31   |
| चक्र कि गण               | 2,6  | পঞ্জোদ                  | 99   |
| व्याद्रगृशिविषयं         | 12   | শ্ৰুদ্ৰায়              | 12.  |
| <b>निन्त्रता</b> किश्व   | 7.6  | 14                      | 25.5 |
| ৰুবাকাদিগ <b>ং</b>       | 2.9  | वर्ष करोड़              | 991  |
| चुत्रांकितन              | 99   | নাট্যকার                |      |
| <b>মুহ</b> ভ্যাদিগণ      | 1.5% | कार्थ                   | 15   |
| विनाजी गण                | 21   | ৰভিক্ <del>ষিয়</del> া | 1    |
| <i>वन्</i> त्र्व         | =    | <b>अक</b> री            | 4880 |
| क्यात वर्श               | **   | कैक्टि निर्दाल          | * 1  |
| वक्रभाविशंश              | 11   | কার প্রস্তুত            | 67   |
| প্ৰকৃত্                  | 99   | চাসুমির ঋগ প্রস্তুত     | 99   |
| ভিক্তরন                  | **   | <b>की</b> यनी द्रशंश    | 31   |
| मक्रे प्रभ               |      | चेष्ट्रा क्यान          | 71   |
| <b>क्ट्र</b> ीन          | 51   |                         |      |

ছটাশত সম্পূর্ণ।

## আয়ু বেঁদোক্ত

## পরীক্ষিত মুষ্টিযোগ।

#### লকণ ধ্যায়।

--- <del>-</del>-∪- -

### ब्युत्रदर्शाभ ।

## মিখ্যাহারবিহারতা দোষ। আমাশরাশ্রয়ঃ। বহির্নিরতা কোটায়িং জুরদাং স্কারতানুগাং॥

শ্বারের উৎপতি। স্পুরের দক্ষ গুরুপণতি বজাল্লছ ন করিব। মজাইতকে কেবলের হয়ের জায়ানন। ববিলে সকর রোষণারতক হইবা দীর্ঘ নির্মান পরিতাগে করেন। সেই নির্মাস ছইতে শ্বারেন উৎপত্তি হয়।

শ্বৰ হুইবার করেণ।—আছার বিছারাদিব অনিবয়ত। প্রয়ক্ত আষাশ্রী-মিত বায় পিত কমাদি দেখে সকল গ্রেব সহিত সংমিত্রিত **হুইয়া** কোষ্ঠপ্রিত অগ্রিকে চর্যাদিতে নির্গত করে। স্বত্রণ ডাঙাতেই শ্বরোংপা-মন হব।

শ্রোৎপতির পূর্বাদকা, —ধনবেরেনে শ্রীব সন্তাপ, স্বাদ্ধেদনা, কোন কর্ম করিতে অন্থ্যাহ,দেবের বিবর্ণতা,দেবের স্বনাদ, মুখের বিজ্ঞান, কুম্বন, গাভ্তক, গাভ্যেদনা, গাভ্ত ভারবোদ, বোদহর্ম, সাহাবে জনিদ্ধান মনের অপ্রসন্তা, শীতবোধ, বৌসনেশনে অভিনান, নেতের বক্তা ও শ্বাদ, অন্ধান দর্শন, এই স্কলই মুর ক্টব্যে পূর্বাদক।

জ্বের ডেদ কথন, স্থ্র অইবিছ, বাডজ, (১) প্রিজ, (২) ককজ্ব (৬) বাডলেক্জ, (৪) বাডপৈত্রিক, (৫) পিডলৈক্ষিক, (৬) সামিপাতিক (৭) এবং আগন্তুজ ৮৮)

স্বারর আরম্ভ লকণা---বাতিক ত্ব বইবার প্রারম্ভে সত্যত ক্সা সর্বাধ স্থাই উঠে ৮ পৈজিক ত্বর ইইবার আরম্ভকানে চক্ আনা করে ৮ সৈথিক প্রুম্ব ইইবার প্রারম্ভে ভোরবে ্সনিক্ষা ও সক্ষি রাধিব। থাকে ৮ বাকশি- ভিন্ন স্থার কারতে চকু দাই হব এবং জুড়া উঠে। বাজ্ঞের স্থারতে আরতে অকচি জন্ম ও হ'াই উঠিতে থাকে। শিক্তােশ স্থারত আরতে অকচি জন্ম ও চকু দাই উপছিত হয় এবং নারিপাতিক স্থারের আরতে অকচি চকু দাই ও জুড়া। ইইবা বাড়ে। এই স্থান্তই স্থারের আরত্ত সক্ষা।

ৰাজ্জন্ধবের লক্ষ্য — হাতিক স্বরে কক্ষান, কঠ ও ওঠের কোষ, বিশ্রো-লাক, নিরোকেনা, সর্বাচে বেদনা, সুখবৈবক্ত, উলরে পুলবং বেদনা ও জুল্প ছইরা থাকে, কথন উঞ্চায়ি ক্ষিক ও কথন বা কম কোষ হবং, হুঁণ্টি হর বা এবং নিষ্ঠার কাঠিন। কইবা থাকে।

শৈতিকস্বরের লকণ, —শৈতিক স্থারে অত্যন্ত বেগা তরল যদ নির্মাণ অল্পা নিরোণ বর্মা মুখের কটুক, মুক্তি। লাহ্য ত্থান বক্ততা ও অব এই সকল লক্ষণ ইইবা থাকে। এই স্থারে বঠা, ওঠা, মুখ ও নাসিকা এই সকল স্থানে কোকা হয়। রোগী প্রদাশ বাধ্য প্ররোগ কবে এবং বলা মূত্র ও বরন শীতা বর্শ হব।

লৈখিক মুরের লক্ষণ — ককজ মুবে শরীর আর্জ বল্ল বারা আফ্র বাদিরা। বোষ হর, সর্কাণ কুক ব্যক্তির নাম তৃতি বোধ হব। এই মুরে বেনের বজ্ঞা, মুবের মাধুর্যা, আলক্ষ্য দেহের গুকুত্ব বোধ্য লীত্য রোমাঞ্চ, বিজ্ঞার আধিব্যা, নাসাল্লাব, অকচি ও কাম এই সমস্ত লক্ষ্য মুক্ত হব এবং মাদ মুক্ত ও নম্ম শুকুর্ণ হইবা খাকে।

বাতিপৈত্তিক স্থানের লকণ্য--ব্যত্তিপিত্তিক স্থানে তৃষ্ণা, মৃদ্ধানি জব্য দাছত আদিলা, শিরোবেগনান কঠপোন, গুব শোষ, বাদি, বোমাঞ্চ, অক্তি, বুমদর্শন ও কৃত্যা এই সমগ্র লক্ষণ দাকিত হব এবং শরীরের সন্ধিয়ালৈ কঞ্জনবহু বেদনা অগ্রন্থত হবনা থাকে।

ৰাডলৈখিক স্থানের লকণ,—বাজনেখ স্থানে শরীর আর্ম বল্ল স্থান্থ আরু-ভবং বোব হয় । বেগের অভি তীপ্নতা বা অভি স্থানত বাতে না । সন্ধি-স্থানে জন্মবং বেগনা অপ্নত্নত হয় এবং অভি নিজা, শিরোবেগনা, মাসা-আবং কাস, বর্ষরোধ ও শরীর-সভাগ হইন। থাকে।

শিক্ষিত্ৰ শ্বের শক্দ্—শিক্ষেত্ৰর মুখের নিথতা ও ডিক্স্ড্রু ক্ল্যা, বাহ, কাস, অকচি, ভূকা এই সমস্ত লক্ষ্য মুক্ত হয় এবং মুহ্বপূহ্য শীত ও উহ্ব হু: লাহ উপাধ্ত হুইবা বাকে। নারিশান্তিক ক্রের লক্ষ্য — সারিশান্তিক ক্রে বখন গারেলাল, কথন বাং লীত বােম ব্রু, আছি, সন্ধিছল ও সন্তকে বেলনা হব, চকু রক্তবর্ণ ও কােঠর-গত হয় এবং চকু আব হইলা থাকে, চকু তে সলােথগালন হয়, আন্তর্জন নিমন্তর শক্ষান্তি বােম হয়, কর্ণ বেলনায়ক্ত হইলা থাকে এবং কর্ডছল শুক্ষান্তী হারা অরত বলিলা বােম হয়। চক্রা, হােম, প্রকাণ, কাল, খাল, অকটি, অহ উপস্থিত হয়, জিহাা অলারের ন্যাম য়ক্ষরণ ও ১রল্পার্শ হয়, মুন হইতে য়ক্ষাপির মিনিতে কক উলারৈণ হইতে থাকে, মন্তক চালন, শিপালা, নিমানাল ও চলববাথা উপস্থিত হয়, সল হয় ও বর্ম বহুক্ষরণ শারে অলা্শ অল্শ নিমন্তর অলা্ট ধনি হম শারীরের ভাল্ল অলা্ল কর্ম দুই হয় বা
তাল্ল ক্ষিত হলাম দুই হয় বা
তাল্ল ক্ষিত হয় বা
তাল্ল ক্ষিত হলাম দুই হয় বা
তাল্ল ক্ষিত হয় বা
তাল্ল ক্ষ্য হয় বা
তাল্ল ক্ষ্য বা
তাল্ল ক্ষ্য হয় বা
তাল্ল ক্ষ্য বা
তাল্ল ক্ষ্য হয় বি
তাল্ল ক্ষ্য হয় বা
তাল্ল ক্ষ্য হয় বা
তাল্ল ক্ষ্য হয় বা
তাল্ল ক্ম

সারিপাতিকের ডেদ বধন,—স্রানিগত অবোদশ গুলার, (১) শিশ্বা, (২) তান্ত্রিক, (০) চিন্তবিএন, (৪) বচ্চকুলি, (৫) কবিদ, (৬) দিশা, (৭) কণ্দাছ, (৮) আগন্তন, (১) জননত, (১০) রক্তবীব, (১১) শীতাল, (১২) প্রালিগত (১০) অভিনান।

নিৰ্জুক সামিপাতিকেয় সক্ষণ-—বে সমিপাতে খুল, কাস, অহংকেনা ও শোৰ দৃষ্ট হয়, তাহাকে নিৰ্জুক সমিপাত কৰে।

ডান্ত্রিক নারিপাতিক নক্ষণ,—তত্ত্বা, খাস, পিশাসা, কণ্ঠ ও জিব্ধা শোষ, কর্ষে অবজ্য খান্দ, ক্ষাতিসক্তির ছুগ্ন, সারীরে পুশংবেধনং বেদবা এবং ক্যাধিকা এই সমন্ত ভাত্ত্বিক সমিপাতের নক্ষণ।

চিক্তবিজ্ঞৰ সরিপাতের লক্ষণ,—এলাপ, সদ্ধ হোহ, কন্সন, কৰ্মৰ ছাস্য, কথন গীতে, কথৰ সূত্য, দেহদাহ ও চক্ষুর বিস্তৃতি এই সমস্ত চিক্ত-বিজ্ঞৰ সরিপাতের লক্ষণ।

কঠনুজি সারিপাতিকের সক্ষণ,—বৃদ্ধ<sup>1</sup>, বোহ,দাহ, সভকবেদনা, স্থাই, কন্দ্ৰ, প্লবেশে বেদনা ও অহথা বাক্যানাপ এই সমত সক্ষণ কঠনুছি। স্বাধিণাতে প্রকাশ শাইর। বাকে।

কৰিক নারিপাতিক সক্ষা, কর্নিক সরিপাতে বর্ণপ্রাক্ত ক্রেন্ত্র ভাইছিত হয় এবং স্থার, কাস, স্থান, কর্মনাথ। এখ, কেন্দ্রিপন ও স্থানীত্র ক্রিক্ট্রিলাপ প্রস্কৃতি সক্ষা প্রকাশিও হয়।

## শার্টেরবৌক গরীদিক শুটিবোন।

বিষয়ণ সারিপাতিকের সক্ষণ,—শ্রুতিসভিত্র নালঃ লাখ ও যালের শুনুন এই সমস্ত বিষয়ণ সমিপাতের সক্ষণ।

ক্ষান স্থিপ।তের সক্ষা,—খাস, ভ্রুন।, অক্রেদমা, গেছের ক্টডা। ইবি, জন, দেহসভাপা, অন্বোধ ও প্লাপ এই স্মত ক্লাহ স্থিপীতের সক্ষা

আগন্তক সন্ধিশাতের লক্ষণ্য —গাত্রেকন্য, দেহ সন্তাপ্যন্তক কশ্পন ও শাস্য আগন্তক সন্ধিশাতে এই সকল চিচু দেখা বায়।

শুর্মনের সমিপাতের সক্ষণ,—ভয়নের সমিপাতে রোগীর চক্ ক্রাচর্মভাষ্ট এবং করে লোগ হুইবা থাকে। এই রেগে বন্ধান, নিজার শাংধিকা, প্রদাপ, এব ও স্বাতিশয় এই সকল সক্ষণ প্রকাশ পাব।

বৃক্ত ীর সমিপাতের লক্ষ্ণ—যে সমিপাতে রঞ্জিভিত মুখ্যাব হইরা বাকে, তাহাকে রঞ্জীব সমিপাত করে। ইহাতে তৃষ্ণা, জ্বর, বোহ, জানলোপা, বাদি, অন, অক্ষ্রেদন। ৪ জন বোধ হইবা থাকে। এই প্রোগে তরল মসনির্গম হর এবং শরীরে শোনি চবর্গ মণ্ডলাকার চিত্র সন্দিত হইরা থাকে।

শীতাক সমিশাতের নক্ষণ,—তর্ন মননিংসরণ, কন্সাহ, কর্মে শেঁ। শো। কক্ষুট শক্তবণ, খান ও হন্তের উক্তর এই সমস্ত শীতাক সমিশাতের নক্ষণ, এই রোগে শ্রীর হিমের নাবে শীতন হইবং গাকে।

অলপেনরিপাতের লক্ষ্য-দেবের উক্তাঃ কলানঃ অক্রেদনাঃ আনবোপঃ দরীরের দেগিয়াঃ এই সমস্ত এলাপ নরিপাতের লক্ষ্য।

অভিযাস সরিপাতের সক্ণ,—অহিমাল্য, ত্র্মণত, ভানলোপ, বাক শক্তিনাপ, অবিদ্রা ও পূর্থশোর এই সমন্ত অভিযাস সরিপাতের পক্ষণ। অমিক কি, এই সরিপাতে বারুপিত ও কক এই দোরবাই প্রবন্ধ অইয়া থাকে।

সালিশাতিক স্থারের জোগকাল,—সিঞ্ক স্থিশাতের জোগ কাল সাত বিল, ডাল্লিকের দশ দিল, চিকবিজবের চলিল দিল, কঠকুল্লির প্রভোলন দিল, কবিকের তিন মাস, লিখাগের খোল দিল, কগোবের সূট্টি দিল, লানিককের দল দিল, ভাষাবেলের আট দিল, রক্তীনের দল দিল। শীডাকের বার দিল, ভাষাশের চতুর্কল দিল এবং অভিন্যানের ভোগকাল, এক পাক নির্মাণিত আছে। সারিপাতিকের সাধ্যাসাথা কথন, অরোগশবিধ সরিপাতের কথে কঠকুজি, জিলাও কান্ত্রিক কঠকাথা, করনেত্র, আগন্তক, রক্তীব ক আলাপ প্রাণনাশক এবং আজিলাস সরিপাত দিতীয় কুডাকুলা। শীতাক নারিপাতে শতীর ছিববং শীতক হয়, ক্রমে ক্রমে কর্ত্ত শরীর একেথারে শীতল হইবামাত্র রোগীর প্রাণবারু বহিগত হইবা যার। সারিশাতিক শ্লারে সমক্ত লক্ষণ প্রকাশ পাইলে চিকিৎসক্ষণ তাহাকে অসাথা বনির্মাণানিকে। এই শ্লুর সন্তর্ম, দশব অথবা হাদশ দিবলে পতান্ত রুদ্ধি প্রাণ্ড হয়, পরে হয় উপশ্ব হইবা থাকে, নচেৎ রোগীকে বিনাশ করে। চতুর্দশ, অটাল্য ও হাবিংশ দিন পর্যান্ত রোগমুক্তির অথবা মৃত্যুর দিন নির্মাণ্ড আছে। কর্ণনুলে লোগ ছইলে এই রোগ্যে কথন বখন রোগীকে মুক্ত হইতে দেখা যাব।

আগন্তক স্বরের দখন -বোনকণ আঘাত, মন্ত্রাদি চাদম, কাম ও 
ফুড়াদির আবেশ অধনা প্রামণাদি গুক লোকের অভিসম্পাতে বে স্বর্
উৎপত্ম হব, ভাষাকেই আগন্তক স্বর কছে। স্বর ক্ষিণার পরে বাডাদি
লোকের মধ্যে মামার প্রবোশ দুউ হব, তদ্ধেই চিবিৎসা বাংকে:

প্রধানতঃ এই অউবিধ শরের লক্ষণ কবিত হইল। অতঃপর বিশ্বস, কামস প্রভৃতি অন্যান্য ব্রের লক্ষণ বিয়ত হইতেছে।——

বিষয় স্থারের কক্ষণ,—গুখপোষ। সুথের বিবর্ণতা, তৃকা, ভোজনে অনিক্ষা, সুক্ষা, গারেবেদনা, তরল মদনির্গা, এই সমস্তই বিবক স্থারের সক্ষণ। বিষ ভক্ষণ করিনেই এই স্থার উৎপন্ন হয়।

এব্ধিআণজ অন্তের লক্ষণ,—শিরোরোগ্য, বনি, ফুর্ছা এই সকল ওব্ধিআণক অন্তের চিছু, অফুাগ্র ঔবধাদির আবে এই অন্তের উৎপত্তি হয়ঃ

কাৰত স্থায়ের সক্ষণ,—আসক্ষ, চিত্রিজ্য, ভোজনে আমিকা প্রস্তৃতি কাৰত স্থায়ের সক্ষণ। কোন রমণীর সহিত রমণেকা প্রবল্ধ কর্মন এই স্বর্দ্ধ উৎপর্ব হয়।

ভাগোনাদিক স্বরের সক্ণ.—ভার শোক ও কোপজনিত স্বয়ে, আলাপ ও সপান হইনা থাকে। অভিনাতোর ও অভিনারোপ স্বরে নোহ ও শিশ্যোপাথবং ফুডানির আবেশক্ষণিত স্বরে চিকোনেণ, রোগন, কথন না ক্ষিপুর্কিশান এই স্কল লকণ প্রকশি পাব। বিষয় স্থানকথন,— বিষয়েদি সেবন খারা স্থারের ভঞ্পাবস্থা অজীত ইইরাসথন প্রাচীনবিদ্ধা বহু, যদি তথন রোগী জনারি জাচরণ করে। ভাষা হইলে সেই জাচরগদোবে পুনরায় খারু পিত ও ককাবি পাস্পিত ব্য়া, স্থানাই ডাফারা রজাদি জাল্য করিল। স্থারের বিষয়েট উৎপাদন করে, অর্থাৎ কোন্স্যুয় কথন কি ভাবে স্থাব্য, ভাষার বিরভা থাকে না। বিষয়েকই বিষয় স্থার কথে।

বিষয়ারের তেল করন —বিষয়ার বচ বিষ, (১) সন্তত্য-(২) সত্তত্য-(২) সত্তত্য-(৬) ঐকাধিক. (৪) তৃতীবক, (৪) চাতুর্বক এবং (৬) চাতুর্বক বিশর্মার । এই হয় প্রকার জ্বাবর মধ্যে সন্তত্ত স্কৃত্র রসন্ত্য, সত্তত সক্ত ক্ষাত্র, ঐকাধিক মাধ্যমাতৃত্ব, তৃতীবক মেলোগাতৃত্ব এবং চাতুর্বক অভি ও র্যক্ষাত্র বাংকর মত্ত্ব প্রকার বাংকর মত্ত্ব প্রকার বাংকর বাংকর

বস্তত মূরের সকণ,—বে স্থাব সাত, সন্ধ্ কিয়া ছাল্প দিন শর্ব্যক্ত স্থানিক্ষেপ গানে, ভাছাব নাম স্তত্য

সতত স্ববের লকণ,—বে ঝুর দিন ও বাজিব মধ্যে ছুইবার জাকাপ্ পারু, তাহাকে সভাত স্বর করে।

ঐকাহিত ছরেব লক্ষ্য,—যে স্থার এক দিবসের সংখ্য একবার হাত্র বেগ করে, ভাষাকে ঐকাহিক স্থার কছে।

তৃতীৰকস্বানের লক্ষ্য-নে স্বাধ এক দিন অন্তৰ হব অৰ্থাৎ প্ৰতি তৃতীয় 'বিশ্বা বে স্বান্ন হয়, তাবাকেই তৃতীবক স্বান্ন কৰে। ইয়ারই নাম শালাস্থার 'স্থিতীয়ক স্বান্ন গ্রীবাৰ বেষৰা হইকে পিত্তগৈশিক, পৃষ্ঠদেলে বেষৰা হইকে পিত্তগৈশিক, পৃষ্ঠদেলে বেষৰা হইকে বাডলৈছিক ব্যান্ত্ৰীয় জানিবে।

চাতুর্যক আরের সক্ষণ,—বে আর চতুর্য দিবলে বেগ প্রকাল করে, তাথাকে চাতুর্যক আর করে। এই আরে জক্ষাদেশে বেদন। অভিলে সৈত্যিক ধ্বং মন্ত্রকে বেদনা হইলে বাত্তজ্ব বিভিন্ন জাত্তিবে।

চাতুৰ্থক বিশ্বীয় স্থানের সক্ষণ-—বে স্থার উৎপত্ন ক্টানে ক্লয়ার স্থার ইই বিশ্ব উহার ডোগ বাবে এবং এক কিন বিচ্ছের থাকিয়া প্রায়ার স্থায় উৎপত্ন মূল্য ভাষাকেই চাতুর্থক বিশ্বীয় স্থায় বলা যায়।

বলানক স্বারের লক্ষ্য,—বে স্বারের তোগ প্রত্যক্ত অল্প সন্প্র শারিকাণে পাকে, শারীয়ে শোব হব, ক্রমশঃ দেহ মুর্বাল ও অবলাকপ্রস্ত হইরা শক্ষে এবং শারীয়ে সেয়া হাছি পার, ভাষাকেই বলাকক স্কুর করে। প্রানেশক স্থানের লক্ষ্য,---এই স্থানে সর্জ্যা শরীর বর্ষাক্ত, শুক ও অন্প্রা স্থান্থ প্রাপত্নক থাকে এবং বাবং স্থান ভোগা হয়। তাবং রোগীর শীতাস্থ-ভব হয়।

সংস্থান স্থানের লক্ষ্য —সংস্থান স্থান হই প্রকার , প্রথম কক ও বাদু বুসন্থ থাকিলে অংখ্য দীত উপস্থিত হইবা বুর উৎপর হব। তৎপর ঐ কক ও বাদুর বেগ কিনিও বুলে হইলে পিত বাহ সমূৎপালন করে। বিতীয় জন্মশ্ব পিক ব্লমন্থ থাকিলে প্রথমে অভ্যন্ত দাহ উপস্থিত হইবা হর ক্ষায়ে, তৎপরে পিতের বেগ হুলি হইলে কক ও বাহু দীত সমূৎপাদন করে। উভারের মধ্যে পেবোক্ত সংস্থান ক্রি অতি ক্রেই প্রদান্ত হইবা থাকে।

রনধাতুণত ছবের লক্ষ্য,—শরীরের গুক্ত, ছদযের উৎরেশ, পারের অবসরতা, যদি ও অকচি এই সমত রসধাতুগত ফরের লক্ষ্য।

রক্তবাসুগত ক্রের সক্ষ্য-—র্জোদ্গার, পাছ মোহ, বদি, জব, কালাপি, ত্রণ, তৃকা, রক্ষাসুগত হুরে এই সকল সক্ষণ প্রকাশ পার।

ৰাংসগত ত্রেব লক্ষণ,—মাংসগত হরে তৃক্য, মলমূত বির্গত, অন্তর্গ হি, হতাদি চালন ও গুণানি এই সমত লক্ষণ মৃত হব এবং দত্যদি হার। পীকৃষ করিলে যেরগ বেদনা ক্ষমে, জাহ্র অধ্যাতাগো ক্ষমেছ মাংসের উপরি- <sup>মান্</sup> ভাগে সেইকণ বেদনা বোধ হব।

মেলোগত ব্যৱর লক্ষ্য---অভ্যন্ত বর্ষ মির্গম, ভৃক্ষা, মৃক্ষ্যা, প্রদাশী, যদি, গাতে দেইগছা, অঞ্চি, গ্<sup>শ্</sup>নি ও ক্রোধ এই সমস্ত মেখোগত স্থানের চিছু।

আছিগত মূরেব চিত্রু, —অখিগত ছারে অখিতক্ষাৎ বেদনা, আছি-সংকোচ, খাস, বিবেক, বলি ও গাড়বিকেশ এই সকল সক্ষণ গুকাশ শার ।

মন্ধাগত হুরের লক্ষ্য,—সক্ষাগত হার হিকা, কাল, বৃদ্ধি, শৈল্প্য, অন্তর্দীর, সহার্থাস ও মর্যজেদ এই স্থল লক্ষ্য প্রথম শার এবং রোগীর বেধি হয় যেন সে গাড়ি অন্তর্কারে প্রতিষ্ঠ হইতেছে।

শুক্রগত মুরের দক্ষণ —ভক্রগত মুরে তক্র ও রক্তাদি করিত হয় এবং পুক্রাদের শুকুতা হবলা শাবে , এই মুর মারাদ্মক।

আহত ও বৈষ্ণত হার কথন —বর্থাকালে বার্, শরংকালে শিশু এবং ব্যক্তবালে সেতা হার উৎপাদন করে, ইছারট নাম আহত হয়। এই শিক্তবার বিপরীত হইনেই তাহাকে বৈষ্ণত হার করে। বৈরত হার কউসারা দ দর্শাকানে প্রকৃপিত বাবু, পিত ও ককের সহিত দিলিত হইবা, দারং-ভালে প্রকৃপিত পিত ককের সহিত সংযুক্ত হইবা এবং বসভবালে কক, শিক্ত ও মেখার শহিত স্থিতিত হইবা এর উৎপাদন করে। এই সকল হুর লাল নিমিক বাবে হৃষি প্রাপ্ত হইবা খারে।

**অভার্মেণ জুরের নক্ষণ,— মন্তর্কেগ জুরে আন্তর্কাত, পাতার তৃষ্ঠা,** প্রামাণ, হাস, তথ সন্থিতেদ, অভিবেদন, মর্থারাধ, মনবে, ধ এই সমস্ত সক্ষণ প্রকাশ শংব।

ৰহিকোঁণ জুৱের সক্ষান বহিংকাগ জাতে ৰাজন ছা অভিশ্য পিশাসত অয়ৰ, বাৰণালাপ, অল্পাৰীস, অল্পজ্য এই স্কল সক্ষা প্ৰকাশ পাৰ ঃ আই জুৱ হুসংখ্য।

আম জ্বারের লক্ষ্য — সামজ্বর মুখ চইতে লালা নির্মাত হব, পরীর এক ও প্রস্তু হব, সর্মাদ বনন জনে হব, ক্ষুধ ধাকে না অভিরিক্ত প্রজাব হব, জ্বারের বেগা রৃদ্ধি পাইন। খাকে একং সকচি, মুখ্যমেরতা, অপাক ও আলক্ষ এই সকল লক্ষ্য সন্ধিত হব , এই অবস্থায় ঔন্ধ প্রকােশ করিলে জ্বাবেশ আর্ভ হৃদ্ধি পাব , স্কভরাং এ অবস্থান ঔন্ধ প্রবােশ করিলে না ।

নিরামজ্বের লকণ, —নিরাম জুরে শরীর মুর্বাস ও সমু যোগ ধব, রের বেগা অধিক থাকে নঃ এবং দোবের পরিপাদ, ভাঁচির স্তর্ভা ও মতাহ পর্যান্ত দোষ একডি এই সমন্ত ক্ষণ দেখা যবে ।

হাঁচামান জুরের লক্ষ্ —ডুফ, প্রনাপ, ভাষ, বাস, মলপ্রতি ব্যব-বাধ এই নমস্ত শহামান জুন্তর লক্ষ্য। ইহাতে জুর্বেগ অভাস্ত প্রবর্গ বাংবা।

গৰীর জুরের পক্ষণ, গণ্ডীর জুরে খাস, কাস, ভৃষ্ণা, স্বর্জাহ ও গোনের মতান্ত বন্ধতা এই সমস্ত পক্ষণ প্রকাশ পাস।

জ্বের উপত্রৰ কথন, - কাস, মুদ্র্য, অঞ্চি, ছ্ফি, (বমি) জ্ঞা, অতীনার বিট্থার (রিবস্থাদি) হিঞা, খাস, অলডেন এই দশ্চী জ্বের উপত্রৰ

জুরে এথন থবিধ নেবন কর।ইবার সমব,—বংকালে জুরের বেগা আপোকাকৃত অল্পা থাকে, দেহ লযুও মলের প্রস্তি হব, অথাৎ মধন বিবেচনা করিবে যে জুরের পারিপার হইলাছে সেই সমরে রোগীকে ঐবধ মেনন কুরাইবে।

नावानावाक्षिक नेव कार्क विकट, अवाह अन नरन के केन प्रवाहिता का में सहिता जाति केने न न बहेश होटक। विक हर्ति सद्भागत ७ रहम्यानमूक अवर त कृत मध्यम गर्काम्याहरू क्षित्रमंत्रि रियुचे भटा, छोदा धार्ममान्य क्रीमिट्य। स्य पत्र 🛒 स्टिट्टरे निवर क रीर्पकालकाडी अवश दर कृत मंत्रीक मादव पाकिस्टि कारोक मीर्शकर नरमह नाहे। य गाकि पूर्वम ७ मीशरकर जारा প্ৰিকলাম্বতী জুর বইলে ভাষা চিকিৎসার অসাধ্য ৷ যে বাজি বিশ্ **খ্ৰাস<sub>্</sub>ত বেতিউভ, শিশাস্তি, হ্ৰলি, খ্ৰীণ্ডেছ, বাংস্টীন ও ভ্ৰা** 🛶 কেচিন্নগত জুন তাহার পদ্ধে আধনালকারী। যে জুব্রে 🚓 ক্লেডবাবিতীৰ ও নোত্ৰীন্ত হয়, বে জুর বেগে কবন বা সমুখিত, কৰ্মনু পশুক্ত কৰ্মৰ শীভাৰ্ত এবং কথন বা চ্বেছান্তান্তনে উঞ্জুবন, জুগুবেশো, স্থানার দেহ রোণাঞ্চিত নরন রক্তবর্ণ ও ভলন প্লগীড়িতবং বেনুনুরেন্দ্র का अवर जनिवार पूर्व करेला बांग निविद्यांग करेला बांक वर्षे ডাছার নিকটবর্তী জানিবে। ভ্রমন, হাংসহীন ও জীগবের রাজি मृत्र, येव परेग विज्ञायितः, विवर्ष ७ अक्टि-भीषिक बहेरम हिक्सिनेह ভাষার শান্তির বভাবনা নাই।

জুর যোচনের প্রথমানছা অর্থাং আরোগ্য লাভের প্রথম টিব্র-জুর্ন জাহ, বর্ষ, কিন্ধিং জন, পিশীসা, কলা, মলপ্রার্ত্তি, সংজ্ঞালান, মূর্ মূর্য লক্ষ, শীত বাশ, মুখের বেশির্ক্তা, জুরমোচনের প্রথমে এই সকল প্রেথাং ক্লান্ত।

জুরবোচনের বিজীয়াবছা-—স্বযোচনের বিজীয়াবছার বেছের্ট্ট্র শৃহুদ্ধ হাঁচি ও আহারে অভিনাব এই সক্ষম চিত্র প্রকাশ পায়।

লুরমুক্তির পক্ষণ,—রোগী লুর হাইতে সন্দূর্ণ বিষ্ঠা হাইবে; শ্রীয়ের পক্ষ, নতকে ককু, মুখে বা ওচে কোডা। হাঁচি, আর্থা কোজনে ইক্ষ্টে গবের শান্তি এই সকল সক্ষণ দুই হাইরা থাকে।

অক্লচিরোগ ।

বাঙাহিতিঃ শোকজয়ভিলোক ক্রৈবৈগ্যস্থানম্বলসকৈ।

## 5+ শাৰ্ট্টালেড প্রিকীর্ড শ্রীলার :

## অরোচকা: বৃচ পরিক্টনন্ত: ক্যারবজ্ঞ কতোৎসিদেন ।।

অক্টির কারণ,—বাডাদি বোবজর এবং শোক, ছবা, লোক্ত হেবি, অভিন্ন এব্য ভোজন, অভিন্ন মণ দর্শন, মুর্বন্ধ আন, এই সকল অকটিয় কারণ।

যাতদ্বিত অঞ্চিত্র দক্ষণ — অনুভাগ ভোজন করিলে দক্ত শেরণী বুইরা থাকে, বাওলনিত অঞ্চিরোগীরও দক্ত শেইরণ হয় এবং মুখ ক্ষার বুইরা থাকে। এতদ্বির বাতক অরোচকে বক্ষান্তন এরণ বেগনা বুয় থেন খুগ বিশ্ব বুইতে থাকে।

প্রজানিত অকটির লক্ষ্য — মুখের তিত্ত, আরব্ধ উক্ষ্ণ বৈর্থ্য, ও স্বেদ্যির এই সমস্ত পিতকনিত অকটির সক্ষণ। এডভির গারু-বেমনা, পিশাসা ও লাব হয়।

ক্ষমনিত অকচির লকণ,—বৰজানিত অকচি বইলে মূপ বগুর, লবপরসমূক, পিনিছল, ওক, শীতক ও গলখেশ মেখামূক বোধ হয় এবং ক্ষম্ভাব হইয়া থাকে।

লোকস্করানিজ অকচির লকণ,—লোক, তদ, লোক, রোধ থাতৃতি খারণে অকটি জানিলে রোগীর মুধ কোনরণ বিরত হর মা**. বিস্ক** আহারে অমিন্দ্র হইয়া থাকে।

বিদোষস্থানত অকচিয় লক্ষ্ণ-বিলোধ ক্ষমিত অকচিতে বাত, শিত ও কক এই বিলোধের চুমত লক্ষ্য প্রকাশ পান। এতাইন বিলোধন অরোচাক মন ব্যাক্ষ হল, শরীর জড়ভাবাপন হল ও সেবে মাহারপ বেদধা জব্য।

#### ব্দতীশার রোগ।

অতীলার নিরপণ,—রসঃ অদ, মৃত, যর্ব, কফ, যেব, রক্ত এই
নক্ষন নানাথিং কারণে একুপিও ঘইরা নামু যারা পারিচানিত হওও
ব্যক্তের হৈছিল কিরীতে লাখ সমূৎপান্য পূর্যক যে অভিশ্ব রুপে।
নক্ষ নিংলারণ করে, ভাষাকেই অতীলার করে। ইয়া একরপ বিশেষ
ক্ষুব্যক্তি ব্যাধি।

শ্ভীমার উৎপত্তির মারণ — যিত্র, গ্রুক্ত ক ভারত উল্লেখ্য ভোষদ, সভ্তুক্শিউকাদি আহার, পীর—মংস্যাদি ভোলন, গভ দিবলৈ বাহা আহার করা হইরাছে, ভাহা পরিপাক হইতে বা হইতে প্রকার আহার করা, অস্কিত সমলে আহার, কোন দিন অধিক এবং কোন দিন অন্প আহার, অর্থনাশ বা কোন আজীরাদির মরণে বিনাশ করা, বনিন জনপান, সভ্তেবন, স্তুপ্রীবাদির বেগ ধারণ, জিমিলো্ধ এবং জনজীভা, ধে বহুতে বে প্রব্য ভোলন বিভিন্ন আছে, ভাহার অপ্রভিশানন, এই সকল হেভুতেই সভীনার জনিয়া থাকে।

অতীনারের পূর্ব্ধ সক্ষণ,—অতীনাব হটবাব পূর্ব্ধে হানব, নান্তি, পারু, (মলহার) উদর, কৃষ্ণি, এই সুকল ছানে কেনবা করে। ভারীর অবল হর এবং হলের সংহাচ, উদরাধ্যান, ও অপারিপাক এভৃতি জ্যারা থাকে।

শতীনারের ভেদকধন---অতীনাব বঙ্বিধ , বাযুক্তনিত, শিক্ত ক্ষমিত, কক্ষমিত, ত্রিদোবজ, শোকজনিত ও অপল্ল অনুনুষ্ঠনিত।

বাসুক্ষনিত অতীসাবের দক্ষ —বারুজ্মিত অতীসার **জনিকে** পুনঃ পুনঃ অন্প অন্প ভেদ ২র, ঐ বদ টবং কুফ্রিডিত রক্তবর্ধ, কেনবিলিউ, কক্ষ ও অপক। এই অতীসারে ওক্তবারে বেদমা হইসা বাকেঃ

শিকাতিনারের লকণ,—শিকসনিত অতীনাবে রোগী ভূকার্ত ও বৃদ্ধিত হইরা বাকে। মল পীতে হবিং বা রক্তবর্ণ হর এবং হলীয়ারে জুলা উপস্থিত হয়।

্রেশাক্ষমিত অতীসারের নকব,—হতক অতীনারে রোগীর বন বন্ধ কক্ষিতিত, আমগন্ধপূর্ব, শীতন ও বেতবর্গ হর এবং শরীরে রোধ-ক্ষ্মিতা ব্যাহাঞ্জনিয়া বাকে।

জিলোৰজ বা সারিপাতিক অতীসারের সক্ষ-—জিলোবজ অতী-লারে বাবু, পিতা ও ককজনিত অতীসার বাজেরই সক্ষণ প্রকাশ পাঁছ এক রোগীর বিঠা পুকরের বসার মানে অথবা মাংসংগত জলের নাম ক্রান বাকে। এই অতীসার চিকিৎসকের হুলোধা।

শোকাদিক ভতীমাতের সকণ্য--অর্থনীত বা আন্তার্ডির বিদাশ অইলে শোকাছি বলতঃ গোকে আলার করিতে পারে বচ অংবায়াক টিটা ও রোধন করাতে চকু নাসিক। ও মুখ ধইতে বে সক্ষা নাজ-লামি নিগত হয়। সেই জন বায় কর্ত্ত কোঠে নীত বইবা থাকে এবং কোঠায়ির সাইত সংমিতিত ঘইনা ক্রণে বৃক্ত কৃষ্ণিত করিছা কেন্দেও এ বৃক্ত মনবার বিধা নিগতি হব। উহার গায় থাকে বা, কোম কোন শিবরে গায়বিশিক্টও কেথা বাব অধ্বা ঐ ব্যক্তর সহিত কুর্ফল মুন্য ক্রিশিক্ট বিঠা নিগতি হইবা থাকে।

আশক অমরসজনিত বা আমাতিসারের লক্ষণ,—অশক অমরসজন কিত অতীশারকেই আমজ অতীশার করে। বাতাদি দোবত্রর কুপথগানী কুইবা কোষ্ঠ ও রসাদি যাতু সকল কুপিত কবিবা এই অতীসার জন্মার, ইবাতে পুনঃ পুনঃ ডেদ হর, ঐ যপ নানাবিধ বর্ণবিশিক এবং মলহারে, পুশুস্বেধ্বং বেদনা জন্মে।

রক্তাতিসারের লকণা – স্থিক পরিয়াণে আম ও রক্তমিনিত মল বিদ্ধান্ত হইপেই ভাহাকে ব্রুণতিসার বা মামরক্ত বলা যায়। এই অতীসারে ক্রমনত: উদরে ও মন্তারে পেদদা হয় এবং আমমিনিত সরন্দ মল নিংছত হইতে থাকে , ভংপরে যত পীজা রমি পায়, ততই উর্বেশ বাচে একং মধ্যে মধ্যে জ্বুব হয়, নাভি ক্ষন ও উদর ক্ষীত হইয়া উঠে, কিংবাৰ মধ্যভাগ ক্লেদমিভিত ও পার্মভাগ বেডবর্ণ, লোহিত বর্ণ, কটা ভ্রমন ব্রহ্মবর্ণ হয়।

> শ্বতীগারের অসাধ্য চিহ্ন। খাসশূলপিপাসাভ ং কীণজুরনিপীভিতং। বিশেষেণ নরং রঙ্মতীসারে। বিনাশরেৎ ॥

ক্ষতীসাররোগী খাস, সুব ও ভৃষ্ণাধার। প্রপীতিত হইলে, কীর্থ-দেহ বা ক্রাক্রান্ত হংলে বিশেষতঃ রশ হইলে ভাষার প্রাণসংখন কারিবে।

জতীবারের খুক্তি শক্ষণ বা আরোগ্য চিক্। বন্যোচ্চারং বিনা মূত্রং সমাগ্রার ক্ত গক্তি । বীপ্তায়ের্লবুকোটসা স্থিতস্তন্যোদরাময়ঃ।।

মলভিন্ন স্থাক্রশে মূত্রবির্ত্তি। স্থাক্রণে বার্মির্গন । আরির দীবির ভি কোকেঁর সম্ভা ধ্ইলেই শতীসাররোগের বির্তি হইস জানিবে।

#### এংশী রোগ ।

## অভীগারে নির্ভেণি মন্থাগেরহিতাশিনঃ। ভূরঃ বংচুবিতো বহ্নির্ভাহণীমভিচুবরেৎ।।

গ্রহণীরে।গের উৎপত্তির কারণ,—কতীসার রোগের শান্তি হইকে অথবা তাহার উপশ্ব বা হইতে হইতে মন্দানিবান্ ব্যক্তি অন্তিত ভোজন করিলে অয়ি প্রমরার সংগ্রিত হইরা গ্রহণা নামক নাড়ীকে সুবিত করিয়া কেলে, তাহাতেই গ্রহণীরোগের উৎপত্তি হব।

আহণীরোগের অরপক্ষন,——নাত পিছ ও রেখা ইহার। পৃথক পৃথক রূপে অধ্যা একত্রে রজি আধ্য হইলে গ্রহণী নাডী ঘূর্যিত হয়, প্রতরাং কৃষ্ণ ত্রণ পরিপাক আধ্য হইতে না হইতেই রুগল্প বন্দ্রপে জারনভাবে বা কঠিনভাবে যে নিঃহত ধ্য গ্রহণ উদরে যে বেক্ষা বোধ হুইতে থাকে, তাহাকেই গ্রহণী করে।

আহনী উৎপত্তির পূর্বালকণ,- পিশালা, আর্লস্ত, মুর্বাল্ডা, কেছল-স্থাপ, কুজ বছর বহুবিদায়ে পরিপাক এবং দেকের শ্বকরবোধ, **এহনী** জমিবার পূর্বো এই সকল লক্ষ্য প্রকাশ পায়।

গ্রহণীর তের কথন,---- গ্রহণী পঞ্চনিধ , –গভন্ধ, শিক্ষা, দেখন। ক্রিলোবল ও সংগ্রহ।

ৰাতল গ্ৰহণী উৎপত্তির বারণ —কবার, কটু, ডিস্ত, অভ্যন্ত কক এ বিক্ষ প্রব্য আহার, অস শড়োজন, অনাচার, প্রথগ্রিই, মুন্তপ্রী-মাসির বেগ রোধ এবং অধিক জীসহবাস এই স্বল কারণে বার্র গ্রহণিত হবলা গ্রহণীরোগ উৎপাদন করে।

শিক্তর গ্রহণী উৎপত্তির কারণ,—কটুত্রব্যা দাছকর ত্রব্যা আৰু,

গু কার্ত্রব্য আহার করিলে পিত প্রস্থাপিত হইরা উদরায়িকে বিকর্তী
করে, ভক্ষানাই শিক্তমনিত গ্রহণার উৎপত্তি হব।

কৰৰ থাকনী উৎপান্তির কারণ,——অতান্ত মিন্ত, পতান্ত শীক্তৰ, শৈক্ষিপ, মধুর ও গুড় এবা আহার, অপানিধিত ভোজন এবং আহা-প্লান্তে শাধন এই সকল কারণে সেখা প্রাক্রণিত হবঁরা অনুসায়ি বিবর্ত করও প্রাক্রিয়োগ জন্মান। বান্তাল গ্লাহণীর লক্ষণ্য — বাভ্যানিত গ্লাহণীরোগো নহকে কর লীরিপাক প্রান্ত হর না, কর্ত ও মুখ ওও হর এবং জরভোজনে ক্ষুণ্যা, কুলা, পরীরের ক্লাম ও মুর্বানক, মুখনৈরত, ননের অবনাদ, বিধিব রুসমুক্ত ভ্রম্য ভোজনে ইন্দ্রা, পার্থ উক্ত বঙ্কান ও জীবাতে বেকবা। কুমুপাক, কর্বে বিধিম শক্ষ জবন, মনভারে বেদ্যা, স্কিশ্ভির মাল্যা, এই নকল দক্ষণ প্রকাশ পার । আহারীর বভ্ত লীর্ণ হলৈ উদরে বেকবা। ক্ষুণ্যাক, ক্ষেত্র ক্ষান্ত আহা অস্তৃত হর , ক্ষম ওঙ্ক কর্ম থা ক্ষান্ত ক্ষান্ত মন প্রান্থ প্রকাশ করি রোগে বাস, ক্ষান্ত, প্রতিত্ব প্রকৃতি লোগ জন্মার।

শিওম এংশীর শক্ষ্য,—গৈতিক এংশীরোগে লাজাত হইবে প্রোগীর বর্ণ শীত লাভাবিশিক্ষ হব, অজীর্ণ ঘল নির্গত হইরা খাধ্যে, জাহাতে পীত ও শীল আন্তঃ দৃষ্ট হর, রোগীর কোউপ্রদেশে ও হবরে হাছ, ভুকা ও অক্টি জ্বের এখং সর্বালা উদ্ধার উঠে, সেই উন্ধার আন্ত ও প্রস্কু বিশিত।

হৈছিৰ গ্ৰহণীর কক্ষ্য — সৈখিক গ্ৰহণীরোগে বাদ্য অকচি, মুখ-মাধুর্ব্য, মুখের নিগুড়া, শ্বনের ভার উদরের গুক্ত, বাসালাব ও বিহুত এবং মনুর উন্নার এই সকল দক্ষণ দৃষ্ট হয়। যে যদ নির্মাত হয়, উহা অধাক, মোমামিজিড, ডেন্সুক্ত ও গুক্ত। এই রোগে রোগী মুশ্ব না হইলেও ভাহাকে মুর্বান ও অলস করিয়া কেলে এবং নৈবুম-মার্ক্য হব ক্রেম না।

বিবাৰক বা সাজিপাতিক গ্ৰহণীয় সক্ষণ,—বিবোৰক গ্ৰহণীয়েটা বাতিক, পৈতিক ও সৈখিক এই তিবিধ গ্ৰহণীয় সক্ষণ প্ৰকাশিস্ত দুইয়া বাতে।

সংগ্রহ গ্রহণীর লকণ,—সংগ্রহ গ্রহণী সহজে অন্তমান করা অভি
কার্টন, উহা চিকিৎসার অমাবা, অধিক কি, উহা নিঃপেবরণে উপশবিত হর বা । এই রোগ দিবাভাগে অধিক প্রবন বাকে, কিছ রাজিতে
শান্তি পার । এই রোগীর বিষ্ঠা তরদ, বেতবর্ণ, পিজিল, বেহবুড,
ভ অপক হর; প্রভাই, বল দিন পরে, বার দিন পরে, পক্পারে বা
কারতেও ঐরপ সদ নির্গত হইরা বাকে। বল গ্রন্থির নমন কর্তিইংগেও বলবারে বেহনা সক্ষে।

#### Address of the A

#### चकीर्गकां ।

অত্যৰ, পানাছিবনাশনাক সংধারণাৎ, ৰপ্পবিপৰ্যয়াক। কালেহলি সাম্বাং লঘু চালি ভুক্ত-মন্তং ন পাকুং ভন্নতে নরস্য।।

শ্লীর্ণরোগের ভারণ,—অ্বিক জলগান, কোন দিন অ্বিক কোন দিন বা অল্প আহার, সূত্রপুরীবাদির বেগবারণ, দিবাদিনা ও দ্বানি জার্গরণ এবং ববাসবরে অল্প পরিমাণে সাক্ষ্য ত্রব্য আহার এই সকল হেতুতে আহারীয় বস্তু পরিপাক প্রাপ্ত হর বা ঃ ভাহাতেই অজীর্ণ রোগের উৎপত্তি হয় ।

অধীর্ণরোগ্রের সাধারণ দক্ষণ,—শরীরের গুনানি, অম, **অভরের** ক্ষীভড়া, পুনঃ পুনঃ বারু মিংসরণ, থেছের গুক্ত ও বিবর্ণতা এই সক্ কই অকীর্ণরোগের সাধারণ দক্ষণ।

्रु व्यक्षीरर्गत्र रक्षण्यम्,---व्यक्षीर्ग विविध उ--व्यक्षिमीन् विवक्षाणीर्गः विवक्षाणीर्गः विवक्षाणीर्गः विवक्षाणीर्गः

আমাজীপের সক্ষন,—দেহের গুকর, ব্যবস্থা বোধ, গণ ও অধিন হুটে শোধ, অনল ও মরুর উদ্ধার, এই সকল আমাজীপের সক্ষণ। বগুর রম-স্বাধিত অন আহার করিলে ইবং পরিপাকার্তি বে মূল জন্মার, তাহাকে আম কছে, সেই আম বিক্ত ভাব বারণ করত লা অস্ত্রীণ উৎপাদন করে, ভাহারই বায় আমাজীপ।

## with the state of the

শ্বিক্যাকীৰ্ণের অভন্য-বিক্যাকীর্ণ শিক্ত হবৈতে সমুখণার। আছা শিক্ত সুম্মান শিক্তানিত বিবিধ বেলনা, ধুম ও আমমিনিত উক্তার, শিক্ত ও ভাত এই সকলই ইছার সক্ষণ। তুকে আছা কিঞ্ছিৎ পরিপাতৃ পাইলা আমজাৰ ভারণ কলিলে যে আলীর্ণ ছবেন তাহাকেই বিশ্বান্ধীর্ণ করে।

অধীপরোব্যের অসাধ্যকথন,—অধীপরোব্যে মৃক্তি প্রকাশ্য বাদি,

কুথ ও নাসিকা ধইতে কফজাব, দেহাবসাদ ও এম এই সকল উপত্রব

লক্ষিত হইকে লে রোগ চিকিৎসার অস্থায়।

चलीर्वतारगंत चारतांगा विक्र-एएस्ट मध्यः शिशामाः, क्याः चल्रम्या ७ धृमदीन छेनातः, मतम यमपृष निर्माः, कार्या छेश्मादिश धहे नक्तरे चलीर्य तारगंत्र मुक्तित नक्त कान्तिरः। दर्शस्थि स्वक्ष मुक्ति क्रिकान शाहेरनरे कान्तिर रा, जांगी चलीर्य जांग स्टेरक क्षितांगा नांक क्रिकारः।

শ্রমীর্শ বইতে শ্রমানা রোগের উৎপত্তি কথন,—আনটি ত্রিবিধ শ্রমীর্থ হইতেই বিজ্ঞিকা, জনসক ও বিলম্বিকা রোগের উৎপত্তি ইইরা বাকে, বিদ্যানিকা, জনসক ও বিলম্বিকা রোগের উৎপত্তি ইইরা বাকে, বিদ্যানিকা হইতে বঠনেশ পর্যান্ত গ্রমন করে, বিদ্যানী বেখিনার বইরা রোদন করিতে বাকে, ভ্রমান্ত হয়, ও উন্টার ভুলিজে বাঁকে এবং সল ও অধানার রু নিরোধ হয়, ভালা হইলে ভালাকেই শ্রমণ বলে লার ভুক্ত শ্রম কক ও বারু হারা ভূবিত্ত হইলে কে ব্যব ও বিরেজনের নিরোধ হয়, ভালাকে বিল্ডিকা সোলা বলা বার :



### कि मिरहा नक्षन ।

শ্বনীৰ্ণভোষী সুখুৱামুনিতো। প্ৰবৃথিয়: পিউন্ডড়োপভোজা। খ্যারামবৃদ্ধী চ দিবাপয়ানো বিক্লকুক্ সংপ্ৰততে ক্ৰিমীংস্ত॥

किवित्तारमंत्र कात्रमः स्थूतां मू वस्तुः अवज्ञताः शिक्के छ छ अभूमा । विक्रम वस प्यास्ति, बाजायक्तामः विवासत्तमः धरे भगत कात्रशः किवित्तां के विश्वम वसं

প্রীবন্ধ জিবির কারণ ও লক্ষণ,—মাবকলাই, পিউন্ট লবণ্ড অন্তর্ভালাক ও করু ভোজন করিনে প্রীবন্ধ ক্রিমির উৎপতি হয় । ইবারা প্রত্যালাকর করেনে প্রীবন্ধ ক্রিমির উৎপতি হয় । ইবারা প্রত্যালাকর করিনে প্রাথিত হয়। এই সকল ক্রিমি বিবিধায়তি ও বিবিধার করিন করে। এই সকল ক্রিমি বিবিধায়তি ও বিবিধার করিন করিন করেনে করেন করেনে করেন করেনে করেন করেনে করেনে করেনে করেনে করেনে করেনে করেনে করেনে বিবাহার করেনে করেনে বিবাহার করেনে করেনে বিবাহার করেনে করেনে বিবাহার বিবাহার বিবাহার করেনে বিবাহার বিবাহার বিবাহার বিবাহার বিবাহার বিবাহার বিবাহার বিবাহ

রক্তম জিবির লক্ষণ ও কারণ,—স্ংবোগবিক্তা, অজীর্ণকর ও শাকারি জুকুন করিলে রক্তম জিবির উৎপত্তি হয়। এই সকল জিবি পালবিধীন বুলাসাকৃতি। তথালো কতক্তলি এত ক্তম যে চুক্তিগোচর এন না চুক্তম বুলাকুলে বড় বিধা, হথা—কেন্সন, রোববিধংস, রোধবীশ, উচুবর, নে বিভা জুলাকু।

कर्म किया मक्त ७ काइन्-मश्कः गांध्यः मधिः कीहः यह व का कित्रहातः क्ष्म किया उर्शिक हतः और जनन कियि कांचित्र कित्रहेशां महीरहत नर्मक विष्युश करहः । देशार्यंत गर्था क्ष्य श्रीकः दे हैं। क्ष्म क्ष्मिकंग्यः क्ष्म वा बानाम् व जन्म क्ष्म क्ष्मिकं क्ष्मिकं देशा क्ष्म का जानून्य। क्ष्मे द्वारित व्यवस्थित क्ष्मिकं क्ष्म



## का विकास महिल्ल महिला।

নিষ্ট প্ৰকৃতিৰ নাগডেলে সাভ্যাকার । ৭বা—গড়ান, উন্মানেই, অনুষ্টার নুষ্টান্তন, চ্যুক, দর্ভকুত্ব ও স্থাত্ম।

## व्यर्गात्राभंक्थन ।

## स्रोवास्त्र्युः । श्राप्तकाश्मि नश्कृषा विविधाक्तकीम् । व्याप्तकाक्त्राम् । व्याप्तकाक्त्राम् ।

অৰ্থের অরশ নির্গর—বার শিতাদি দোবসকল হক্, মাংল ও বেল স্বিত করিরা মলবারে ফেবিবিধরণ সাংসাজুর উৎপাদন করে, তাহাকেই অর্থ করে।

ি অর্পের ভেদ কথন,—অর্গ হর প্রকার। কথা —বাতল, পিড়ক, কফল। ব্রিদোবন, শোণিডল ও সহজ।

আর্থরোগের কারণ,—উপবাস, অধিক বাংরাম-শীতদদেশে থাস,শোক্ত আরিক রেডিল ও বারু দেবন, মদাপান, অভিরিক্ত মারীসক্ষা, অপারিমিড জাল্পন এবং করার, বাটু, ভিক্ত, কক্ষ, শীতদ ও শসু এবা অক্ষণ, এই সকল কারণে বংক্ত অর্থ প্রবে। উক্তপ্রধান দেশে হাস, উক্ত উর্থা, উক্ত পানীর, উক্ত অরগ্রেছিত জক্ষণ, জোধ প্রকাল, অভিন্তিও প্রয়াপান, রেডিলেব্ড, আনোর উরভিদর্শনে হিংসা এবং কটু ও অনু রব্য জোলন, এই সকল কারণে শিক্তির অর্থ কথে। দিবানিরা, মিরন্তর শসুনার অবস্থিতি, বিনা কার্থো বিশিক্তর বাসরা থাকা, বগুর, বিশ্বে, শীতদ, নব্যান্ত, অনু ও ওক্পাক রবা প্রকাশ, এই সকল কারণে কক্ষ্ত আর্শ কলে। এই তিবিব অর্শের উৎপত্তির শৌরণে যে অর্শ হয়, ডাহাকে তিলোবছ অর্থ বলে এবং ঐ থারণেও সক্ষ্য শ্রেণিক ক্ষরে। শরীনো রক্তানিকা হইনেই শোশিতক অর্থের উৎপত্তির হয়।

অর্থরোগের পূর্বাশক্ষর,—অর্থ স্কাছিবার পূর্বে শারীর কীণ ও অব্যক্ত থেষ্য বল বাকে দাঃ বাহা আহার করা হায়, তাহা কীর্থ হর দাঃ উদ্ধার উঠে, ক্রীসরক্ষো এর, এর, শাল বর ও কোঠ পরিধার হর দা।

বাতক পর্বের লক্ষণ,—বাতক অর্থে রোগীর উক্ত, উক্তর উপদ্ধিতিও সাহিত্যান, কটি, কয়, পার্থা, উদর, বক্ত: ও মন্তকে বেদনা হয়। কাল, প্রায়ন, ও দলায়ি কবে। হাঁটি হয় ও উম্পার উঠিতে বাকে। কর্পে ক্লেন্ট ক্ষা ক্লিডি হয়, কম উপস্থিত হয়, হন্যা বুলা, বেজা, বদৰ, গাজচর্যা, কথ ক্ষম্ভ ক্ষা ষর্থ হয় এবং রোগী যে কল পরিজ্ঞান্য করে, তাহা আছিবিনিক্ট, শিশ্চিল ও কর্মির এবং অল পণারিয়িত, অতি কক্টে রোগীর দুল নির্মাত হয় এবং হল-নির্ম্যায়র শক্ষ ধইতে থাকে।

পিড়ক অর্থের সক্ষা — পিড়ক অর্থরোগে রোগীর অকচি হোক্ত বর্ম ও লাহ ক্ষিয়া বাকে , যন নানাবর্গ হয় এবং কথন কথন পিড়াছিলিও কল নির্মান্ত কইতে দেখা বাব। এই রোগে রোগীর মদ্য বৃত্ত, নথ ও গাত্রচর্ম পীড়া, ছামুজাবর্গ অবধা স্থায়বর্শ হয়।

ক্ষম অর্শের লক্ষণ, —বক্ষ অর্শে রোগীর অক্টি, নালালাক, যুৱকুলু, এই সকল দক্ষণ দৃত হর , বড়ক আর্র বস্তারত বলিব। বোধ হর । স্তীসহবাদে ইচ্ছা থাকে না , উকর উপরিপ্তিত সভিদ্বানে শেলনা হয় , অহিবাক্স জন্তে । বিধি বা ৰশিবাধ ধর , এই রোগ হইলে কবন কথন অতীনার ও প্রহণী প্রভৃতি ক্ষমিতেও দেখা যাব। অভ্যানর মুখ দিলা কল্মান হর এবং ক্ষিত্র মন অভিয়েশে নির্গত হব।

বিদোধক ও সহজ অর্লের লক্ষণ,—বিদোধক ও সহজ অর্লরোগে পুরের্দ্ধীক ত্রিবিধ লক্ষণ দুই হব এবং পোনিওল অর্লরোগে করিন মলমির্দ্ধি ব্রুব, মাধলাকুর দিবা উক্ষ রক্ত করিও হব , রোগীর শ্রীর শীতবর্ণ হরু, গাতবর্ধ কর্বল হব , শিবাসবৃহ লিখিল হব, বোগী রুশ ও নিকংলাহ হরু, তাহার ইক্রিব বিকল হব এবং অতীসার জ্বে , বোগীর অযু রুবা সেববে ও গৈতা দেবনে অভিলাব হইয়া বাবে।

মাংলাকুর (বলির) লকণ,—বলি বাদহ ও অত্যন্তর্ভ উক্তর্ভিত্ন ইইয়া থাকে। বাতক অর্লের বলির মাংলাকুর ধুম বা উবং পোণিত্যর্ভি কর্টিব, অপিন্দিন, কর্মণ ও ক্লাথা। কোম কোনটার মুখ স্থান মর, কোন, কোনটার মুখ প্রকাশিত, কোম কোনটা ব্যকাপানফদের স্থার, কোন্ কোনটা ক্লবক্লের ম্যায়, কোম কোনটা খেত স্থাপের তুল্য। এই মাংলা, কুরে অনুপ অলুপ বেদনা হইরা থাকে।

পিত্রক অর্লের মাংলাকুরের মুখ দিরা তরল শোণিতজাধ হব, উহাস্থ, মুখ নীলছর্শ এবং পীত, কৃষ্ণ ও পোণিতাভার্ক। ঐ সকল মাংলাকুর ক্ষমিকার ম্যায়, খোদ কোমটা বহুংশিতের ন্যার, বোল কোমটা কা ক্ষমেশিকার মুখের ন্যায়। ক্ষা অনের সাংসাক্র বেডবর্ণ দীর্গ, স্থাও বেগবার্ক । উলার সুধা বিভ্ত। এই সকল আলুল বর্জুল ও কণ্ডুবুক, উলা লার্ল করিলে রোগীর আছাবোধ হট্যা থাকে। এ সকল আলুর গভর বাটের করের। কোন বোনটা ক্টবিকলের নীজের নাার এবং কোনটা বা বংখালুর সম্পা। উলা এড কচিন বেচ রোগীর মননির্গন সম্বে অভ্যন্ত বেম ক্তিও হর। প্রাণি নেই বেগে উল্লিখ্যা কাম না।

সহজ্ব আর্শ ও জিলোবজ আর্শের বংশসার র গুলি উক্ত ডিবির্থনক্ষণ-বৈশিক হববা থাকে। শোশিওজ অর্শের অমৃত্রের সক্ষ সম্পত শিক্ষ অর্শের ন্যাব । ঐ সকল অরুর বটার র সমৃত্য কোন কোনটা গুরাক্ষের রাজ এবং বোন কোনটা প্রবাসকুলা।

অর্গের শ্বানার। বাধন, নবে কর্মবানে অতীসার, লোখ ও এই

ক্রিলা খোণিও করিত হয়, যে কর্লরোগী ভূকার্ড, অকচিবিলিট ও শ্বাবৰ
বেগনায়ুক হয়, ভাষার পোল ভাষার নিষ্ঠ করে। ছলবে বা পার্থে বেগনায় ইচ্ছিমজানের মাখা, বাদি, সাজ্বংদনা, জুর, ভূজা, গুলুর পক্তা এই সকল উপত্রব অর্গরোগীর গুলুরে বারন। যে রোগীর বক্ষান্তলে ও পার্থে শ্বাধ্যের বেগনা কল্মে এবং কর, চরণ বদন, মাজি, গুলু ও অওবোরে পোণ হয়, ভাষার অর্শ সমাধ্য বনিষা ক্ষান্তে।

#### क्रशन्त्य ।

### গুংসা দাকুলে কেত্রে পার্শ্বতঃ পীড়কান্তির্ক্তি । কিলো ভগদরো জেয়ং স চ পঞ্চবিধাে দড়ঃ।।

জগন্দরের শরণনির্থা ও তেক কথন - গুছরাবের চারিলিকে ছুই আমুনি পরিনিত ভানে বেদনাবিশিউ বে পীতক। অর্থাং কুছুভি উৎপত্ত ভার এবং বাহা বাদক্রমে শরু হইরা তর্থাগত রন্ধুবোলে গুছর রের পথে। ভাইত একডিড হইব। গাতে, তারাবেই ভাগনার গ্রোগ কছে। ভাগনার শক্ষিব। বর্থা - নাতরু শিক্ষা ককজ, বিদোধক ও উন্নালী।

ভগন্দরপঞ্চতত ভারণ ও সক্ষণ,—বাড্জ ভগন্দরে করার ।কুক্তবা ভক্ষ হারা বাযু হপিত হইবা গুখনারে শীতকা জন্মার। আই ব্রাক্তবা শাক্ষিতে তারা হইতে শোশিতংশ ফেন করিত হব এবং ভ্রমা কিল নিষ্ঠান মুখ্ৰ ও প্লেড নিষ্ঠিত ঘটনা থাকে, তৃত্যাং যোগ অধিয়ায় প্ৰথকেই অনেশানি হালা উৰ্জ প্ৰনাম ক্যা উচিত। যাতক ভগৰায়ের শীক্ষা বৰ্জন সংক্ষাক ভ হিত্যমূক হয় বনিয়া উহাকে পত্ৰশোদক ভগৰায়ও বলে বি

শিক্তর কাশরের কুক্তিওলি উঠের আীশার ন্যার হর বলিজাঁর উহাকে উউপুর্বীধ বা উউপুলিরোধর বলে। শিক্ত কুশিত কইরা একথারেঁ ঐ সকল কুকুড়ি কাথার। উহার বহা দিরা উক্যপূম বহির্মন্ত হর, উহা শীক্ষাই পাকিরা উঠে।

ক্ষর ভগৰরে কন্দ্রণিত হইবা গুলগারে শীড়কা ক্ষার। ঐ সক্ষ শীড়কী ক্ষিণ ও শুজ, উহার মধ্য দিরা বন পূঁজি নির্গত হয়, উহাতে অল্পু অল্পু বেদ্যা বোধ হয় এবং চুল্ কাইরা থাকে।

বার্, শিক ও কক প্রকৃথিত হইবা যে ভগন্ধরের উৎপঞ্জি হয়, ভাহাকেই বিদোশক ভগন্দর কছে। এই ভগন্ধরের শীক্তা গকর-শাটের, নাম হয়, উহাতে বেলনা বোধ হব এবং উহা দিয়া বিভিন্ত পূর্মি বহিপতি হইবাপাকে। ঐ শীভ্কার বলাগত হিত্র শহুকের আহর্তের নার্থ্য হয় ব্যাহাক শহুকারত ভগন্দর ও বনিয়াপাকে।

নধ বা কটকাদি বার। বলবারের সরিহিত কোন ছান কর হইছে বদি ভাষাতে নাদী হর এবং ঔষধাদি বার। ভাষা আরোগা করা না হর, ভাষা হইলে উহা বদবারে গিছা র্ছি গ্রাপ্ত হয় এবং কবে ভাষাকে ছিলি উৎপত্র হইলা বহু হিত্র করে, এ সকল হিত্র দিয়া বিষ্ঠা ও মুত্র নির্মন্ত ইয়, উহাকে উষাগী ভগকর কহে।

ভগন্দরের অসাধ্যাদি কর্থন,—বে ভগন্দরে মন- মূত্র রৈউ ও কৃষ্ট্রি বির্মাত হয়, তাহা প্রাণনাশী। ত্রিলোসক ও উদ্বাদী ভগন্দর অবাধ্য পর্তু ওবিশ্ব সমত প্রশাসিত হবতে শারে।

डेशहरमं ( शत्रमि )।

হতাতিৰাতায়খনতপাতাৎ অধাৰনাৰত্যুপ্ৰেৰনাথ। বোনিপ্ৰদোষাক্ত ভৰতি শিলে প্ৰফোপদংশা বিবিধাপচালৈ: ■

# जान त्रीत्राज भन्नीकिन मुस्तिन ।

্ট্রশ্বহশ্বের অরশনির্ণর, কার্থ ও ভেককখন,—নিবৈদ হস্তাধাত লাগিলে।
প্র্যুক্তন করিলে, নিজ নথাবৈ ধইলে। অপরিভ্ ত্র রাখিলে, অভিরিক্ত জীলখনাম করিলে, কারখোঁত জলে ও উফ জলে নিজ খোঁত করিলে, অবচারিনীম্বন করিলে অথবা ঘোনিকাবে গ্রেষি রোগ উৎপত্র হয়। গ্রুষি পাঁচ
ক্ষিয়ের হয়।—বাড্রা, শিক্তা, রক্তা, কম্জ ও ভিলোবজ।

ি উপকংশের লক্ষণ,—উপকংশ রোগে নিজমালে অথ্যে বেউন্তরের নিবে

জীল বাংসবেউনের নিবে ক্রুড়ি হইনা বাকে। বাতল গরবির ক্রুড়ি
বেদনাবিলিউ, পিতজ গরবির ক্রুড়ি জালার্জ, রজজ গরবির ক্রুড়ি
বাংসের নার বর্ণ কথবা ক্রুড়ে ও শোপিতপ্রাবর্জ, করল গরবির
ক্রুড়ি পালু প্রপ্রাবর্জ এবং নিলোমল গরবির ক্রুড়ি বাতল, পিতজ
ভ কর্মল গরবির ক্রুড়ির নার লক্ষণর্জ হর। বাতল উপকংশে নিজ
ক্রিড়ে হা, পিতল গরবির ক্রেডিক জালা করে, রজজ উপকংশে নিজ
ক্রিড়েরের ক্রিল লক্ষণ হর, করজ উপকংশে নিজ
ক্রিড়েরের ক্রিল ব্রুড়ির বাকে।

উপদয়শের অসাধানি কথন,—উপদংশ রোগে চিকিৎসা না করাইরা ভিলবছাই নীসহবাস করিলে জন্ম নিজে জ্বাসা ও শোধ হয় এবং স্কৃতি ভলিতে জিমি হলে, কালজনে নিজ কর হয়, ঐ রোগ প্রাপনালক। গর্মী-রোগে কীইকর্ত্ব নিজনাল ভক্তিত হইরা মুহ্মান্ত অবশিষ্ট পাকিলে আর লেই রোগের উপশ্যের প্রত্যাশা থাকে না।

### কাসরোগ।

ধুনোপখাতাত্রসভন্তথৈব
ব্যারাদরুক্ষায়নিবেৰনাক।
বিদার্গগরাক হি ভোজনস্য
বেগাবরোধাৎ ক্ষরখোত্তথৈব।
প্রাণো হ্যাবান্দ্রভঃ প্রভৃতঃ
বংক্ষিকাংস্যব্সভুল্যবোষঃ।

# নিরেতি বস্তু । সহস্য সংসাহো ক্ষীবিভিঃ কাস ইতি প্রবিষ্টা ।।

কালের অরপ কথন—নাসিকালি যার। কের্ডিঃন্তরে গুর আবিট্ট হইলে, অধিক ব্যাহাস করিলে, কক্ তার ভোজন করিলে, আগবারী গ্রন্থশিক হটরা উদান বারুর অঞ্গত হওরাতে তার কাংলার ন্যার ক্ষ পূর্বার্ক লোবের সহিত যে বহিঙ্গুত হর, তাহাকেই কাল রোগ কছে।

কানের জেন কথন,—কান পঞ্চনিধ,—ব্যতিক, গৈছিক, হৈছিক, ক্টি-জমিত ও ক্ষমত।

কান জবিষার পূর্বরণ।—কান জবিষার পূর্বে পদলেশ ও ব্লিন্ন কণ্ট-কাব্রত যদিয়া বোধ হর, কঠে কও্ জয়ে এবং অকচি হর ও বাহা জৌধন করা বাহ, তাহা সহজে অধ্যক্রণ হর না।

বাওল কানের লক্ষ্য — বাওলন্য কানরোগে রোগীয় বক্ষাইন বিশ্বত উদর ও পার্ন্থে বেদনা ক্ষাে, মুখ শুরু বর, বলের মুগ্রই বর, বার্ণের ডেল্ল খাকে না, নিয়ত শুরু কান নির্গত হর এবং রোগীর অনুডেদ ও কাল-বেগ ক্ষাের।

পৈত্রিক বানের লক্ষণ,—শৈত্তিক কালে জ্বার বন্ধংছনে ছাছ, বুগোষ্ট্র শুহতা ও ভিক্ততা, ভূকা, পীতংগ ব্যাধ কটু কাল, এই সক্ষ দক্ষণ ভূকী হয়। এই রোগে রোগী পাঙ্বর্গ ও দাহ বিশিষ্ট হইবা খাকে।

মৈখিক কালের কক্ষণ,—লৈখিক কালে মুখ লিও হয়, রেছ অবস্থা হয়, মন্তক বেৰদাখিনিট হয়, নেছ সেখার পরিপূর্ণ হব শরীর ভারি ব্যেছ হয়, অকচি ও কণ্ডু জবে এবং কালের সহিত গাঁচ বক্ষ নির্মাণ হয়। বাজে ই

কতল কালের লক্ষণ — আভিরিক্ত ত্রী সহবাদ, ভারবহণ, প্রশ্রীষ্ট্রন্ধ, পৃথ ও গজ্ঞহণ, এই সকল কারণে উক্ত কত হলৈ কুপিত বাছু জীবা দুবা করিব। কাল ক্ষাদ্ধ, ইহাকেই ক্ষতল কাল বলে। এই রেয়ান্ধ, প্রথ ত কাল হলৈ কাল করিব। রোগীয় কেওঁ অভান্ধ, বেদনা ক্ষাদ্ধ, বক্ষাহল ভাবং ও পুলবিদ্ধ বলিরা বোধ হয়, স্পর্ক করিব। কেলা ক্ষাদ্ধে, বক্ষাহল ভাবং ও পুলবিদ্ধ বলিরা বোধ হয়, স্পর্ক করিব। কেলা ও সভাল বেশ হয়, সাক্ষিদ্ধানে বেদনা ক্ষাম্ব এবং রোগী ক্ষ্মান্ধিয়া, শিশাসা ও অরক্ষণে আক্রান্ধ হয়। যথে বাবে এরণ বেশে ক্ষান্ধিয়া, বিশাসা ও অরক্ষণে আক্রান্ধ হয়। যথে বাবে এরণ বেশে ক্ষান্ধিয়া, বেশ্বাণী পারাবতের ন্যায় অক্ষ্মান্ধ ক্ষান্ধ করিবে বাবে।

ক্ষম কানের সক্ষা করে বানে রোগীর পরীর , পুলংক্টি ধেননার্ভ হব এবং রোগী জুর, দাহ, বাহ ও মুর্বাভার অভিমৃত্ত হবৈ। বাকে। ইয়াতে ধাপুলোব হবমাতে বলের হুলি ও মাধ্যে কীপ হব, কানের সহিত পুলিমিতে গোণিত উঠিতে থাকে। করম কানের ধাবতীয় নক্ষ্ প্রকাশিত বইবে নেই রোগীকে চিকিৎসাধারা হয় করা মুবহ। অনিয়সিত ভোজন, অসমরে ভোজন, অভিনিক্ত শ্রীনংসর্গ, মৃত্ব প্রী-বের বেস ধারণ এই সকল কার্ণে স্থান্ত ও শোক্ষম্ভ যাভির দোন মারা অধি কৃষিত ধাইলে বাবু, পিত ও কক মুক্ত হবৈটে এই ক্ষমন্ত্র মান জ্যাইয়; বাকে।

কানের অনাবানি কথব,—কীণ থাতির ক্ষম কার্য হইলে ভাছা প্রাণাশ্বকারী। ক্ষিত্র বনবান বাজির হইলে বাপা থাকে, কথন কথন প্রাপ্রেগা লাভ করিতেও দেখা বাব। যদি ঐ কান অব্যা বিহনের হর এবং রোগা, নেবক, বৈশ্বা এ কিশ শাস্ত্রবিভিত হর, ভাষা হইলে রোগা ক্ষতে যুক্ত হট্তে দেখা গিবা থাকে। হন্ধাবভাব জরাজনিত কান হইলে ভাষা বাপা থাকেও পুর্বো যে বাজানি ত্রিবিধ বানের উল্লেখ হইলাছে, চিকিংসকের। তহুগো লাখাকে আরোগ্য করিবেন এবং বাপাকে পথ্যাদি বারা প্রশান্ত করিব। রাখিবেন।

# ৰন্ধা ও ক্ষতরোগাধি কথম। বেগরোধাৎ ক্ষ্যাকৈৰ সংসাধিবনাশনাৎ। ত্রিধোষো স্বায়তে বস্মাগদো হেডুচতুউয়াৎ।।

ষক্ষার অরণনির্বাচন কর ব্রাহির বেগরোধ্য থাতুকর, আনিবিজ্
লাহন প্রকাশ, অনির্বাচন আহার এই কারণচতুক্তরে বারু পিথানি লোকএর প্রকৃতি হইরা বজারোদ উৎপাদন করে। বিশেষতঃ কর্মান্তের
রনবাহী নিরা সকল কর হইলে এবং অভিলয় প্রীনহবান যারা উল্লেখ্য
হইলে থাতু করপ্রান্ত হইবা বাব্য ভাষাতেই এই রোগ জড়িরা করে
করে বহুবাকে শুক্ করিয়া কেলে। বহুবাকে শুক্ করে বলিনাই
ক্লাকে লোব ও কর্ম রোগও মলিরা থাকে এক প্রক্তিক স্কল্প
রাজার এই পাড়া ক্ষিরাহিল বনিরা ইহা রাজ্যকা বার্তক আলিহিত্ব ক্র

বজার বজা- শকা জবিলে সাধারণতঃ করপদ স্থান করে, আছুই
ত শার্থ দেলে দাহ বোধ বহু এবং নর্মাণ হৈছে কর বিভাগন আহেছি
ক্রেনি কোন মতে কান, স্বর ও রক্তশিক এই তিন্দী বন্ধার সাধার্ত ক্রিন্দী

ুশিভজনিত বৰ্ষার স্বর্ত্ত প্রাণ, অভিনার ও রকাগণ, বাজনবৈত্তি বৰ্ষার অর্জন, প্রস্ন ও পার্থ সংকোচ, পুন এবং নকজনিত বৰ্ষায়ে সমতের গুৰুত, অনানিতে অকচি, বান ও কঠাতের এই নমত সক্ষেত্রি বৈশ্বার।

বজার অসাধ্যাদি কথন,—উল্লিখিও সক্ষণেয় যথ্যে যে কোমজন।
ক্ষণগুক্তই বউন্ না কেন, রোগী চুর্বাল ও মাৎস্থান বইলে চিকিপ্ন
ক্ষক ভাষা অসাধ্য বলিয়া জানিবেন। সকল প্রকার লক্ষণ দুক্তী বইলেক
মান লোগীর দেহ লবল ও মাংসমূজ থাকে, ভাষাকে চিকিৎসা কর্মান
মানি রোগীর দেহ লবল ও মাংসমূজ থাকে, ভাষাকে চিকিৎসা কর্মান
মানি পোরে। যে রোগী কীণ হইরাও অবিক ভোজন করে, বিশ্বান
মানি অভীলারগুড় জখনা যে রোগীর কোবে ও উনরে পোন ক্ষান
মানি বিদ্যাপ পারিভাগে করিবেন। যে রোগীর নেত্র বেড্রাবর্ধ ক্ষান
মানি বিদ্যাপ করে, অবঁচ ভখন ভূরিপারিয়াণে মুল নির্দ্তিক
মানি ক্ষানিবের আশা থাকে লা। যে রোগী লোভনীক
মানি ক্ষানিবের আশা থাকে লা। যে রোগী লোভনীক
মানি ক্ষান করে ক্ষান বা বারার কেরে অভিনেশে ক্ষান
মানি প্রবাহ বিদ্যাল করে ক্ষান বা বারার কেরে অভিনেশ্য বার্বাক প্রকার করে।
মানি প্রবাহ বিদ্যাল করে ক্ষান বা বার্বাকর, নেই বজালোগাই ক্রিক্র

্রানানাবেদ সভারোগ্যের সক্ষর — আধিক ত্রীনিবস্থা করিছে বিশ্বনি ক্রি, ভাষাতে দিল ও কোনে ধেলনা হয়, সক্ষরতানে বহু বিশ্বনি ইতিখানিত বন পার ঐ রেভের সাহিত স্বং শোলিত সংলয় আছে। এই স্নোক্ষে রোগীর দেহ পাও বর্ণ হয় এবং দিন দিল বাড কর্মানিত ক্রিত বাকে।

পোক হৈছু কর রোগ জান্তিকে বৈধুনজনিও করের যাবতীয় শক্ষ ভূঠ হর, কিন্তু শুক্তক্ষর হর যা এবং রোগীর অভ দিন দিশ শিবিজ্ঞ জান্ত হর এবং হুদর চিন্তার নিময় খাঁকে।

বান্ধকা হেছু কম রোগ জগিলে শরীর বিবর্গ হর, গুড় কাল করে।

ইক্তির শক্তির ছুগে হর, মনে উৎসাহ থাকে না, নের মুগ ও চক্ষুপ্রিব

ইবি, শরীরের গুকুর জন্মে, বুজির ছুগে হয়, বল বিমন্ত হয়, কোল কর্মকরণেই ক্ষমতা থাকে না, দেহ কাঁপিতে থাকে, অকচি লগে এবং ভর্ম
কাংলাপারে আঘাত করিলে যেরপ শব্দ হর, রোগীর অরও তর্মশ্ ইবৈ। থাকে।

আমিক শধ বাঁটিলেও ক্ররোগা জবে। তাহাতে রোগীর সুয়াধার। গুলাও মুখ শুরু হয়, শরীরের কোন ছান স্পর্ম করিলে সে স্পর্মশন্তি। অফুক্তব করিতে পারে না এবং করপদাদি চালনে অক্ষম ধ্যা।

অবিধ ব্যায়ামন্ত্ৰিত পোষ স্থামিনে প্ৰথামমন্ত্ৰিত পোৰের লক্ষণ থেবং উরংকত রোগে যে সকল লক্ষণ হইনা থাকে, তংগসূদার সূকী ব্যাঃ কিন্তু উরংকতে কত থাকে, ইহাতে ভাষা হয় না।

্রি- এতস্কিন অগরোগীর ওণ হইতে অমিক রক্ত করিত **হইলে, তথে** ুঅভাত বেদনা কমিলে এবং অভ্যত যাতনা হইলে শোষরোগ **তথে** ১ বি**রু** তাহা চিকিংসার অসাধ্য ।

## উক্তাক্ত রোগ ৷

রহৎ বলী সভরণবারা পাল হওলা, বলবান বাজির সহিত কুল বাবলাৰ অব্যেল সহিত গালন জ্ঞানবোল দুও আনে গালন বাবলান কুল বোটকানি জ্ঞানে ধরিলা নিঅহ করিতে বড় করা, নিজা, নারী কুল জ্ঞানি বারা সহলে শক্ষাক প্রহার করা, অধিক কার্ড্য এই বিশ্

ক্ষীপরোগীর বে দূর নিঃসরণ হয় তাহাতে বক্ত দিভিত থাকে। এবং রোগীর পায়া , পৃষ্ঠ ও কাটিতে বেছনা জন্মে।

উর্কেভাদির সাধাাসাধ্য কথন,—বশবান্ ম্যক্তির ছত অগ্নিষ্টে আৰচ তাহা অস্পদিনের হইলে, তল প লক্ষণিনিউ হইলে এবং মধ্যুমি না জানিলেও বৈল তাহাকে চিকিংসাধানা অস্থিত করিছে পারের। বদি উহা একবংসরের পীতা হব, তাহা হইলে চিকিংনাই করিলে যাপা গাকে, কিন্তু সম্প্র লক্ষণ প্রকাশিত হইলে তাহ চিকিংনাই নারি অসাধ্য জানিবে।

### हिक्स त्रांश।

মুহৰ্ণ, হৰ্ণায়, কৰেতি সৰলো যক্ত প্ৰীধাত্ৰাণি মুখানি বা কিপন্। স ঘোৰবানাশু হিনন্তাসূত্ৰ যত-ভতত হিক্ষতাভিধীয়তে বুধৈঃ।

্ষিকার অরপ নির্ব:— সমীরত উলানবালু সুবিত হইয়া মুখ্য বি কিবাহনে বহুৰ মীবাদিগতে পুথ ধারা বেন আনবর্ণ পুরাকী ক্ষুত্র গুলন করে, ভারাকেই ছিফা রোগ করে।

# अप्रिक्तिका नहीं कि प्रक्रिय है

্রিণিক্তির পালের উৎপত্তির কারণ,—বে সকল জব্য বিশ্বীত আক্রু প্রিক্তি, জ্ঞীনক্তির, কল্প, ক্লেক্তর, তাহা ভোজন করিলে, শীতল ছাঁলে সানীর পাল করিলে, জীতন বস্তু ভোজন করিলে, শীতল ছাঁলে আন ক্রিলে, নামাধিবারা দরীরন্যো গুলু প্রথিক বইলে, স্মাকিক ক্রুর্তির ও অধিক বারু লেবন করিলে, অধিক বাহ্যিত, ভারণহন ও শর্ম-লাবাইন করিলে, মুদ্র প্রীবাদির নেগা ধারণ করিলে এবং উপ্যান ক্রিলে হিলা ও খান কালের উৎপত্তি হব।

হিলার তেমকথন,—নাবু ককেবা অনুগত বইনা পঞ্চিথ হিকা ব্রুপায়ন করে, যথা,—অনুসা, যদলা, ক্সা, গতীয়া ও মহাহিকা।

হিলা উৎপত্তি হইবার পূর্বাবছা,—হিলা জবিবার অথ্যে কট ও বাদ্যালের ওকত, বননের ক্যাবর এবং কৃষ্ণির আটোপ অর্থাৎ উদর-স্থাে গুরু গুরু স্থাক্ষর।

ক্ষমা হিকার সক্ষ্,—ত্তিক ক্ষতেজন ও অধিক জনাদি পান ক্ষিনে জুক বায়ু উদ্ব্যামী হইবা বে হিকা কথাৰ, ত হাকেই প্রস্থা হিকাবনে।

ব্যকা হিৰার লক্ষ্য —বহুক্ষণেয় পর প্রতিবারে ছই হইটা করিয়া হোটা দিলে তদ্যারা বে হিলা ক্ষে, তাহাকে যমলা হিলা ক্ষে। প্র বেটা দ্বারে শিরু ও প্রবিধা কন্দ্যিত হয়।

কুলা বিকার সক্ষ্য-বিকাশের পার অগ্পানার বেগরারা কঠ ভূ বক্ষাহল হইতে শব্দ করিয়া বে বিকা উৎপদ হর, ভারাকেই কুলা বিকাবনে।

গঞ্জীয়া বিষার সক্ষণ,—নাডিবেশ ছবতে গঞ্জীর প্রস্থাক্ত প্রদেশ উপত্রববিশিষ্ট যে ভবনেক হিকা জন্তে, ভাছাকে গঞ্জীয়া হিচা করে।

মধাৰিকার লকণ্য- নৰ্থবান সকল পীডিত করিয়া এবং সমুদার পাঁক কশিত করিয়া যে হিলা কথে। তাহারই নাম গহাহিকা। (ব্যক্তি ইংল ও বঙ্গ-কৈ মুক্তিয়া বলে।)

# ALMA A

### হিমান শাখালায় কথন।

श्रीताश्वर निमास्य वना स्वरः ।
श्रीताश्वर नामास्य वना निजाः ।
श्रीताश्वर नामास्य वना निजाः ।
श्रीताश्वर को विकास का विकास ।
श्रीताश्वर को विकास का विकास ।
श्रीताश्वर को विकास का विकास ।
श्रीताश्वर को विकास विकास का विकास ।
श्रीताश्वर को विकास विकास का ।
श्रीताश्वर को विकास विकास विकास ।
श्रीताश्वर का विकास ।
श्रीताश्वर का विकास ।
श्रीताश्वर विकास ।
श्रीताश्वर का विकास ।
श्रीताश्वर का विकास ।
श्रीताश्वर विकास ।

विकास नंदय यादान (कर प्याकृष्टिक दस, पृष्टि केर्क् निरंक दिस्ति हम्।

स्त्र, प्रद्र यादान प्रकृष्टिकाल, त्वर कीण दस के नर्करा दिकान दान

स्त्रेत्रा थात्क, त्वरे त्यांगीत दिका अन्य श्रक्षिय दिकान गर्या त्यांका

स्त्र प्रकृषि शक्कीता क वर्षादिका विकिश्मात मांगाकील। प्रदेश के कीण त्यां त्यांका का का स्त्र व्याक्ति स्था त्यांका स्था त्यांका के प्रवादिका नामक का स्त्र व्याक्ति स्था त्यांका के प्रवाद व्याक्ति का स्वाद व्याक्ति स्था त्यांका के प्रवाद व्याक्ति व्या

# "Michigan will be the



### चांत्रद्रांश ।

ৰথা স্রোতাংনি সংক্রথা মাক্রতঃ ককপ্র্যকঃ । বিশ্বপ্রকৃতি সংক্রক্রথা খালাম করোতি সং । উদ্বয়মানবাতো যঃ শক্ষক; খিতো নরঃ । উল্লেখসিতি সংক্রমো মন্তর্যত ইবাসিলং ॥

খাল বোদের উৎপতি নিকশণ ও কনপ্রিশ্বন কক্ষণান বাব বথম আলাদিখালী আাত নকলকে সংকল করিলা বিপ্রণাদী ছওড় সম্মতিঃ প্রখত হবং তথনই খাসরোগ জন্মে। উদ্বহান অর্থাৎ উর্ভু-ভাগে দীব্যান বাবু স্থাল হইলে সেই বাজি কাত্র ইইবা বল্প ক শ্বানে মান্ত স্থাইনিঃখাল প্রিত গি করে। তাথাকেই খাসরোগ বাহিশ্যনি করে।

খাসরোগ অখিনার পূর্বাপকণ,—খাস উৎপদ হইবার পূর্বো খব-বাধা, খুল, আগ্যান, (বেদনায়ক উদরক্ষীতি), আনাহ, (মূল পুত্রীব রোব,) মুধবৈরক ও পলাটে বেদন এই সকল লক্ষণ দৃষ্ঠ হব।

খাসের প্রকাবভেদ্য—খাস পঞ্জিধ , -মক , উর্কু হিন্ন ওমক ও ক্ষু নার্হইতে মহা, উর্গু জ ক্ষু , কফ ন ব , এ পিত হইতে হিন্ন প্রথম গোহা হইতে ভদক খাদেন্য উৎপত্তি হয়।

শহাধানের নকণ,---সহাধানে বোগীৰ জান বিজ্ঞান সকলই নক ছাঃ কোঁচৰ বিজ্ঞান্ত হব সুখ ও চক্ বিভৃতিপ্ৰাপ্ত হবং মনসুত্ৰ কথা ছাইনা পাঁকেঃ বোগীর বাকাপ্রয়োগে ও দুবা শক্তি থাকে নাং রোগী কোঁ দীনজানে নিংখান শারিত্যাগ করে। এই রোগীকে কাটিয়ে বিশ্বাপায় হইতে হয়।

উর্থানের পক্ণ,—বে ব্যক্তি বছদিন বাবং উর্থান পরি-ভাগ করে, সে কথানা এছণে সমর্থ হব না, ভাছার র্থনোত ককে নায়ত থাকাব বাবু জুল হইলা ভাছার চকু বিচলিত হইলা বাকে, সে বৃদ্ধি উর্গানী হব, হতেরাং ভাছার চকু বিচলিত হইলা বাকে, সে ক্লিক্সেন্দ্র হইলা চর্কিকে নিরীকণ করে। সে নে মধ্যক্ত ও ধেক-ক্লিক্সিন, তাছার মুখ ৪৯ হইলা মাধ্য ক্লেন্ত উর্থাল ক্রেঞ্ অকুপ্রিত বইলে রোগীয় অধ্যাধা নেরোগ বইরা বার। যে ব্যক্তি বোহগ্রন্ত ও গুনানিবিশিক এই উর্দ্ধবাস ভাষাকে ব্যাদয়ে কেরণ করে।

হিরখানের পক্ষা- হিরখান ক্রনে নেই রোগী বাদিরা বাদির্ট্র বড়পুর নাথা বলের সহিত থান পরিত্যাগ করে, কোন কোন কর্মান্ত্রী অভ্যন্ত বর্গান্তিক বেক্ষা গোর কইকে খান ত্যাগ করে যা। এই রোগী আনার, বর্ত, ঘূর্যো, বভিদাহ, সকলনেরতা, ক্ষীগতা, ওকচক্র রক্ষা-বর্তা, খনের চাঞ্চল্যান বুবের শুহুতা, বৈবর্গা, প্রসাপ এই সকল লক্ষানুক্ত হইরা থাকে। এই খননে রোগীর পদ শিবিল ইইরা ক্ষিত্র ক্ষারাং লে প্রাণবিস্কলি করে।

ভৰকৰালের লক্ষ্প-কামু বিশ্রীভভাবে শ্লেণ্ড**সমূহে গ্ৰম করিটে** গুঁ শির 🗢 ঞীবাদেশ আঞ্জর করে। তাছাতে কক কুশিও হর , কুডবাই **ণীনস** ভূম্মি প্রফুডি জন্মে। নেই নগৰ দেখাবারা আক্ষম হওরাতে নবেগে **স্তুর**ু ভূর্ শব্দ করিয়া ভদৰে ক্লেশকর খাদ জড়িয়া থাকে । **ইবাড়েন্ট্ ভাকথান্** কৰে। অন্ধনার দর্শনে ধেৰণ উদ্বেগ বোধ হয়, এই বোগে রোসীঞ্<sup>ট</sup> ভঙ্কণ ৰোধ হইণা থাকে। কোন কাৰ্যাকয়িতে সামূৰ্থ্য থাকে মা<sub>ণ</sub> কা**লিডে** কালিতে ৰেগে যোৰ প্ৰাৰ্থ হইতে হয<sup>়</sup>৷ ভদ্ধ কালি হওয়াতে ভাছার *ব*ঞ্চ ক্ষ্ট বোৰ হয়, কিন্তু কালিতে কালিতে কৃষ্ণ উঠিলে কিঞ্ছিৎকাল জপেক্ষ্ ক্লত আছাবৌধ করিবা ধাকে। কথা কাছতে রোগীর কট হর এখঞ্চ কটে কণ্ডু জনে। শৰন করিতে ৰোগীধ ক**ট** বোৰ হয**় শরৰ করিলে** পার্ষে বেদনা ক্রছে। উপবেশন সন্ধিলে রোগীর কিঞ্চিৎ আছে থেকি बरेंब्रा बंद्धि । अहे द्वारमं द्वामी केंक्सा श्रिव दगव करत । अहे द्वारम् मन्त्रमं न्हील दन्न, ममार्टे रचन विर्शं उ दन्न, कलम्बर राजना सरहा, पूर् শোৰ হয়, মুক্তুকি খালবেগ কৰে, ছঙীর পূর্তে আরোক্য ক্ষাট্ট বেরশ দেহ বিচমিত হয়, এই হোগেও সেইবপ গাঞ্জাসমা আঁছা থাকেৰ্ব সেপ দৰ্শনে এবং শীতনক্ৰব্য ও পুৰ্বাদিস্থিত ৰাষুদ্ৰবৰেৰ্বু রোগের র্ম্বি হর। এই খাস যাপা, কিছু অল্পদিনের *হইলে রা্বা*্র্ট

তৰকৰালে শীড়িত ব্যক্তি শ্বর ও স্ক্রিরার আজার জান্তর্জী । ক্লোহাকে প্রতৰক শাস কৰে। ইহাকে সভ্যকশাসও বলে। সালাগ্রেই ক্লোশারেন, অলীর্ক, বংলাবিদ্য, সুক্রপুরীবের বেগবারণ, এই রক্ষ্ 12.0

ক্ষিত্য এই খাস কৰে। সক্ষায়ে এই খালী য়বিবাক বৃদ্ধ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্য বাস লাভি মইয়া বাবে।

কু ব্ৰয়দের লকণ - কুক্সবা ক্লেখন করিলে এবং অভিনিক্ত পানি-কুল করিলে কোটছিড স্টে, পৃথিত হইনা উৰ্ধানী হয় এবং ভাষাকেই কুল খাস স্কঃখা ইহাতে অন্প অল্প নকণ বাত্ত প্রকাশ পানু ই অনুসাৰ খালের বাতি ইহা তার্শ কেপ্থান নহে।

### হিন্ধা খালের মারকত্বকথম ৷

কামং প্রাণহরা রোগা বহবো । তু তে তথা। বঁথা খাসশ্চ হিল্লা চ হরতঃ প্রাণমাশু ৮।।

বিকাও খানে যেরপ জড়িরে জীবন বিনিফ করে, অন্যান্য আঁণ-ক্লিকেরক রোগ ভাতৃশ আও বারাত্মক নতে।

বরতেদরোগ।

শস্তুচ্চতাৰণ বিবাধ্যয়নাতিবাত-শৃত্যুষ্ঠণঃ প্ৰকৃপিতাঃ প্ৰনাদয়ন্ত। ইয়াতঃসু তে বরবেবযু গভাঃ প্ৰতিভাগ শুক্তঃ মুৰ্থং ভৰতি চাপি হি ষড় বিধঃ সঃ । শুক্তাঃশ্ৰিঃ পৃথক্ সংব্যুদ্ধিনা চ ক্ষেত্ৰ চ ॥

ক্রিকেন্দ্রকারণ ও শরপ নির্ণান্ত উল্লেখনে নাক্যপ্রনোগ।
ক্রিকেন্দ্র, ইলেন্দ্রের অধারন, কঠে সগুড়াদিবার। প্রহার, এই সকল
ক্রিকেন্দ্রির বাজানি লোহসকল ক্রে হইলা অরবাহী জ্রোতসমূহে ক্রিকে ক্রিকেন্দ্রির অন্তর বে নির্নতি করে, তাহাকেই অরক্তম রোগ করে।
ক্রিকেন্ট্রের রোগের কেদকধন, এই রোগ হয় প্রকার, নাড্যানিক্র বাভিন্নবিত অনুষ্ঠেবের সক্ষণ-—বাভ্যানিত অনুষ্ঠের কাইকে কাইকে কেন্দ্র ইসন, মুম্ন ও প্রীয়ে ভ্রমবর্ণতা প্রাক্ত ক্রিয় ববং, করু গর্ভতের পুল্য কর্মনা ক্রিয়া পালে।

শি অঙ্গনিত শারংজদের শক্ষা- শিভজবিত শ্রুডেনে নেরাস্ক্রবর্থন, বিজ্ঞা শীরবর্ণতা প্রায় হয় এবং বাকা প্রয়োগ সময়ে গলনেশে সাই ক্ষে।

্ষ্ণকল্প সরক্ষেদের প্রকাশ-শেষজ্ঞ। সরক্ষেত্র বঠ কক্ষে স্কর্মার বাঁকে, রোগীর বর নিলাভাগে বন্ধ হবলা বার, কিন্তু বিষ্ণেশ স্পান্থ স্থানিয়াবে কথ্যকৃত্তি পারে।

ক্ষিদোৰজনিও অনুভেলের লক্ষ্য, —হাত্য পিত ও ক্ষজনিত অবভেৱে থে যে অক্ষা হয়, সাহিম্যত অব্যত্তদেও তৎসম্বর্ত ক্ষ্যা, মৃত্তী কইয়া গাকে এই অনুভেদ চিকিৎসায় প্রশাসিত হয় না।

শাল অর্ডেবের লক্ষা, - ব তু কর মইলে বে অর্থ শালে। তার্থ-কেই ক্ষাল অব্যান করে। এই রোগে বালা প্রয়োগের করে করে । বেদমা বাব ধর, রোগী মাশাবার কট কার্যার পাতে এবং বঠ মইতে। বুল নির্গত মইলে যেরপ লোগ হয়, রোগারিক ভ্রুণ বোধ মইলা থাকে। এই রোগ ভিকিৎসার অসাধা।

বেদেশানিও শরাক্তদের লক্ষণ,— বেদোজনিও অর্জের হইলে রোগীরী ক্ষণা পরিধার বৃথিতে পার্ডা বাছ ন । স্থানেশ শ্রেম্বা ও বেদ ধরিষ্টা মাড়িও বাজে এবং রোগী ভূঞার্য হয়।

द्रुटटएट्ड भरोशक्षन ।

ক্ষীণস্য হছস্য ক্ষুশস্য বাপি।
ছিনাবিতো ৰক্ষ সংহাপঞ্চাতঃ।
দেহৰিনঃ সৰ্ব্বসমূহৰক্ষ
ৰহাময়ো ধোন সাসিভিয়েতি ॥

বে বান্ধি কীণ, ইন্ধা কৰা ভাষাত্ৰ বহুদিবের অর্ডের অধনা হান্ধিইট্ট্র পান্ধির বেই অর্ডের জবিরা হুইবা বানে, ভাষা হুইনে ভাষা ছুল্লিক্সিক্স ট্ ক্রিনেবিক্স অর্ডের ও বহুদেবেরিক্স ম্পুন্রের জন্মন্তের অনুধ্যা।

# পাভুরোগ।

পাঙ্র অৰণ নির্গন্ধে রোগে দরীরছ চর্ম শাঙ্বর্ধইরা বাঞ্ ুক্রাহাকেই পাঙ্রোগ কছে।

্তি পাত্রাধের কারণ,—অগ্ন, সংগান্ত, তীক্ষ সন্ত ও সৃত্তিকী ভক্ষৰ টুডারিলে, অধিক পারিল্য করিলে, দিখনে অধিক নিজিত ঘইলে বাঙাইদু দেখি ুসক্ষ অসুপিতি ছইবা এই রোগ উৎপাদান করিলা থাকে।

ি পাঞ্রোগ উৎপথিয় পূর্বাবছা,—পাঞ্রোগ জাখিবার আতা শরীর অসবর হর, রখ হইতে গুনঃ পূনং নিউইবন নির্গত হইতে থাকে,নেজগোলকে লোখ কৰে, যদ ও মূত্র পীতবর্গ হয়, অজীর্ণ জায়ে এবং দেহরুর ঈষধা বিদীর্গ হইবা বাব।

পাঞ্**রেটি**ার ভেদকখন, –পাঞ্পঞ্জির ৮—যাতক **পিডজ, রেখজ**, বিদোশ*স* ও স্বিকারকণজ।

কাওজনিত পাঞ্র নক্ষণ,--বাওজনিত পাঞ্রোগে মদ্য মৃত্য, নেত্র। মুখ ও চর্ম হয় বা অফশবর্শ এবং কক্ষ হয়, রোগীর স্থানিদেশে বন্ধনিত্ব পীয় জবে এবং কলা, তমি প্রফৃতি দক্ষণ দৃষ্ট হয়।

শিক্তনিত পাঙ্র লকণ,— নাধার পিডজনিত পাঙ্রোগ, জক্তে।
•উড়ার এদকে দ্বন বল ও চর্ম পীত্রণ হর এবং রোগী ভূমা, স্থানা,
শ্বির ও মনতেনে অবিভায় হয়।

শি ককল শাঙ্র লকণ, শেষৰ পাঙ্রোগে রোগীর থেছে, মুছ, মন্দ্র ড চর্ম কেন্দ্র হয় এবং আদস্য, নিজাসুরের ন্যাব গু বিন, লোগ, পরীরের্ শুক্ত এই সকল সকল দেখা বার।

বিদোৰক পাতুর সকণ, —ডুকা, বযি, অকচি, বনিবোধ, স্বরু, কীগজা<sub>ব।</sub> ক্লান্তিন টুক্রিনের বিকলতা, এই সকল বিদোধক্ষতিত পাতুর চিত্রা <u>এই ।</u> পাতু অভিকিৎসাঃ

বৃষ্টিকাতক্পৰ পাত্র লক্ষ্য — বৃত্তিকাতক্ষ্য করিলে যে পাঙ্ ধুরে বিতাতক্ষ্য করিলে যাবাদিনা বিত্তিকাতক্ষ্য পাত্তকে । বৃত্তিকাতক্ষ্য করিলে যাবাদিনা বিত্তিকাত ক্ষান্ত বিকাশ করিলে অবস্থা কুলি এবং এই রোগ করে। বৃত্তিকার ক্ষান্ত ক্ষান্ত

ৰ্জনং বৈত্ৰ কৰ্ম একৃতি ইন্দ্ৰিকাৰ বিন্ধী ব্যাহইয়া পড়ে ও অন্তিনান্য সংখ্য উন্তৰ্ভুক্তিয়া ভেক্ত কায়লে শিক ক্যাগ্ৰহতিকা ভৌজন কৰিলে বায়ু এই কৃত্যু মুক্তিয়া ভোজন কয়িলে দেখা দুশিক ঘইয়া বাকে।

পাত র জনাব্য কথন.—পাত রোগে যদি রোগী মেখানিজিত ইন্ট্রিক, জনপারিমিত বল পারতাগ করে, তাহা হলৈ নেই রোগীর জীবন বিষ্ট্রত থবং বে রোগী পাও জনহার লোগে আজার হলৈ বাহার সারাদ্ধিক পাত করে করে তাহার সারাদ্ধিক পাত করে করে, তাহার সেই রোগ চিকিৎসার আরোগ্য বছ করি পাও রোগী ভূকা বিষ ও মৃত্য বাবা আজার হলৈ, চিক্টারি মাধিকে সেই পাও জনে তরুতা পাও ইইনে সেই রোগী মৃত্যুর্গে পার্কিক বা বে রোগীর নেত, সম্ভ ও নথ পাও বর্গ হব এক সমুধার রব্যক পাও বর্গ গেলো, তাহার জীবন স্কুরে করণত জানিবে। বে রোগীর পার বাই করি সারাদ্ধিক পার করিব পার করিব। বা রোগীর পার বাই করিব পার করিব। বা রোগীর পার করিব। বা রোগীর বাই করিব পার করিব। বা রোগী জানস্বান ও নোগাতিত্ত এবং গ্র ক অতিসারে জাঞাক। তাহারে জালাক।

### कामनाद्याभ ।

পাও রোগে যদি পিরস্থানির বন্ধ দেবন করা বার, ভাষা । বিত করি লাকার উৎপত্তি করে। এই কেই । এই কেই বারন করি বারন করে। এই কেই বারন করে বারন করে। এই কেইবারনার করি বারন করে। তেনের নারে । বারনার করি বারনার করি বারনার করি বারনার বারনার

# चार्र्सियाक महीकिन्द्रेश देखे र

শাধুৰা বল বুল ও বাদ কৰে। ব্ৰজবৰ্ণ বয় এবং এদি হোগীয় বোৰ কলে। ভাষ্ঠ ক্লিক্লৈ নেই হোগ চিকিংসায় অনাণ্য ।

### बुखकामना ।

কাষণা বহুদিনের হইলেই ভাষাকে কৃত্রকাষণা কৰে। কৃত্রকাষণা পুলিক্থেনা। পুত্রকাষণার যদি রোগী খান ও কানদারা ক্লিউ বরং প্রদুক্তের হইতে থ'কে এবং জুর, ক্লান্তি, অফচি, বমি এই সকল লক্ষ্ণ বেখা ভার, ভাষা হইলে নেই রোগী সৃত্যবুধে পতিত হইবা বাকে।

# হলীশক রোগ:

পাওশিকজনিত পাতৃরোগে দদি রোগী মুর্মল, উৎসাহধীন, হরিও, শাবি বা পাওবর্ণ, তক্রণ, অগ্নিয়াল্য ও স্বরমূক এবং সাহ ও ভূমার্স্ত হয়, যদি তাহার ব্রীসহবানে অভিনাহ ন। থাকে, তাহা হইলে নেই পাতৃ-কেই হনীকে রোগ করে।

### রক্রণিভরোগ।

শ্বন্ধানিক বিষয় প্রত্যালিক বিষয় কর্মান করে বাংগা চক্ষু, কর্মানিকা, মুখ্য অধিক কি. কালজেনে দেহত থাবতীর রোমত্রণ কিলা রজান্তিকার কালজেনে করে থাবতীর রোমত্রণ কিলা রজান্তিকার কালজেনে করে আধিক পার্ত্তিকার করে বাংলাক প্রথম করে আভিরক্ত নৈত্বন পোক, পথপর্যাটন, লবন, উক্ত, ক্রিয়া, ক্রুই, কার এবং তীক্ষ বন্ধ নেবন, এই নকল কার্নে সিল্ল ক্রুপিড়া ক্রিয়া পোণিতের সহিত উর্জ্ব করে বাংলাকিকে গ্রথম করে এবং ক্রিয়া পোণিতের সহিত উর্জ্ব করে বাংলাকিকে গ্রথম করে এবং ক্রিয়া ক্রিয়

রক্ষণিতের পূর্বরূপ্ত-প্রকণিত ক্ষমিবার পূর্বে বিঃবাদে পেহিন্দ্রনু বিরুদ্ধিত বাং বনি ও পৈতাবেবনে অভিনাধ বন, কর্মদেশ হাতে এ ক্রিট

নিৰ্মাত ছইলে কেৱণ কৰু বোধ হয়। ভক্ৰণ ক্লেখ বোধ হইয়া বাকে এবটয় শলীয় ক্ষমন হয়।

শিক্ষিণিডেবে রজশিতের সক্ষণ —শিকাবিকা রক্তপিত আহিল কৈ বজকার বাব কি কালিক। কালিক।

রক্তশিতের উর্দ্ধ অধোগানির কথন,—বাতসংগ্রিক রক্তশিত প্রধোগ্ হর অর্থাৎ গুরুদ্বিরা রক্তশাব বয় । ক্লাসুগত রক্তশিত উর্দ্ধুণ অর্থাত্ব চুম্মর্থাকি দিরা করিত হয় এবং যাতক্কাসুগত হইলে উর্দ্ধুণ ও মধোন গানী উত্তর প্রকারই হইবা খাকে।

রক্তপিকের উপদর্গ — কৃষ্ণা, স্বাধ্য মন্তত্তা, মনতেক, খাদ্য, কান, বন্ধু-ছীনতা, বন্ধি, অধৈর্যা, লাব্য মৃদ্ধা, লারীরের পাঞ্জ, মন্তব্দনাপ, মুর্বাধ্য নিন্দ্রীবন্ধ করে ক্ষতি, অন্তবি, এই সক্ষ রক্তপিতের উপদর্গ। এডব্রিয় বন্ধ্যুপ্ত এরপ বেদনা ক্ষতে বে, এ বেদনার সহিত অন্য কোনরপ বেদনার একা ছাল এরপ বেদনা ক্ষতে বে, এ বেদনার সহিত অন্য কোনরপ বেদনার একা ছাল বা।

রক্তপিতের অনাধ্যাদি কথন,—বে রক্তপিতে আকাপ ও বাবতীর পদার্থ রক্তবর্গ দুটিগোচর হব, তাহা অনাব্য । যাহার রক্ত ববি হর, বাহাল চলু লোহিত হয়, তাহার রোগ অনাবাধ বাহার রক্তপিত মাধনতাত সংক্রিক্তর ভূলা, কিছা কৃত্তির জনের ন্যায়, অথবা কর্মযুক্ত বারিবং, বেরজুক্ত্তর পূর্বভূল্য, বহুৎপিতের ন্যায়, পরিপক জাবের তুল্য, রক্তবর্গ, নীক্ত্র ক্রিক্ত্র অথবা ইল্রবহুর ন্যার বর্ণবিশিক্ত, সেই রোগী চিকিৎসক্রে ক্রিক্তির বাহার নারিবলিক, সেই রোগী চিকিৎসক্রে ক্রেক্তির বাহার ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক্রেক্তির ক্রিক্তির ক

# "आकृत्साताङ नहा<sub>।</sub> स्कृति

ক্লিলেঁ ভাষা আছোগা হইলা থাকে। একৰোবাছত **রউলিও** কাৰ্য্য প্রবর্ধ ক্লিলোবজাত হবলৈ বাশ্যা

্ৰ সাধারণতা উদ্ধিলা রক্তশিক সাধ্যন আৰোগাৰী সক্তশিক স্থাপীয় এবং, উক্তরপর্বশালী সক্তশিক অসাধ্য ।

# হর্দি (বৰি) রোগ।

ছ্ৰিন্ন অন্তৰ্গ কথন ও উৎপত্তির কারণ।—গতানি ধোৰতার জুন্ধ ছট্ডা শীবের মুখ আন্তত করও বেদনা বারো ভালাবে ক্লো আদান করে। এই 'কলা শ্বীবেক ছবিন্দোগ কছে! অধিক ভর্তন, অধিক বিশ্বন অধিক কবণমুখ্য ও শ্বপ্রির এবা ভালান অপারিখিত আধারন অহিতকর এবা ভালান ভ্রমন আন ক্রিবিন শীল আধার করা।এই সকল কারণে বমিরোগ জন্মে। এভড্ডিম বিশ্বভ লাবা দর্শন করিলে এবং মুণাজনক এরা ভালান করিলেও ছবিন্ধ জন্মিরা থাকে।

ছর্মির পূর্মারণ,—ছর্মি জালিবার পূর্বের আরে ও পানীর বস্তুতে আকৃষ্টি আন, মুখ বইতে লবপযুক্ত জল নির্গত হর, ব্যব্দোধ হইবা থাকে এবং উদ্ধান্ত্র বন্ধ হয়।

বাজে চ্র্মির সক্ষণ,—বন্দ, পার্থা, নাজি, মন্তক প্রভৃতি স্থানে বেছল। টুম্বের শুহতা অনুভেদ্ধ এই সক্ষম সক্ষণ থাতক চ্রমিতে প্রকাশ পার এবং মে বনি হয়, ভাষাতে বেন ক্যার রুম খিলিড় খাড়ক ও উহা উক্স।

শিক্তৰ ছৰ্মির লক্ষ্য,—তৃষ্ণা, যুক্ষ্য, মুখ্যের শুহতা, লিব্রাসকাপ, ডাকু-দাই, গলাকাক, অম ও অক্ষয়ের দর্শন, এই সকল শ্বিতকানিত ছ্র্মির স্তুক্ষ্য। ইয়াতে বে ব্যা হয়, ডাহা উষ্ণ, ডিক্লরসমুক্ত এবং শ্বীত, ছ্রিড ও ক্ষ্ম-মিজিত রক্তবর্ধ।

প্রেমন ছবির লক্ষ্য —বিয়া। তহা। অকরি দেকের ওক্ষা, মুরুপ্র ইয়ুস্থ ও কক্ষিত্রিত মুখ্জাব এই সকল ক্ষম ছবির লক্ষ্য। ইয়াতে হে খুখি ক্ষা, তাহা বিশ্ব, যায়, মারুর রাবহিনিত ও খেতবর্গ। ইয়াতে পুর্নির ক্রেনি ইয়াবাঞ্ছলা থাকে।

জ্বিদানক্ষতিত ছর্জির লক্ষ্য, ভ্রকা, দাহ, বোহ, খাস, খাঞ্চি জুঁই ক্রিটি জ্বান্ত বেহুবা এই সকল তিলোক ছর্মির লক্ষ্য। ইহাতে বে বিশ্ব স্থিতি

# 一

ুজাতা সংগাজ ধাৰ্মৰা অনু য়লাক্ষিক, নীসকৰ সাক্ষা ধ্যোপিতবৰ্ণ, উক্ষা ুৰ্বাস্থ্য ।

আগঞ্জাছবিরসকণ,—আগন্তক ছার্মতে উল্লিখিত বাডাদিকবিত ছার্মিট্ট লক্ষণ মুক্ট বন, এই ছার্মি পাঁচ প্রকার , বধা —বীতংসজ, (অর্থাং ক্রিট্টুট্ট রুপন করিলে বাছা লক্ষে), দৌজনজ (অর্থাং গ্রভাবছার বে ছার্মি জ্বার্ম) ক্রমান্ত্রক্ত (অর্থাং অবভাসে হারা উৎপন্ত) ক্রিমিজ ও অন্তীর্গল।

ক্রিমিজ ছর্মির সক্ষা — ক্রোনে যে সকল সক্ষা হইরা থাকে ক্রিমিজু ছর্মিতেও সেই সেই সক্ষা দৃষ্ট হয় এবং এই ছর্মিতে বয়নেজা অত্যন্ত খ্রীষ্ট্র পার।

হর্দির অসাধ্য কর্মন,—কীণ ব্যক্তি এই রোগাজান্ত হইনা বলি পোর্টিক্ট ও পূঁৰবৃক্ত বলি করে এবং সমুরপুক্তে যে রভাকার করু থাকে, ভাহাব্র ক্ষেপ বর্গ ঐ বনিতে তক্রপ বর্গ দৃষ্ট হর এবং ঐ রোগে উপদর্গ বাকে, ভাষা ঘটনে নেই রোগ চিকিৎসার অসাধ্য , কিন্তু উপদর্গ না বাকিন্তে আরোগা হইতে পারে :

### ज्याताभ ।

কৃষার অবপাও কারণ নির্ণর,—উপথাস, ক্রোধপ্রকাশ, কটু ও আছু রবা জন্ম এই সকল কারণে পিত হবি প্রাও কট্লে ঐ পিত জন পরিষ্ণ ও মুর্মানতাবারা বাতের সহিত হুপিত হইরা উর্দ্দৃদ্ধিক প্রথম করে। পরস্কুত্র ঐ শিক্ত কার্ প্রভৃতিতে গগন পূর্মাক ভূকা উৎপাদন করে। পরস্কুত্র আকক্তকশক রসজনবাহী , নিরাসকলকে দুবিত করিলেও উৎপাদ্ধ হয়।

ভূকার তেদ কথন;—ভূকা সপ্তবিধ ;—বাভক্ত, শিক্ষক, সেমক; ক্ষাম্যু, স্থানক ও সমজ।

বাজন কৃষয়ে লক্ষণ — মুখনালিয়া, সুখলোষ, সমাটের এক প্<sup>তি</sup> পুশুক্ষা বিহানেক্যা মুখবৈদ্যান্তাভন কৃষ্যায় এই সকল লক্ষ্য প্রকাশি<del>নী</del>

শিক্তম ভ্ৰায় সক্ষা-সাহ, বৃদ্ধা, এলাপ, অত্যে আমিছাং ট্রিইডা, বৃষ্ণের কটুড় বেহতাপ, শৈত্য নেবনে ইন্সা, এই প্ৰকাশ বিশ্বিত হাছি পীত্ৰপূৰ্ব পাইডাৰি ক্লি

# MINTERIOR SETTING

ক্ষমত ভূজার সক্ষণঃ—বিজ্ঞা, বেহের গুক্তঃ মূখেরা মন্ত্রিড়াঃ এই প্রকল কুমক ভূজার চিয় । এই গোগে রোগী অতি ক্রশ মুইরা পড়ে।

ক্তর ভ্যার নকণ,—কত ব্যক্তির বেদনা ও রক্তকরণ বৃত্যু 💷 👳 জ্বা করে, ভাষারই নাম কতল ভূকা।

ক্ষান্ত ত্কার দক্ষণ —রসক্ষজন্য যে তৃকা হর, ভাহাকে ক্ষান্ত তৃকা হলে, ইহাকে ধেহ কেহ সামিপাতিক তৃকাও বলিয়া থাকেন। এই রোগো শ্লোধা কি বিবলে, কি নিখাভাগে, প্রঃ প্রঃ ক্রদপান করে। তঁথাপি ভাহার আছাবোধ হর না।

আমল তৃকার লকণ,—আমল তৃকায় করল তৃকার নকণ প্রকাশ পার এবং বক্তপ্রলে বেদনা, মুখ হুইতে প্রেক্ষানির্গন, দেছের অবসমতা এই সকল ক্ষিত্রত দেখা বায়।

আরম্ভ তৃকার লক্ষণঃ—আহারের পরকংগই অরম তৃকা জয়ে। ইহাকেই জন্তোন্তব তৃকা করে। কটু, অবু, ও এক বর তক্ষণ করিলেই ইহার উবশক্তি হয়।

ভুঞার অসাধ্যকধন,—ফ্লান্তিঃ বেছিং অরের জীগতা, মুখলোবং গল-জীয়তা, তালুলোবং এই সফল উপত্রেষ হইলে সেই ভৃক্তা অসাধ্য। জ্জার্জ ক্লোগী খাসকাস্যাদি ঘারা পীডিডঃ জ্বার্ত্ত, হোহার্ত ও কুল হইলে ও বাদ জ্বলৈ সেই রোগী লমনসদমে গ্রেছান করে।

### स्ट्रिंशी ।

সাইরোগের ভেদ কথন,--দাই সাত্রপ্রবার ,--সম্পানক্ষিত, রঞ্চ শ্রীমত, শিরজনিত, তৃফারোধজনিত, রকপূর্ণ কোর্ডক্ষরিত, ধাতুক্ষরজনিত ক্লী স্থাভিয়াতজনিত।

বাহের দক্ষণ — বছপান করিলে বে বাহ জ্বাছে, তাহাকেই বছপানজ্বিজ্ঞ থাই বলে। সভ্যপান করিলে পিডতের অন্তান্ত পূথিত হইরা বাছ। সেই বুবিত তেল পিড ও রক্তরারা র্জিপ্রাও হইলেই ব্রীর্ভ চর্বে বাছ উপস্থিত হইরা থাকে। দেহের শোশিভরাশি দ্বিত হইরা বে বাহ উপস্থিত করে। করিল রক্তর্নিত দাই করে। এই রোগে শরীর উক্ত হর, পিগালা, মেহে ও বি পেবিয়াই ইক্ত করে। প্রথমিক ইক্ত করে। বিহুলি বিহুলি বিশ্ব করে। এই রোগে শরীর উক্ত হর, পিগালা, মেহে ও

আহিবারা হয় হলে। বেরপ বার্তনা বোধ বর তক্রপ বার্তনা অনুষ্ঠ বইছে। পিছবারে যে বা কালপ বহঁরা বাকে। পিরকানিত কাবেও নেই কেই শক্তন মুক্তী হয়। তৃথার লয়র কালানে বা করিলে লরীরছ তরল বাহুত্ব পর বাং তাবাতেই লেহের বালে ও বংগ্য লাহ কারিরা থাকে, ইহারের পুঞ্চারোক্ষমিত লাহ করে। এই রোগে তাবু, গলনেল বা একার পুঞ্চারাক্ষমিত লাহ করে। এই রোগে তাবু, গলনেল বা একারি, বার্রা আবাত প্রাপ্ত করিলে আনাশরাদি লেহের মন্ত্রগত ব্যাসকর্ম পারিপ্রিত হর, তাহাতে যে ভীবণাবাহ করে। তাহারেই রক্তপুর্ন বোর্তনা বাহার করে। রসাদি থারু ক্ষরপথ বহুলে যে দাব করে। তাহার বার্বা বাকুক্ষমিত লাহ। পিশাসা, যেক, অবক্ষমিত গ্রহাত এই দাহের চিত্র বি

### अरम्बरत्रांश ।

প্রামের রেপথের অবল ও কারণ নির্ণান আডিরিজ দ্বি। ছুবাং ই ছার্যাদি প্রাথা পালর যাত্ম, সজন দেশক বরাই কাছণ দির মাধন, ভূত্ম তথালের অর, শর্করা ও নিছরি গ্রন্থতি এক স্বোহন তথা ভোজাই ই করিলে,মিছরা হর্মণ প্রাণ বা আস্থান নিয়ন্তব উপবিক্ত থাবিশে প্রমেদ্ধ রোগ করে।

প্রারের ভেদ কর্মন,—প্রবের বিশ্পতি প্রকার । তথ্যা হয় শিক্ষানা, চারিটা বাশুলনা এবং অবশিক্ত কর্মী সেবজন্য।

প্রায়ের ক্ষরিবার পূর্বাবন্ধা, - প্রবেষ ক্ষরিবার পূর্বে বস্তপথে বর্ণক্ষর কৃষ্ণবুধুনতা হয় এবং চক তে বল ক্ষরিয়া বাকে। বেনন বেতলীকালি বিপ্রের পালকার বিজ্ঞান নারাদিও বর্ণ উৎপর হয়, মেইরূপ বার শিক্ষাক্ষর ক্ষরিবাধিকার বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বাব বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বিজ্ঞানী ক্ষরিবাধিকার বাব বিজ্ঞানী বাব

বাভজনিত যেহচতুইখ,—প্রথদ বস্থানেত,—এই বেবের প্রথাব বনার বিচার বংবিশিন্ত, ইয়াতে বসাও ক্ষরিত হয়, এই রেয়েগ প্রাপ্তরঃ প্রধান হয়। বিতীয় স্কাবেছ এই মেহের মূত্র বক্ষার বর্গ বিশিন্ত, ইয়াতে স্কান্ত নিজিত খাকে। তৃতীব ক্ষেত্র বেছ,—এই মেহের বৃত্ত সমূবরস্থিতিক্ট ও ক্যায়। চতুর্ব হতীবেছ,—এই মেছে রোগী সদ্বত হতীর ন্যায় বহু পরিষিত স্বীক্ষুক্ত মূত্র ভাগিকছে।

অন্ধর্ণ লোগা ও নির্মান তাহার নাম উপক্ষের। বে বেজের সূত্র
আনুবর্গ লোগা ও নির্মান তাহার নাম উপক্ষের। বে বেজের সূত্র
আনুবরের নার মিঞ্জা, ভাহার মান উক্ষ্ দেহ। বে বেজের মূত্র বাদী
আন্ধর হাবের (মাজের) ব্যার বন, ভাহার নাম নাজবেছ। বে
আবের মূত্র মালের নাার এবং যে মূত্র কোন পাত্রে রাখিলে কির্মাণক।
আবের উলার উপরিভাগে এরল এবং নিজে গাভ দেখা বাব, ভাহার নাম
আহাবেহ। ওও নচুর্গ অপল জলের সহিত মিজিত করিলে বেরল কর্
আবর্গ হর বে বেজের মূত্র ভজপ এবং বে বেজে প্রজাব সমরে রোগীর।
আবির্মান কর ওাহার নাম পিঞ্জ বেছ। বে বেজের মালের সহিত ভক্ষ্
বির্মান কর অবং কে মুত্রের বর্ণও ভজের নাাব, ভাহার নাম গুলাবেহ।
আবির্মান কর অবং কে মুত্রের বর্ণও ভজের নাাব, ভাহার নাম গুলাবেহ।
আবির্মান কর অবং কর মুক্ত হব, ভাহার নাম নিক্তানের। বে বেজে বার্মান
আব্দ কর, লীতল ও মিঞ্জা, ভাহার নাম লীতবেহ। বে বেজে বার্মান
আব্দ কর, লীতল ও মিঞ্জা, ভাহার নাম লীতবেহ। বে বেজে বার্মান
আব্দ করে অবং করের হর, ভাহার নাম লীতবেহ। বে বেজে বার্মান
আব্দ করের অবং করের হর, ভাহার নাম লীতবেহ। বে বেজে বার্মান
আব্দ করের অবং বির্মান মার ভছবিশিত, হাহার নাম সামারির।
আব্দ করের বার্মান করেবিশিত, হাহার নাম সামারির।
আব্দ করেবিশ্বর সামার বির্মান করেবিশ্বর সামার সামারির।
আব্দ করেবিশ্বর সামার সামার সামার সামারির।
আব্দ করেবিশ্বর সামার সামার সামার সামার সামার সামার

ধ্যমন্থ রোগের শীরকা —প্রমেন্ডরেরের মন্তক কোন এবং পরীর্ভুর্ণ হাংস্থ্যান ভাবে দে এব জন্তে, ডালাকেই পীরকা করে। প্রমেন্ত্র রোগের পীরকা দল প্রকার কথা,—ল্যাবিকা, কন্দ্রশিকা, ভানিকার বিশ্বতা, অসলী, মন্থ্রিয়া সহ শিকা প্রশ্নিনী, বিশানিকা, ভানিকার বিশ্বতা, অসলী, মন্থ্রিয়া সহ শিকা প্রশ্নিনী, বিশানিকা, ভানিকার বিশ্বতা

# क्षित क्षेत्र क्षेत्र

# मधुरमञ् ।

বিশ্বিদ্ধা বহরে চিকিৎসা আ করিলেই এবেছ রোগের যুব সঞ্জ বিশিক হয়, এই জনা সকল ধেহকেই মধুবেছ বলা হার।

# मृजहम् द्वाभ ।

ি বুর্কুক্তের অরপক্ষন ও কারণনির্ণয়,—পুন: পুন: আধার, অলীর্ণ, নিক হৈছুন, সক্ষা দেশজাত পশুর নাংসভক্ষণ, বল্পপান অধিক সারাব ও তীক্ষ ঔবধ ও কক্ষ বস্তু সেখন করিলেই এই রোকের উৎপত্তি হয়। এই রোগে অভিয়েশে মূত্র নির্গত হয় ব্যিরাই ইয়াকে ক্রিক্টার, রোগ করে।

্রুবরুক্তের জেল কথন,—এই রোগ আট প্রকার , থবা — ব্রুবরুক, পৈতিক, নৈত্বিক, সারিপাভিক, শৈলাক্ত, পুরীবক্ত, ক্ষরীক্ত ব্যুবর্করাক।

क बहरण म ककन, — ग्रंशः श्री जन भ जन म यूब निर्मतः हिंदि क्रम क बहरण म कि निर्मतः विश्व मिल्य के बहरण में विश्व में

### দশরী (পাথরি)রোগ।

ক্ষরী উৎপত্তির কারণ,—থারু মুরাশরত তক্তে, মুত্ত এবং শির্কার্ত্তি ভ কক্ষ শোকে করিলেই পাথরি রোগের উৎপত্তি হয়।

আপারী উৎপতির পূর্বা দক্ষণ.—এই রোগ জাইখার পূর্বো ম্বাপেন্ট্রি ক্ষীত হয় এবং তরিকটবর্তী ছাবে বেদনা করে, মৃত্রে ছার্গগাঁর ব্র অনুষ্ঠ হয় এবং অভিকটে মৃত্র নির্গত হট্যা থাকে। স্বর্ত অকটিট ব্র হট্ডে দেশা বার।

অস্থরীয় তেমকধন,—পাধরি চারি একার, ব্যক্তিক, গৈরিকুর্মারী গৈষিক ও ওজন ।

অপরীরর সামাবা পক্ণ.—বাজি নিল ও স্তাশতে থীরে থীরেই অন শ অন শ ব্রমির্গন, গোডেল ভূনা মূল এই সকল অপরীরেই সংলারণ সক্ষ।

ক্ষরীর অসাধা কথন, শুক্তর ক্ষরী বাজীত ক্ষরানা বার্ ক্ষরীই বক্ষরীন : স্তরাং ক্ষরী ক্ষরিবাধার চিকিংনা না ক্ রোলী ক্যুব্ধে পাউত হব। বানক্ষিপের ক্ষরী সহজে । কুরির করা ধার, ক্তরাং উহা নাধা। ক্তরোকে শোধ, ক ভ্ৰমায়। এত,ত্বিদ্ধ তিন প্ৰকাহ ভিছেত্ৰৰ গুণা, আজু প্ৰবাৎ, বাজ**ণিকত**, ৰাতনোধক গুণিতনোধন। "২" ক

গুলের নাব্যালাধ্য নির্ণয়—গুলা ক্রমে বর্দ্ধিত হইলে লখত উদর ব্যাপ্ত করে এবং রসমাংলাদি, ধাছু জবশেষে দিরা আলম করে। ক্রমে রোগী ক্ষীন। স্বাকানাদির্ভ ও অকচিবাল্ হয় । স্বতরাকভাষাকৈ কাল্যাদে পতিত হইতে হয়।

## শূলরোগ।

শূল রোগের ভেদকথন,—শূল অফীবিধ,—্বাডিক, বৈশিক, হৈছিক, বাতগৈতিক, বাডলৈখিক, বিভাল্যিক, জিলোবল ও আয়জঃ

বাতসনিত পুনের কারণ ও লক্ণা—পরিল্লন, সালকুরগানি আরোহণ, অতিরিক্ত বৈধুন, রাত্রিজাগরণ, অতিরিক্ত শীতল জলপান, মুগ্র
কলার, অরহর প্রভৃতি ভক্কণ, অলীর্ণ অবছার আহার, অপক তঞ্জর আর্কাক, অতিরিক্ত তিককবারালি ক্রবা দেবন, ওছ মাংস ও
হ শাক ভক্কণ, মুখা, পুরীব ও রেও প্রভৃতির সহরণ, উপনাস্তর
শোক, উল্লেখনের বাকাপ্রেরাগ, উল্লেখনের হাজ, এই সকল কারণে
বারু বৃথিত হইরা বক্তঃ, পার্যা, পুঠ, মেন্দপ্রের নিম্ন ও মুলাল্লা
এই সকল ছাবে ধেদনা উৎপাদন করে। ইহাকেই বাত্রানিত খুল
করে। বর্ষাকালে, সন্ধ্যার সমরে, মেন্দ্র লাইল ক্রবা ভক্কণে
এবং আহারীর বন্ধ পরিপাক প্রাপ্ত হইদেই দেই সমর এই খুল
ক্রিপ্তান্ত হয়। এই খুল কোন সমরে র্বিপ্রাপ্ত হয়, কবন বা ছুলি
হইরা খাকে, মন্দ্র ও বারু বন্ধ হয়, ভূতীবেধবং বেদনা জ্বো। বিশ্বা
ভক্ত প্রব্য ভক্কন করিলে এবং তৈগালি মালিশ করিলে ইহার
শান্তি হইরা খাকে:

বৈধত্তিক শুনের করিণ ও পক্ষণ.—শৈতিক শুনরোগে ভূজা, জাপা থেদ, জমি, মৃচ্ছা, প্রভৃতি দক্ষণ দৃষ্ট হয়। সংগ্রাদ্ধ সময়ে, নিলীখ-কালে, পরৎকালে, শীতমভূতে ইছার হৃদ্ধি হুইয়া থাকে। অভিনিত্ত নৈগ্রু, অভিনিত্ত পরিক্রম, নৌদ্ধ নেবন, জ্যোদেশন ভূত্বাধ্যান হতোপের ক্ষেত্রকথন,—ইছা পঞ্চাহণ।—নাত্রিক, পৈত্রিক, নৈছিক, সারিপাত্রক ও জ্ঞিমিজ। "-

ছালেগের সাধারণ লক্ষণ — বাতিক ছালোগে ছদলৈ নানাপ্রকার বেগনা, শৈতিক ছালোগে দাহ, তৃকাঃ ছনগ্রনাতি, মোহ, মেদ ও পুষের উত্তর ; শৈত্বিক ছালোগে বলায়ি, অকচি, কফলাব, দেছের গুরুষ এবং সাহিপাতিক হালোগে উল্লিখিড জিবিধ সক্ষণ প্রকাশ পার। ব্যি, বলি ইছো, নহানের স্থাধর্ণতা, শোধ, বলংছলৈ নানারণ বেদনা ও অন্ধ্যার দর্শন, এই সমস্ত জিবিজ হালোগের সক্ষণ।

### छन्। द्योग।

গুলারোগের কারণ,—অনির্দিত আহার ও অধিক পরিজন করিলে বাতাদি লোহত্রর জুল হইরা আবাশরে প্রবেশপুর্মক ছালত ব্যক্তি, মুতাশয় ও উত্তর পার্বে অমুবং গুলা জনার।

গ্রেশের ভেদকধন,—এদ্যু পাঁচ প্রকার। বাতিক, পৈতিক, সৈতিক, সারিপাতিক ও রকজনিত।

ওশা জারিখার পূর্বারপ:—গুলা জারিখার অথ্যে উদর্গধান নানা-বিধ শব্দ হয়। কোউগন্ধ হর, ক্টান্নি জাখে, পুনঃ পুনঃ উদ্যার উঠে • মনাগ্রি জাখে।

শ্বশ্রের সামান্য পক্ষক,—স্তুকুদ্দু, কোঠের কটিনতা, উদরে বিবিধ পুক্ত অন্তটি এই সকল গুলোুর সামারণ পক্ষণ।

পৈতিকাদিতেটে ওলেবুর কারণমির্ণয়,—কাল, টক, তীল্প ও কিবা ভোজন, জোধ, ছরাপান, রোমদেবন প্রভৃতি কারণে পৈতিক কালু; শীতদা, ওক ও বিষ জব্যু জোজন, পরিশ্বর আগে, অনিরাহিত আহার, এই দকল কারণে সৈহিত ও লারিপাতিক গুলু; কলজার ছোজন, অন্যায় পরিশ্বন, মনমুব্রেশ্বন, শোক ও উপনাস জৈতৃতি কারণে বাতিক গুলু ছবো। বারু কুপিত হইনা নবপ্রস্থা বারীর অধ্যা অসম্পূর্ণ গর্তাবস্থান যাহার গর্জণাত ব্রুমাহে, সে বর্ত্বনার শ্বিকর বস্তু জারন করিলেও ভাষার শোণিত আলম করিলা গ্রু

# भक्तारतान ।

পাথরি জন্মিলে যদি কোব ও নিজের মধান্থামে টেপা যার, প্রাথা।
ছহলে পাথরি ভানির। থও বঙ্গ হয়, উহারই নাম প্র্করা রোগ। বার্
কুপিত থা বাকিলে ঐ শক্রা মূত্রের সহিত নিমুত্তে হর, কিন্তু বার্
কুপিত বাকিলে বহির্গত হর না, প্রতরাং মধ্যগত থাকিয়া বিবিধ শনিক ক্রার। প্রক্রাথান্ত রোগী ক্রিরে ক্লেপ্টানে পাত্রিত হর।

# মুক্রাঘাতরোগ।

বুরাবাতের কারণঃ—মুত্রপুরীবের বেণা রোধ করিলে বাতাদি প্রকৃ-পিত ক্ররা মুরাবাত জন্মার।

মূত্রাবাতের ভেদকনখ,—দুত্রাবাত ত্রােদশপ্রকার; হাড্**কুওনি**কার অ**ঠ**ীলা, বাতবস্তি, মূত্রাতীত, মূত্রকার, মূত্রেংস্ক, মূত্রকার, মূত্র-আহি, মূত্রশুক্র, উম্বাত, মূত্রসাল, বিভিন্নাত ও বতিক্রান।

মুত্রাখাতের লাধারণ শক্ষণ,—ঐ সকল খুতাবাত শিল্পনা হইলে মুত্রাশ্রে বেসনা ও জালা হয় এবং মুত্রের ধর্ণ বিবিধপ্রকার মৃষ্ট হয় এবং কক্রনা হইলে শত্রীর শোশসূক্ত, গুলু এবং মুগ্র হন ও গুলুবর্ণ হয়।

শূত্র বাতের অসাধাকশন;—এই রোগে বলি বভিনুধের ছিত্র ককরারা সংক্ষম বইলা খার এবং গিছের প্রবস্তা খাকে, তাছা চিকিংসারারা আরোমা হর না।

### ক্লোগ।

আলোগের অরপ নির্ণ ও কারণ নিরপণ,—অধিক ব্যারান, বার-কার আহার, উক্ত ক্যার, ভিক্ত ও এক ত্রণ ভোক্তন চিত্রা ও মৃত্রপুরী-বের বেশস্থরণ এই সকল কারণে কলোগ জ্যো। এই রোগে ক্রত্রে মানাপ্রকার বেকনা হয় বলিয়াই ইহাকে ক্রোগ বলে। জ্যে। তীকু উল্লেখ মান ও শুক ক্ষা চেন্ত্রন, শিস ও কুলখ কলাহের ব ভক্ষণ এই দক্ষ করেণে শিক দুখিত হইন। নাভিপ্রদেশে এই রোগ উৎপাদন করে।

লৈখিক পৃংগর কারণ ও লকণ, ক্লান, অভতি, জীণতাঃ শরীরের

ক্রু, লালাল্রান, নমনোধেগা, এই সকল লৈখিক পৃংগর লক্ষা। ভোজশক্তে এই বেদনার রুদ্ধি হয় । স্থানি সমূদিত হইলো, শিশিরকালে ও
লক্ত কালেও ইহা এবল ছইনা থাকে। কল্পুণাবল ও প্যুক্তনাব্দক্তক্ষ্য,
লোগাবল ক্ষণা, ইক্ ও শিশুকাদি ভোজন একং মুম্কুনিত রুবা ক্ষণা
বারা ক্ষ্ কুপিও হইনা আমাশরে এই দেনায় উৎপত্তি করে।

বিদোষ্ট প্রের লকণ্য-ক্রিনোমন্ন শুনে উপারোক্ত রিবিধ পুলেরই লক্ষ্ অনুভূত হইরা থাকে। এই পুন সভাস্থ কফ্টদারক এবং ইহা চিকিৎসার অসাধ্য জানিবে।

শামক শ্লের লগাণ,—আয়ক শ্লে গ্লিইক শ্লের কারতীর সক্ষ অকাশ পার,বিশেষতঃ দেছের গ্রুক,উদর্মধ্যে অন্দুট শক্ষ,বিদি, মৃত্তপুরীষ রোধ ও মেরাজের এব সকল গক্ষ দুষ্ট হয় এবং শ্রীর আর্থ ব্যন্ত আছে। নিজের নায় গোধ হইয়া ধাকে।

বাতসেপজানি পুলের বিবরণ — বক্ষংখল পার্থ ও পৃত্তে বেলনাই বারু সেমজনিত পুলঙোগের লক্ষণ। উদর, বক্ষ ও নাভিতে বেদনা, ইছা পিত্র-লৈ কি পুলের এবং উদরের স্থান। ও স্বুর বাতপৈত্তিক পুলের লক্ষণ।

স্থিত হর। বিদোবজাত সুল আহোগা হয় না বটে, কিন্তু যাপা থাকে।
জিলোমজ সুন উপাত্র বিশিষ্ট হইলে তাহা চিকিৎমার অমাধ্য।

# পরিণামশূল।

পরিণাম শুনের অরপ ও করেন নিগ্র- শুলারোগের উৎপরিত ই লক্ষ্য কারণ কথিও হইরাছে সেই সেই কারণে বাবু কুপিও হইছা কফ ও লিক্সাপরে প্রথেশ করিলে জিলোব একজ হইরা বে বেক্ষা জন্মার, ডাছাকেই পরিণামপুল কছে। আবারীয় এবা পরিপাক প্রাপ্ত হইবার কালেই উদত্তে এই কেদ্যা হইয়া থাকে। ৰাডিক পরিণাম শ্লের সক্ষণ,—উনরে গুড় গুল্ শর্ক, উমরক্ষীতি। পুরপ্রীধরোধ, কঁন্প এই সকল বাডিক পরিণামশূলের লক্ষণ। বিশ্ব ও উক্তরত সেবন করিলে এই শূলে আছাবোধ হইনা ধাকে।

পৈতিক পরিণাম সূলের হক্ষা, —ভ্কা, সন্তাপ, বেদ, মনের অবনাদ।
এই সকদ পৈতিক পরিণামপূলের লক্ষা। বাল অন্ন ও লবণাত বস্তা
সেবনে এই রোগ রুদ্ধি প্রাপ্ত হইন্না থাকে। শীত্রীধা ফ্রেন্য ইনার লামব
হয়।

লৈখিক পরিশাদ পূলের লকণা---পুদ্ধান বাদিন বৰবোৱেগ এই সকল লৈখিক পরিগাৰপুদের লকণা। নাল ও ডিজ ডব্য লেংখ যারা এই বেদনর লাখণ হয়।

বাতশিক্ষ, বাতশেষক শিক্ষেত্রক ও বিদোৰক পরিণাম শ্রের লক্ষা-শ্রার শিক্ত পরিণাম শুলে বার্ক্ষমিত ও পৈতিক পুলের শক্ষা, বাত্রেম্ক্রমিত পরিণামপুলে বাতিক ও লৈখিক পুলের লক্ষ্য, পিত্রেম-জমিত পরিণামপুলে পৈতিক ও লৈখিক শুলের লক্ষ্য একাশ পাইছা পরিশামপুলে বাতিক পৈতিক ও লৈখিক শুলের লক্ষ্য একাশ পাইছা বাবেন।

পরিণামপুলের অলাগ্য কর্ম,—বে ব্যক্তি কুল। বলবান্ ও মন্দায়ি বান্, তাবার ত্রিদোবজন্য পরিণামপুল জড়িলে ভাষা চিকিৎসার প্রশ্মিত ভয় না।

## অৱদূরশৃল্ ।

আহারীর বন্ধ জীর্ণ হইলে, কিয়া পরিপাক হইবার সময় অথবা পরি-পাক না হইলে যে পুল জায়ে, তাহাকে অন্তর্গুল কছে। কি হিডকারী জীয়ারা, কি অন্তিকারী অব্যথারা, কি আহার থারা, কি উপবাসধারা কিছুতেই এই পুল নিবারিত হয় না। এই প্লে বমি হইলে যদি তাহার পদ্ধিত পিত উঠিন যায়, তাহা হইলে বেগনারু শাস্তি হইরা থাকে।

# উন্নাৰত রোগ।

উষাবির্থের কারণ,— বারু নিঃসর্গণ দৃত্র, প্রীম, জৃত্বা, অঞ্চ, হাচি উচ্চার, বমন, শুক্র, কুধা ড্ঞা, দীর্ঘনিধাস ও নিজা এই করেকটা রো করিলেই উদাবর্গ হোগ জবে।

ৰামুনিঃসরণরোধসনিত উদায়র্ভের দক্ষণ,—এই উদায়র্ভে বায়ুর্ রমতাঃ মূরপ্রীমরোধং উদরক্ষীতিঃ দেখের দ্বীগতা ও বেদমা এবং উদার বিবিশরোধ এই সকল দক্ষণ প্রকাশ পার ঃ

মুত্ররোধন্ত উদাবর্ত্তর দক্ষ্য — মৃত্যক্ষ্যু , শিরোবেদনা, নিজে ও মৃত্যাপরে বেদনা, কুচকিতে বেদনা, এই সক্ষা মৃত্ররোধন্তিত উদাবর্ত্তের কক্ষণ।

পুরীষরোধ জনিত উদাবর্তের দকণ;—উদ্বে গুরু গুরু খন ও বিবিধ্ বেদনা, মদরোধ: হিকা, খান, মুখধারা মদনির্গন, পুরীবরোধজনুত উদা বর্তে এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হয়।

জুন্তারেরজনিত উদাবর্ষের দকণ,—হাইব্রের করিলে দেউদাবর্জ জন্মে তাহাকে জুন্বারেরজনিত উদাবর্জ করে। গদন্দীরোগ, ভুতকের পীড়া, নেত্ররোগ, কর্ণরোগ, নাদারোগ, মুধ্রোক, এই স্কর্কই ইহার লক্ষ্য।

অক্সরোধজনিত উদাবর্তের লক্ষ্য,—হরে ই হউক, আর হুংখেই হউক, চক্ষে অঞ্চ বিনিগতি ছইরা বাকে, সেই অঞ্চরের করিলে উদাবর্ত রোগ জয়ে। এই অঞ্চরোধজনিত উদাবর্তে শিরোদেশের গুক্ত, নেত্রেরোগ ও শর্কি হইরা থাকে।

হাঁচিরোধজনিত উদাবর্ধের লকণ,—সন্তকের অর্জভাগে বেদনা, অথবা সমন্ত শিরোবেদনা, অর্দিত নাণা বাতরোগ ও ইন্তিয়দাভির স্থাস, এই সকল হাঁচিরোধজনিত উদাবর্ধের দক্ষণ।

উদ্যারেরেধ্জমিত উদাবর্তের প্রকণ্য---উদ্যারেরোধ্জমিত উদাবর্তে অস্পষ্ট কথা, নিশাসরোধ, স্টীবেধবং বেদনা, বিজ্ঞা এবং বায়ুধায়া কঠ-দেশের ও মুখের শানুপূর্বতা, এই সকল ককণ প্রকাশ পাঁর।

বামরোধজনিত উদাবর্তের লক্ষণ,—শোধ্পাতু কণ্ট্রাক অকচি।
মুব্ন বীসর্থা, কুঠ ও বমনেজ্য, বমিরোধজনিত উদাবর্তে এই সকল লক্ষ্
অকাশ পাইয়া থাকে।

শুক্রব্যাধন্ত উদাবর্ডের দক্ষণ,—শুক্রব্যোধন্ত উদাবর্ডে স্থাপর, গুড় ও মুড়ে শোম ও ধেলনা, মুহরোধ, শুক্রাম্ফরী ও শুক্রকরণ এই সকল লক্ষণ দুই হয় :

ক্ষারোধ জনিত উদাবর্তের দক্ষণ,—অকচি তন্তা, সক্ষবেদন। বিষাশ্রমে প্রমানেধ্য এবং দৃষ্টিশক্তির ক্ষীণতা এই সকল কুমারোধকনিত উদাবর্তের সক্ষণ।

ভূজারেগজনিত উদাবর্ত্তের লকণ,—ভৃজারোধ করিলে যে উদাবর্ত্ত জন্মে, ডঃছাতে মুখতখভা, কঠশোষ প্রস্তিশন্তির হ্না এবং বক্ষার্থে বেদনঃ হইরা থাকে।

নিৰাগরোধজনিত উদায়র্জের লকণ,—অতি প্রাথাদি বোধ হইলে লোকের দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ হইল থাকে, যদি দেই নিশাদ রোধ করা যার, তাহা হলৈ উদাবর্তরোগ জবো, ইছাকেই নিশ্বাসরোধজনিত উদাবর্ত-লোগ কছে। এই রোগে মৃত্রণ, ছলোগ ও গুলা এই সকল লক্ত্য দুরা হয়।

নিরোরোধন্ধবিত উদাধর্তের লকণ,—ভূম্বণ, দেকে বেদনা, মেন ত শিরোজাত্য ও তন্তা এই সকল নিপ্তারে:ধজনিত উদাবর্তের চিছু।

বারুজনিত উদাবর্ত্তের কারণ ও লকণ,—এতস্থির কক্ষ কথার, কটু ও তিক অবা অভিনিক্ত ক্তকণ করিলে বারু ক্রুত্ব হইয়া কোঠে এবৈদ করে। ভাহাতে অবিলবেই উদাবর্ত রোগের উৎপত্তি হয়, উহাকে বারুজমিত উদা কর্ত রোগ কহে। এই রোগে খাস, কান, ককস্রাধ, তৃঞ্চা, মোহ, স্বর, কিনা, শিরারোগ মনের কর্মেধ্যা, অভিশক্তির হুলস এই সকল লক্ষণ ক্রেছ।

### আনাহরোগ ৷

জানাছরে অরপ নির্ণাধ কারণ,—লরীরে অগত রুস ক্ষর। মল বার কর্মুক বন্ধ হইলে যদি ভাছা প্রজাবাদিয়ারা নির্গত না হয়, ভাছা ছইলেই ভাষাকে আনাহ রোগ কয়ে।

আমাহের জেন কখন,—আনাহ মুই প্রকার, আমজনিত ও মলজনিত। আমজনিত আনাহের কারণ ও দক্ষণ,—দেহে অপকারের সঞ্চিত হইলে। বে মানাহ জ্যে। তাহাকেই আমজনিত আনাহ কছে। পিপাসা, শিরো বেসনা, আমাশয়ে বেসনা, বক্ষংগ্রে রজ্ড। ও উদ্ধারে এই স্ফল আন-জনিত আনাথের দক্ষণ।

মলজনিত আনাহের লকণ -- প্রশাসরে বেদনা, মূল্যা, মূত্রপুরীবরের।
কটি এ পুঠের জড়তা, মলজনিত আনাহে এই সকল লকণ ভৃত্তী হয়, এতাহি লোধ ও অনসক রোগে বে সকল লকণ লাখে, ইংগতেও নেই লোই ক্ষেণ লাকিত হইনা খাকে।

# मुक्ह रिवाश ।

মৃত্যু ব শহাপ ও কারণ মির্ণর — কীণ বাজি বিকল্প বস্তু ভেল্প করি বা মৃত্যুপুরীধের কোশ সহরণ করিলে, অধনা লগুড়াদি বারা আঘাত প্রাপ্ত হাইলে বাজানি দোব ভারার নেত্র প্রভৃতি ইন্দ্রির অধনা সমোবর স্বোতে প্রবিষ্ঠ বর, ভারাতেই সেই বাজি আনশ্বনা হবর। ধরাতলৈ নিপতিত হর, ইবাবে মৃত্যুগ্রোগ করে। ইবার অপর নাম মোহ।

মৃদ্ধার ভেদ কখন,—ব্যাহ হয় প্রকার।—বাল্তমনিত পিডজনিত মৈহিক, রক্তমনিত, হয়া গানজনিত ও নিয়তকণজনিত।

মুক্তারোগের পুর্বাবদাঃ— মৃত্তারোগ জমিবার পুর্বে দাঁই, দৈছের জাজা গুলি, বক্ষহদের বেদনা, আনের দুংস এই সক্ষু ঠিয়া দেখা বার।

ৰাতিক মুদ্ধারোগের লকণ —যে বাজি বাতিক মুদ্ধার আক্রান্ত হর।
সে গগৰবণ্ডল নীল, কৃষ্ণ ও রক্তবর্ণ দর্শন করে। কিন্তু শেখিতে দেখিতে
জানশুন্য হইরা যার, আবার অচিরেই সংজ্ঞালাত করে। কথন কথন এই
রোগে অলু বেদনা, বক্তবেদনা, কশান এই সকল সক্ষণ দেখা যার। কিন্
এই সকল কক্ষণ বইলে লোগীর দেহ ক্ষণ, দ্যান্তর্গ ক্ষরণ রক্তবর্গ হটন
থাকে।

পৈতিক বৃদ্ধির লক্ষ্য — যে ব্যক্তি গৈতিক মুদ্ধির আক্রান্ত ব্যান্ত ব্যক্তি গগনমন্তন পোণিতবর্গ অধবা পীতবর্গ দর্শন করে এবং দেখিতে দেখিতে তাহার নেত্র অন্ধনারে আচ্ছর হইরা আইনে, অমনি দে ফুডাণ্ডেত হর। কিয়ৎকণ পরে বর্ষ হইয়া চেত্রনা লাভ করে। তৃজ্ঞান লভাগ লেক্সের রক্ততা বা পীতবর্গতা, কোঠণারিকার এবং দেহের পীজতা এই স্কলই এই মুদ্ধার লক্ষ্য।

ব্যক্ত মুক্তির লকন । যে বাজি নৈত্তিক মুক্তির আক্রান্ত হর, গাসন 
মঙল ভাষার নিকট মেখসন্প অথবা গেল ও অন্ধন্তান্ত্র বলিয়া বেশি হর,
এবং দেখিতে কেথিতে মুক্তি ড ছইরা পড়ে। এই মুক্তির বর্তবিপত্তে
ভেডনালাভ হয়। এই রোগে রোগীর মুখ হইতে লালা বিনিগতি হয় এবং
বির্থিব। ক্রেল। আর রোগীর দেহ সিক্ত বরোদি দারা সমান্ত্র বলিয়া
বোধ হয়।

ত্রিদোবর মৃদ্ধার লক্ষ্য-ত্রিগোষর মৃদ্ধার উপরোক্ত ত্রিধি মৃদ্ধান এই সকল লক্ষিত হইরা থাকে এবং জ্যাত্মার রোগে বে সকল লক্ষ্য মৃষ্ট হয়, ইহাতেও সেই সেই লক্ষ্য দেখা যায়, কিছু কেনব্যন, মন্তবর্ষ প্রস্তৃতি লক্ষ্য সক্ষিত হয় না।

সক্তর্মিত মুর্ছার কারণ ও শক্ষা,—যে ব্যক্তির বেছে ভূমিওগের আহিক্য আছে, শৌণিতের গছে নে মৃদ্ধিত হয়, ইছার কারণ এই যে, পৃথিবী ও জল এই উভরেতে ত্যোগুণ অধিক পরিমাণে বিদ্যাম আছে,এই কারণেই আণিতের গত্তে ভূমিগুণাধিকা ব্যক্তি যোগাডিভূত হইয় থাকে, এই মৃদ্ধি-কেই রক্তর্মিত মৃদ্ধি কছে। দেহের অবসাদ, দর্শন শক্তির জণ্শতা। ইয়াই এই মৃদ্ধির দক্ষণ।

বিষয়নিত ও দলপানজানিত মৃশ্ধির লকণ —বিষপানে যে মৃশ্ধি
হয়, তাছাকে বিষয়নিত মৃশ্ধি এবং ক্রাপানে যে মৃশ্ধি লগে, তাছাকে
মালপানজানিত মৃশ্ধি করে। বিষপানজানিত মৃশ্ধির কলা, নিজা, ভ্রমা
ও ক্ষেকার দর্শন এই সকল লকণ দৃষ্ট হয়। হলাপানজানিত মৃশ্ধির
রোগীর অভ্যকরণশালি বিরুতি প্রাপ্ত হয় ও জাভিভিত হইয় নানাবিধ
প্রমাপবাদা প্রয়োগ করিতে থাকে এবং বিবিধরণে অভ্যালন। করিতে
করিতে ভূপতিত হয়। মদ্য স্কীপ হইলে দেই ব্যক্তি প্রায় চেত্রালাভ

## ভুন, ভজা ও সন্ন্যাস রোগ।

শ্রমন্ত্রের বরূপ বিশ্ব, বাতপিতের ও র্জোগুণের আধিকীবল্ঞঃ বে অঞ্চানত। জব্দে ভাষাকেই জম রোগ কছে। এই রোগে রোগীকে জের নায় দুরিতে বুরিতে ভূমিত**লে পতিত হই**তে হয়- ছিয়-তাৰে স্ভাচ্যান হইবার শ্কি বাকে বা।

ভ্রমারোগ কথন,—বাডনের। ও ত্যোগ্রক সংঘণ্ডিত হইরা ভঞা এবং রেয়া ও ত্যোগ্রণ র্ষিণাগু হইনা নিজা রোগ উৎপাদক করে। ভক্রারোগীর চকু কর্ণ পুঞ্চি বাছেপ্রিয় নির্মাণ ইয় এবং বিভাসুরের ায় আসসা ক্ষে।

সন্মাস রোগ কথব,—বে রোগে বাডাবি লোবদকল আগছাৰ অবস্থন করিলা বাছেজিয়ের শক্তি বিন্তু করে এবং রোগী হৃতবং বছল ভূতস্থালী হল, ভাছাকেই সন্মাস রোগ কছে। রোগ অধিবাদাত উপধ্ অলোগ বা করিলে এই রোগে রেগীকে অভিরে মৃত্যুদ্ধে পতিত হইকে রো

## মদাত্যরাদি রোগ।

মলান্ডার রোগের শরপ ও কারণ প্রাকৃতি নির্ণয়,--বিবে যে সকল গুণ বিদ্যমান আছে, মদেতেও দেই সকল এণ আছে স্বতরাং পরিমাণরাশে ত্তরাপান না করিলে ভীষণ মদাডায় রোগের উৎপত্তি ছত্ত 🗷 অলপানারি বারা মন্ত্রের মেরপ উপকার হয়, প্রাণানবারাও তক্ষণ উপকারিভাদাভ হইয়া খাকে, কিছ পরিমিতরশে বাবহুত क्रिंगरे देश्केंछे (जान आह्य, जानुक स्वत्नार्थ कन्यक्षा, अजिसिकारण লেবন করিলে জুরাও ডজ্রপ হিস্তকর সন্দেহ নাই। বিব প্রাণ বিবর্তী করে, ইছা লোকপ্রসিদ্ধ, কিন্তু সেই বিষ ঘণাস্থলে ঘণানিয়নে প্রয়োগ করিলে জীবন প্রকান করে, অধিকপরিমাণে লেখন করিলেই জীবন वर्छे दहः मिरेहरा स्थाउ शहिषिउद्भार वावक्यं दहेल स्कम ध्यान করিয়া থাকে। শতুভেদ ও বারুতেদ বিবৈচনা করিয়া পরিবিভযাতার বিবিধ বুকাৰদীবিরাঞ্জিত উদানে উপবিঞ্চ ঘ্রতা ক্ষটিটেও যে সকল রবা সুরার বিপরীতগুণবিশিউ, তাহার ১মহিত স্রাপান করিলে বৃহৎ উপকার দর্শে। বাংগ ও মিড ক্রব্যের সহিত মদ্যপান করিলে পুরুষার ও বন ছবিশান্তি হয়, দেহ অপুর্য কান্তি ধারণ করে ও মন অফুলু হয়। প্রথমদানার ত্রাপান করিলে বৃত্তি কৃতি। কৃতি। বিজ্ঞা লুধা ৪ রতিশক্তি পরিব<sub>হি</sub>ত হয় এবং সধায়ন ও সংগীতশ**ক্তি জন্মে**।

# পায়ুর্যোদান্ত পরীক্ষিত মৃটিযোগ।

্জীরনারার মদাপান করিবে বুদ্ধি শুসে হর অনৃতি নিলুগ হর াক খাজি খাকে যা এবং উন্নতের নাার অধ্পোচিত কর্মে অর্ডি ্বিরা থাকে। **ভূতীরম্**ক্রার মন্ত্রণান করিলে হিতাহিত জান **পা**কে া, অনুদ্রাণগমনে অভিনাষ হয়, অভকা ভোজনে প্রাচৃতি করে এরং ুপ্তক্ষীও প্রকাশিত করিত। যেকে, গ্রকজনকে জনমাননা করে এবং লই মঞ্চশালী আক্সকা করিতে সমর্থ হলাও বে থাকি চতুর্থমালাক মন্ত্রপান করে, দে মন্ত্রদংক্ত ছইয়া মরাভালে নিশতিভ ত্তএক এরণে যক্ত খাদ করা কুলিমানের কার্যা নছে। মাধ্যাদি বা ভিছ হবোর সহিত সুরা মেবন না করিলে প্রতিদিন একঘাতা পান করিলেও जीयन ह्यान डेरल्या इत धनर कर्य कर्य क्रांच त्नह कीन हहेर्छ थारक। র ব্যাক্তি ভৃষার্ত্ত, ভীত, ক্রু, ক্রার্ত, লোকার্ত ও লঞ্চাদি পার। াছত হইয়া মন্ত্রণান করে, বে বাজি অতিব্রিক্ত জনপান করিয়া তৎ লপাৎ কুরাদেশন করে অধবা যে বাজি ভোজনের তংগরফণেই মন্ত্রপান লবে, যে ব্যক্তি প্লোফাদিতে মন্তও ক্**ই**য়া অথবা বে ব্যক্তি হু**র্মা**শাব-লাতে স্থরাপান করে, তাখাকে পানাভায়, পর্মদ, পানাজীর ও পান-বিজম প্রতৃতি ভীবন দেহনাশ্ব রোগে আজান্ত হইতে হয়।

বাতিক মদান্তার রোগের লক্ষ্য-প্রদাপ, অনিক্রা, বাস্ত্র-ছিলা, প্রায়কস্থাস, পার্কবিদ্যান এই সকল বাতজ্ঞা মদান্তারের লক্ষ্য।

পিঠক মদভোৱের লক্গ—তৃষ্ণা, গাতদাহ, বেদ, মৃদ্ধা কৰি
ুক্তিয়ার এই সকল দক্ণ শিত্তদ্বতি ঘদভাৱে দৃষ্ট হয় ৷

কক্ষ মন্তারের সক্ষণ,—যে যাজি রেখ্ছনিত মদাতারে আক্রাপ্ত া, সে বমি করে, কথন বা বমির ইন্ছা হা, কিন্তু বমি হয় না এবং নক্ষি, তক্রা, মেছের ৪০ছ ও সিক্ততা এই সক্ষণ শক্ষণ পুৰাল পায়।

বিলেগ্যক্স মধ্যতারের লক্ষ্য,—বিদেশ্যক্ষমিত মধ্যতারে পুর্যোক্ত তিবিধ মদ্যতারেরই লক্ষ্য দুটা হইয়া পাকে।

### . चत्रमस्त्रांच।

গর্মন রোগে ভূজা, অকচি, তন্তা, লিরোবেদনা, মনমুত্র রোগ ও লেছের শুকুর, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ গার এবং রোগীর মালিব। উত্তেরেখা করিও হুইয়া গাকে।

## शामानीर्गद्याश ।

ি উদরক্ষীতি, দেহসভাপ, উদ্যাস, এই স্ক্রস পানাজীর্গ রোগেল লক্ষ্য। এই রোগে মুখে মদের অংশই অধিক দেখিতে পাঞ্চল বাছ।

# পানবিভূমরোগ, ১

বাসা হইতে লেখকরণ, বক্ষে ত অংক স্থানিবধনং বেদনা, বক্ষি মোহ, ক্ষা, শিরোবেদনা, দেখসন্তাণা এই সকল পানবিজনরোগের লক্ষা। কণ্ঠ হইতে পুম নির্গত হইলে বেরপাবোধ হয়, এই রোগেও লেইরপ অমৃত্ত হইয়া থাকে। এই রোগে রোগীর স্বাপানে অন্তিশ্লান ক্ষান

পানাজ্যগদির অসাধ্য কখন,—পানাজ্য পর্মন গুড়তি রোখে ধমি রোগীর অধর কভিত হইর। পড়ে এবং রোগীর দেহের অভ্যন্তরে লাহ বিভাগন খাকে; কিন্তু বাহে শীতদ বোধ হর, তাহ। হইলে মেই রোগ সীধাজীত জানিবে। বাহার জিলা, ওওঁ ও মত নীলবর্ছ হইলা মার এবং চকু গাড় লোহিতবর্গ বারণ করে, সেই রোগীকেও অচিরে জীবন বিষর্জন করিতে হয়।

# **उ**चाप्टडांभः।

মনরভাদ পতা দোষা স্মাত্সার্গনাগতাঃ। শ্রানবোহরমতো ব্যাধিকবাদ ইতি কীভিজিঃ।।

উথানের অরপমিশর,—বারুশিভামি মোথ সকল জুশবগানী হট্না ফনোবছ বসনীতে ওবেশ করিবেই মনের ভাতি কলে, তাহা- কেই উন্নাল রোগু করে। এই রোগের তক্পাবছার ইবাকেই মদুরোগাঁ ক্ষিয়া বাকে।

কুৰানের কৈ ক্রিক তিরাদ বড় বিব ; বাজিক, পৈতিক, শৈষিক বিবেশক, শোকর ও বিবল এতছির ভূত, বক্ত, বেল্ডেই অহ্নের রাক্স, পিতৃপ্রেই, সর্পথ্যই, গাঁহুই, পিলাচ প্রভৃতির আক্রেইও উন্নাহ বেলাগ ক্রেই। পূর্বিয়াতে কেব্রাই, স্ক্রাইনিক অহ্নেইই, অইনিক গাঁহুইওই, প্রতিপদে বক্ষ্যই, অমাবকাতে পিতৃপ্রই, পঞ্চাইতে নর্পথ্যই, প্রক্রীয়োগে রাক্ষ্যইই মুস্বাকে আক্রমণ করে। ইছারা অস্কিতগুরে মানবলরীরে প্রবিষ্ট ইর। ইছামিগকে দেখিতে পাওরা ক্রিরা। হেরপ দর্পপে প্রতিবিহ প্রবেশ করে, কেই মহো শীতোক-প্রিই হর, কিন্তু ভাহামিগকে দেখিতে পাওরা বার মান তক্ষ্যই মানবদেইই ক্রিরাও মানবদেইই অনুক্রিইই হর।

ত উন্নাদরোগের কারণ,—বিষযুক্ত ক্রবা, অপাধিত ক্রবা ও বিশ্বত বন্ধ ডোক্লন, দেখতা বা গুৰুজনের অবশান্দা, ডরেই ইউক্ ক্রেন্টা নামন্দেই হউক্ ক্রেন্ট্র অধৈর্যা, বনিষ্ঠ বাজিন্দ্র সহিত যুক্ত ও চিন্তা এই সকল কারণে বাকাদি লোব সকল কুপিত হইয়া সমূধ্যের হুংপিও ও কৃষ্টিব্রাদ পুরিত করিয়া কেলে এবং দ্যোবহ আাতে প্রান্তি হয়। ভাষাত্রেই অন্তঃকরপের বির্তি ক্রমে।

উদ্ধানের সামান্য লকণ, ইউত্তর দর্শন, মনের অধৈধা, আছি, 
ভকিত্ততাব, অনর্থক হুণা অসংগ্ধ বাক্যালাগ ও বন্ধঃছলের পুনাতা 
এই সকল উদ্ধান রোগের সামান্য লক্ষণ।

উত্থাদের অগাণ্যকথন,—বে উত্থাদরোগী নিরস্তর নিছদিতে জার উর্দিকে দৃটিপাত করিছা থাকে, বে রোগী অত্যন্ত কীণ হর এফা দিব রাজে বে নিজা বার না, তাহার রোগ অসাধ্য।

#### अभ्यात्रात्रां ।

ভদঃপ্রবেশ: সংবরে। দোবোলেক্ডভদ্ভেদ্ভে:। অপন্যার ইতি কেন্দ্রো গলে। দোরশ্ভুর্কিদঃ।। শ্বপথারের অরপনির্গর ও কারণ,—বে রোমে আনু শিবার কর্ক পারুবিউ হইরা মানুরগণের অভিনোপ করে, এবং পুরু ইইটেড কার্ক আব পর, তাহাকে অপুন্ধার রোগ করে। অপ্যান্ধারিক বিভিন্ন গৈতিক, ক্রৈতিক ও সামিশাতিক।

## ছৎকলা: শূনাতা ৰেনো গানং সৃক্। প্রমূচতা। নিলানাশক তনিংশ্চ কবিয়তি ভবভাগ।।

অপাতার উৎপত্তির পূর্বরেশ, ক্ষণায়ার উৎপত্ন বইবার করে বিশ্বানাল হয়, কথন ইন্দিরাললি বিলুগ্ধ হয়, কথন বা সম বিশ্বাহিনা পাছে, হাই উঠিতে থাকে, হয় হয়, হসর বিকল্পিত হইরা খাকে, এবং হসর পুন্য বলিরা বোধ হয়।

শপদারের সামান্য পদণ —বে বাজি শপদার রোগে আঁজাত বয়, সে আনসুনা হইরা ইতত্তঃ করচরগালি বিকেশ করিতে, থাকে পুরং,ভাষার মুখ হইতে কেন বহির্গত হয়।

অপান্ধারের অসাধা কথন,—অপান্ধার রেগি জন্মিল উবধানি ছারা ভাষার প্রতিকার না করিলে বনি সেই রোগ প্রতিক হয়। ভাষা হলৈ আর ভাছার শান্তির উপার থাকে নাঃ আর এই রোগ বনি বন্ধ নক্ষীজাত হয়, ভাহা বইলেও অসাধ্য জানিবে। যে বাজি চুর্জন। ভাষার অপান্ধার রোগ জন্মিতে সে মৃত্যুমুখে নিপতিত হয়।

## উদ্মরোগ

## রোগাঃ সম্বেশি নদ্দেহথে। সূতরামুদরাণি চ। অঞ্চীর্ণাকলিনৈশ্চারৈর্লায়তে কলসঞ্চয়াৎ ॥

ত্তীর রোগেধ কারণ,—বিকল উষ্য ভোজন করিলে, অভিরিক্ত আহার করিলে এবং অ্থিমান্দা হইলে বাডাদি নোগত্তর প্রকৃপিত ক্রিয়া জলবাকী শিরা সকল অবক্ত করিলা কেলে এবং প্রাণ বাদু অপান বাদু ও অগ্রিজ্বিত করিলা উদ্যুৱোগ উৎপাদন ক্রে।

# আখ্যানং গৰনেহশক্তিদৌর্বল্যং ত্রন্থ লাগ্নিতা। শোখঃ ব্যন্মকালাং বকো বাতপুরীষ্ট্রোঃ।। শাহতক্রা চ বর্মেনু ফঠরেনু তবন্তি বি।।

উন্নরোগের সাধান্য সক্ষণ,—হলাগ্নি, তল্কান স্থাপন দেখিবনা, শোগ্ন, দেখানসাদ, উন্নয়নীতি, বৃদ্ধ ও বারু নিঃসর্গরোগ, এই সকল উন্নরোগের সাধারণ লক্ষণ।

উদররোগের অসাধ্যাদিকখন,—উদররোগ উৎপন্ন হইবামাত্ত শীত্র শ্বৈথাদি প্রকোগ করিলে কভে আরোগা হইরা থাবে। প্রার অধিকাংশ উদররোগ পঞ্চদশ দিবলে অতিরিক্ত হইলে অসাধ্য হইরা উঠে।

#### व्याध्याम ।

রক্তশিস্তক্ষান্ বায়ুছ তৌ ছ্টান্ বহিঃ শিরাঃ। শীহা রুদ্গতিকৈছি কুর্যাৎ, দৃঞ্বাশসংআরং। উৎসেধং সংষ্তং শোথং তমাজনিচিরাকতঃ। সকাং কেতৃবিলেবৈত কপতেদায়বাককং। দোকৈঃ পৃথগুৰু বাং সকৈ বিভিদ্যভাগিবাদপি।।

'শোণের অরণ ও কারণ নির্ণর,—বারু দূবিত হইরা রক্ত, শিশু ক
কক্ষে বহিছিত ধননীতে লইরা, যার, পারে তাহাদিশের হারা বায়ুর
গতি কর হইলেই দেহের যে কোন ছানেই হউক, চর্ম ও বাংল আগ্রর
করিয়া রক্ত পিত ও কক্ষের পহিত উরত হইরা উঠে; ইহাকেই শোধ-রোগ বলা যার। যে বাকি কোন রোগহারা অথবা উপবাসহারা
হর্মন হইরাছে, নে বনি কার, অর, তীক্ষ, উল্ল ও একপার অব্য অবং
সকল প্রকার শাক দ্যি প্রভৃতি ভক্ষণ করে, তাহা হইলে নে লোগরোগে
আক্রান্ত হয়। ওভত্তির অর্শ, পরিজ্যবভাগে, অপল্ল গর্জপাত, বিশ্লেক্তাদি উব্য ভক্ষণপূর্বকি বিরেচন না হওয়া, সর্মহানে আ্রাত
ক্রান্ত হতরা, বিষ্ক ক্ষণ, এই সকল কারণেত পোণ রোগ লয়ে।

শোষের তেগকখন,—শোধ নয়গ্রকার ;—নাতিক, গৈতিক,গৈথিক, বাতশৈতিক, বাতলৈখিক, শিতলৈখিক, সামিশাতিক, স্ভিযাত্তনিত ও বিষয়নিত।

শোষ জায়িবার পূর্বারপ,—শোম উৎপন্ন হইবার অথ্যে পারীর উক্ষ বোধ হর এবং শিরা প্রসারণ করিলে বেরণ কট বোর হর, তক্ষশ যাতনা বোধ হটতে থাকে।

শোৰের সামান্যক্ষণ,—শরীরের বৈবর্ণা ও গুক্ত, শিরার স্থকাতা।
রোমাঞ্চ এই সকল শোধ রোগের সাধারণ কক্ষণ।

শোধের উপত্রব কথব্য-ভৃকা, খাদ্য বনি, দেখিব্য হুর, **অক্টি** এই সকল শোধরোগের উপত্রব।

- লোধের অসাধ্যকথন,—পুক্রের পাদে শোধ হইলে এবং সমস্ত উপাত্রব কৃষ্ট হইলে, প্রীলোকের মুখে শোধ হইলে এবং সমুদার উপাত্রব অফার্ল পাইলে সেই শোখ অসাধা। কি স্ত্রী, কি পুক্র, মুত্তাশকে শোক ইইলে কাহারত মিন্তার শাই। যে শোধ মৃত্য অধন উপাত্রব নাই।

#### 95

তাতা হুমার্থ্য। চুক্তিরী প্রসক্তেশ এ ফার্ছানে লোগ তইলে তাকা অসাধ্য । প্রতিষ্ঠিয়ন শোগ অধিলে তার্ছা চিকিৎসার প্রদায়িত হয় না।

## इक्ति ( কুরগু ) রোগ।

কু দোৰ্দ্ধ গতিক বি: শোণসূত্ৰক কৰে ।

সুকৌ ৰক্ষণত: প্ৰাণ্য কলকোৰা বিবাহিনী: ।

অপীড়া সমনী হৃদিৎ করোতি কলকোৰয়ো:।

শোষা প্ৰমেশে সূত্ৰাকৈ: সাহকি: সন্তথা পৰ: ।।

প্রত্তর অরপ ও কারণনির্গর—অংশানামী বাসু সুবিও ব্ররাজে ক্রাক্তি ইইতে অঞ্চলোবে যে শিরা গমন করিয়াছে, ভাষাতেই শোব উৎপর ইয়া অঞ্চলায় বাজিও হয়। ইয়াকেই রামি অর্থাৎ কুরও রোগ বলে।

ভূরতের ভেদকধন,—ভূরত সাও প্রকার ;—বাতিক, শৈছিক শৈষ্টিক, রকজ, দেদোজ, মূত্রত ও অন্তর্জনিত।

্ৰাতিক হৰির সক্ষৰ,—কাতিক দ্বৰি রোগে হঠাং অওকোৰে বেৰন। জয়ে এবং বারপুরিত চর্মপুটক (অর্থাৎ ভিত্তির স্থবক ) স্পর্ক করিলে, বেরপ বোৰ হয়, কোষ স্পার্শেক সেইরপ অমৃত্ত চইরা বাকে।

ৈ পৈতিক রক্তির কথন,--বে ন্যক্তির পিত্রজ কুরও জন্তে। ভাহার অও কোবের বর্ণ পক্ষ সমস্কুরের ন্যার দৃষ্ট হয়। কুরও পাতির। উঠে এবং উক্তম স্থানা গুজুতি কক্ণ নক্ষিত হবয়। খাকে।

সৈমিক স্থানির সক্ষা — নৈবিক কুরতে কোন শীতক, ভারি: ক্রান্তির ও অন্যা বেসমানুক্ত হয়।

রক্ত কুরতের সক্ষণ — পৈতিক তুরতে বেরপ সক্ষণ দৃষ্ট হয়।

ভক্ত তুরতেও সেই মেই সক্ষণ সক্ষিত হইছা থাকে এবং কুরও নীসবর্গ ক্ষোটকে পরিবেন্টিত হয়। ্বেদ্যেক স্থরণের লক্ষ্য,—বেলোক সুরহত নৈত্রিক সুরতের স্বাহতীর লক্ষ্য দৃষ্ট হয় এবং পক্ষ তালফদের নারি উন্ধার বর্গ ইইয়া পাকে 🖰 🕞

বুজন কুরতের লক্ষণ,— ব্যরোধ করিলে যে কুরও জন্ম, ভাষাক্র খুলন কুরও কছে। এই রোগী বধন গানন করে, ওপন ভিতির নাার ঐ কুরও এ দিক্ ও দিক্ দোলারখান বইতে পাকে এবং মুক্ত কুন্ধুরোগোর ন্যায় ইয়াতৈ বেদনা উৎপর হয়।

শার্মানিত মুর্তের কারণ,—বারুর্ভিকর দ্রবা ভক্ক, মতান্ত শীতাল ললে আন, মুর্বেশ্সম্বরণ, বলগুলিক মলপুল ত্যাংগর জনা লো-প্রদান, পথপর্বাটন, অধিক ভার্বহ্ম, এই সকল কার্থে বায়ু সুবিত হিয়া কুল অন্ত সংস্কৃতিত করিয়া কেলে এবং শহাম রইতে উহাতে মূচকিতে লইরা যায়, তামাতে পুচকিতে প্রতিবিশিষ্ট শোকউইলা হয়। ঐ পোবের চিকিৎসা না করিলে সুবিত বায়ু ঐ প্রান্থিনিটি কুল অন্তকে-অওকোনে লইরা যায়, ইতয়াং কোব র্ডিপ্রাপ্ত হায়া উঠে এবং উহাতে গেলবা লগে। উহাকেই অন্তর্নাই কুলও বা পাল-রুদ্ধি করে। ঐ অন্ত কোনে অবিভিতিপূর্কক খামিয়া থামিয়া ক্লেশ প্রদাদ্ধ করে, ঐ কোব চাপিয়া ধরিলে অন্ত শন্তব্যত কোবকে ফীত করিয়া উর্দ্ধে নাম করে, তাহাতে রোলীর অপেকান্ত আহা বোগ হয় কোব হাডিয়া দিশে পুনর্বার ঐ অন্ত কোবদেয়া প্রথিক হয়। এই রোগে বাতিক সুর্তের মাবতীয় সক্ষণ প্রকাশিত হয়।

#### भन्द्रशस्त्राकः।

নিবদ্ধ: খন্নথ ব্ৰন্য মুক্তবন্ধতে গলে।

নহান্ বা যদি বা দুয়ো পলপঞ্জং তৰাদিলেছ ।।

ৰাতঃ ককণ্ডাপি গলে প্ৰচুটো

নন্যে ভূ সংক্ষিত্য তথেব মেছঃ।

কুক্ৰ স্থি পঞ্জ কমশঃ স্লিকৈঃ

সম্যিতং তং গলগগুনাকঃ।।

গলগঠের বরপু, করিব ও লক্ষণাদি,—গলদেশে কুরতের ন্যান্ত থেটিউকেই গলগত করে। সৃষিত বাসু, কক ও দেল গলগুলেশন গলভাতিগর শিরা আকার করিলেই এই রোমের উৎপত্তি হয়। গলগতি এক্ষৎসরের অধিক হইকে ভাষা চিকিৎনার অসাধা।

## भश्यांनादत्त्राभ ।

কর্কেত্বকোলামলকপ্রমার্টনঃ কন্ধাংসমন্যাগলকক্ষণেযু। মেদঃক্ষাভ্যাং চিরসন্দর্গার্টকঃ স্যাদ্পগুলালা বহুভিন্চ গরৈঃ।।

ষেদ ও কক পুৰিত হইলা গলবেশ, কল্প, কক্ষ ও জীবার শাঁখান্তা-গছ শিরাহতে বদরীকল বা আফলকীর নাার যে বন্ধ্যথাক কোটক জ্বার, ভাহাকে গ্রহানা বলে। এই রোগ ছুদ্দিকিংনা।

# व्यक्त्र्महाश ।

গাত্রপ্রদেশে কচিনের বোরাঃ
সংখৃদ্ধি তা মাংস্থস্ক প্রাধৃষ্য ।
ক্তং ক্তিরং মন্দক্ষণ মহাত্তং
অনপেশৃন্থ চিরক্রচাপাকং ।।
কুর্মিত মাংসোদ্ধু ম্নতাপাধং
তদক্ষিং পাত্রবিদ্যে বদতি।।

্ বাতাদি দোষসকল রক্তমাংশ আতার করির। দেহের ছানে ছানে ছা গোলাকার মাংলপিও উৎপাদন ছরে, তাহাকে অর্কু দরেয়া করে।

## শ্বীপদ ( গোদ ) রোগ।

ষঃ সম্ভুরো বক্তনকো ভূশাতিঃ শোগো নৃগাং পাদগতঃ ক্রেন। তৎ শ্লীপদং সাাৎ করকর্ণনেত্র-শিল্পেইনাদার্যনি কেচিদাহঃ।।

বে শোধ কুচকিতে উৎপদ হইলা পাদপর্যন্ত গদনপুর্বাক ছির হরচাহাকেই গোল বকে। বে গোল উইয়ের চিপির দত ও মাংসাল ব্রদারা
বেকিত, বৃহৎ এবং মালা একবংসরের অধিক হইলাছে, তারা আরোগা
কে না। যদিও বাতপিতাদি দোবের প্রত্যেকেই কুপিত হইলা এই রোগ
বিকিন্তা, তথাপি সর্বাধার গোলেই সেবার অংশ আছে।

### বাতব্যাবিজোগ।

কৃষণীতাপলযুদ্ধনাবাদ্ধিপ্ৰকাগরৈ: ।
বিষমাদ্পচারাক বোষাসূক্ এবণাদিশ ।
লক্ষনপুৰনাতাখুবাায়ামানিবিচেটিকৈ: ।
বাতুনাং সংক্ষয়ান্তিন্তা শোকরোগাতিকর্ষণাৎ ।
বেপসনারণাদানাদ্ভিঘাতাদভোকনাৎ ।
মর্মাবাধাদ্ গজোত শুখনীভ্রমানাপতংসনাৎ ।
বেহে ভ্রোতাংশি বিজ্ঞানি পুরন্ধিবানিশো বলী ।
করোতি বিবিধান্ ব্যাধীন্ সন্ধাকৈকাকসংজ্ঞান্ ॥

্রনাতব্যাধির অস্ত্রণ ও করিণ্ড—উপবাস্ত শীতদ ও কক্ষরতা ভক্ক ডিড্রিক ইমধুন, রাজিলাগরণ, অতিরিক্ত ব্যন্থী অভিরিক্ত বির্ভি প্রভাৱে দক্ষপ্রদান, অধিক ব্যারাষ, অধিক সন্তর্গ, উপস্থান বইতে পর্তম, অধিক গালস্থালয়, মুত্রাদির বেগরোধ, মধাছানে জাবাত প্রভৃতি করিনে আমু প্রবর্জিত হইসা পুন্যথর্জ শিরাও ধ্যনীতে প্রবিষ্ট হয় এবং দানার্থা অক্সাধী রোগ উৎপাদন করে, ভাষাকেই বাতধ্যধিরোগ করে।

বাভব্যাবির লক্ণ,—সন্ধিয়ানের সম্বোচ্চ পালুক, ক্ষাক্ত, পালুকা, ক্ষাক্ত, পালুকা, ক্ষাক্ত, পালুকা, ক্ষাক্ত, পালুকা, ক্ষাক্ত, পালুকা, নিমানাপ, গব্দ দুনিরা বাবরা, মামিকা চেপ্টা হওরা, চক্র কোটরপ্রবেশ, পারীরের অসারক্তা, চক্র ও বৃধের ব্যাদানতা, মূলপুরীবরোধ, উদরক্ষীক্তি, গুল্ফা, লোধ, অর্থ, দেহকপুন প্রভৃতি বহুবিধ সক্ষণ এই রোগে প্রকাশ পার। এই রোগে জিকান্তয়, মুখন্তয়, দালালাব, বাক্শক্তির নাশ, চিততান্তি বিবিধ জীবণ চিত্র দৃত হইরা বাকে। এই রোগ ক্যাচিৎ প্রশ্বিত হইতে দেখা বার।

#### ৰাভবুক্তব্যাপ।

स्वताम्बर्कावविद्याक्षाकिर्गाणविद्यः।
क्रियक्षाम्बर्गान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षान्त्रभाग्यादिनिक्षः।
विक्रवाद्यान्त्रभाग्यादिनिक्ष्यक्षान्त्रदेशः।
व्याव्रमः वृक्ष्याद्यात्रभाग्यादिनिक्षित्रभागः।
व्याव्रमः वृक्ष्याद्यात्रभागः विशासविद्यादिनाः।
वृक्षानाः वृक्षिनाक्षांत्रि कृत्रास्त्र वाद्यमानिकः।

বাতরভের অরপ ও কারণ,—অবু, কচু, কার, বিব, উল ও বিরছ
বন্ধ জকণ, সক্রসদেশজাত পত্র মাংস ভোজন, শিম, শাক, মাবকসাহ,
বুলা, তিলকল্ক, দবি, আমানি, বোস, ন্তরা প্রভৃতি অহিতক্র প্রবা নেবন,
কোন, অধিক আহার, রাজিজাগারণ, অতিরিক্ত গাজকুরগালি আয়েছেন,
এই সকল কারণে বাহু ও রক্ত কৃষিত হবলা পালে কোন উৎপাদন করে।
বিজে বাজের প্রাধান্য বসিরা ইহাকে যাভরক রোগ করে।

ৰান্তরভের লক্ষণ.—দেহকাশন, বেদনা, অলুনীসভোচ, দেহকাজে গৈতানের্যে অকচি, কতু, যর্থ, ত্কা, আর্শিনির ব্লান, শরীরের বিবিধ গর্ণান্তরপ্রান্তি, একারডেদে এই সকল লক্ষ্ণ দেখা যার। যাহার পাল হইছে জাতুপর্যান্ত হানের চর্থ এই রোগে বিদীর্থ ছইরা যাত্র এবং তাহা হইছে ক্লেম্ বির্গত হর ও রোগী র্কান হইরা যাত্র, তাহার রোগ শারোগা হর না।

## केक्छस्टकान ।

উঞ্চল্লের শরপ ও কারণ নির্বর,—এক. মিন্ন ও শুম রবা ডক্প শীত-নীর্বা ও ,উক্লবীর্বা বস্তু ভোজন, তুক রব্য পরিপাক প্রাথ্য না হইতে আহার। অভিনিত পরিমান, অধিক গালিচালনা, অধিক নিদ্রা, অধিক রাজিমাগরও, এই সকল কারণে বর্ত্তিত কক, ধেদ ও বারু, অপক ধল ও পিতের সহিত্ত একল হইরা উক্তে প্রবিক্ত হর, ভাষাতে উক্তর অধি গালু ক্লয়ার জ্ঞান তুত হইরা যার এবং চলংশজিরহিত করিয়া কে. ল। শ্পর্ণ করিলে শীতক বাধ হয়, উহাতে অধিক খাবাও হয়। ইহাকেই উক্তর কছে।

উক্তত্তের সাধারণ শক্ষণ,—জ্ব, বনি, ওল্লা, করচরণে বেদনা, চরণের প্রের্জনা, চিন্তা, গাত্তের আর্ম তাবোধ, এই সকলই এই রোগের সাধারণ ক্ষণ।

উক্তত্তের সাধ্যাসাধ্য কথন,—স্থাসা, কর্ত্তব্বৎ বেদনা, কপু এই ক্রুল সক্ষণ সৃষ্ট হইলে উক্তপ্ত আরোগ্য হয় না।

### অবিবাতরোগ।

আমবাতরোগের অরূপ ও কারণ নির্ণর —বে রোগে বায়ু ও মেরা বুছ হইরা মেরুসতের বীতে এবং সন্ধিয়াবে প্রবিক্ট হইরা বেদন। উৎপাদন রে এবং দেহের লাভ্য ও অবসাদ জনাম, ভাহাকে আমবাত রোগ করে।

আধ্বাতের নাগান্য লকণ্য-নেহে বেছনাঃ অকচিঃ ভৃষ্ণাঃ ক্রিঃ পরি: ব্যি ও ক্রুড়রণে ব্যধাঃ এই নক্ষ এই রোগের সামান্য লক্ষ্য ।

# আৰু কোঁৰোক গরীক্ষিত মুটিবোৰ।

়, আঘ্যাতের সাধ্যাসাধ্য কর্মন—একনোনেংপর আ্রবর্গত চিকিৎসার অসমিত হর, কিছ জিলোকজ আব্যাত আরোগ্য হর না। ত্রিগোড়ল ইইলে বাপ্য থাকে।

### मूच्द्रांशं ।

মুধরোগের অরণ ও কারণ নির্ধর,—দ্বি, কীর, মংসা, মাংস অভৃতি গতিরিক ভোজনবারা বাতাদি দুবিত হইয়া মুধরোগ জ্ঞান।

মুধরোগের ভেদ কখন, মুধরোগ বছবিধ। ওঠগত। স্থগত। ক্রাগত, বর্জনর, ভালুগত। ইডাানি।

ওঠগত মুখরোগ.—ওঠরোগ নানাপ্রকার। এই রোগে এঠে নানা-বর্ণের সুষ্টি হরঃ উহাতে বেদনা জবোঃ কোন কোন প্রকার ওঠরোগে তঠে সূদ মাংস্থিও উৎপত্ন হর।

দস্তগত মুধরোগ্য-- দস্তগত মুধরোগে সংস্ত শোগ হয়, বেদনা ক্ষয়ে,
ক্ষমতাৰ হয়, পূঁজ নিৰ্গত হয়, দস্ত নড়িতে থাকে, হালা করে, দত্ত অসনাম ও বিক্ষতিপ্রাপ্ত হইতেও দেখা যায়।

জিক্ষাগত মুধরোগ্য—জিক্ষাগত মুধরোগো জিক্ষা কটকাকীর্ণ হয়। জিক্ষার বিদীর্ণতা জখ্যে, স্থালা হ্য়। জিক্ষায় শোধও মাংলাছুরাদিও জিমিতে দেখা যায়।

ভালুগত মুখরোগ্য—ভালুগত মুখরোগে তালুবৃলে যামুগুর্ণ চর্মপুটক সমুশ শোধ লয়ে, ভৃঞা হয়, বেদনা জয়ে এবং স্বরও বইয়া থাকে।

কঠগত মুধরোন —কঠগত মুধরোগে পিত ও শেখা মাংসলোশিত মুখিত করিয়া কঠে কাম্ব কামায়, তাহাতে গ্লন্দীর ছিত্র কাম হইয়া কাম।

সর্বাদর মুখরোগা—সুশের সর্বাত্ত থে ক্ষোটক জন্মে, তাহাকে সর্বাদর মুখরোগ হবে। এই ক্ষোটকগুলি পিডাদিকেদে সক্ত, পীত ও মুখর্বর্গ সমুখ বর্গ হয়। এই সোণে কণ্ডু জন্মে।

### কর্ণবের্গন।

বারু দ্বিত ঘটরা কর্পন শুভ করিলে আন্তিপজ্জির দ্রাস হয়।
কর্ণ সিয়া কর পড়ে, কর্ণে বেদনা হয়। পিন্ত ভূপিত ঘটরা কর্ণে পীড়া
উৎপাদন করিলে কর্ণে ভূলো হয়, পোধ জলে এবং পূঁন নির্মত ঘটরা
বাকে। কক দ্বিত ঘটরা কর্ণরোগ জ্যাইলে কর্ণে পোধ, বেদনা ও
ক্তু হয়।

#### सामाद्यांश।

পীনস রোগের কারণ-—বায় ও কক কুলিও হইদে নাদিকাণৰ অবক্ষী কিরিয়া কেলে। ভাহাতে নাদিকা উক্ষতা ও আর্ত্র প্রাপ্ত ধর। কোষ বিষয় গ্রহণে সামর্থ্য থাকে না। এই রোগকে শীনস কছে।

পুতিনত রোগের কারণ,—কক পিত ও রক্ত দূবিত ধ্রুগ্ন বারুকে বালা ও তাকুদ্দে পর্যা গেলে ঐ বারু পুঁবগর্বিলিই হইনা নালায়। বহির্গত হয়, ইহাকে পুতিনত রোগ করে।

মাসিকাপাকরোগ্য--পিতত্ত্ত দাসিকাতে পুতিগ**হুবিশিক আ** উৎপন্ন হইদে ভাষাকে মাসিকাপাক ধলে।

হাঁচিরোগ্য-মাসিকাছ বারু শৃলাটক নামক দর্থনেশে লোকভাব নাথ হইলা লোমার সাহিত নাক দিলা বহির্গত হল, ইহাকে হাঁচি কথে। শর্মিরোগ্য-মূত্রপুত্রীবের বেগরোধ্য নালার বৃষ্ণিতাবেশ জোব, নাগারণ, অতিরিক্ত বৈধুন, হিমসেবন, ইত্যাদি কারণে করু দত্তকে গাঁচী। তেহুইয়া শর্মির উৎপত্তি করে।

#### म्बादार्भ ।

নৈত্রোগের কারণ — অধিক রেতিদেবন, অধিক অধিসভাপ, অভি-রক্তিন, রাতিজাগরণ, অধিক অেদনির্গত, চকুমবো বৃলিব্যাদির এবেশী বিয়োগ, অধিক ব্যান নিশাবোগে অবীসূত অহতোজন, যুক্ত, প্রতীব ত

# আৰু কোনোক পরীক্ষিত মুন্টিবোগ ৷

ারু বিংসরণরোধ, মন্তকে জাবান্ত। অমবরত ক্রেশন, ময়গাঁদ। অভিরিক্ত বিবেশ, অভিরিক্ত মৈধুন, বালারোধ, স্ক্রম এবা দর্শন, প্রভৃতি কারণে নের্যোগের উৎপত্তি হয়।

্ নেজারাণের ভেষাদিকখন,—নেজরোগ বছবিধ, নেজরোগ জয়িবামার চিকিৎসা না করিকে রোগীর চক্রড় বিন্ত হয় কোন কোন নেজরোগে কমে মন্তিকের হানি করিয়া রোগীকে নৃত্যুর প্রিক করে।

## শিরোরোগ :

শাতিক নিরোরোগে হঠাং শন্তকে থেদনা হয়, শন্তকে কাপড় যাছিলে আছাবোষ হইয় থাকে। পৈতিক নিরোরোগে নাক ও চকু দিয়া উষ্ণ শুনির্গদের নায় বোধ হয় এবং নতকে লাফণ যাওনা ছফে। দৈছিক নিরোরোগে যন্তক কক্ষারা আফ্ছর হয়। জিলোফল নিরোরোগে বলুক কিবারা আফ্ছর হয়। জিলোফল নিরোরোগে পূর্কোক নিবিষ পক্ষণ জয়ে। য়কজনিত পিরোরোগে গৈতিক নিরোরোগে রুকে দেখা যায়। কক্ষ, যায় ও য়রকের য়ায় হয়েদে ম নিরোরোগ রুকে, তাছাকে কয়য় নিরোরোগ কয়ে। মৃথ এছক, বিরারোগা রুছে। মৃথ এছক, বিরারোগা রুছে। মৃথ এছক, বিরারোগা রুছে। মাক বিরারোগ রুছে এইবার য়য়ি হয়। জিনিজনিত শিরোরোগা রুছে এইবার রুছি হয়। জিনিজনিত শিরোরোগা রুছে বাহারিত হয়। নাক বিরারাগি পড়িতেও দেখা যায়। কোম কোন প্রকার বিরোরোগে প্রভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বেলমা আয়ভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বেলমা আয়ভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বিরাম কান প্রকার বিরোধার প্রভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বেলমা আয়ভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বেলমা আয়ভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বেলমা আয়ভাতকাল হইতে মন্তক, নেল ও জাতে বিরাম কান প্রকার বিরামরারার প্রকার বিরামরার বিরামরার বিরামরার বিরামরারার বিরামরার বিরামর বিরামর বিরামরার বিরামরার বিরামর বিরামরার বিরামর

# অনুগিন্তরোগ ৷

অস, ওক ও বিকল্প এব্য ভাকশা, ডক্র ও ছারা সেখন, মাধকলার ভালশ প্রভৃতি কারণে শিক্ত মুখিত ধ্বীয়া অমুপিত রোগ উৎপাধন শরে। এই রোগ জানিশে আধারীর এব্য পরিপাক প্রাথ হয় মান বিদ্যাধ ধ্বোধ হয়, আমু ভাউগ্যার ও ভিক্ত উক্যার ঘ্রতি বাবে, শরীয় ওকাবোৰ হয়, বুক স্থানা করে এবং অকচি করে। এই রোগ বীটা অপ্পদ্মিরের হয় এবং রোগী কুপণ্য নাকরে, তাহা হইলে চিকিৎসার অস্মিত হয়।

## বিজ্ঞোটকবোগ ।

ক্ষার, গুৰু, অন্তীর্থকর, অসু, বাল ও তীক্ষা, এবা অক্ষা, রেছিলেবের, প্রভৃতি কারণে বাতালি দোব কুলিত হইয়া সাংসদৌশিতাকি আশ্বর করে। এবং অত্যে ত্বর ক্যাইয়া,তদনত্তর বিক্ষোটক প্রবায়। ইহার আকার হতাপনক্ষ ক্ষোকার নাম হয়, কৃষ্বর্গ ও ইইয়া থাকে এবং অত্যন্ত বেদনা জ্বের। কোন কোন বিক্ষোটক পীত বা পাতু বর্গও হয়।

#### वनस्टर्वाभ ।

বনন্তের শব্রণ ও কারণ,—বসন্তরোগের নামই মহারিকা। কার।
বিক্রম, লবণ, আনু ও ঝাল প্রবা ভক্ষণ, বাহা আহার করা হরৈছে,
ভাষা পারিপাক না হইতে পুনরার আহার, লাক ও শিষের বীজ ভক্ষণ,
দূবিত বারুদেরন, দূবিত জলপান এবং প্রতিক্ল গ্রহের দৃষ্টি, এই সকল
কারণে পিত্র ও লেখা চুক্ত শোলিতের সহিত মিজিত হইয়া দেহে
মন্ত্রের মত বে কুরুজি জন্মার, ভাহারই নাম মহারিকা, অর্থাৎ
বসন্তরোগ।

বন্ধ হইবার পূর্বাবন্ধা—বন্ধ হইবার অথো দেহ বিষণ্ হয়, চর্ক ক্ষীত হইবা, উঠে, চকু শোণিতবর্গ ইয়, গাঁতে বেদনা করে, লাহালে ক্ষি থাকে না, স্বর হয় এবং কণ্ডু উৎপন্ন হইরা থাকে।

বসত্তের সক্ণ,—শিভন্তনিত বসত্ত রস্ত, শীও বা কৃষ্ণবর্ণ হর। রোগী তর্ম মধত্যাগ করে এবং ভূজা, বর ও বাতবার কট পার। বাতিক বসত্তের কুছুড়ি কৃষ্ণশীত বিভিত্তবর্ণ এবং কঠিন, ইয়াতে রোনী কণা। বেৰনা, ভূজা অকচি, কাস প্রভৃতিতে পাকাত হয়। বৈভিত্ত বসতের

## नात्रु दर्शत्मां छ भत्री क्रिक मुख्यिमा ।

ুণ্ড বন্ধ কতু বৃক্ত এবং জ্ব ; ইহাতে রোগী বৈদিতা হোজাকর। বাহের জক্ব, নিমা, তজা ও আলনা প্রভৃতি হারা আজাও হয়। নারিণাতিক বন্ধের কুছুড়ি চিয়ার মাার আকৃতিবিদিট তাহার মধ্যজাগ নিম্ন, উহাতে অপ্রাপ্ত বেদনা কম্বে, এই কুছুড়ি অনেক বিদ্ধে প্র হইরা বুব ক্রিড চইতে থাকে। পিতকনা বন্ধে যে যে লক্ষণ দৃষ্ট হয়, রক্ষ্ণ ক্ষাত বন্ধের সেই দেই লক্ষণ দেখা বার।

কাষের শব্দণ —শরীরে রোমাঞ্ছইলে বেরণ রোম্পুণ উন্নত হয়। তথ্রপ উন্নত শোণিতবর্ণ সূত্রি জয়িলে এবং তৎসহ দ্বন, কাস বা অক্টি বাজিলে তাহাকেই হাম কছে। ইহার নাম রোমান্তিকা।

জনবসন্তের অরপ ও নকণ।—জনবিষের ন্যার শুরুবর্গ কুছুড়ি হইলে। এবং ভাষা কাটিয়া জল পড়িলে ভাষাকে জলবসন্ত ক্ষে। ইয়ারই নাম মন্যাত মস্বিকা।

বসন্তের সাধাাসাধ্য কর্ণন,—রক্ত আত্ম করিয়া যে বসন্ত হর, তারা সহর পাকে, উল্লাখ্য। মধ্য আত্ম করিয়া যে বসন্ত হর, তারা বিলয়ে পাকে, ইলা কটসাধ্য। মেদ আত্ম করিয়া যে বসন্ত হর, তারা আত্ম আরোগ্য হর না। সন্থিও মক্তা আত্ম করিয়া যে বসন্ত হয়, তারা অসাধ্য, উল্লাখ্য হাতনাপ্রদা শুক্ত আত্ম করিয়াযে বসন্ত হয়, তারা হোগীকে অচিয়ে কালওালে মিশিশু করে।

#### उपदर्भ ।

ত্রন বিবিধ ; শারীর ও আগন্তক। বাডাদি,দোব সকল কুপিত হইয়া বে ত্রণ উৎপাদন করে, ডাহাকে শারীর ত্রণ করে এবং জ্জাদির্র আঘাত ভারা বে ত্রণ উৎপত্ন হয়, ডাহারই নাব আগন্তক ত্রণ।

থে ত্রণ অধিকদিন খুলি, যাহা অতি চুর্গন্ধ, আর ত্রণ কিলা রক্ত বিলিত পূঁম নির্গত হয় এবং অংগর মধ্যভাগ ক্রমে দিল হইয়া যায়, ভাহাই দুবিত ত্রণ।

বে ব্যক্তি সূর্বহোগী। বন্ধাকান অবশ সধুনেহরোগে কান্তর, ভাষার বনরোগ বইবে আরোগ্য লাভ করা কঠিব। দুখিও রণ হইতে বেচ্ছ বাসি করিও হইলে ভাষা অচিকিংলা।

#### छमद्रांशं।

শুনরোগ উৎপত্তি কথন,—বাতাদিদোর প্রকৃতিত হইর। শুনগত মাংসাদোদিত দুবিত করিয়া কেলিপেই তনরোগের উৎপত্তি হয়।

ন্তনরোগের ভেদক্ষন,—ন্তনরোগ পঞ্চবিধ, বাতিক, শৈতিক, নৈয়িক, সামিপাতিক ও আগস্কুক।

শুনহ্রদোবে বাদকের রোগোৎপতি,—৪কপাক বন্ধ ভক্ষণ করিলে বাতাদি কুপিত হইরা শুনহ্রকে দূবিত করিলা কেলে। নেই হুছ পান করিলে বাদকদিশের নানাবিধ রোগ উৎপন্ন হয়।

দৃষিত শুনহুটের লক্ষণ — বাচু কর্তৃক শুনহুট দৃষিত হইলে উহার আদ কবার হর এবং দেই হুট জনমহার ফেলিরা দিলে ভাসদান হইতে থাকে। পিশুকর্তৃক শুনহুট দৃষিত হইলে ভাষার আনাদ ভিক্ত, লবণাক ও অর্বং অন্তত্ত্ব হয়, অধিক কি, দুট্টের বর্ণও পিতের নার হইলা থাকে। মেখাকর্তৃক যে শুনহুট দৃষিত হইরাছে, ভাষা ললে নিক্ষেণ করিবামাত নিম্ম হইলা বার, উলা গাঢ়। যে মুখ কলে কেলিরা নিকে জনের সহিত বিলিয়া বার, মাহার আদ নিক্ষ এবং যাহার বর্ণ পীত, সেই মুগ্রই বিশুক্ক জানিবে।

#### अन्द्रद्राभ ।

বিরুদ্ধনদ্যাধাশনাদকীর্ণাধার্তপ্রবাদতিবৈধুনাক।
বানাধুশোকাদতিকর্বণাক
ভারাতিখাতাক্সনাদিবা চ।।
অস্প্ররং ভবেৎ সর্বাং
নাদমর্কং স্বেদ্ধং দ

প্রদররোগের অরপ ও কারণ,—সুরাপান, বিশ্ব প্রবা ভোক্তন, গার্ভপাত, অতিরিক্ত বৈপুন, অধিক পদরকে গমন, ভুক্ত বস্ত পরিপান প্রাপ্ত হইতে না হইতে ভোজন, পোক, অধিক জনণ, আমাত, ভারবহন, দিবানিক্রা প্রভৃতি কারণে জীলোকের যোনির্দ্ধু দির্গা শোণিতজ্ঞাব হয়, ইহাকেই প্রদর্রোগ করে। সকল প্রকার প্রদর্শই অসবেদনা জানী।

প্রদররোগের জেদকখন,—এই রোগ সাধারণতঃ চারি প্রকার ; বাতিক, গৈতিক, লৈঘিক ও সামিশাতিক।

বাতিক প্রদরের দকণ,—এই রোগ বাতকবিত হইলে যে রক্ত করিত হয়। তাহা রক্তবর্ধ, ক্ষেনহুক অথবা শাংসাগেত জনের তুলা দুষ্ট হয়।

পৈত্তিক প্ৰদরের দক্ষণ,—এই রোগ পিতজনিত হইলে যে রক্ত স্থাৰ হয়, ডাহা পীত, নীল অথবা কৃষ্ণবৰ্গ হইহা থাকে।

মৈথিক আদরের দক্ষণ,—এই রোগ শেষাজ্মিত হইলে বে লক্ত ক্রিত হর, তাহা পাঞ্বর্গ অধবা মাংসংগতি জনের ন্যার দৃষ্ট হুইরা থাকে।

সারিপাতিক প্রদরের দক্ষণ,—ত্রিদোব হেতু প্রদর্রোর ক্ষিলে ভাষাতে যে রক্ত করিত হর, ভাষা রভ, মধু ও হরিভাল প্রভৃতি বিশ্বিতের ন্যার বর্ণ হইরা থাকে।

র্মিপ্রাপ্ত প্রদরের দফণ,—এই রোগ প্রবণ হইলে রোগীর দেহ পাঞ্তা প্রাপ্ত হয় এবং রোগী তৃফার্ড, মৃদ্ধিত, মোহপ্রস্তু, ক্রান্ত, ও তন্ত্রাস্থ্যক হইরা পড়ে।

## শ্বভূবিশুদ্ধি কথন।

মাসারিম্পিক্দাহাত্তি পঞ্চাত্রামুবন্ধি চ। বৈবাতি বহুসোভাপ্পদার্ভবং শুদ্ধমাদিশেৎ। শশাস্ক্পতিমং যক্ত বহা লাক্ষারসোপমং। তথাত্তবং প্রশংসন্ধি ঘচাপ্যু চ বিবৃদ্ধতি।। যে কছু প্রতিমানে পাঁচদিন পর্যন্ত থাকে, অর্থচ ভাষা অপিকিছ্ল, দাহপুনা ও প্রস্থীৰ হর এবং অধিক বা অত্যন্ত অল্প পরিষাশেও করিত না হর, সেই আর্ত্তবই বিশুদ্ধ জানিবে। যে আর্ত্তব শ্লাক্ষাণিতবং, নাক্ষার্স ভূল্য গাঢ়, রক্তবর্ণ ও কলে প্রকালন করিলে রক্ত শ্রা হর, সেই ধরুই বিশুদ্ধ আনিবে।

প্রদারের অসাধ্য কর্বন,—ত্তিদোধজনিত প্রদর কিছুচেটই উপশবিত হর না। বিশেষতঃ রোগী ভূর্মণ ও ভূঞার্ত হইলে এবং নিরন্তর রক্ত আন ও ধেছন। ব্যক্তিলে যে কোনজপ প্রদূরই হউক না কেন, চিকিং সার উপকার দর্লে না।

## হতিকারোগ।

# বার্: অকুপিত: কুর্ঘাৎ সংক্রমহাধিরং চ্যুত । স্বতায়া অন্তিরোবতিপুলং সর্কদসংক্রকং।

স্তিকারোগের অরপ ও কারণ,—প্রসাবের পর দ্রীধোকের তে সমস্ত রোগ উৎপান হয়, তাহাকেই স্থৃতিকারোগ কছে। বায়ু প্রকৃপিত হইয়। যে সমস্তে বন্ধ শোণিতকৈ করিত করে, তথন প্রস্থৃতির ভদয় শিরঃ ৩ বন্ডিকারে শ্লবং বেদমা সঞ্চিত হয়, ইছাই মর্কল নামক স্থৃতিকারোগ। দ্যিত অরভক্ষণ, অধিক তাহার, অঞ্চীর্কর জ্বল ভক্ষণ এই সকল কারণেই স্তিকারোগের উৎপত্তি হয়।

স্তিকারোগের সাধারণ সক্ষণ-—স্থার, তৃক্ষা অলবেদমা, লোখ। অতীমার ও দেহের গুরুত্ব এই সকলই স্থতিকারোগের নাধারণ সক্ষণ।

স্থতিকার অসাধ্য কথন,—ছর, অতীসার, শোখ, শুস, আনাছ, বসের ব্রাস, ওজা, অস্টি গুড়তি উপস্থব দৃষ্ট হইলে দেই স্থতিকা। রোগ অভিকটে প্রশমিত হইতে পারে।

## कुछेदत्रांग ।

विकाशीनामगानानि प्रविषय अविषय विषय ।

जमजामान जिल्ला प्रक्षिर दिनार मान् श्री विष्य ।

बाग्राममिक स्थापनिक स्वानित्य विषय ।

चर्म श्री मार क्रिक्ट मी काम्र दिनार ।

चर्म श्री मार क्रिक्ट मी काम्र दिनार ।

चर्म मानि मारिक में प्रकृति स्वानित्य ।

वा सम्म कि सिक्ट कि सिक्ट कि कि कि ।

विश्राम अवन् धर्म को स्वान्य के कि क्रिक्ट के कि ।

विश्राम अवन् धर्म को स्वान्य के कि क्रिक्ट के कि ।

व्या सम्म के कि सिक्ट के कि सिक्ट के कि ।

व्या सम्म के कि सिक्ट के कि सिक्ट के कि ।

व्या सम्म के ।

व्या सम्म के निक्ट के कि सिक्ट के कि ।

व्या सम्म के ।

व्या सम्म के निक्ट के निक्ट के कि ।

चर्म कि म क्रिक्ट के सिक्ट के कि सिक्ट के ।

चर्म के कि स्वाम के सिक्ट के कि सिक्ट के ।

चर्म के सिक्ट के सिक्ट के कि सिक्ट के सिक्ट के ।

चर्म के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के ।

चर्म के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के सिक्ट के ।

কুঠের কারণ,—ব্যন, বিরেচন, আফ্রসন, দিরইণ ও নস্যক্তিরা এই সকল কর্ম অন্যায়রপে আচরণ করিলে, বজহত্যা, গুরুষারাণ্যানন বা মন্ত্রপান করিলে, বিরুদ্ধ প্রবা সেবন করিলে, আহারের অবাবহিত পরেই পরিজ্ঞন বা মেনুমক্তিরা সম্পাদন করিলে, অজীবিকর প্রবা জকণ করিলে, অমু কুরা অধিক আহার করিলে, মুক্ত সুরীর বা বহির বের্গ অবরোধ করিলে, অধিক রেগ্রিম্ বা অধিক আহাতাপ এইণ করিলে, অধিক রাবি আগরণ বা অধিক দিবানিলা গোলে, গুরুজনের অবধাননা করিলে, অপরিমিতরপে মৎসা, মৃত্য তগুলের অম, দবি বা লবণ জকণ করিলে এবং অধিক পরিজ্ঞানের পর বা বের্গনিরণে জর্ম প্রায় ইইবরি পর শীন্তিস জলপান করিলে বাজানি দেবি সকল প্রকৃপিত ইইরা পের শিন্তির মাহস্য, গোণিত, চর্ম ও রুস্বাম্বনক স্থিতির বিরা মেনে। ভাষাতেই কুর্ইরোগের উৎপত্তি হয়।

ধূঠ জরিবার পূর্কাধন। — কুঠরোগ জযিবার পূর্কে দেহছিত চর্চ কক্ষ ও কর্কণ হয়, অন্প অন্প বেদ নিগত হয়, শরীরে দাই জহে ও বর্গান্তর উপস্থিত হইলা থাকে, কণুর উৎপত্তি হয়, লার্শ-শক্তির দ্রান হইলা বার, দেহে বেদবাজ্যে, তার হয় এবং রোমাঞ্ জয়িতে থাকে।

কুঠের ভেদকথন ও বাতাদিছেলে ভাহাদের কারণ,—কুঠ আনক প্রকার । ভল্লথা অকাদশলী কুল কুঠ ;—এককুঠ, চর্মাধাঃ কিটিন, বৈপাদিক, অনসক, নজমণ্ডন, চর্মাক, পামা, কলু , বিক্ষোট ও সভাষ। আরু সাভনী সহাকুঠ বলিয়া অভিহিত ; দখা,—কপান, উত্তর, মণ্ডন, গুবাজিল, পুণ্ডরীক, সিন্ম ও কাকণ। এত্তির পাছে কণ্ড ও প্রাথবিশিষ্ট বে পুন্তরিক, সিন্ম ও কাকণ। এত্তির পাছে কুঠমধ্যে পার্রিগণিত। চরগতির পারীতের অন্যহানেও কুটিব এই রোগ হইমা খাকে। এই সকল কুঠের মধ্যে কাপান বারু হইতে, উত্তরর লিত হইতে, দশুল ও বিচ্চিত্রিকা দেখা ঘইতে, থ্যাজিল বাত্রণিত হইতে, চর্মাধা, কিটিম, সিন্ম, অনসক ও বৈণাদিক বাত্র-প্রেমা হইতে, দক্ত, প্রভাক, পুণ্ডরীক, বিক্ষোটক, পানা ও চর্মান্দ পিত্রেমান্ত হইতে, এবং কাকণ কুঠ বিলোধ হইতে সমুৎপার হয়।

পিতজন্য কুষ্টের লকণ —েৰে সকল কুষ্ঠ পিতজনিত, তাহা শোপি-তংগ এবং তাহা হইতে পুঁয নিৰ্গত হয়, উহাতে বেদনা ও স্থানা বিভয়ান শাকে।

বাত্তিক কুঠের লক্ষণ,—বে সকল কুঠ বারু জবা, ভাহা স্পর্শ করিনে কর্মণ বোধ হর, উহার বর্ণ কৃষ্ণশীত্রমিনিত, শো্ণিতবর্ণক হইরা থাকে এবং ঐ কুঠেও বেদশা বিস্তুমান থাকে।

ক্ষজনিত তুঠের দকণ,—যে কুঠ প্লেমাজনিত, ডাহা বন ক্লেন্ বিশিষ্ট, এই কুঠে কণ্ডু বিশ্বহান থাকে এবং রোগীর দেব গুরুও দীতদ হয়।

নারিপাতিক কুর্তের নক্ষ্য — বিলোধজনিত কুর্তে উক্ত তিনিধ সক্ষণ্ট দৃষ্ট হর।

ধাতগৈত্তিক, বাতলৈখিক ও শিক্তলৈখিক কুর্তের পক্ষণ, নাতশিক্ত জনিত কুর্তে বাছুজব্য ও শিক্তলনা প্রতের কক্ষণ, বাতলেখজনা কুর্তে বাতজন্য ও শেষজন্য ভূতির লক্ষ্ণ এবং পিত্রেজনৈত কৃতি পিত্র-জনিত ও কক্ষনিত কুঠের লক্ষ্ণ প্রবাশ পার।

রুগণভাদিতেদে কুঠের লক্দ্য—দেহছিত রস আত্রর করিরা কুঠ জাবিলে দেহ বিধন ও কক্ষ হর, রোমাঞ্চ জবে, স্বেদ নির্গত হয় এবং ক্ষান্দিক বিলুপ্ত হইয়া থাকে। শোণিত আত্রর পুর্বাক কুঠ জাবিলে অভ্যন্ত পুঁম বিনিতি হয় এবং রণে অভ্যন্ত কণ্ড জাবিলে অভ্যন্ত কাছিলে দেহ কুর্কল হর্য় জাত্য জবেয়, শরীরে বেদনা হর এবং মুগগুরু হইরা ধার । যেদ আত্রর পুর্বাক হঠ জাবিলে বােদ হর থেন, দেহ ও হতাদি ভালিরা বাইতেছে। ইহাতে অক্স্ লি সক্ষুতিত হইরা বার, কভ রজিপ্রাপ্ত হর্য়, রোগারির চলংশক্তি রহিত হইয়া বার, কভ রজিপ্রাপ্ত হর্য়, রোগারির চলংশক্তি রহিত হব্যা লার ; এই কুঠের রুগগুরু রুগগুরু বিরুত্ত হব্যা নের পোণিত বর্ধ ভারিলে রোগারির নামিকা বািরা বার্য্য লার বিরুত্ত হব্যা নের শোণিত বর্ণ হইরা উঠে এবং ক্ষতমধ্যে কীটের উৎপত্তি হব্যা শুক্ত জাবিলে পুর্বো রুগগুরু রুগগুরু ইংলালিত কুঠে বািকত কুঠে আক্রান্ত জাবিলে পুর্বো রুগগুরু বিশ্বিত হব্যা প্রক্রিয়া হুঠ জাবিলে পুর্বো রুগগুরু বাালিত শুরুগারিত কুঠে আক্রান্ত, ভারার সন্তান জাবিলে শের সন্তানও ছুঠরোগী হব্যা থাকে।

আক্তুতির লক্ষ্য,—নার- কণ্ডু, ধরস্পার্ম, বিবর্গতা, বেদনা, ক্ষ্যুত্ত ও রোমাঞ্চ এই সকল অক্তুতির লক্ষ্য ।

চর্যাখ্য কুঠের দক্ষণ,--বে কুঠ ধর্মপুনা, আনেকছান ব্যাপিরা অবস্থিত, মংক্রের চুক্ত্রা এবং ইন্তিচর্যবং কর্মণ, তাছাকেই চর্য-কুঠ করে।

কিটিন সুঠের সক্ষা,—বে কুঠের ব্যাহন ব্রুম্পর্য ও কক্, ভাষার নাম কিটিম।

বৈপাদিক কুঠের লকণ্—গে কুঠে কর্ডরণে ক্রেটি স্তয়ে এবং সাক্ত বেদনা হয়- ভাছার নাম বৈপাদিক।

অসমক জুভের সক্ষা--- যে সুঠের ক্ষোটভক্সি কণ্ডু ও রাগালুক হয়- ভাষার নাম অসমক।

দক্ষম ৩লের লক্ষ্ণ,—ক্**ত্**র রাগসুক্ত প্রিক্ট ক্ষিণেই ভা**র্**কে দক্ষমশুল ক্রেঃ চর্মদের সক্ষ.—যে কৃঠ শোণিতবর্ণ শুসমূক, কণ্ডুবিশিষ্ট, ফ্রেটিকসম্বিত এবং মাহা বিদীর্ণ হইলেও স্থাক্রণে স্পর্শাসম্ ম্যু, তাহার তাম চর্মদন।

পাদা ভূকের দক্ষণ,—বে কুঠের পীড়কাগুলি অতি কুম, যাহা প্রাবদম্বিত এবং কঞুও দাবসুক্ত, তাহার বাদ পাদা। পাদা কুঠ ক্ষোটকমুক্ত ও দাকণ দাহবিশিক হুইলেই তাহাকে পাণীকুঠ বলা যার।

কচ্ছুক্তির লক্ষ্য,—বে সূত্ত'কও যুক্ত ও পাঁচড়ার ন্যার। ভাহাকেই কচ্ছুক্ত কছে; ইয়ার অপার নাম ক্ষীচ সূত্ত।

বিজ্ঞোট কুঠের লক্ষ্য,—কশিশমিজিত অৰুণবৰ্গ ক্ষোটক জন্মিনেই তাহাকে বিক্ষোটক কুঠ কৰে।

সভাক কুঠের সক্ষ্,—বে কুঠ দাহ ও পীড়াসম্মিত, লোহিত্তহর্ত, ক্ষাপাশ ও বহুওণবিশিষ্ট, ভাহার নাম সভাক।

কাপালকুঠের নক্ষ,—বে কুঠ উৎপত্ন হইলে দেহ ও চর্ত্র ক্ষা-ক্ষ, শ্বর্তাবর্ণ, কৃষ্ণ, খরুপ্পর্শ ও বেদনাবিশিক্ট হয়, ভাহার নাম কাপাল।

উত্ধর ক্রের কলণ,—নে কুঠ জন্মিল কশিল রোমারত উত্ধর কলের ন্যায় হর এবং যাহাতে সাহ, পীড়া, রাগ ও কণ্ড বিভ্যান খাকে, তাহার মান উত্থর।

ষ্ট্রপ্রতির লক্ষ্য,—যে কৃষ্ঠ শুক্ত ও শোণিতবর্ণ, কঠিন, স্থিত। আর্ম্য ও যাধার মধন উলাভ হয়, তাহার নাম মধন কৃষ্ট।

খবাজিক কুঠের সক্ষা,—যাহা কর্মনা যাহার নিম্নভাগ কপিন-বর্ণ, হরিণের জিকার ব্যায় এবং বাহা বেদনাযুক্ত ভাহাকে গ্রহা জিলা করে।

পুঞ্জীক কুঠের লকণ,—যাহা পদ্মপত্তের ন্যাস, উৎসেধনদন্ধিত এবং যাহায় মধ্যকল শুভ্র ও শোলিতবর্গ, তাহার নাম পুরতীক ৷

সিধ্যুকুঠের লক্ষ্ণ,—হর্ষণ হারা ধূলি যেরপ ক্রমণঃ শ্ব্রুতা প্রাপ্ত হইরা কর হুইরা যার, সেইরপ থে কুঠ অতাপ্ত ক্র্যে এবং তথ্য গোহিতাক্সক ও অলাকুপুলেশর নারে আরু যাহা প্রাপ্তই ক্রমণ-প্রদেশে দুই হয়, তাহাকে সিধ্যু কছে। ইহারই অপার নাম হলি। কাৰণ কুঠের লক্ষণ,—বে কুঠের মধাতাগ রুজবর্ণ ও অন্তভাগ লোহিতবর্ণ কিছা মধাত্ম রক্তবর্ণ ও অন্তভাগ রুজবর্ণ, ঘাহাতে পাক ও বেদনা জন্দে, যাহা তিলোসচিম্নবিলিক, তাহার নাম কাকণ।

কুঠের সাধ্যাসাধ্য ক্থন,—এককুঠ রস, রক্ত ও সাংস আজার
পূর্বেক উৎপর হইকে তারা চিকিৎসার প্রশমিত হইতে পারে।
বিলোহজন্য কুঠ যেন আজার করিয়া জমিলে উহা আরোগা হয় মা,
কিন্তু বাপ্য থাকে। ত্রিলোহজমিত কুঠ মজা ও অবি আজার পূর্বেক
উৎপর হইলে এবং সেই কতে স্থানা বিশ্বসাম থাকিলে অথবা কীট ক্রিলে তাহা চিকিৎসার অসাধ্য। যে কুঠে কোন অল প্রিয়া যার,
কুঠবান কাটিয়া পড়ে, রোগীর নেত্র শোপিতবর্ণ, ও অর বিকৃত
হয়, সেই কুঠ রোগীর মৃত্যক্ষপ আনিবে।

### খিত্ররোগ।

শিত্রহোগত একপ্রকার কুঠ বা বহারোগ বদিয়া কখিত। খিত্র বিবিধ; বণজন্য ও বাতাদি দোব জনিত। বণজন্য খিত্রোগা জনিলে অতি কটে উহা আরোগা হইয়া খাকে। দোবজনিত খিত্র কটিং আরোগা হয়। যে ছানে শিত্রগো হয়, যদি থে খানের রোমগুলি কুম্বর্শ থাকে, আর খিত্রগুলি শিরম্প্র একজিত না হইরা বিধিৎ ব্যবধান থাকে এবং রোগ বহুদিনের প্রাতন না হয়, তাহা হইনেই খিত্র প্রশ্বিত হয়, নচেৎ ইহার বিশ্রীত হইদে তাহা চিকিৎসার

#### সংক্রামকরোগ।

গৈ বাক্তি খুর, কুর্ন্ধ, বন্ধা প্রতৃতি রোগে পীড়িত, তাহাকে লার্থ করিলে, তাহার নিবাস এইণ করিলে, তাহার সৃষ্টিত একত লার করিলে, তাহার সৃষ্টিত একত ভোজন করিলে, তাহার সৃষ্টিত এক আমনে আসীন হলৈ এবং উক্ত প্রোগগুড ব্যক্তির (পুতৃত্বই হউক্ আর গ্রীই হউক.) সৃষ্টিত নিখুন করিলে এ স্কল রোগ জন্মে, ইহা-কেই সংকাশক রোগ বলে।

### षायद्रक्षद्रांशः।

লামরকের শরণ নির্ণর,—শ্বতীনার রোগে কুপথা দেবন করিলে দেহত বাসু প্রকৃপিত হইরা সর্মশ্রীরে ব্যাপ্ত কককে শ্বন পূর্মক অংথাগানী হয়, তাহাকেই আদরক কছে।

আৰুরক অধিবার কারণ,—বর্দিন উক্লেশে অবছিতি, আর্ন্স বারু নেবন, কর্মণা ক্রব্য ভক্ষণ ; উত্তেজক, গ্রন্থ সংযুক্ত এবং গলিত বংলা লাংস প্রভৃতি ক্রব্য ভোজন, অধিক পরিক্রম, মনের উদ্বেশ, অধিক প্ররাপান, পারীরিক মুর্ক্ষতা, যে দেশে সর্ক্রণ ম্যাগেরিয়া বিদ্যালন। ভগার ধাস, এই সক্ষ কারণেই আমরক্ত রোগের উৎপত্তি হয়।

পীড়া রছির নিরম, — দর্কাথ্যে দাধারণতঃ উদরামরের দক্ষ দৃষ্ঠ হয়, তংপরে প্রব্যেক পরে জধবা হুই তিন দিন পরে বেদনা উপস্থিত হয় এবং জ্বল্প জ্বল্প বিয়েচন মইতে থাকে, এ মলের স্থিত আম ও ক্রতে দৃষ্ঠ হয়। প্রথমতঃ জ্বরুত্তে শোণিত বহির্গত হইরা জ্বমশং লামাশ্রের লক্ষণ প্রকাশিত হর। প্রথমতঃ কোঠ বছ হইরা বারঃ

থপরে ক্রিন বর্জুলাক্তি দল সহ আদ ও রক্ত দৃষ্ঠ হইরা থাকে।

আৰরজের সাধারণ দক্ষ — কুখামাল, উদর্বেদনা, বসন্বোধ, সহের উক্তা, দলনিগাঁথের বেগা, মধ্যে মহো অল্প অল্প আদক্ জ বিভিত্ত মল নিগাঁম, জিল্লার শুক্লতা ও আর্ম্ভা, অল্প জুফা বং ভোজনে অনিজ্য এই সবলই আধ্রক্তের সংখ্যেব দক্ষা।

আমরকের প্রবদ দক্ষণ,—প্রথমতঃ দেহ ইমং কল্পিত হইতে থাকে।
ংগরে কৃষং উক্ত হইরা উঠে, নাড়ী বেগগামী হর, উমরে অধিক বেদনা
ব্য এবং মধ্যে মধ্যে বেগের সহিত মদ বিসর্জনের অভিনাম হর।
ব্যমতঃ মদসংযুক্ত বিরেচন হয়, তদন্তর উহা আদ ও রক্ত মিলিত
ব্য এবং পরিমাণে অল্প হইরা খাকে। যদি এই রোগে সরদারে অধিক
দনা হয়,তাহা হইদে মুত্রকৃছ রোগের উৎপতি হইবার সম্ভব। বনি প্রঃ
বং মদের বেগ অল্প হয়, তাহা হইদেই বে রোগ সামান্য জান করিবে,
মুনহে, কারণ উহা বারা এইখার বোধগ্যা ইয় বে, সরদারেয় কোনম্বর্গ
পরিবর্তন হয় নাই। জনে জন্ম ক্লেপ্রদ বেগ উপছিত হইরা মুক্ত
হা বগ্রাণা হইতে থাকে, রোগীর শরীরে বন থাক্যেক প্রাণ্ডাত

ক্ষুত্তি ভাষার অভিসাব হর না 🖟 উদ্দেহ স্থানে স্থানে বেদনা 🗢 আধ্যুদ্ জাবে আর নির্ভর মল বিসর্জনের বেগ উপস্থিত হয়, স্বভরাং **রোগা** মদত্যাগ করিতে বিয়া আর ডখা হইতে গাঝোখান করিতে ইন্ছা করে না। এই রোগে অস্পদিন মধ্যেই রোগী তেজোহীন হয় ধবং ভাষা ৰভাব কৰু ছইরা পড়ে। রোগীর মুখ দেখিলেই বোধ হয় কে সে অভাত বাতনা উপভোগ করিতেছে। এই রোগ প্রখমতঃ অন্পশরিষিত 🕡 এবং আম ও বুক্ত মিজিত থাকে, তংগরে উহা মাংসধ্যেত জনবৎ লক্ষিত হর। ক্রমে রোগ বতই রুদ্ধি প্রাপ্ত হইতে থাকে, ততই বদন উরোগ যুক্ত ও বুক্তপুনা ছইনা পড়ে। মধ্যে মধ্যে বেছে অবুজাব বৈথি হয় এবন ৰাড়ী বেগগাৰী ও সুক্ষা ব্ৰৈয়া পড়ে। জঠনলেশে চকান মাান স্ফীত হয়। জিলায় ক্লেল অন্যে এবং জিলার পার্যভাগ থেতা লোহিত ও কট ৰ্থয়া যায়; কোন কোন সকলে কৃষ্ণবৰ্ণও ৰ্ট্য়া পড়ে। বলি বিশেষ চিকিংলা দারা রোগ আরোগ্য করা না হয়, তাহা হইলে রোগী करम बनदीन का अवर तक बहेरज कुछ भागत मात्र कुर्मश्च बहिर्मा का ক্রমে ক্রমে উদরের কেনার দ্রান হয়, তথন রোগের গতি বোরা ভা হুইরা উঠে, রোগী দলে করে বে. আও রোগ হুইতে মুক্তি লাখ করিবে ; কিন্তু অহিনতে প্রদাণ প্রভৃতি উপসর্গ উপস্থিত হইছা রোমানে মুকুমুরে বিশাতিত করে । 🕠

আমরতের জ্লকণ,—রোগের প্রথম হইতেই বলি লক্ষণ সকল প্রথম হইতে না থাকে, মুধের চিহ্ন আন্তাবিক থাকে, নাড়ী ক্রতগামী বা হয়, মলে পচা বাংসবং দুর্গন্ধ মা বাকে, তাখা হইলেই জ্লকণ জানিধে।

আমরক্রের কুলকণ ও অসাধারণম,—যদি রোগের প্রথম হইতেই আমনিক নিডেক্সডা ক্ষে নাড়ী বেগগাদী ও বলহীদ হর, মুখের মনিনতা ক্ষে, নন চঞ্চল হর, সহসা উদরের বেগনা কমিয়া যায় এবং তংশক মনের হর্মন রুমি-পার, অস্ত্র, বদন ও নাসাবিবর হইতে পোনিওআব হয়, হিলা উঠিতে থাকে, জিহুবা কুফুবর্গ হয়, রোলী প্রসাশ বাতা প্রয়োগ করিতে থাকে এবং বৃদ্ধ বছলার হইরা যায়, তাথ্ ইইলেই তাহা কুলকণ আনিবেঃ কুলকণ ক্রমে রুমি পাইলেই সে রোগ আর চিকিৎনার প্রসাধিত হইবার স্কাবনা নাই।

## উৎসাদী রোগ।

উৎকাসীর বরণ ও বারণ মির্বর,—এই রোগ কাসরোগের অন্তর্মনী বিদিরাই পারিগণিত। পাকাশরের,উতেজনা হেতু মল ও মূর পরিদ্ভরণে জ্যক্ত বা হইলেই এই রোগ প্রকাশিত হয়। অধিক ধূমপান, খাসবন্তে বৃদি প্রকৃতি,প্রবেশ, অধিক ব্যায়ান প্রকৃতি কারণেই এই রোগের উৎপত্তি হয়। সহলা শীত্রকতা ও আর্ম্ম তার পারিবর্ডন্থ,এই রোগের একটা মহৎ কারণ বিদ্যা পরিগণিত।

উৎকাসীর ককণ, — মুখ ও গদার মধ্যে ওঁরা লাগিলে যেরপ বোধ হয়. এই রোগেও তরূপ অভ্যতন হইরা থাকে এবং কঠকওু, ভোজনে অনিছা: ক্রম্ব অরডেদ, বক্ষাছলের উক্তর ও বেদনা, তালু পার্যাদাহ, অকচি, জিল্লা-দাহ, ভোজন সময়ে কাসিতে কাসিতে বনি, শিরোবেদনা, পার্যাদায়, চল্লে ক্রম্ব পত্রন, দেহের স্কর্মাব এই সকল সক্ষা একাশ পার।

উৎকাষীর মাধ্যাসাধ্য কথন,—উৎকাষী চিকিৎসা দারা সহজেই উপশ্যাত হর, কিছু অবহেলা করিলে ইহা হইতে কাল প্রভৃতি রোগ শ্রাম্বার সম্ভব । স্তরাং তাহা হইলে বিশাদ ঘটিবার সম্ভাবনা।

### ≆াউর রোগ।

কৃতির রোগ বালকদিগকেই প্রার আক্রমণ করে, এই রোগে বালকেরা তান্ত বাতনা প্রাপ্ত হর । কিছ এ রোগ সংক্রামক নছে। এই রোগা প্রার রেলা বালকদিগের পারে প্রতিয়া থাকে, অন্যান্য ছলে কৃতিং কৃত হর। ই রোগা সহজে উপাশ্যিত হর না, এক বংসর না তভাষিক সমরত এই রোগ বিদ্যমান থাছে। শোপিতের অপক্রতীতাই এই রোগের প্রধান কারণ দিরা পরিকীতি ত। অনেকগুলি কুছুড়ি একত ছইরা এক ছানে বর্ত্তিক রু, তাহারই নাম কাউর। কোন কোন সময়ে ঐ কুছুড়িগুলি বিদীপ রো অনিম্ন পুন্তি প্রতিত ছলে বহির্গত হর। যথন ঐ পুন্তি উর্তিয়া রি, তখন প্রতিত হল ক্তবং বোহ হইরা থাকে এবং নেই ছলে ছতি-রির চিল্লের নারে কুত কুম রস্ত্রা, দুক্ত হয় । কেই সকল রদ্ধু দিয়া রম বহি-ত হতিতে থাকে, তংগরে প্রস্তার আবার ভছপরি খুন্তি কছে। থ ভাবে হন্ত কাণিলে রোগী লিহরিয়া উঠে এবং তথার দাই জন্ম। কোন কোন লগতে শুস্কি উঠিছা রোগ আরাম হইরা যার আবার কণ্টু উপ-হিত হইরা পুনরার জন্ম। এই রোগে রোগীর মধ্যে দধ্যে স্বরভাব হর এবং রোগী চঞ্চলও হইছা থাকে।

## षु ह्वी त्वांश ।

मूख्तीत समर्थ ७ कांत्रण विर्णतः,—नित्रसत महल मात्त प्रवद्यां कितित्व कांत्रण दे द्वां कितिया थाटक प्रवर ए ए कांत्रण श्रवा कांत्रण कांत्रण थाटक प्रवर ए ए कांत्रण श्रवा कांत्रण कांत्र

বৃঙ্ নীর দক্ষণ,—প্রথমে বাসক রসপূষ্য কানিতে থাকে এবং তাহার

কৃষ্টিত অরতেদ দৃষ্ট হয়, যথন তাহার। নিজিত হয়, তথন গলংগশে

মুদ্ কৃত্ শাল হইতে থাকে এবং গাল্লেশে বেদনা জ্বন্ধে, তাহাতে শিশু

বার পর বাই কর্ত পার। যথন খাল এইণ করে, তথন বার্লের অরের
ন্যায় অর বহির্গত হয়। নীর্দ কাদি কাদিতে ফালিতে তাহার সহিত

কৃত্বং একরপ দেখা বহির্গত হয়, তাহাত অতি ক্লেশে নিজ্বাত হইয়া

থাকে, এই অবহার শিশুর অরতাব ক্লিত হয়। গাতের উর্গত, মুখের
লোহিতবর্ণতা এবং নাড়ীর বেগগামিত, এই সক্ষই এই রোগের ক্লেণ।

বৃদ্ধ্বীর সাধ্যাসাধ্য কথন.—বৃদ্ধ্বী শিশুদিশের শক্তে জরাধহ রোগা বনিচানই হর। এই রোগের প্রেণাতেই অতি সাবধানে চিকিৎসা করা কর্তব্য, বচেৎ উপশ্বহ হইবার সন্তাবনা নাই। সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইলে হুই তিন দিন যধ্যেই শিশু কলিপ্রানে নিপত্তিত হয়।

#### বিহ্বারোগ।

বাগুজনিত জিলোরোগ্যান বার্ কুপিত হইনা জিলারোগ জড়িতে। জিলা বিধ বিদীপা হয়, শাকবৎ কণ্টকবিশিকা হইনা থাকে এবং কোক-জপ নুসাবাদৰ অস্তব করিতে পারে বা। হৈণতিক জিহনারোগ,—পিত কুপিত হইয়া জিহ্নারোগ জাতিক জিহনা কটকবিশিউ, দীর্ঘ, দক্ষ, বজসংস্থুক ও উপচিত হইয়া ধাকে;

সৈম্বিক জিকারোগ্য-লেমা প্রকৃপিত হইয়া জিকারোগ সমুৎপাদদ করিলে জিকা শাদ্দদীকটকমুক বদিয়া বোধ হর এবং গুকভার ও উপ-চিত বোধ হইরা থাকে।

অধান নামক জিলারোগ্য — জিলার তদদেশে কনরক অনিত শোগ জবিরা থাকে, তাহাতে জিলা পাক্রিশিস্ট গুরিত ও পরিপর্ত্তিত হয়, ইহারই নাম অধাস।

উপজিহাক নামক জিহনারোগ,—রক্তককের গোষ বশতঃ জিহ্নার সুৰ সেশে জিহনাপুন রপ পোষ করে। উহাতে লালা জাব হর, কণ্ডু বিদ্যান পাকে এবং উপতাপ জগে, ইহারই নাম উপজিহাক।

#### मखरतान ।

দত্তরোগের কারণ,—শীতদ স্থানে বাস্য অধিক অন্তর্য ছোজন, কন্দ্রত্য আহার, বিনা উপাধানে শরম প্রভৃতি নানা কারণে করুরোগের উৎপত্তি হইরা থাকে।

দালন দত্তরোগ্য--দত্তে বিদীর্ঘানবং বেদমা জমিলেই ভারতে দালন দত্তরোগ কছে। বায়ু কুশিত হইয়া এই রোগের উৎপত্তি করে।

ক্রিমিনস্থক—বারু প্রকৃপিত বইরা এই রোগ জন্মার। এই রোগ জন্মিদে দত্তে চুক্ট রক্ত ও ক্রিমি কম্বে, দত্ত ক্ষমর্শ হির্মিশিক্ট, বেদনা মুক্ত, পৌশসমন্তিত ্বও আবসংযুক্ত হইরা বাকে। বিনা অবসম্ভানেও এই রোগে দত্তে বেদনা উপস্থিত হয়।

ভাষনক দভরোগ।—বাহু ও কক প্রকৃপিত ধ্রীয়া এই রোগা উৎপাদ করে। দত ভার ধ্রীলে বাছু ও কক প্রকৃপিত ধ্রীয়া দুখ বক্ত করিয়া কেলে ইহাকেই ভাষনক রোগা করে।

দত্তহৰ্ব,—বাৰু ও শিক্ত প্ৰকৃশিত হইরা এই রোগ সমুৎপাদন করে। এই রোগে দত্ত সমূহ শীত, উঞ্চ, বারু ও পদ স্পর্শ করিতে সমর্থ হর না। সভাপৰ্যনা, নামু ও কল প্ৰকৃপিত হুইয়া এই রোগ উইপান্ন করে।
এই রোগে দতগত মল তহ হুইয়া শর্করাবং শরুস্পর্ন হুইয়া বায় !
কাশানিকা, নামে বোগে মন্ত ও মত মল কঠিন ও চুর্প হুইয়া শর্করা
ভূল্য হয়এবং নিরপ্তর মন্ত করিতে পাকে, ভাষার মাম কাশানিকা।
শ্রাবদন্তক, নাম ক্রমংকুক পিত প্রভাবে মন্ত দ্বা বুইয়া থাবং দত্ত
ক্রিশ্বর্শ অথবা নীলবর্শ হুইয়া পড়ে, ভাষাকেই শ্রাবদন্তক করে।

## धनुष्ठकरत्रोभ ।

্ব। ছু প্রকৃপিত বইরা উর্জ্ অবং ও তিইন গ্রামিনী ধমনী সকলে গমন করে । ছতরাং হতীপৃঠে আরোহণ করিলে মেরপ গাল আন্দোলিত বরু সেইরপ রোগীর দেহ সর্বদা সঞ্চালিত হয়। ঐ কুপিত বারু ধ্যন নিজ্ বান হইতে উর্জ্বামী বর, তথন ক্রমে ক্রমে বক্ষাছল, শিরোদেশ ও প্রাটছ অছিকে পীড়ন করিয়া রোগীর সমন্ত দেহকে ধমুকের ন্যায় ক্রতঃ প্রচেতন্ করে, ইহাকেই ধস্ততা রোগ কছে।

## গুজভদরোগ 1

্থুজভাষের অরপক্ষন:—রতিশক্তি না থাকিলে ভাহাকেই নপ্থেম্ফ বা ক্লীব বলা যার। প্রভিনিবরে অপক্তিকেই ক্লৈণা বা যুজভাষ ক্লোগ কছে।

ধুক্তকের ভেদকধন,—ধুক্তক সাতপ্রকার ; তর ধোকারিজ (১)। নান্দিক বা নিবেবভাজনত্রীসহ সঙ্গবজনিত (২), শিশুজ (৬), শুক্তকরজ (৪), নিজরোগজনিত (৫),কার্যনোধজনিত ১৬) ও সহজ (৭)।

জনলোকানিজ খুলডেদ,—জন ও পোক প্রভৃতি কারণে সদ্যোদ্ধুক াজির চিত্র বিষ্ঠ কলৈ তাহার শিব পত্তিত কলৈ নার এবং কিছু-তেই উন্নয়ন শাকি উপপাদন করিতে পারে না, ভারাকেই ভরশোকানিজ ্যাতক করে।

শাৰণিক অধৰা বিৰেমভাজনতীনৰ সক্ষমজনিত কৃষ্ণভক্ত —বিৰেম-ভাজৰ নারীয় সহিত ভ্ৰমণ কভিলেও প্রক্রের ক্রেমা জন্মে। ইহাকেই নাৰণিক অধৰা মকোভিয়াভজনিত ফুড্ডক বলা হাত্র। পিত্রল পুজন্তন- অতিরিক পরিষাণে কটু দ্রব্য, অনু দ্রব্য, উচ্চ বন্ধ ও লবণাক্ত সামগ্রী দেবন করিলে পিত্র কৃষি প্রাপ্ত হুইয়া দেহছ ওক্তের দ্রাস করে, তাহাতেই শান্তের ক্লীব্য ক্লিয়া খাকে। ইহারই নাম পিত্রজ্পত্রক।

শুক্রকারত বৃজ্ঞত্ব—ক্ষিক শারিবারে স্থীসক্ষ করিলে এবং ওদবছার বাজীকুর ঔবধানি সেবন না করিলে দেহত ওক্ত কর প্রাপ্ত হর, তুওরাং ভক্ষানা যে বৃজ্ঞত্ব রোগ ক্ষান্ত, তাহাকেই শুক্তকারক বৃজ্ঞতা করে।

নিদরোগজ যুক্তদ্য—নিদে উৎকট রোগ কবিলেও পুরুষের যুক্তদ রোগ কবিরা থাকে। কারণ রোগ প্রভাবে বীর্যাবাহিনী শিরা ছিয় ইবা ধার। এই রোগের নাবই নিদ্রোগজ যুক্তদ্য।

কামরোধন শৃঞ্জন,—বে সদদ ব্যক্তি বলিষ্ঠ, অখত ভাষারা অধ্যবস্থাদি এড অবসহন করিয়া কাদের উদ্ভেও ভাষা দমন পূর্ত্তক ভাত্তিত করিয়া রাখে, ভাষাদিশের যে শৃক্তক রোগ উৎপর হর, ভাষা-কই কামরোধন শৃক্তক করে।

সহজ ধুজতদ্য—যে বাজি আজন ক্লীব, তাহার রোগই সহজ এজভন্ন বলিরা অভিহিত।

শুকতকের সাধ্যাসাধ্যকখন, সহক ও নিশ্রোগজনিত খুক্তপ কিছুতেই প্রশাসিত হর দা। এতরাতিরিক অপরাপর সম্ভই চিকিৎসাধারঃ আরোগ্য হইতে পারে। যে সকল খুক্তপ হুসাধ্য, সেই সেই রোগের চিকিৎসার প্রারতেই যে হেতুতে শুক্তপ অধিয়াহে, তাহার বিপরীত কিরার অস্তান করা বিধের।

## পাঁচুড়ারোগ।

পাঁচড়ার অরপ কথন,—শরীরের থে কোন ছাবে প্রথমতঃ কও্তীট জয়িবা কৃত পুত্র কৃত্যুভির ন্যায় করে, পরে জনশ অপেকারত রুখি আও হর এবং চুল্কাইরা কড উৎপার্থ করে, তাছা হইতে রুদ ও পুঁজ নির্গত হর, তাখাকেই পাঁচড়া করে।

শাঁওড়ার কারণ নির্ণয়,—চর্মের উঞ্জ, কৃক্ত এবং <mark>অপারিত্ততা এই</mark> লক্ষ কারণেই রক্ত দূবিত হইলা এই লোগ উৎপাদন করে।

পাঁচড়ার সাধারণ সক্ষ,--এই রোগ অধিকাংশই করছ অলুলীর মধ্যে, মণিবন্ধ, প্রকোষ্টের অস্তান্তর্নিক, সন্ধিশানের বজাংশ এই সকল हाटन कवित्रां बाटक। भारत्वत अन्याना हरमध मुक्के इत्र, किछ नमन-ৰতান ক্ষিত হয় না। ইহার ক্লোটক প্রকাশিত হইবার অথ্যে গাল-ত্ত, প্ৰয়ে। সন্ধানালে, নিশীখে ইহার কণ্ড, রন্ধি প্রাপ্ত হয়, এই প্রকারে क्कांप्रेक ब्हेटल करम शाहका करना। चरना क्कांप्रेकशन किविश ब्रेडियाँ ना श्राप्त वर्ग छ मेनर जीक एव अवर प्रबं बहेरल मेनर छेनल बहेगा छैटी। পরে উহার অভ্যন্তরে পুঁজ জ্বে। যত রোগের ব্লছি হয় ততই ক্ষেষ্টিকগুলির আরুতি বর্দ্ধিত হুইতে বাকে এবং ক্রমণ: অধিকতর পুঁজ কৰে। কোটকের হটিকাগুলি এক একটা পৃথকু পুৰুকু ভাবে াকে, কান কোন লগতে চারি পাঁচ বা তভোবিকণ্ড একর হইতে त्वभा सात्र ।

প্রিড়ার সাধ্যাসাধ্য ক্ষম,--বে প্রিড়ার শুটকা এক একটা পুৰুষ ভাষা অভি অপ্পদিনের মধ্যেই আশ্মিত হয়, কিন্তু স্থানকগুলি একভ ্ইলে কিছু বিদৰে উপশ্বিত হইয়া থাকে।

### বাভরোগ।

ঘাত রোগের স্বরূপ্য-স্বরীয়ন্থ কোন সন্ধিতানে কিছা তাহার চতু-ৰ্ডিকে মাহ জবে এবং স্ফীত হয়, কখন কথন জুর কিলা জুরভাব বোধ হৈয়া থাকে। কথন কথন সেই ছান পরিবর্তন পূর্বাক সেই দাছাছি দেহের অনাস্থানেও গমন করে, ইহাকেই বাতরোগ কছে।

ৰাতরোগ ক্ষিবার কারণ,—পিতা বাতার এই রোগ বাকিলে ত্বসন্তানেরও কবিরা বাকে: বাদ্যকানে এবং বেবিনে এই রোগের প্রবদতা দুই হয়। জীশোকের রঞ্জোবদ্ধ হইলে বা রজ:করণের কোন-রুপ বিষ্ণ ক্রান্ত্রতে এই রোগ ক্ষিণার সম্ভব। কোন প্রকার রোগে সরীর বসহীন হইলেও এই রোগ জখিরা থাকে।

বাভরোগের নকণ্য—শরীরে অধিক শীত দাগিলে ছই ভিন দিলের গৰোই পদের গুনুক (পোড়ালি) ও ইট্রেড বেদনা জয়ে, এখন কি চৰিতে পতাত কট বোধ হয়। ক্ৰমণ: লালোগ্যাৰ্থ চিকিলো মা করিল

াত্তিশ্বল কুলিরা উঠে এবং বেদনা বোধ হর আর সেই ছাম উক্ত ও ইবং
বুজবর্গ হর। জানে কুধার দ্রাস, ভ্রুড় কোঠবছ এবং মুরের অপ্পতা ও
বুজবর্গত জালে। শ্রীরছ রহং গাঁইট সকলে এখনে বেদনা হর, ভংগরে
কুত্র কুত্র গাঁইট আক্রমণ করে। রাত্তিতেই বস্ত্রণার রাজি হইছা
আন্তে

# পুরিছারোপ।

প্লীহার আকার কথন,—গ্লীহা ছিডিছাপক, সৃহ, দীর্বাক্তিত, অতীব ভূজানাজীনর এবং গাড় খুলুবর্ণ। প্লীহার ওজন দাধারণতঃ তিন হটাক এবং ইছা দীর্বে পাচ ও প্রছে কিঞ্জিদিক তিন ইঞ্চি। বান উপপত কাদেশে ইছা অবছিতি করে। ইহার বহির্দ্ধেশ স্থাক্ত আর উহাকে নিম্ন পত কা ইতি দাংসপেশীব্যবধান থায়া বিভিন্ন করা বাইতে পারে। ইহার নথাকাগ ভূজান্ততি এবং উহা পাকদানীর নামপার্শের নহিত নিলিত। দেহের অভ্যান্তরম্ অপ্রাপর যান্ত্রের সহিত ইহার প্রায় নাচ্পা দক্ষিত হর না।

প্রীহার কার্য্য প্রীহার নাহায়ে দেহাজ্যন্তরে শোণিতকৰিব।
ক্রিন্তি হইরা বাকে। শোণিতের মধ্যে বে শুন্ত ও রক্তবর্গ কণা দৃত্তী
হয়ে, প্রীহাই তাহার উৎপত্তির প্রধান কারণ। প্র সম্বন্ত শোণিতকণা
স্মীহাছ শিরা হইতে বহির্গত হইরা দেহের সর্বান্ত রক্তপ্রবাহের সহিত
ক্রক্তিত হইরা থাকে। যাহা আহার করা বার্য্য প্রীহার বাহাযো সেই
সক্ষ কুত বন্ত শোষিত হর। যে সকল পদার্থ হারা প্রীহা নির্মিত হইসাহে, তাহা ছিতিছাপত্ কর্যাৎ সেই সকল পদার্থকে অনারালে আরুকন
ও প্রদারণ করা যার, এই জন্য প্রীহা রক্তনক্ষরে ছান বলিয়া ক্ষিত।
শ্রীহার সাহাযো শোণিতের প্রণের তারতদা ঘটিয়া পাইন।

প্লীহা বৃদ্ধি প্রাধির কারণ কথন,—যে সকল দেশে ন্যানেরিয়া বিদ্যানার এবং দে সকল প্রকেশ নাতিপীতোক্ষ, তথার প্লীহারোগ বৃদ্ধী বন না। যে সকল দেশে ক্লশাকুমি অধিক, ইহা তথারই অধিক দেশা বার।
ব্যালেরিয়া প্লীহা উৎপাদনের একটা মহৎ কারণ। বহির্দেশে কোন
ক্রকার প্রহার লাগিলে প্লীহা রুদ্ধি আবি হয় ও উহাতে বেদনা ক্ষিত্র।
বাবে।

# আয়ুর্বেদোক পরাব্দিত মুট্টিবোগ।

বৃদ্ধিপ্রাপ্ত প্রবিদ্ধে লকণ,—বদি সহসা প্রবিদ্ধে অভান্তরভাগে শোপিত সঞ্চার হয়, তাহা হইদে উহাতে অভ্যন্ত বেদনা করে। সাবারপ্রতঃ অভ্যন্থ বিদ্যামন্থরে ইয়া দৃষ্ট হয়। প্রীহা মৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইদে হালয়। উঠে এবং পূর্ম্বাপেকা গুড়তর হয়। যদি উহা চাপিয়া ধরা যায়, তাহা হইদে বাধা ও অভান্তা জ্বিয়া থাকে। যদি প্রীহা মৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া বহাদিন ভদবছায় বিদ্যমান থাকে, তাহা হইদে পাকরম্র ও পারপোন্থারের কার্বাের বৈশারীভা বটে এবং রোগী ক্রমণঃ জীর্ণ, ওছ, বলহীন, রক্তপ্রা ও চলৎশক্তিরহিত হইয়া যায়; বিয়া ক্রমণ ও মৃত্র বিশ্বতি প্রাপ্ত হয়।

শ্লীহার অনাধ্য কথন,—শ্লীহা জাহিবাদাত অপকাৰস্থায় চিকিৎসা না করিলে ক্রমে উহা সমধিক ক্ষীত ও কঠিন হইর। পড়ে। তথন কোন চিকিৎসাই ক্ষমপ্রদ হর না; এমন কি, উহা বিদীর্শ হইরারক বহির্মত হর এবং রোগী কালগ্রানে পড়িয়া ধাকে।

## পানিবসম্ভ বা জলবসম্ভ।

জনবসত্তের পারণ,—ইহা একরপ ক্ষেটিকজনিত ব্যাধি বলির।
কীর্ত্তিত। এই ক্ষেটকগুলি আউদিন পর্বান্ত বিদ্যাধান থাকে। এ ক্ষল ক্ষেটিক ভূরের সহিত পংক্তিবছ হইনা বক্ষে, পূর্তে, বদনে ও ক্রচরণাদির
লাথাতে নিস্কান্ত হয়।

জলবসন্তের গুণ্ডাবছার দক্ষণ.—প্রথমতঃ ক্রোটকাবছার এই বসন্তের বীজ শরীরাভ্যন্তরে প্রবিষ্ট ঘটরা ১২। ১৪ দিন প্রশাহ্রভাবে থাকে। তথন কিছু নির্ণায় করা কঠিন। পারে জামে মন্তক বেদনা, স্বরাঞ্ভব, কাসী ইত্যাদি সাধারণ সক্ষণ দৃষ্ট হয়।

জনবসন্তের কোটকাবছার সক্ষণ,—প্রথম স্থার হইবার ২০০ দিন সংখ্যাই গুটি প্রকাশিত হইতে পাকে। প্রথম দিনে কোন কোন গুটি সাথে নোহিতবর্ণ হর, পরে বিক্তিপ্রাপ্ত হইবা থাকে। বিতীর দিনে সম্পূর্ণ বা পীতবর্ণ সমিকাছার। পূর্ণ হয়। সূতীর দিনে ও চতুর্থ দিনে সম্পূর্ণ আয়তনবিক্সিট হইয়া পড়ে এবং উহার স্প্রভাগ তীক্ষ হয়। সমস্থ উহার অপ্রভাগ হিন্ন হইদেই ক্রমণ: শুরু হইরা পড়ে। এক একটা শুটিকার অভান্তরে পূঁল সঞ্চিত হর, তল্পুন্য তাহার চারি পার্শ কুর্মে দাহ জন্মির থাকে। পঞ্চম দিন কালুর ন্যার হইতে আরম্ভ হর এবং চারি পাঁচছিলের মধ্যেই খনিরা যায়, তাহার পরে নিম্নভাগে কিঞ্জিৎ লোহিতবর্গ চিত্রমান্ত বিদ্যালন থাকে। এই চিত্র দীর্ঘকালয়ারী এবং উহা ভাহার পার্শ বন্তী চর্মাণেক বিদ্যাল কর্মণ এই রোগ্যের সমস্ত গুটি একর প্রকালিত হর না, জামকগুলি এক এক পংক্তিবছ হইয়া এক দিবস অন্তর উথিত হয়। কোন কোন সম্বে দেখা যায় যে, হই তিন দিনের পর লোর গুটি প্রকাশিত হর বা, কিন্তু কথন কথন দেখা গিরাছে যে, দল বার্য দিন পর্যান্ত প্রভাৱ প্রক্

গানিবসন্তের কেদকথন,—সাধারণতঃ এই বসত ত্রিবিধ। অনে্পা-মতঃ তীক্ষাণ্ড ও রহদমুক্ত।

অন্পোশ্বত পানিবসন্ত,—বে সকল বসন্ত উমধ্ উমধ্ গোলাকৃতি ও কুল, তামাকেই অন্পোশ্বত কৰে। ইংরাজীতে ইয়ার নাম ভেরিসেলা লান্টি কিউলেরিস্।

তীক্ষাত্র জনবনত,—ধে নকন জনবনত আভাবিক তীক্ষাত্রগৃত্তভোৱার নাগ তীক্ষাত্র পানিবসভা। ইংরাজীতে ইহাকে ভেরেসিনা কোনরভিন্ কহে।

রহরক জনবনন্ত,—বে বসন্তের গুটিকা খাতাধিক বসভ অক্টেকা রহৎ ও সম্পূর্ণ বর্ত্ত করে আর পার্খ দেশ সোহিতবর্ণ রেখা বারা অফিজ ভারাকেই-রণরক্ত করে। ইংরাজীতে ইহার নাম ভেরিসেশা গ্রেণবেটা।

জনবদন্ত নিরপণ,—স্বাভাবিক বসন্ত হট্ডে এই বসন্তের ডেদ নির্ণয়
করিবার উপায় এই যে, ইহাতে প্রধাননি গালে কে'ন প্রকার হর্গছ অফ্লুভ হর না। প্রথমতঃ গালে ও তদন্তর বদনে প্রকী প্রকাশিত হর।
কিন্তু আভাবিক বসন্ত প্রথমতঃ বদনে ও গ্রীবার ওবং তদন্তর অন্য ছানে
াধির হর। এই বসন্ত এক নিনে এক দল প্রকাশিত হয়, কিন্তু আভাবিক
সন্তে ত্বর ইইবার পর তিন চারি দিনে শুটি প্রকাশিত হইতে আভত্ত ইম
এবং তিন দিন পর্যান্ত প্রকাশ পাইতে থাকে। এই জনবস্তের গুটি
ভিত্তীর বা তৃতীয় দিনে শুদ্রবর্গ হয়, পরে এক একটা গুটার প্রার চারিশিকে
বহু লোহিত বর্ণ রেখা চুক্ত ইইয়া থাকে। এই বসন্তের গুটিনা সুক্র ক্ষাণ্ডাল

# সামুর্বেদোক্ত পরীকিত মুর্টিবোগ।

কিমের ঘণোই সক্চিত ও শুভ হইলা বান জার আভাবিক বসভের ন্যার ইহার উপরিভাগ ইবং গাপা হর না। আভাবিক বসভে যেরপ ভীবন জুর হর, জনবসভে তত্ত্বপ হর বাঃ ইহা বারাই রোগ জনাগালে নির্ণয় কর্ম বার।

## ওলাউঠা।

ওলাঠার অগ্নপ্য---বিহিত কার্থে পিতাদি দোব দকল প্রকৃপিত হইরা ক্ষেত্রকানি থাতুকে অপবং তরল করত বে ্দলভার দিরা ও মুখ দিয়া ব্যবহাপে নির্মাত করার, তাহারই নমে ওলাউঠা।

ওলাউঠা উৎপাত্তির কারণ,—অপারিষ্ঠ ও হুর্গমণুর্গ ছালে অবস্থিতি, অঝাধাকর বন্ধ আহার, অধিক পারিশ্রম, কোন পীড়াজনা মুর্মনতা এই লক্ষ্য কারণেই ওলাউঠা লখে। এতন্তিম বাযুসন্তাপের আধিক্যাবছার তাপ ও শীতদভার দোগা, মুর্গমণুর্গ ও সজন ছালে যে বারু প্রবাহিত হয়, ভাষা সেবন, মনিন জন পান, অপারিষ্ঠ বারু মেবন এবং অমৃতিত আহারও এই রোগের কারগ।

ওলাউঠার গুপ্তাবস্থা—ছুই তিন দিনের গগো কোন কোন সদরে উছার প্রথমেও পীড়া হলে। উদরামরাবস্থার অনেক দিন পর্যন্ত এই রোগ এও ভোবে থাকে।

ওলাউটার পূর্ব লক্ষণ — দেখের অবদাদ, ক্ষচরের উর্থানশে তারাছ্ণ তবং শানসিক উর্থাপ, মুখের দালিন্য ও রক্তশূন্যতা, মন্তকণীড়া, মন্তক বোরা, অবশ্বিবরে বান্ বান্ শব্দ ক্ষতি, এবং ধেরের হ্র্মানতা, ওলাউটা সন্থিবার অথ্যে এই সকল সক্ষণ কেখা বার। কোম কোন সমরে হটাং তেল বমন আরম্ভ হইনা রোগের উৎপত্তি হর, সদরে সবতে উল্পানকর কিছু প্রকাশ,পাইনা পরে এই রোগ ক্রেছ। কোন কোন সমরে ওলাউটা ইবার পূর্বে এরপ উদ্যান্য হয় বে, দিনরাত্রির মধ্যে পাঁচবার কিয়া নাতবার তরল অল্পবদ্যান্তিত তেল হর, উদ্যু বেছনা করিতে বাকে

ওলাউচার দকণ সোধারণতঃ প্রারই বিশা খোগে কিবা প্রভাতে এপন কে ত বদন সার্গ্ধ হইবা ধ্যকে। প্রথমে বিরেচনের স্থিত

অধিক মল সংযুক্ত পাকে, কিন্তু ক্রেমে মলের অংশ কম ছইর। যার। ক্রেম ক্লাজ্যের ন্যার গ্রন্থ দিয়া তরল তেল হইতে থাকে, এমন কি.উহার পারি-মাণ কখন কখন এক শেহত কব্দিত হয়। এই প্রকার বার্যার ছেদ া হওরাতে দেহ বদহীন হইরা পড়ে এবং রোগীর আর উঠিবার সাধা পাকে না।। সাধারণত: ভেদের সন্থিত কোন প্রকার উপদর্গ দেখা যার না, क्यान क्यान समरत कठेरत हर्व्यनकृता रदमना ताथ इस । परनरकत विधान আছে থৈ, উন্তর বেদনা পাকিলে তাহা ওলাউঠার মধ্যে পরিগণিত নহে, কিছু উহা ভাহাদিগের অম্যাত্র। ছুইবার বা তিনবার ভেলের। প্রই দেই ভেদ ইবং পীত ও শুত্রবর্ণ দেখা বার। কেছ কেছ কেমবং र्यनित्रा नीटक्य । जे एक्ट फड़ान्ड उद्रम, बन्द हेश मान् नहरू । जे एक অধ্পদ্ধ ছিরভাবে একটা পাত্রে ছাপন করিনে উহার নীচে স্ভি বৃহ অৱধন্তের তুলা স্থান পদার্থ পতিত হইতে দেখা বার। কোন কোন नमरम मनिनमश्तूक प्रवेवैश वर्गविभित्ने एकम मक्तित बहेन्ना शास्काः जोशाजनेज हरे राजियात १७३ वरेबारे वयस वहेरल शास्त्र। यकि वरित्र तरिठ जुक्त वह किंदू ना पारक, जांदा श्रेरम थी वयन वाक्तिमनवर छत्रम ছর এবং এক একবার অর্থ সেরেরও অধিক বহিছুত ছইর। বাকে। তেজ ৰত শীত্ৰ শীত্ৰ হয়, বমন দেৱপ হয় না বটে, কিছু খলি ঔৰধানি দেবন করার যায়, তাহা হইলে ব্যয় হৃতি প্রাপ্ত হয়। কেন্ডুলা ভেন হইবার উপক্রম বইডেই করচরণানির অনুনীতে, উহতে এবং কোম কোম সময়ে জঠরদেশে আক্ষেপ জবে। রোগী নিতান্ত ডেজোহীন হইলেণ্ড ঐ তাকেপ**ৃ** जाशास পরিভাগি করে না। কিরংকাল ভেদ ও বছন হইলে বদনবঞ্চন भागिछक्षा **७ मीमरकत् यात्र वर्गविभिन्ने इह धवर मूथ माक्**कित हरेगा-পড়ে। ৰাড়ী বৰহীৰ ও কুল হয়, চহুসভাগ খ্ৰাস আও বইয়। বায় ১ মুই প্রহর কালের মধোই অগবা ডাছার,পূর্কে বণিবছের উপরে নাড়ী দক্ষিত হয় ৷ কোন কোন সময়ে দেহ একান্ত তেজোহীন হইলেও নাড়ী একেবারে বিজুও হর না। প্রার ১০ দণ্ড পর্বান্ত মধ্যে মধ্যে তেলোহীব। ত মধ্যে মধ্যে বলবান ব্রয়া ক্রমশ্য রোগ ছব্ছি প্রাধা হইলে লেছ শীতক হুইরা মার, বছন কুঞ্চিত হুইরা পড়ে এবং রক্ত সঞ্চাদনের অম্পতা হয়।

ওলাউটার অসাধা কণন—এই স্নোগ প্রাণহারী এবং বস্থগাপক। এই নোগে হঠাৎ তেজ বিবৃত্ত হয় বলিয়া আমুই ২৪ প্রতীয় দ্বেয় স্কোমীয় ৰুষ্যা ঘটিয়া থাকে। ইহার সম্পূর্ণ লক্ষ্ণ প্রকাশিত হইলে এবং দেহ শীতক ছইলে চিকিৎসা করা বিকল।

#### (बम्द्रांश ।

দেশার্কিকর ত্রবা আহার পূর্বক ব্যাহান না করিলে এবং দিবাভাগে
নিত্রা গোলে পরীরছ বেলা থাছ রুডিপ্রান্ত হয়, ইহাকেই ঘেনো রোগ
করে। ঐ যেদ থাড় পরীরত্ম থার্গ নকল আচ্ছয় করিলে অপরাপর থাড়ুও
পৃতিপ্রান্ত হয়, তথন যেদ খড়ে কোমল হইয়া ঘায়, মৃতরাং মানহ
নকল কার্য্যে অক্সম হইয়া পাড়ে। তথন দামবের অল্প অল্প বাস, লিপাসা
ঘোর, নিত্রা, হঠাও উচ্ছাসাবরোধ, অবসম্ভা, কুঝা, বেদজনের দেবিদ্যা
আই সকল লক্ষ্য দেখা বায় এবং লেই মানবের ঘেলুলাজরও হ্রাস হইয়া
থাকে। সাধারণতঃ জঠরদেশেই ঘেলের রুডি হয়, কায়ণ খেলোধাড় জীবগণের জঠরদেশেন্ড অলিতে অবস্থিতি করে। যেদ পরিবর্দ্ধিত হইলে অগ্রিয়
উদ্দীশক হয় এবং ভুঞ্জ রুস লীজ পরিপাক পায়, এই জনাই কুথার রুছি
হয়। যদি আহারের সমরের খাডায় হয়, ভাহা হইলে ভীবণ বিকার
ক্রমা এই বাড় রুজিপ্রান্ত হলৈ বায়ু পিন্ত ও কক্ সহসা দূবিত হইয়া
ক্রমার জন্বার, মৃতরাং মান্স হটাৎ দেহ পরিভাগি করে।

#### বিক্রখিরোপ।

ভদ্ৰক্তমাংসমেলাংসি সংস্থ্যান্থিসমাখিতা। বোষাঃ শোখং শনৈৰ্ঘেরিং জনমত্যুদ্ভিতা ভূশং। মহামূলং ক্লোবন্তং রন্তং বাপ্যথবা বতং। বিক্রাধিনিতি বিখ্যাতো বিজ্ঞান্তঃ মড়বিধন্ত সং॥ বিক্ষবির শ্বরণ কথন,— সন্থাজিত হোর দকল মাংস, যেদ, রক্ত প্রভৃতিকে দ্বিত করতঃ হবিপ্রাপ্ত ধ্ইরা ক্রদশঃ গভীর্ণ্ণবিশিষ্ট বেলনাসময়িত দীর্বাকৃতি ও বর্জুল যে শোখ উৎপাদন করে, তারারই নাম বিক্ষবি।

পৃথগ্ৰোহৈ: সমতৈক কতেনাপাস্কওথা। ব্যামপি হি তেয়াত লক্ষণং সংপ্ৰচক্ষাতে।।

বিজ্ঞানির জেদ কর্মন্য—বিজ্ঞানি মৃত্ বিধ ; বাতিক, গৈতিক, রৈথিক, সারিপাতিক, ক্তজ্ঞ এবং রক্তল। ধ্যাজ্যে ইহানের দক্ষণ কর্মিত ছইতেছে।

বাতিক বিজ্ঞানির লক্ষণ,—এই বিজ্ঞানি কৃষ্ণবৰ্ণ, অৰুণ বৰ্ণ, কথন অস্থা বেদনাযুক্ত ও কথন অধিক বেদনাবিলিক হয়।

পৈতিক বিজ্ঞবির লক্ষ্ণ — ইছা পর ভূষুর ক্লের ন্যার কিয়া কশিল-বর্ণও হইঃ। থাকে। এই বিজ্ঞাধি বধন উত্থিত হয়, তথন খুর ও দাহ দলে। ইছা অতি দীয়া উত্থিত ও পরিপক্ষ হয়।

লৈছিক বিজ্ঞধির সক্ষণ,—ইহা পাতুবর্ণ, দীতক, কতুমুক্ত ছিঙ্ক এবং অনুপাবেদনাবিশিক। ইহা অতি বিশ্বে উপিত ওপরিপক্ত হয়।

বিক্রধির পরাবস্থা,—পরিশল হইলে বাতিক বিক্রধি হইতে অল্প রুঝা-কৃশবর্গ, পৈতিক বিক্রধি হইতে পীতবর্গ এবং সৈত্রিক বিক্রমি হইতে শুজবর্গ ক্লেফ নির্গত হয়। সামিপাতিক বিক্রমিতে ক্লুক, পীত, শুজ প্রভৃতি নানা বর্ণবিশিক্ত ক্লেক্সাব হয় এবং বেদবা, সন্তাশ, কণ্ডু প্রভৃতি জন্ম।

আগন্ধ বিক্ষয়ি,—শোট্ট্রাদি ধারা আহত হইরা তদবছার অপাশ্য সেবন কারিলে বারু দূষিত হইরা রক্তশিতের সহিত একজিত হর, ভাহাতেই রোনী লাহ, শিপাসা, ব্র প্রভৃতিতে কাতর হইরা বিক্রমিতেমাকারে হইরা থাকে। ইহাকেই আগন্ধ বিক্রমি কছে। এই বিক্রমিতে গৈতিক বিক্রমির সক্ষণ দুষ্ট হর।

विक्रिशित गांशांगांश कथन !

শাখ্যা বিক্ৰথন্ন: পঞ্চ বিবৰ্জ্যা: মান্ত্ৰিপাতিক: । আমপক্তবিদজ্জনেয়াং লোখৰদাদিশেও। আধ্যতিং কর্মনিয়ালং ছদিছিরাত্যাধিতং। ক্রমা স্থাসসমায়ক্তং বিফ্রমিনাশয়েরনরং॥

সামিশাতিক বিজ্ঞধি ব্যতিরেকে আর সমস্তই চিকিৎসা দারা প্রশ্নিতি হয়। আমপক ও বিদয় হইলে শোখবং নির্দেশ ক্রিবে। জঠরদেশে ব্যাতি বন্ধ হইলে এবং রোগী হর্দি, বিজ্ঞা। পিশাসা, বেদনা ও খাস প্রকৃতিতে আজান্ত হইলে সেই ব্যক্তি মৃত্যুগুংগুপতিত হয়।

#### कश्चरत्रोभ ।

ভগ্রোগের ভেদকখন,—ভগ্রোগ বিবিধ ; কাগুভগ্ন ও সন্ধিভগ্ন । ইবার দথ্যে সন্ধিভগ্ন বড়্বিধ ; উৎপিউজ, বিশিষ্টক, বিশ্বভিজ্ঞ, ভিশাগ্র্যভন্ন ভিত্তক ও অধ্যাত্ত ।

#### कश्रद्धारभन्न लक्क्ष्म ।

প্রসারণাকুক্ষমবর্ত্ত নোঞা

ক্রক স্পান বিষেষ্ণমেত হুকং।
সামান্যতঃ সন্ধিগত সা লিকমুৎুশিউসক্ষেঃ শ্বর্থ সমস্তাৎ।
বিশেষতে রাত্রিভবা ক্রকা চ
বিমিটা ষে তৌ চ ক্রকা চ নিডাং।
বিবর্ত্ত পাশ ক্রমণ্ড তীত্রা
তির্যাগ্যতে তীত্রক্রনো ভবস্তি।
ক্রিপ্রতি শুলং বিষমত্বমহোঃ
ক্রিপ্রেষ্টাক্রপ্রিমিটাক্ত সক্ষো।

ভায় সাহিত্য আৰুক্ষন বা প্ৰদায়ণ করিতে হইলে বেগন। অনুভূত হয়, এমন কি, লাগাঁ করিলেও কউ হইলা বাকে। ইহাই সাধায়ণতঃ সন্ধিভারের লক্ষণ। সন্ধিবত্তের ধর্মণ জনা ভাষার চারিদিকে যাখাও পোৰ হয়, বিশেষতঃ রজনীযোগ শীতগভাম বাহু প্রবিদ্ধিত হইং! বেগনা জনার, ইহাই উৎপিউজ ভায়ের সক্ষণ। বিশিক্ষর ভাষে সন্ধিত্বল জন্ম পরিয়াণে শিশিল ক্যা, এই হেছু ভাষাতে শোধ ও অন্থা বেগনা ভাষে।

#### ভথরোপের দার্থাদাখ্য দির্ণর।

আপোদিনোর্নাভারতে। জ্যোর্বাভাস্কর চ।
তলমবৈরাজ্তন্য ভগ্নং ক্রুছে দ নিখাতি।
ভিন্নং কপালং কটাাত্ত সন্ধির্ক্তং ওখা চ্যুতং।
ক্ষনং প্রতিপিউক্ত বক্ষায়েছি বিচক্ষণঃ।
ক্ষনং প্রতিপিউক্ত বক্ষায়েছি বিচক্ষণঃ।
ক্ষনং জনান্তরে পৃষ্ঠে লংখে মৃদ্ধি চ বক্ষায়েছে।
সমাক্ সন্ধিতনপাতি ত্রিকেপনিবলনাহ।
সংক্ষোভারাপি বদ্পক্ষেমিকায়াং তক্ষ বক্ষায়েছ।
তক্ষণান্তিনি ন্যান্তে ভিনাতে ক্লকানি চ।
ক্রুণালানি বিভ্যান্তে ক্লুটিভ ক্লচকানি চাঃ

বে ব্যক্তির দেহ বাতালক, দে ভর্মরোগে অতা পরিমাণে এবং অবিত কর প্রবা ভোজন করিলে আর ব্যর আধ্যান প্রভৃতি ধারা ক্রিট হইছে সহজে অ্রোগা লাভ করিতে পারে না । কাওডারে ফারার কপাল ভিত্র ব্য় আর কচিমেশুর সিহ্নি অংক্তিও হর এবং ক্রমপ্রদেশ উৎপিট হয়-ভারার রোগ অসাধা । ঘারার দলটি চুলী কুও হইরা যায়, মন্তকের পুলি কংক্রিট না থাকে, হণর, পুঠ ও দলাইছ চুড়াহল ভয় হয়, চিকিংল ধারা ভারার আরোগা লাভের সন্তাবনা নাই। সহিম্প সংলিট বাকিলেও যদি রোগী অভিযাত-ভয়াদি বিস্তব্ধ বিকার প্রাপ্ত হর, ভারা ইইছে সে মৃত্যুমূধে পতিত হইবে। এই প্লোগে বাৰবের কোমল অস্থি সমূহ বক্ত ছইমা যার এবং লদকান্থি বিদীপ হর আর পলাটছ অস্থি ইতিত ও দশ্ৰ সমূহ ক্ষুটিত হইরা গাঁকে।

### বিসপ্রোগ।

লবণাৰকটুফাদিসংসেবাদ্যোধকোপতঃ। বীসপঃ সপ্তথা জেয়ঃ সর্জ্বতঃ পরিসর্লাৎ ॥

্বীসপের কারণ,—লবগান্ত, অমু, কটু ও উঞ্চ এব্য আহার বরিলে াডাদি বোধ সকল প্রকৃপিত হইরা দেহের সর্বাব পরিসর্পণ করে, ভাষা-তেই বীসর্প রোগের উৎপত্তি হয়। ইহা সপ্তবিধ।

পৃথক্তরত্রিভিজেকো বীসর্পো দদ্দ্দান্তর:। বাতিক: পৈত্তিকলৈক ককল: সান্ত্রিপাতিক:।। চন্দার এতে বীসর্পা ক্লান্তে দদ্দান্তর:।।

ৰীসপের ভেদকধন,—ৰীসৰ্প সন্তবিধ ; বাতিক, গৈতিক, মৈথিক, গাঁৱিপাতিক, বাতপিয়ন্ত, বাতমেথক ও পিত্তমেখন । বাতগৈতিক বীস-পাকে আয়েয়, বাতমৈদিককৈ মেছাণ্য এবং পিতমৈদিককৈ কৰ্মদক কৰে।

রক্তৎ লগীক্ষত বাংসং দুবাং দোবান্তয়োদলাঃ। বীসপাণাং সমুৎপত্তে বিজেয়া সপ্তথাতবঃ॥

বীসৰ্গ উৎপত্তির নাড়ুমির্ণর,—রক্ত, নসীকা, ৫ চর্ছ, মাংস, এবং বায়ু পত্ত ও মেছা এই সকল ভূষিত যাতু হইডেই বীনর্গের উৎপত্তি হয়।

শনীক!—চর্ম গু মাধ্যের মধ্যক্ষ রলবিশেব।

### তত্র বাতাৎ পরীদর্শো বাতজ্বসমব্যথঃ। শোককুরণনিভোদভেদায়াসাত্তি হর্বান্॥

ধাতিক বীমর্শের দক্ষণ,—বাডজমিত বিসর্গ রোগো স্বর্তুণা বেষনা। শোধ, কম্পা, অক্তেদ, আরাসা, কাডরতা ও রোযাক এই সমূত সক্ষ পৃত্ত হয়।

# পিত্তাদ্দ্রতগতিঃ পিগুজুরলিলোংভিলোহিডঃ।

পৈতিক বিসপেরি লক্ষণ,—শিকজনিত বিসপরোগ অতাত্ত রক্তবর্ণ এবং জ্ঞতগতিশালী আর ইহাতে গৈতিক গুরের চিত্র প্রকাশ পার।

## क्कां क्षु रूकः शिक्षक्ष जुज्ञ नानक्रक्।

লৈশিক বীসর্শের লকণ,—সেমানোবে যে বীসর্প জন্মে, তাছা কঞ্ সময়িত, বিষ এবং লৈমিক স্থানের চিত্র বৃক্ত।

### সমিপাতসমুখ্যত সর্কলিকসমন্থিতঃ।

লারিশান্তিক বিদর্শের সক্ষণ.—সারিপান্তিক বীদর্শে বাতিক, গৈতিক ও সৈত্বিক বিধিধ বীদর্শের সক্ষণই প্রকাশ পার।

বাতপৈষ্টিক বা আগ্নের বিমর্পের পক্ষণ,—বাতপিত্র দোবে বীসর্প জয়িলে দ্বার ছার্দি, ঘোহ, শিপাসা, অতীসার, দ্রার, অন্থিতক, মন্থায়ি, অরকার দর্শন ও অক্টি এই কবল লক্ষণ দৃষ্ট হয়, স্থান্ত অলার যায়া অর্কাপ দর্ম ইইতেহে, এরপ বোহ হইয়া থাকে আর শরীরের যে যে ছলে বীসর্প প্রহত হয়। নেই দেই স্থল নীল বা শোপিতবর্ণ হইয়া উপচিত হয়। ইহাতে অতি কইকর বীসর্পের উৎপত্তি হয়। ক্রমে বায়ু অধিক বলশালী মধরাতে দেহ বেদনাযুক্ত হয় এবং নিজা ও চেডনা বিনাশ শার। রোগী খাল ও হিকার আক্রান্ত হয় এবং কি ভূতলে কি শ্বানি লাম মানে ভাষার খাছা গোল হয় যা।

বাতলৈখিক বা আহাৰ্য বীসপের দক্ষণ —প্রথমে দেখা প্রভাবে বাষু সংক্ষাত জুম ইইয়া সেমাকে বিত্তীপ করিয়া ফেলে। ওদনত্তর সেই জুম সেমা ও বায়ু মুক্ শিরা, সায়ু প্রথম সাংস্থত শোণিতকে তুরিত ্রত দীর্থ, কঠিন, র্ডাকার আছিমানা জন্মার । ইহারই দাম আছি বীসর্থ, এই রোগে জীবণ বংখা, জ্ব: কাস, বাস, শোষ, জতীসার, বহি হিলা, যোহ, মুদ্র্যা, জম, দেহের বৈধর্থা, অ্লডেড ও মলাগ্রি এই সকল কক্ষণ সুক্ত হয়।

শিতমৈনিক বা কর্মনক বীসপের লক্ষণ,—মেলা ও পিত দূবিত হইন যে বীসপ উৎপাদন করে, তাহাতে লুর, মন্তব্রদরা, প্রলাপ, অলাবদাহ তলা, নিম্রা, মৃদ্র্যা অকচি, দেহের গুরুতা, ত্রম, মন্দ্রায়ি, তৃকা, অভিবি-তেপ, তৃকা এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পার,টুল্লির গুরু বোধ হর ওবং আদমুভ নল নির্গত হইরা খাকে। পিত ও মেখা আবাশরস্থাল গাবন করে। এই ভ্রমা অক্ষা অক্ষা বেদনামহ আবাশরের অক্ষেশগত হর; স্তর্মা শোহাবিশিক পীত লোহিতালি অধ্যা পাও বর্গ পীতৃকা জবে। আ পীতৃকা বিদ্যালি ভাষা হতৈ বে ক্ষেম নির্গত হর,ভাষা শ্বগরপূর্ণ জ্বনীর্ণ।

ক্তম বীদর্শের সক্ষ,—ক্তাহাত বা জন্য কোন প্রফারে ক্ত হইবে বারু রক্তপিতবোগে ক্রেছ হইয়া কুলখকলারবং বীস্প উৎপাদন করে। এই রোগে ক্ষেটিক, খুর, ব্যখা, শোখ, দাহ এই সকল সক্ষণ দুউ হয় এবং শোণিত কলিশ্বর্ণ হইয়া পড়ে।

বিসপের উপদর্গ--- অকচি, বাঁঘ এবং ও যাংদের বিদীর্ণতা, স্বর, পরি--এবায়ন্তব্য, অতীনার এই সকলই বীসপের উপদ্রব।

বিসপের সাধ্যাসাধ্য নির্ণর।
সিহাতি বাতক্ষপিত্রতা বিসর্গাঃ
সর্বান্তকঃ কত্রুতক্ষ ন বিভিন্নতি।
শিত্রান্তকোংঞ্জনবপুশ্চ ভবেদসাধ্যঃ
কৃষ্টু ক্ষি চর্মাসু তবতি সর্বা এব।

কাতিক, বৈপত্তিক ও দৈখিক, এই ত্রিবিধ বিদর্শ দাধ্য । দারিশাতিক ক্লান্তক বিদর্শ অসাধ্য । যে বিদর্শ শিক্ষাক্লবসূদ্য বর্গনিশিষ্ট ও শে বিষর্গ জারিকে দেহে অতীব উরোগ কলে: তাহাও চিকিৎসার প্রশামিত হয় না । আর মর্ম্মন্থানে জাত বিস্প<sup>ি</sup> কল্পুসাধ্য ।

#### वानकरत्रोध ।

• বায়ু জনা দ্বিত ভনা পান করিলে বালকদিনোর মুত্র, পুরীর ও বায়ু জনকর্ম হইরা যায়, দেহ সুর্মাণ হইতে থাকে, কঠখর কীণ হয়।
বে জনা পিতকর্তৃক দৃবিত হইয়াছে, তাহা পান করিলে বালকদিপের কেই
উক্ত হর, তৃকা জনে, লেন নির্নাত হয়, তরল মলনির্গাম হয় এবং কার্মারোগ অভিতেও দেখা যায়। যাহার তনহুত্ব কক্তর্তৃক দূবিত হইয়াছে,
ত:হার তন পান করিলে বালক নিশ্রা, শোখ, দেহজাজ্ঞা, বনি অভৃতি যায়া
আজ্ঞান্ত হয়, শিশুর নেত্র রক্তর্ব হয়, মুখ হইতে লালা বহির্গাত বইতে
থাকে এবং নানাবিধ কক্ষেগা জন্মে। ত্রিদোবজনিত ভন্যপান করিলে
উক্ত ত্রিবিধ লক্ষণই দৃক্ত হয়)

বালকের। কথা কহিয়া আপনার মনোগত ভাব বলিতে পারে বা। ভাষাবিশের রোমনের ভাব দেখিয়া রোগের প্রাবদা রুখিতে হয়।

অততির শিশুরা ব্রুণ অতীসার প্রভৃতি নানাবিধ রোগেও আজার হবন থাকে। বিবিধ গ্রহণারা আজার হবনাও নানা রোগ ক্ষার লানকেরা রেবতী গ্রহণারা আজার হবনে তাহার দেহে কর্নদের গর হয় এণ ক্ষেন, আর সেই সকল রুণ হইতে শোণিতকরণ হবনা থাকে তাইরে তরল বলভেন, ব্রুর ও সাহাদি ক্ষেপ্ত। শতুনী গ্রহণারা শীড়িত ইবনে কর্মানে ভৌড়া হর, প্র কোড়া দিয়া পূর্ব বির্গত হর এবং বালা করে। ক্ষেনি হয় এবং শিশু ধাকিয়া থাকিয়া হাকিত হবরা উঠে। শতুনি গ্রহণানী পর্মাণিণার গালে বেরপ হর্গন্ধ, এই রোগে বিভালেতে বাংসানী পর্মাণিণার গালে বেরপ হর্গন্ধ, এই রোগে বিভালেতে বাংসানী পর্মাণিণার গালে বেরপ হ্রুন্ধ, এই রোগে বিভালেতে কর্মণ গল্প অনুভূত হর। বে শিশু প্রতনা গ্রহণারা আজার হর দেহেও তর্মণ গলিক। স্থানিক স্ক্রাণারা, কিপানা, কুটিন মৃত্তি, নিজানাশ জন্মন প্রভৃতিয়ার অভিতৃত হইনা থাকে। গল্প প্রত্যাপ্রহণারা অভিতৃত হইনা থাকে। গলপ্তমাপ্রহণারা অভিতৃত হইনা থাকে। গলপ্তমাপ্রহণারা অভিতৃত হইনা থাকে। গলপ্তমাপ্রহণারা অভিতৃত হইনা থাকে। গলপ্তমাপ্রহণারা অভিতৃত হইনা বাকি ভালিয়া, জন্মন প্রভৃতি সন্ধণ মৃত্তী হর, এই রোগে বাকক ম্বন্ধত হর। যে বাকক শীতপুত্রাগ্রহণারা আজার হর, তাহার বা

াতীসার, কম্পা, দেবি সা, কাস, সেছে দেগিস্কা ও চমুরোণ প্রভৃতি সম্প দৃষ্ট হয়। মুগুডিকা গুহুহারা অভিতৃত হুইলে বাসকের সুখ অকুস দেখা যার, কিন্তু উহা শিরাহারা আচ্ছর হয় এবং দেহে মুজের গদ্ধ ক্ষে, এই রোগে বাদক অধিক পাহার করিতে পারে।

### বিষক্তনিত রোগ।

বিষ বিবিধ ; ছাবর ও জলম। তপুধো ছাবরবিষ দল প্রকার এবং জলম-বিষ বোড়শবিধ। সুল, পাত্র, বল্কল প্রভৃতি ছইতে উৎপার বিবকে ছাবর এবং দর্শা, পুজুর প্রভৃতির নিঃখাস-দংশনাদি ছইতে উৎপার বিবকে জলম-বিষ কছে। অর্থাৎ মূল, পাত্র, কল, পুলা, বল্কল, খেডরস, সার, নির্মান, মাডব ও কল্প এই দলবিধ ছাবের এবং দুর্ভি, নিখাস, দল্প, নথা, মল, মুত্র, গুক্ত, লালা, মুখনসংশ, বারু মিঃলরণ, গুড়, স্পর্যা, অছি, সুঁক, লর ও পিত্র এই বোড়শবিধ জন্ম। সেঁকো, ছরিভাল প্রভৃতিকেই বাত্র বিষ্
বলো।

কতকগুলি আগীরি স্পাধিত, তাহাদিনের দৃষ্টি ও নিখানে বিষঃ
পৃথিবীত্ব সপাদিগের দত্তে বিষঃ বালর, বিভাল, ব্যাল প্রভৃতির দত্তে ও
বাবে বিষ, পিচিটাদির মনস্থেত্র বিদঃ মাকড্শা প্রভৃতির লালা, লগন্দি,
বল, সূত্র, ওজ্ঞ ও দংশনে বিষঃ মনজের অত্থি গুভৃতিতে বিষঃ শত্ননী
প্রভৃতির পিতে বিষঃ জমর ও মোনাহি প্রভৃতির সুঁকে বিষঃ

#### বিষের সাধারণ লক্ষণ।

জন্মনির সেধন করিলে নেছে দাছ, তঞা, ক্লান্তি, রোনাঞ্চ, শৌষ, মন্ত্রায়ি ও অতীসার এবং ছাবরবিয় সেবন করিলে হর, কফবমন, অকচি, হিনা, খাস, নোহ প্রভৃতি হইরা বাকে।

কোন করে বিব লিও থাকিলে বলি নেই অন্ত যারা দেছের কৌন ভান কত হয়, তাহা হইলে ঐ ভান কৃষ্ণবৰ্ধিও ক্লেমবিলিফ হয়, কত হইবাঘাত্র চিকিলো বা করিলে ঐ ভান পচিত্তে আরম্ভ হয় এবং কালকাৰে ালে ৭০ ৭৩ হইরা পড়ে। তখন রোগী জ্বন ভূমান যোহ প্রভৃতি ছারা। বাকাস্ক হয়।

শাবর বিবই হউক আর জলমবিবই হউক, বলি উহা বছলিবের হয়,

নি হারা ভক্ষিত হয় অথবা বিষের যে সকল গুণ থাকে, তাহার কিঞিৎ
হার হইয়া বায় কিখা অয়াাদি মারা দঙ্গ বা শোষিত হয়, তাহা হইলে

চাহাকেই দুবী বিব বলে। দুবী বিব দেবন করিলে উহার তেজের স্থানতাকাম জীবন নই হয় না সভা, কিন্তু নানাবিধ রোগা জন্মাইতে পারে।

ইহা শরীরাভ্যন্তরে থাকিই হইলে সেখার সহিত স্থিলিত হইয়া হায় এবহ

হুকাল দেহমধ্যে বিয়মান থাকিয়া দেহীর মদের অবতা জন্মার, দেহ বিবর্ণ
ক্রিয়া কেলে, মুখ শুকু হইয়া হায়, মুখে মুর্গন্ধ উপের হয়, তৃফা জন্মে মাহ

রামী কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রিমা কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রিমা কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রিমা কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রিমা কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রেমানী কিছুতেই আছালান্ত করিছে পারে না। এই দুবী বিব বলি আমান্তরে

ক্রেমান ক্রিমা ক্রেমান বিরপি রোগোর উৎপত্তি হয়।

ক্রেমান, ভাহা হইলে দেহীর সন্তবের কেশা ও দেহের রোম উঠিয়া যায়।

হুতরাং বিহক্ষাণ পক্ষীন হইলে বেরপা বিরপা হয়, সেই ব্যক্তিও ভ্রপা

ক্রেমাং বিহক্ষাণ পক্ষীন হইলে বেরপা বিরপা হয়, সেই ব্যক্তিও ভ্রপা

ক্রিমা বিহরণা পড়ে।

দুরীবিব রুস, শোণিত, শাংস, দেন, অন্থি, দক্ষা ও তক্ষ এই সপ্ত প্রকার বাতুকে আশ্বন্ধ করিলে রুসাদি ধাতুজনিত বিবিধ রোগের উৎপত্তি বুইয়া থাকে।

#### বিষের সাধ্যাদি কথন।

স্থাবরবিদ সেবনাত্তে চিকিৎসা না করিলে কালসহকারে রোগী সূত্য-বুধে পাতিত হর। সপশ্বিতে যদি চারিদী দন্তবারা নংশিত হয়, তবে সেই রোগী শ্যনতবনে গ্রন করিবে।

### বিষপ্রয়োগকারীর দক্ষণ।

কোন ব্যক্তি কাহারও জীবন বিনালের জন্য বিবশান করাইলে বাস নেরপ ভারতলী ও দক্ষ প্রকাশ পার তদ্বারা চিকিৎসা করিয়া ভাষাকে প্লত করিবেন। যে ব্যক্তি বিধ প্রদান করে, ভাষার মুখ মলিনত প্রাপ্ত হর, সে সর্বাধা সাম্প্রিক্তি থাকে, সর্বাধা কার্কিন্ত আগত পেবিলে চনকির। উঠে, ভাষার বৃদ্ধি বিলুক্তপ্রার হইরা যায়, লে চিতা-কুলিভাটিকে একদিকে চৃঠিপাত করিয়া খাকে, কাহার দিকে নেম্মপাত করে মা, কোন কথা জিলালা করিলে ভাষার প্রকৃত উত্তর দিতে পারে মা, জনান কথা জিলালা করিলে ভাষার প্রকৃত উত্তর দিতে পারে মা, জন্মক কথা বলে এবং বিনাকারণে রখা হাল্য করিয়া থাকে। অস্কৃত অসুনীধারা ভূতদে স্থিকার রেখাপ্রধান করে অথবা নই-বারা ভূপাদি ছেদন করিছে খাকে। এই সকল সক্ষ্যায়া বিব্যাভাকে করিছে হয়।

#### मृष्ट्रालक्ष ।

বিদ্বা কিদ্রা চলতি বা সা স্কৃতা প্রাণনাশিনী। অতিকীতা শীতলা চ জীবিতং হস্তাসংশতঃ। ক্রমেণ তাহতি স্থানং যা নাজী সালি মৃত্যবে।।

বে নাড়ী অভিক্ষীত ও দীতৰ এবং বে নাড়ী ধাৰিয়া থাৰিয়া পদিত হব, অৰ্থাৎ একবার লোগ পার, আবার অভ্যুত হর, আর বে নাড়ী ক্রমে ছান্ড্যাগ করে, অর্থাৎ একবার লোগ পাইরা পুনর্বার অসুনিস্পর্গ করে, কণপরে উহা অসুনিম্নে অন্তুত হয়, ভাষুণ বাড়ী হৃদ্ধে কারণ।

অনু ঠমূদতো বাহে হকুলে ধৰি নাড়িকা। গ্ৰহরৈকাৎ বহিন্ স্থানায়তে নাত্র সংখয়ঃ।।

যদি নাড়ী অসু ঠমুদ হইতে এক ক্ষুণ বাহিছে সন্ধিয়া যাত্ৰ, ভাছা ইলৈ মেই ক্লোগী এক প্ৰছন্তের যথে নিশ্চর মৃত্যমুখে পভিত এইয়া বাকে।

আকুলাৎ বাজতো বাপি সধ্যে রেখাবহির্যদা । বাদ প্রহরতে। স্ত্যরবক্ষং লায়তে নুগাং ॥ থাছার নাড়ী বি অজুল কাহিছে সরিবা ধার, সে কেড় প্রহরের মধ্যে কাল্ডাকে পতিত হয়।

সন্ধান্ধ লিব্যাপিকা ভূ যদি ডিউভি নিশ্চলা। চতুৰ্ভিঃ প্ৰহরৈষ্ ভূচনাত্তি ভব্য ভূ সংশয়ঃ ॥

নদি নাড়ী সন্ধান্তি ব্যাপিয়া বিস্পন্ন হয়, তাহা হইলে বিভারই ারি প্রহরের বধ্যে সূত্য হইবে।

महा हाक्ष्मरका नाषी यदि चित्रेष्ठि निक्तना । क्षर्रेतः भक्षच्टिक्तर भद्रगः छमा निर्द्धित्यवः ॥

বদি নাড়ী এক সন্ধুলি মিলগত চ্টকা দিল্লভাবে থাকে, ভাষা হলৈ পথ এবর অতে রোগীর রুড়া ধর।

नशासक माडा नाड़ी यदि डिडेडि निक्तमा । ष्टेडेक्ट धर्टेडक् क्राब्ह प्रस्ता विस्करेनः ॥

যাহার নাজী বপাদাদ বি (সঙ্গা অলুবি) নিম্বাত হটরা নিশ্সক বাকে, বিচক্ষৰ চিকিৎসক্ষাৰ হয় প্রথরাত্তে তাহার মৃত্যু বির্দেশ করিয়াহেন।

> আকু লাভান্তরে নাড়ী বক্রতা বনি বা ভবেৎ। মরণং তদা জানীয়াৎ দপ্ততিঃ প্রহরৈর্থঃ।।

ৰাড়ী দুট অন্সুল অভাস্থরণত হইয়া বৈজভাবাপার হ**ই**লে সাত **এছ**র অন্তে সেই রোগীর সৃষ্টা হইয়া থানে।

আদুলাভান্তরে নাড়ী সন্দা মন্দা বদা ভবেৎ। অউভিঃ প্রহরৈষ্ ভূয়নি দিডৌ মুনিপুলবৈঃ॥

মাড়ী এক অস্থান অভান্তরে মল মল গতি বইলে সেই স্নোগা অভ অব্যান্তে মৃত্যমূলে পতিত হয়। অকুলাভান্তরে নাড়ী বণি ডিঠতি শীতলা । প্রহরেনবভিত্তসা সরগং নিশ্চিতং ভবেৎ ।।

মাড়ী একালুলি অভ্যন্তরগত হইরা দীওল হইলে নিক্যই দ্বহ প্রহ্লান্তে মৃত্যু হয়।

পাদেনাদ, লীমধ্যে ভূ নাড়ী ভিঠতি চঞ্চলা। প্রাহরেদ শভিজেরে। মৃত্যুত্তন্য ন সংশয়ঃ ।।

সওর। অজুলী বধ্যে নাড়ী বিজ হইর। চঞ্চলগতি হইলে সল্প্রহন্ন বধ্যে মৃত্যু হইরা থাকে।

পাদেনাকু শীৰখ্যে তু নাড়ী সোঞ্চাভিজারতে। প্রহার ক্লানংখৈত মৃত্যুন্তন্য বিনির্দিশেৎ।

মাড়ী সওয়া অভুলী ৰধাগত হইনা উঞ্জাবাপন হইলে একাদশ অহনাতে দেই নোগীন সূত্য নিৰ্কিট আছে।

> পাদেনালুলীমধ্যে ভূ নাড়ী শীওতরা তবেএ। মাদণগ্রহরৈন্ ভূান্তন্য জেরো বিচক্ষণৈঃ।।

সপাদ একালুশী মহো নিহ্না নাড়ী শীততরা হইলে দান্শ **গ্রহরের**। নধ্যে সূত্য হইলা থাকে।

ব্দৰ্শান্ত শীত্তা বাড়ী শীত্তা যদি ভিচ্চিত। ত্ৰিপুৰ্বাদশতিবাবৈৰ্দ্মরণং জায়তে প্ৰবন্।।

থাৰি নাড়ী অৰ্দ্ধাৰ্কী অভ্যন্তরগতা হইরা শীতল হয়, তাহা হইলে জনোদশ অহরের মধ্যে নিশ্চরই মুসু। হইবে।

আৰ্দাৰ পীপতা নাড়ী দোফা বেগবতী ভবেৎ। প্ৰহরৈবে দচফ্রৈন্ড মৃত্যুক্তে য়ে। বিচক্ষণৈঃ।। ধাহার নাড়ী অন্ধান্দুলী অভ্যান্তরগত হইমা উষ্ণ ও বেগবড়ী থাকে। সে চতুর্দ্ধশ্ প্রহর, ধধ্যে কালক্তবনে গখন করে।

> व्यक्षीक नीशका नाजी ठकमा यपि किछेकि । अस्टेब्रिकियिमस्टेबाम्ड ब्रबग्ध निर्मित्मध्य दुधः ॥

বাহার নাড়ী অন্ধান নী অভ্যন্তরগত হইরা চক্ষণতি হয়, পঞ্চশ
প্রবির মধ্যে তাহার সূত্য নির্দিষ্ট আছে।

পাদাৰ দীগতা নাড়ী দহুদা যদি তিঠতি। যোড়শগ্ৰহরৈন্তন্য পঞ্চহং নির্দিশেৎ বুধঃ।।

যদি সহসা নাড়ী সপাদাদুলী মধ্যগতা হইল। নিশ্চদ হয়, তাহা হুইলে সেই রোগী বোড়ল গুছর মধ্যে পঞ্চপ্রাও হয়।

> चित्रा नाजी मूर्थ वना क्तूत्रविद्यापितकरः । पितकर जीविकर छना विजीस मिन्नस्य अवर ॥

অপ্রভাগে বাহার নাড়ী বিহাতের নাার থামিরা থাকিরা অস্কৃত হর, একদিনধার ডাহার পরমারু নির্মিষ্ট আছে: বিতীয় দিবলৈ নিশ্চর ভাহার মৃত্যু হুইবে i

> জহাতি ষদ্য হন্তানং ধরার্মনি নাড়িকা। সুদ্র জীবিতমাগ্রোতি ত্রিদিনাভার্তরে মৃতিং॥

যাহার হতভিত মাড়ী খনাজ পরিমাণেও অন্নান্ত হয়। সে তিনাল সংখ্য প্রাণ্ড্যাম করে।

> প্ৰান্ধ লীগতা নাড়ী সোফা বেগবতী ভৰ্বে। চতুতি বিবিদ্যান মৃত্যুদ্ধের ন সংশয়ঃ।।

যাহার নাড়ী সপাদ একান নী পরিমাণে অভ্যন্তরগত হর্মা উচ্চ বেগবতী হয়, যে সিংসন্দেহ চারি দিবনে প্রাণত্যাগ করে।

# পায়,র্বেগোজ পরীক্ষিত সুরিযোগ।

े जिर्वात् यरथमात्मन यो मूर्काल निकास्त्रवर । शक्षाराज्ञानिमर मृक्तार शाननाजी दिनिर्क्तिस्य ॥

a str

যাহার পাদক্ষিতা নাড়ী ষষপরিমাণেও ধক্রভাবে নিজস্থান পরিভাগি রেন কে পঞ্চ দিবলের পর কুত্রামুধে পতিত হয়।

মন্দং মন্দং কুটিলকুটিলং স্পান্ধত বস্য নাড়ী। তস্যাবশ্যং ভৰতি মরণং পঞ্চ সপ্তাহতো বা ॥

যাহার নাড়ী মন্দ মন্দ ও অতি কুটিনভাবে ল্যাফিড হয়, সে পাঁচ বা নাডদিন পরে প্রামত্যাগ করে।

ক্ষণাদ্গক্তি বেগেন শারতাং লততে ক্ষণাৎ। সপ্তাহাৎ নরণং তদ্য বদাকে। শোখনক্রিতঃ।।

যাহার মাড়ী কণকাল নেগে গখন করে, আযার কণকাল শান্তগতি আশ্রম করে, যদি দেই রোগীর অবে শোগ মা থাকে, তাহা হইলে বে ন্যাহপরে অইমনিখনে মৃত্যুগ্রালে পতিত হয়।

> ভূলতাভূদগাকারা নাড়ী দেহন্য সংক্রমাথ । বিশীর্ণে ক্রণতাং বাভি নাসাত্তে সরণং প্রবং ॥

রোগীর কীণাবদ্বার নাড়ী ক্রম এবং তুলতা (কেঁচো) ও ভুজ্জের নাগর বজগতি হইরা শরীরের সঙ্গে সংল কীণ ঘইলে সেই ব্যক্তি সালাভে ভূতুমুখে নিশভিত হইরা পাকে।

> क्षार क्षारिष्टरमन माणी क्षाता विष्टमरेगः। चर्लिन कर्मका विमा लागमीया व्यवक्रकः॥

বিচক্ষণ বৈদ্যাগৰ এইজপে স্থাদিভেদে নাড়ীর গতি বিষেচনা করিছা। ক্রিংসা করিবেন। এই বিদ্যা অর্গেও স্কৃত্ ওঃ স্তরাং ইহা সর্বাঞ্চলতে স্থোপনীয়।

### কিছা ও নেত্র পরীকা।

বাসুজনিত রোগ জনিলে রোগীর জিবা শোণিতবর্ণ ও কণ্টকারত, পিওজনিত রোগে গীতবর্ণ, ককজনিত রোগে শুরুবর্ণ ও জড়িত এবং জিগোৰজনিত রোগে জিব্দা শীলবর্ণ ও গোরসনার ন্যার ফটবাকীর্ণ হয়, কোন কোন রোগীর জিব্দা বিদীর্ণ হইরা বাইতেও দেখা গিরাছে। এওডিয় পিওপ্রকোপিত রোগে জিব্দার ক্ষত কইতেও দেখা বার।

নাধারণতঃ পিডজমিত রোগেঁনের পীতবর্ণ, বায়ুজনিত রোগেঁ অকণবর্ণ অথবা খেতবিঞ্জিত অকণবর্ণ, ককজনিত রোগে শুরুবর্ণ থবং ভিগোবজমিত রোগে নীলাভায়ুজ বেত অর্থাৎ বোলা হইবা থাকে। সালি-পাতিক রোগে নহন উর্দ্বৃত্তি ও নিমেবর্হিত্থায়ত বেথা যায়।

ইভি দক্ষাধ্যায় সমাত।

# অরুপানাধ্যায়।

### খগন্তরিক্লবাচ।

रिजिहिन्दिर्वकात्र चन्नुभानिविधिः वेदमः।
त्रक्षणानि जित्मावषुः ज्रुकात्मतमिनात्रकः।। ३।।
यशानि भारः व्रद्याः कन्नाः (अञ्चित्रकः।।
नीत्ना शक्कित्तावषः श्रांतत्ना (भोत्रविक्तः।। २।।
गामावः (गामत्ना कत्ना वाजनः (अञ्चित्रकः।। २।।
जयः श्रित्रकृतीवात्रकात्रसायाः श्रांतिश्चितः।। २।।
वस्त्रातः नक्ष्मीश्चः (अञ्चानिश्चरता ववः।
तस्त्राः नीत्ना शकः साम्दर्भाग्या वाजनाननः।। १।।
क्ष्मिश्चात्रित्र म् १: क्यात्रा वस्त्राः। वस्त्राः।
गात्राः वस्त्रस्ता त्र्याः निश्चत्रस्त्राव्याः।। १।।

ধনতার কহিলেন, ওকণ হিতাহিতবিবেকের নিমিত অস্পানবিধি
বিনিত্তি। প্রবার গুণাগুণ জানিরা অস্পানের থাবছা করিবে; অভএব।
প্রবার গুণাগুণবিবেক আবস্তক। রক্তশালি বিনান হিনাল করে এবং
কুলা ও মেলোমিবারণ করে। ১। মহালানি পরমবলকারক, ধ্যাবোর
কলম মেঘণিতবিনালক; গোর্ষণ ইতিধানা লীভবীর্থা, এক এবং জিলোবয়। ২। প্রায়াক লোষণকারী, কক্ষা বায়ুর্মিকারী এবং মেঘণিত্য।
ক্রিয়ুল, নীবার, কোরদোক, (শাস্বিশেষ) ইহারাও পূর্বোক গুণালার
কারক, নীভবীর্থা, গুক, আহু ও বাতনাল্ক। ৪। মুনা কর্ক, শিত ও রক্ত্রারক, নীভবীর্থা, গুক, আহু ও বাতনাল্ক। ৪। মুনা কর্ক, শিত ও রক্ত্রারক, নীভবীর্থা, গুক, আহু ও বাতনাল্ক। ৪। মুনা কর্ক, শিত ও রক্ত্রারক, করার, মধুর ও বায়ুল ধাব (বাষক্রাই) বহুবলকারক, প্রতিনালক, শিত্রেম্নিব্রেরক ও গুক। হ। রাজ্যারক, প্রতিনালক, শিত্রেম্নিব্রেরক ও গুক। হি। রাজ্যারক, প্রতিনালক, শিত্রেম্নিব্রেরক ও গুক। হি। রাজ্যারক, প্রতিনালক, শিত্রেম্নিব্রেরক ও গুক। হি। রাজ্যারক, প্রতিনালক, শিত্রেম্বনিব্রেরক প্রতার বির্বারক বির্বারক প্রতার বির্বারক করার বির্বারক প্রতার বির্বারক প্রতার বির্বারক বির্বারক প্রতার বির্বারক প্রতার বির্বারক বির্বারক প্রতার বির্বারক বির্বা

অহ্বাঃ শ্রেকৃপিভ্রে। রাজনাবোহনিসাতি ন্থ।
কুলথঃ খাসহিলাভং ককওলানিলাপহঃ । ৩ ।।
রক্তপিভল্বরোয়াথী শীতো গ্রাহীমকুউকঃ ।
পুংস্কাস্কর্মপিভবুশ্চণেকো বাতলঃ ল্বভঃ ।। ৭ ।।
মহরো মধুরঃ শীতঃ সংগ্রাহী ককলিভহাঃ ।
তথং সর্ব্যুগাচাশ্চ কলারশ্চাতিবাতলঃ ।। ৮ ।।
আঢ়কী ককলিভ্রেণ্ডী শুক্রালা চ তথা ল্বভা ।
লক্তনী পিতলা কেরা সিহার্যঃ ক্ষরাভরিং ॥ ৯ ।।
স্কারমধুরসিকো বলো পিভক্তিলঃ ।
বলম্বা ক্লেলাঃ লাভা বিবিধাঃ শস্কাভারঃ ।
চরাচরৎনিগুভিকারীকাশমর্শকাঃ ।। ১১ ।।
স্বিল্বাঃ ককলিভ্রম্বাঃ ক্রিমিম্বা লঘুদীপিকাঃ ।
বর্ষাভূমাক্রো বাতক্ত্রেরী বেষানাশ্বনী ।। ১২ ।।

নিবারক ও বালুরোগাণ হারক। তুলখ খাল, হিলা, হক, প্রভাত বালুরোগ বিনাশ করে। ১। ধনমুগ রক্তণিত ও ও অর্থনিনাশক এবং রক্তণিত ও কফ্পিরালার আছে। ১। দলর মধুররসমূক্ত, শীতবীর্ঘা, সংগ্রাহী ও কফ্পিরাণহারী; কলাই পূর্বোক্ত গুণলাগর, বিশেষতঃ বাতর্ভিকারক। ৮। অরহর কক্ষিত বিনাশ করে এবং শুক্তর্ভি করিয়া থাকে। তিনি গিলুর্ভিকারী এবং সর্থণ করু ও বারু নিবারণ করে। ১। তিন কার ও মধুররসমূক্ত, হিল্ল, বজনারক, উফ্রের্ভি এবং পিতর্ভিকারক। অন্যান্য শশুসকল বলর, কন্ত, শীতবীর্ঘা জানিবে। ১০। চিত্রক, ইন্তু নিকল, পাধনান, শিশালী, মধু, শুজিনা, চৈন্তুল, বিশিক্ষা, অরক্তী, কালকাসকা ও বিল্ল এই সকল এবা কক, পিত্র জানিবে। ১০। চিত্রক, ইন্তু নিকল, পাধনান, শিশালী, মধু, শুজিনা, চিন্তুল, বিশিক্ষা, অরক্তী, কালকাসকা ও বিল্ল এই সকল এবা কক, পিত্র জিমি বিনাশ করে। ইহারা অভিনয় ও দীপক। পুমর্থনা ও মার্ক্ত (ওম্বিবিশেষ) ইহারা বারু ও সেম্বনোব বিনাশ করে। আন্তর্ভাক এবং কাক্ষাটী তিলোব বিনাশ করে। আন্তর্ভাক বন্ধ ও বার

তিক্তরশং স্যাদেরশ্রঃ কাক্ষাচী ত্রিদোষ্থ । ১৩ ॥
চালেরী ক্ষরাতশ্বী সর্বপং সন্ধানাধ্য । ১৩ ॥
চলমের চ কৌসুয়ং রাজিক। বাতপিতলা ।
নাড়ীচঃ ক্ষপিত্রম্বঃ চুচুর্মপুরনীতলঃ । ১৪ ॥
দোষ্থ ং পদাপত্রঞ্জ ত্রিপুটং বাতর্রুৎ পরং ।
সন্ধারঃ সন্ধানাধ্য বাতকো রোচনঃ পরঃ ।। ১৫ ॥
কণ্ডুলীয়ো বিষহরঃ পালক্যান্ত তথাপরে ।
মূলকং দোষ্যকান্যং বিরুৎ রাতককাপহং ।। ১৬ ।
সন্ধানাধ্যম জ্লাং ক্রাং তৎপক্ষিয়তে ।
কর্লোবহরং জ্লাং ক্রাণ্ডং বতিলোধনং ॥ ১৮ ॥
কলিকালাবুনী পিত্রনাশিনী বাতকারিণী ।
ত্রপুষের্মান্তরে বাতরেম্বলে পিত্রবারণে ॥ ১৯ ॥

নিমাশ করে। সর্বপ সর্মাদেবিধান। ১০। রুছার সর্মাদেবিধান থবং রাজিকা
বাত ও পিত্র ছিকর। নালি তা কক ও পিত্তবিধান করে। কর্বনিধান
মধুরসরবুক ও লীতবীর্তা। ১৪। প্রের কোবলপত্ত সর্মাদেবির প্রভাৱিকারক। বাজক (বেতোশাক) লবণসংখুক হইলে সর্মাদেবির ও
কাটকারক হয়। মটেশাক বিবলোধ হয়ণ করে এবং পালকওচ্তি শাকেরও
ঐ ওও আছে। আম মুলক সর্মাদেবিকারী, উহা বির হইলে বাত ও কল
বিবাশ করে। ১৫-১৯। বৃলক উত্তর্মণ পরিপক হইলে সর্মাদেবির হয়ণ করে
এহং তাহা অভিক্রাম্ হয়। কাকরোল, বেওও, পটল, করলা এই সকল
এবা কুর্চ, মেহকুর, খাল, কাল, পিত ও কক বিবাশ করিয়া থাকে। মুমাও
সর্মাদেবির হয়ণ করে এবং উহা অভি ক্রাছ। মুম্বাওবারা বভিলোধন
ছইয়া থাকে। ১৭-১৮। ইক্রাব ও অলার্ ইহায়া পিত্রশাল ও বাতর্জি
কয়ে। শলা ও কুটি এই উক্রর জয়া বারুও রেমার র্মি করে। কিউ ইমার
পিত্রবালকতা শক্তি আছে। ১৯। স্কুকামুও ক্রমীর এই উভয়ই কক ও

বাতদ্ব কাৰ্যাতদ্ব ব্যাসং কাৰ্যাতন্ত ।
বাতদ্ব দাছিলং আহি নাপরস্কলং গুরু ॥ २०॥
কেশরং মাতুলুক্জ দীপনং কাৰ্যাতন্ত ।
বাতপিত্তরং মাষং অক্ মিজোকানিলাপতং ॥ ২১
সর্বামানকং রহাং মধুরং ক্রমমানুরত ।
ভূজপ্ররোচকা পুলা হরীতকাম্তোপমা ॥ ২২ ॥
কালমেন্ত্রং অনুং সংসমং তিত্তিজীকলং ॥ ২০॥
দোষদং লক্চং বাছ বকুলং কক্রাতন্তিত ।
ভূলাবাতক্রমান্তাপদ্বং বীজপুরকং ॥ ২৪॥
কলিখং গ্রাহ্ বোষদ্বং পকুং গুরু বিবাপতং ।
কলিখং গ্রাহ্ বোষদ্বং পকুং গুরু বিবাপতং ।
কলিখং গ্রাহ্ বোষদ্বং পিত্তবর্জনং ॥ ২৫॥

বাত বিনাশ করে। দাড়িয় বাতর এবং গ্রাহী; নাগরদ্বন্দ অতি গ্রক্ত লাকী। ২০। কেশ্রে, মাজুলুদ্ধ, (গেঁড়ালের) এই উভয় এবা কদবাত্ত এবং অগ্রিদীপক; যাব বাতপিরাগহারী, উহা বেবমে চর্প্নের বিছতা লাখিত হয় এবং বারুরোগ বিনাশ পাছ। ২১। আমনকী বদকায়ক, মধুরু কচিকারক ও অনরসভূক; ব্রীতকী কচিকারক, প্ণাপ্রদ্ধ অমৃতভূসা, বিরেচক ও কদবাতবিনাশক। তিরিদীর কফবাতবিনাশিনী শক্তি আহে। বিরেচক ও জিলোফজিং, উহা বাডরেম হরণ করে, উহা অসরসভূক হয় বিরেচক ও জিলোফজিং, উহা বাডরেম হরণ করে, উহা অসরসভূক হয় বিরেচক ও জিলোফজিং, উহা বাডরেম হরণ করে, উহা অসরসভূক হয় বিরেচক ও জিলোফজিং, উহা বাডরেম হরণ করে, উহা অসরসভূক হাডপির বিনাশ করে; বীজপুর অর্থাৎ কেরু, হালুন বাড, কফ, শাসং লাল এই সকল বিনাশ করে। ২৪। কপিথ (কম্বেল) গ্রাহী ও স্ক্রেন্স্বাহ্ণ পরিপত্ন হইলে অতি গ্রক্ত পরি বির্নাশ নাই করিয়া বাডে। বিশিশ্বন বালাবিন্তার কমপিন রহি করে, পুর্বাব্দার শিতর্থি আরিয়া পাতে। ২৫। পদ্ধ আমুক্র বাডকারী; মাংস, ওক্ত, বন্ধ, বর্ণা

भक्षा र नाजक्रमास्टर खंडान्यनिक्यारः।
नाजपः क्यानिक्यः यादि निकेषि व्यानि । २०।।
जिन्न र क्याजियः र नरहर नाजिनिस्यः।
विकेषि नाजन्य विन् र निमानः भवनाभ्यः। २९॥
नाव्यायन्यभ्यः नाजर भानाः महिष्क्रम्यः।
खंडाम् नक्याः व्यानिक्यः महिष्क्रम्यः।
खंडामार्यक्रामाद्यः यादिक्यः विन ॥ २०॥
जाकाम्य क्याक्तः क्या व्यानिक्यः निमा। २०॥
व्यानिक्यः नाजकः नामा। २०॥
व्यानिक्यः नाजकः नामा। २०॥
व्यानिक्यः विन निमानिस्ति देविक्याधिकः।
धन्तु मृत्विक्षः दिन नाजककान्यः।
धन्तु मृत्विक्षः दिन नाजककान्यः।। ७०॥
वयानीयनाकावावाः नाजककान्यः भवः।
क्यानीयनाकावावाः नाजककान्यः भवः।

ইছানিগের হুৰি করিয়া থাকে। জামধন বাতর্জিকারক, কথাপ্তর, এই এ বিউল্লী। ২৬। গাবকল কক্ষাত্ম ; বদুরীকল বাতপিত্র ; বিশুক্তন বাত বুজিকারী ও বিউল্লীপেয়ানকল বাতাপছারী। ২৭। রাজান্তকল, কদুরীকল, পানক্ষণ ও নারিকেশক এই সকল ওকে ও মাংস প্রন্থি করে ; ইছারা বিশ্ব ও প্রকাশী; বিদ্ধ অতি হুলাছু। ২৮। জালা, সমুক্ষণ, থর্জুর ও মুকুর্য এই সকল প্রব্য বাতর্জ জন কলে, হুপজ পিপ্লানী সধুর এবং খাস ও পিত নিবাবর্ণ করে। ২৯। আগা ক্ষাক্রর, বদকারক, অফ্রিনীপর্ক বহুর ক্ষান্তবারী। ওকি, মরিচ ও পিশ্পলী, ইছারা কক ও বাত জন করিয়া খাকে। ৩০। বৈনিক্ষাতে মরিচ জন্ব্য বলিয়া উক্ত আছে। ইয়া আল, পুন ও বিবন্ধ বিন্যুপ করে, হিলু কক ও বাতনালকারী। ৩১। যমানী, খনিয়া, জীরা, এই সকল প্রব্য বাতরেশ বিনাপ করিয়া খাকে। সৈচ্ছা কর্মর প্রেলোচ্ছিকারক, বলন্ধভিত্যারী ও বিলোধবিনাপক। ৩২। সোধানী উম্প্রপালী। এবং বিবন্ধ ও হুকুল বিনাপ করে, বিভ্লু উক্ত, পুর্বাশিহারী स्तिकिन्द विकार विकार क्रम् नामान ।

क्रिय म्महार किर्म विकार वाक्रमान ।। ००।।

स्तिमकर वाक्रम वाह्र स्तिकर दाक्रमान ।। ००।।

स्तिमकर वाक्रम वाह्र स्तिकर द्रममार छन्न ।

स्राम क्रमान वाह्र स्त्रमार सिरीनमः।। ००।।

स्राम क्रमान वाह्र माद्र माद्रमार विद्रानहर ॥ ००।।

सारम वाक्रम क्रमर वाह्रमर माद्रमर माद्रम ।

वाक्रम क्रमर वाह्रमर माद्रम माद्रम माद्रम ।

सिराम क्रमर क्रमर क्रमप माद्रम माद्रम ।। ००।।

सिराम क्रमर क्रमर क्रमप माद्रम माद्रम ।। ००।।

सिराम क्रमर क्रमर क्रमप माद्रम माद्रम ।। ००।।

सिराम क्रमर वाह्रम क्रमप क्रमप ।। ००।।

क्रमर वाह्रम क्रमपार क्रमपार क्रमपार ।। ००।।

তীক্ষ ও বাতবিনালক। ৩০। রোমকলবে বাতর্জিকারী, আহু, কচিকারক ও প্রক। ইহা ছলোগা, পাওু ও গলরোগ বিমাশ করে। যবকরে অগ্নি-লালীপন করিলা থাকে। ৩৪। সন্ধিকার অর্থাৎ সাজিমালী পাচন, অ্রি-লাশন তীক্ষ ও বিদার্থ। মাজস বারি অর্থাৎ র্টির জল জিলোবত, নতু-আহু ও বিশাপর। ০০। নদীজন, বাতর্জিকারক ও কক্ষ। সরোবর্জি লাল বধুর ও লতু। বাপীজন বাতরোজনারক ও কক্ষ। সরোবর্জি লাল বধুর ও লতু। বাপীজন বাতরোজনার এবং তড়াপের জন বাতর্জি-লালের অগ্রিদীপক, পিতর্জিকারক এবং উদ্ভিদ্জন পিত্রালক। ৩৭। বে জন বিধাতাপে ভ্র্মিকারক এবং উদ্ভিদ্জন পিত্রালক। ৩৭। বে জন বিধাতাপে ভ্র্মিকারক এবং উদ্ভিদ্জন পিত্রালক। ৩৭। বে জন বিধাতাপে ভ্র্মিকারক এবং উদ্ভিদ্জন পিত্রালক। ৩০। বিজ্ঞা অর, খালা বেশেরোগ্য বাহুলোব এবং ক্ষ বিনাশ করে। উদ্ বিজ্ঞা অর, খালা বেশেরোগ্য বাহুলোব এবং ক্ষ বিনাশ করে। উদ্ বিজ্ঞা এবং । ৩১। গ্রা হুড বাতপিত্র, বিজ্ঞা গ্রহণাকী ও পোষ্ট্র लाक्षीतः वाजिषित्रभू १ मिक्षः छक् तमास्रमः ।
भवाम् एक्रज्तः सिक्षः माहितः विक्तानानः ॥ ८० ॥
हाणः तक्षाजिमात्रभू व सम्भामककालहः ।
हम्दाः कीवनः जीगाः तक्षित्र ह लादणः ॥ ८० ॥
भवः वाज्हदः इयाः लिख्यमञ्ज्ञः मि ।
सावस् । महक्षाज्य मय जायाजितिस्मायनः ॥ ६२ ॥
विकात्रोक्षः किलाहेगाः छत्रदः कृष्ठेद्रज्वः ॥ ८० ॥
भवः वहगीरमाथानाश्च जीमात्रछल्यः ॥ ८० ॥
विकात्रक्षम् किलाहेगाः छत्रदः कृष्ठेद्रज्वः ॥ ८० ॥
भवः वहगीरमाथानशाक्ष जीमात्रछल्यः ॥ ८० ॥
विकात्रक्षम्मारः जकः किलाहेगाः प्रतित्र विकात्रकारः ।
विकात्रकारम्भारः जकः किलाहेन्। विकात्रकारम् ।
विकात्रकारम्भारः जक्षः किलाहेन्। विकात्रविकारः ।
विकात्रकारम्भारः कर्षः विकात्रकारमः ।
विकात्रकार्यः विकात्रकारः ।

মহিষ্ণ গ্রাহ্ম হইতে গুক্তর, বিশ্ব এবং অগ্রিমান্দ্রারী।। ৪৯।।
হাগহ্ম রক্তান্তিসার্থ এবং কাস, খাস ও ককাপহারী। আহ্ম চকুর
তেরের র্মিকারক, জীবনপ্রদ, রক্তাপ্তিয় ও লবণরস্কুত । ৪১। দ্বি
বস্থারক, বান্তবারক, পৃত্তিপ্রদ এবং পিজনেযাকর। মন্ত অর্বাৎ লাম্বর
মাহি তিলাম্বর ও শিরাম্রোতের পোষনকারক। ৪২। নবোদ্ভ রক্ষীত
আহলী, অর্প ও অর্নিন্তানিরোগ্র। কিলাট অর্থাৎ কীর্মিকৃতি গুক্ ও
হুর্তক্রমক। ৪০। তক্র অর্থাৎ বোল, গ্রহণী, অর্প, পোষ, পাওু, অতি
বার ও গুল্ম বিনাশ করে এবং তিদোম নিবারণ করিয়া থাকে। ৪৪।
হত মধুর এবং বাতপিত ও কক্সাশক। গ্রাহত মেধার্মিকারক ও
চকুর তেকোর্মি করে। উহার সংখার হবলে তিলোর বিনাশ করিয়া
থাকে। ৪৫। হত সংস্কৃত হবলৈ অপায়ান, উন্যাদ, মৃক্তাপ্রভৃতি রোগ্রিশাক্ত
ভিনাশ করিয়া থাকে। হাগ্নেমান্দির হতেও প্রেলাক্ত ওপ্রকাক আছে,
বিশেষতঃ উহা ক্ষ্মাতহারী ও মৃত্রেধ্য ক্রিমিন্ন্য় এবং বিদ্যোহ

चनवात्रभावाववृद्धि विद्याप (भाकीत्रम्यर्थः।
क्वारीमाध्य ननी देवि विद्याप (भाकीत्रम्यर्थः।
क्वाराव्य वृद्धमर्थक्षित्रिविधान्य ।। ८० ॥
नाव्य प्राप्त कृष्णे में द्याप्त स्वयः विद्याप्त हम् ।
वाव्य प्राप्त कृष्णे में द्याप्त स्वयः विद्याप्त ।। ८० ॥
नार्थनः कृष्टि प्राप्त वृद्धा क्वार्या ।। ८० ॥
नार्थनः कृष्टि प्राप्त वृद्धा क्वार्य ।। ८० ॥
क्वार्य वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा व्यव्य ।। ८० ॥
क्वार्य वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।। ८० ॥
क्वार्य वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।। ८० ॥
क्वार्य वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।। ८० ॥
क्वार्य वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।। ८० ॥
व्यव्य वृद्धा वृद्धा व्यव्य वृद्धा वृद्धा ।। ८० ॥
वाव्य वृद्धा वृद्धा व्यव्य वृद्धा वृद्धा ।।
नार्थ वृद्धा वृद्धा व्यव्य वृद्धा ।। ८२ ॥
नार्थ वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।। ८२ ॥

বিন'ল করে। ৪৬। তিপতিল পাওুতা, উদররোগ, মুঠ, অর্ণ, লোখ, গুলুঅনেহ ও বাতদেহবিদার বিনাল করে এবং উহা বলপ্রদাও কেলের উজ্
অতাসাধক। ৪৭। সার্ব পতিল জিমি ও পাওুরোগর, কক, মেদ ও বাহুবিনালী। ঘদিনাতৈল চকুর তেকোহানিকারক এবং পিতু, বার্তরোগ ও
হতোগনালক। । ৪৮। বহেড়াকলের তৈল্য কমপিত্র, কেলচর্বনিম্নকারক,
লোতোবিলোধন, মধুর ও ত্রিদোরম র কিন্তু বাতর্জিকারক এবং বিলা,
বাল, জিমি, হর্দি, থেদ, তৃজা ও বিবদোর্যবিনালক। ইকু রক্তপিত্রর, বলভারম, প্রিদাধক এবং কফ্র্ডিকারক। ৪৯৩০। শকু পিত্রকারক ও তীর।
হরা ও মিহরি অভিনন্ত্রপাকী। ৩৩ (বাতাসা) বদকারক, বিদ্ধ, আরু
এবং রক্তপিত্র ও বাতরালক। ৫১। ওড় পিত্রহারী, কক, বতির ও কদ্
ভারী। প্রোতন গুড় পিত্রর, পথা এবং রক্তবিশোধনকারক। ৫২। মেহ সুক্ত

রক্তপিত্তর র্যা সরেশ ওড়শর্কর।
সর্বপিত্তরং সহায়সুদ্ধ কর্বাত্তিও ॥ ৫৩ ॥
রক্তপিত্তরাতীক্ষতথা সৌবীরজাতরঃ।
পাচনো দিপান পথো মন্তঃ সাজ্ত উতপুলঃ॥ ৫৪ ॥
বাতানুশোমনী লখী পেয়া বতিবিশোষিনী।
সতক্রমান্তিমব্যোষা সওড়মধু লিপ্পলী ॥ ৫৫ ॥
হতীরং সূক্তা পোয়া কাসখাসপ্রবাহিকাঃ।
পারসঃ ক্রত্তরলাঃ কুপরা বাত্তরাশিনী ॥ ৫৬ ॥
সুখৌতঃ প্রক্তঃ রিকঃ সুখোফো লখু রোচনঃ।
কন্সমূলকপরেহৈঃ সাধিতো রংহণো গুরুঃ ॥ ৫৭ ॥
ইমগ্রুপদেবনাত প্রমু: সুপঃ সুসাধিতঃ।
বিরং নিল্পীত্তিং শাকং হিতং রেশ্বিসক্তং ॥ ৫৮ ॥

া বাবাতে বন্ধবাত জর করে। ২০। কাঁজি রক্তশিত্তকর ও তীক্র। ভূটিতর্গ ও বও পাচন, অন্নিদীপন ও পথা। ৫৪। পেরা রার্ম অসুলোর
াতিনাধন করে, উহা অতি কস্পাকী। ভক্ত, দাছিন, ত্রিকটু, গুড়, মঞ্চ ও
পাপনীযুক্ত পেরা বতিপোধন করে। ৫৫। পেরা পুসাধিত হইদে কান,
াল প্রানাহিক বিখাশ করে। পারস কফবাতহারী ও বনতুহ। তুলর
ভিনামিত ততুল) বাতবিদাশ করে। ২৬। তুপ উভনতুপে ধেতি
বিনামিত করিবে, পরে উহা বত্তশালিত করিরা লইখে। এইকথ হপ
নির্মি বাকিতে ভক্তপ করিলে উহা অভি বস্পাকী ও কচিন্দ হরে। ঐ
ক্প কনমুনাদির মহিত সামিত হইদে গুকপানী ও রংবেশনার্থ হর। ঐ ক্প
ভিনামিত পান করিরা ব্রহ্ম থাকিতে সেবন করিলে অপ্পদন্ধে পরিপাক
ভিনামিত সিহু করিয়া বিশ্বাসনক্ষতঃ যুত্তিলাদির সহিত পাক করিবে।
আইকপ শাক হিতকর। ৫৭ ৫৮। দাছিম ও আমলমীর সহিত থ্য পাক
ভিরিমে যুব অনিয়ন্তি ও বাতপিত ন্ট করে এবং মুনকের সহিত থ্য

Children Const.

पाणिमानलदेकवृ (या विक्तिषाणिक्वाः।
पानकामश्रीकणाग्निक्कत्वा मृग्रेकः कृषः।। ८०।।
वरकामकृमश्रीमार वृदः कर्त्वाः। मिनाभवः।
प्रृण्णामकत्वा श्राद्दी सम्प्रीविदिनामानः।। ८०।।
प्रृण्णामकत्वा श्रादी सम्प्रीविदिनामानः।। ८०।।
प्रृण्णागिकात्री मार्थः द्वाः श्रवी कृष्णे।। ८०।।
वर्ष्णाः मानिया क्वाः शिक्तां श्रवतः गृणाः।
प्रृणाक्षां मश्रकाः श्रवाः शिक्तां श्रवतः गृणाः।
प्रृणाक्षां मश्रकाः श्रवाः शिक्तां श्रवतः गृणाः।
प्रृणाक्षां मश्रकाः श्रवाः श्रवतां प्रणाः।
प्रृणाक्षां मश्रकाः श्रवाः श्रवतां प्रणाः।
प्रृणाक्षां स्रक्षाः श्रवाः।। ८०।।
प्रृणाक्षां स्रक्षां कृष्णां विद्याः।। ८०।।
प्रृणाक्षां स्रक्षां कृष्णां विद्याः।। ८०।।
प्रृणाक्षां स्रक्षां कृष्णां विद्याः।। ८०।।

প্রস্তুত করিলে দেই যুব খাল, কাল, প্রতিপ্রার ও ককরোর বিনাল করিরা থাকে। ১৯। যব, বদরী, কুলথ ইহাবিদের যুব দুখপ্রির ও বাতবিনালক। বুল ও আদক্ষীর যুব প্রাথী ও দেখা পিতবিনালন। ৬০। গুড়নিশিত দ্ধি নাত বিনাল করে; শকু কক এবং বাতর্হিকারী। শকুলী ( মন্তাবিশেষ ) হতপত্ত হলৈ অয়ি এবং বদর্হি করে, বিশ্ব উহা গুকপাকী শদার্থ। আমিষ-মাত্রেই শারীরিক পোবণসাধন করে, সর্বপ্রকার শিক্তক গুকরি অর্থাও নিজ্ঞা পারিবার করে, ক্লামিক শিক্তিক অতি চুক্তর অর্থাও নিজ্ঞা পারিবাক পার না। ৬১-৬২। অত্যাক্ত মণ্ডই প্রার, উহা শীতদ হবলে গুকপাকী হব। উক্তর্পে প্রয়োককদের গুপাগুল বিবেচনা করিয়া অনু-পানের ব্যবস্থা করিবে। অনুপানের সহিত গুবধ সেবন করিলে প্রম্ব ও জ্বা বিনাশ পার। ৬৩। অনুপানের সহিত গ্রবধ সেবন করিলে প্রম্ব জ্বা রোগাবিহীন করে। বিব জন্ত্ব, শিক্তিভি এবং বিবর্গকারী। ইহার গ্রেক, স্পর্ল, রুন, নকলই তীত্র। এই বিব জন্ত্বণ করিলে শারীরিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্ব, প্রার্থা করিলে শারীরিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্বন বিব্যা করিলে শারীরিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্বন করিলে প্রারারিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্বন করিলে করিলে প্রারারিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্বন করিলে করিলে প্রারারিক সারিবা বন্ত্রণ। হইলা থাকে। বিব জন্ত্বন করিলে করিলে চিকিনেরার

গজন্পশ্রসান্তীত্র ভোক্ত্রণ নাগনোবাধা। আত্রাণে চান্সিরোগ: নাদনাধান্চ ভিবস্টর: 1 বেলখ্রুন্তগাদাং সাধিবসোতত, লক্ষণং।। ৬৫।।

জনাধ্য চকুরোগ জন্মে এবং গাত্তকলা ও জ্বাণ ধইয়া বাবে এই সমগ্রই বিবের সক্ষা । ৬৪ ৬৫ ।

অনুপানাধাৰ স্<mark>মার ।</mark>

## চিকিৎসাধ্যার।

------

# ত্রচিকিৎসা।

ध्यमण्डः बरत्तु धारुष्ट (मार्यत् धारिका । चण्णाजः विरुद्धना পূর্বাক লয়ু ভোজন দিবে অখবা লক্ষ্মন অর্থাৎ উপবাস করিতে বইবে। এইরপ করিলে দেহত রুগের পরিপাক হঁর, প্রভরাং তৎপরে দে গ্রহত প্রদান কর। বার, তাহা আত ফলপ্রদ হইলা থাকে। যদি বায় অপুণিত হইনা ক্রের উংপত্তি হা, ভাষা হইলে ক্রের উপজক্তে বিভত্ত হত দেবৰ করিবে, ধদি পিত্ত অভূপিত হইয়া জুর অধ্যে, তাথা ছবলৈ ছারের প্রারম্ভে অল্প পরিমাণে বিরেচন করান বর্তন্য এবং যদি শেখা একুপিত হুইয়া ছবোংশতি হয়, তাহা হুইলে বুরের উপক্ষাম बम्ब कहान विश्वत । प्रयत्न कृत्वत शावत्य उँकत्र श्रकांत कितात क्षत्र-ষ্ঠান এবং ত্রিদোঘজনিত ছারে ত্রিদোবহারক ক্রিরার অভূষ্ঠান করিবে। ৰবজৰ উপস্থিত হুইলে যে সকল কাৰ্যা নিবিত, ভাছা বিশেষরূপে অবশ রাধা কর্ত্তব্য, অর্থাৎ তথকালে রোধ প্রকাশ, প্রীসহবাস, বিবানিত্রা, গাত্তে তৈলাদি দেশন, আন, অভিব্লিক বারু দেবন, কবার ঔষধ দেবন এবং অধিক পরিভ্রমকর কার্যা করিলে রোগা উত্তরোভর সম্বিক রুদ্ধি আঁও बहेगा चारक : चारु अद वह अदम अध्येषा शतिवास न कतिरत। नवेसरद ্রার প্রকাশ, দিধানিতা, জীসইবাস, অভিরিক্ত বায় সেবন, পরিজয়, গারে তৈলাদি ঘদ্র, চুইবার আহায়, প্রভাতে ও বিলাকাদে আছার, গুরুপার প্রব্য ও কন্দর্ভিকর হবা ভোজন, শীতন জনপান এই সকল कार्या कतितम अक्षि, यक्ता, पूर्वत्यादः विष श्र मुख्या अहे नकम छेण-নূর্প উপাত্ত হয়। নবছুরে উপবাদ করিলে দোখের পরিণাক হয়, আমাশরভিত দোধ দূৰিত ধইয়া অপক বুসবিশিষ্ট হয়, ভক্ষনা, অন্তি নিবাশ প্রাপ্ত হর এবং নেই দোব রুদর্শথকে করিত করিয়া রাখে এই

জনাই সান্তব্যু জন্মে, উপবাস করিলেই সেই দোষ পরিপাক পা আবং ক্রের উপাদ্ধ ব্যু, অন্নি রুমি পার, আহার করিতে ইন্টা ইর্ড, শরীর অভুবোধ হয় এবং কচি জালিয়া থাকে। কিন্তু এত্নে ইয়াও বিবেচনা করা উচিত যে, রোগীর বল বিবেচনা করিরা তদপুলারে উপথাল क्वादेख, कांबुन आंद्रांशा कांकीन अर्दाय वस वाखिदाक आद्रांशा লাতের সম্ভাবনা নাই। যে সকল রোগী বারএখান, অতি ক্ষা বা অতি ভুকাভুর, ক্লান্ত ও মুধশোষহুক্ক এবং বে অভি শিশু, অভি ব্রম্ব, শর্ক্তবভী অথবা অত্যন্ত বনহীন, ভাষাকে উপবাদ করান কর্ত্তব্য নহে। বিৰেচনা পুরুষ্ণ উপ্রাস করাইবে, কারণ অধিক উপ্রাস কেওরাইনে অস্থিতারে বেদৰা ক্ৰে, অংক বাৰ্থা হয়, জুখাই ব্ৰাস হইয়া যায়, অফচি ক্ৰছে, কালের উৎপত্তি হয়, পিপালা জৈতে, ত্রবগশ্জি ও দর্শনশক্তির ছাল ব্যা, দেছে বল্যাত থাকে না, অস্ত্রহার দর্শন হর এবং মতক সুরিতে বাকে। যখন রোগী আভাবিকরণ মদ মুত্র বিসর্জন করিছে। দেহ লৰু বোধ ছটুৰে, মুখ বা কণ্ঠের বিরুসভা থাকিবে না, প্লানি ও ডঞা বিমাল नाइत्त, (यम निर्माठ इरेटर, यन क्षाकृत इरेट्स करा क्या कवित्त, उपनह क्षांचिटर ८ए (जाती ह्यांगं स्टेंट्ड वृक्तिमाक कतितादह, छथम विराहनः नंबर्क काशास्त्रज्ञ नावका कतिरव।

হিলুল, পিশ্ব ও মরিচ এই তিম ক্রবা সমপরিমাণে দইরা আলার
রামের সাহিত মর্ফন করত সর্থপ প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই বড়ী
সেখন করিলে ত্রিবিধ শ্বরুই আরোগা হইরা থাকে। আলার রুল ও মধুর
লহিত বেরিরী বার্টিরা তাই। অভূপান দিবেন অথবা কেবল মধু কিমা
শ্বেত্তক্ষল বার্টা অভূপান দিতে পারে।

শুটি, গুল্প, বুবা, চিরতা, চাকুলিয়া, লালপনী, কওঁবারি, বুবাতী এবং গোলুর এই সমস্ত ত্রবা একর করিলা ভাষার চুই ভোলা পরিষাণ গুরুষ পূর্মক ব্রিল ভোলা জলে সিম্ম করিবে, আট ভোলা অবশিন্ত গালিডে নামাইবে, এই রাখ পান করিলে নাতিক ও পৈতিক স্বস্থ, বিষাশ প্রাধ্য দুইয়া থাকে।

খেত করবীর শিক্ত ও কনক পুত্রার শিক্ত এই ছুই জবা সং-ভাবে দইয়া সন্ধিপুজার ক্লিদানের পাঁটার হজের সহিত সর্কন করত ঘটরসমূপ বড়ী করিবে। বাসী ঋণের সহিত ও বঁগী সেবৰ করিলে সর্ক প্রকার জুর উ াপ্যিত হয়।

স্বরোগে হিকা জনাইলে আনারসের পাতার রস অর্দ্ধ পোরা এক ভোলার কিছু অধিক মিছরির চূর্ণ নিশাইরা পাওরাইবে, তাহা হইলে তথ-ক্লাম হিকা নির্ভি হইবে সক্ষেত্র নাই।

কক্কারি, গুদক, বাধনহানী, শুঁঠ, ইক্রবন, চুরানভা, চিরতা, খুখা, পদ্ভা, কটকী ও রক্তচন্দ্র এই সমত দ্রেয়া সম্ভাগে দইরা চুই তেলে। পরিমাণ করিবে। পরে বিভিন্ন তোলা জলে সিদ্ধ করিরা আট তোলা। গাকিতে নামাইবে। এই কাম দেবন করিলে পিতলৈখিক জর বিনাশ প্রাপ্ত হর এবং কাসঃ পার্ম বেদনা, ব্যব্দ দাহ, অকচি ও পিশাসাও বংস পাইরা বাকে।

হাড়কীকড়ার শিক্ষ, পাতা, তুল, হাল ও কল এই সম্ভ একটি পুটলী মধ্যে রাখিলা তাহা দল্ধ করত হুই তোলারস নিশ্পীড়ন জরিয়া লইবে। পরে সেই রম শুঠী সহযোগে সেবন করিলে পুরাতন শ্বন বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

কতকণ্ডলি বালুকা একটা খোনার চড়াইরা ভাজিরা গার্ম করিরে, পরে উহা একথানি বত্রপতে বহুন পূর্মক কাজি দব্যে ডিজাইয়া গাছে খেদ দিবে। এইরপ করিলে শারীরিক স্নোড সকল সরল ২৩ত আগ্রি অন্তানে গামন পূর্মক বালু ও ক্ষেত্র ভারতা রহিত করে এবং যাত লৈখিক জর বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

এছ ভোলা কেতপ্ৰেড়া ও এক ভোলা প্ৰস্কু একত করিয়া আছি লেম্ন জলে নিম করিবে। অৰ্দ্ধ গৈয়া থাকিতে উভোলন পূৰ্বত হয় সহযোগে সেই কাৰ পান করিলে প্রাত্তন স্কুর বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

এক কলনী কল উক্ত করিয়া তাহার দহিত এক পোরা সৈত্বৰ দৰ্শ বিশিত করিবে। পরে নিশাবোগে শরন সময় সেই কল উক্ত থাকিতে হাজিতে হতারের কর্ই পর্যান্ত ও পদর্যের হাঁটু পর্যান্ত থোঁত করত লাক্ত করিবে। মুই তিন দিন এইত্রপ করিবে পুরাতন হুর নিলেংখ্য বিনাশ প্রাপ্ত হয় সন্দেশ্যাই।

রক্তচন্দ্র, তটিঃ মুখা, রাষ্ট্র, কেতপাশভা ও বেগার শিক্ত এই সক্ষ এবা শ্যভাগো নইয়া বেটি মুই চোলা করিবে। শারে উছা ছাত্তি শের জনে সিদ্ধ করত অন্ধ্রেক অয**লিউ থাকিতে** নামাইরে। ওঁ জন পান করিলে জুররোগীর পিপাসা বিনাশ প্রাপ্ত হবৈর পাকে।

মুস্তপর্ণটকোশীরচন্দনোদীচানাপর্টর:। শৃতশীতং জলং দদ্যাৎ পিপাসালুরশান্তয়ে।।

মুখা, ক্ষেত্রপাপড়া, বেণার মূল, মুক্তচন্দ্রন, বাসা ও শুর্চী এই সকল জব্যের সন্ধিত কল সিদ্ধ করিলা শীতল ছবলে স্বরার্ক ব্যক্তির লিপাসা লান্তির নিষ্টিত্ব পান করিতে দিবে।

লাগরং দেবকা**ঠক ধনাকিং হহ**ভীষয়ং। দলাৎ পাচনকং পূর্বং জুরিতার <mark>জুরাপহ</mark>ং।।

শুষ্ঠী, দেবদাক, ধনিয়া, রহতী, কণ্টকারি এই সকল দ্রোর সহিত জন নিজ করিয়া শীতদ হইলে সেই পাচন সেবন করিলে জুর ও পিণাসা সাঙ্কি ভাষা

> আরগুধাতয়া মুন্ত। তিক্তা এদ্বিক্সিকিল: । ক্ষায়ঃ পাচনো দামে সমূলে চ জুরে হিড: ॥

সোঁদালু, হরীভনী, দুখা, ইজ্ঞাব, শিশানীমূল এই সকল এয়োর। জনার পান করিলে তকণস্থাই হাকির গাঁৱবেদনা গুলুর দিনাশ পার এবং রুদের পরিপাক হইসঃ খাকে।

> মধ্কসারবিদ্ থকচোষণকণাঃ সমাঃ । শক্ষ্ পেউ বান্তসা নস্যৎ কুগাৎ সংজ্ঞাপ্রবোধনং ॥

থ**তি**নধু, সৈহুৰ, ৰচ. মরিচ, পিশোলী, এই সক্ষর ক্রব্য স্বভাগে স্বরিচ উত্তযক্ষণে শেষণ করিবে, পরে উহা জনের মহিত গুলিয়া নগ্য শ্রেণ করিলে ভুরব্রোগে অচিতব্য ব্যক্তির প্রবোধ ধর।

> ত্তির্দ্ধিশালাত্তিকলাকট্কারগৃথৈ: হস্ত: । সুক্ষারো ভেদনু: ক্লাখ্য: পেয়: সুর্বাস্থ্য ।।

ভেউড়ী। গোরক কর্মনী ত্রিফলা, কটুকী, সোঁলালু এই সকস তথোর আধ করিয়া ধবকারের সহিত পান করিলে উদরের সারক হইরা সর্বাপ্রকার ভিয়ের শাস্তি হইয়া থাকে।

সহৌষধামূতামুক্তচক্রোশীরধন্যাইকঃ। কাথকুতীয়কং ২স্তি শর্করামধুযোজিত:।।

ভঠী, গুড়ুতী, মুখা, গুজভলন, বেণার মূল, যমিরা এই স্কল জ্বোর ভার করিয়া ময়ু ও শর্করার সহিত পান কবিলে তৃতীয়ক দ্বুর বিনাশ পার।

> অপাদার্গদটা কট্যাং লোহিকৈ: গগুতভভি:। বদ্ধা বারে রবেনু নং জুরং হস্তি তৃতীয়কং।।

রবিবারে অপামার্গের মূল উত্তোলন করিয়া সঞ্জ রক্ত ত্ত্রবার। কটিতে বন্ধন করিলে আাহিকস্থর বিনাশ পার।

> ওড়ুচাঃ দ্বাধককাতাং ত্রিকলারা রশস্য চ। মূল্বীকারা বলারাক নিকাঃ রেহা জুরচ্ছিদঃ।।

ওড়্টী, বিকশা, বাসক, ফ্রাফা, বেড়েসা, ইহাদিনের প্রত্যাকের রাধ্ ও কল্প হারা হত কিয়া তৈল শাক করিয়া সেবৰ করিলে সর্বাধ্বকার স্থা শান্তি হয়।

> শাত্রীশিবাৰণাবহুকাখা: সর্বজ্বান্তক:। সুরাতিসারহরণযৌবখং প্রবদ্যাম্যহং ।।

আমদকী, হরীতকী, পিশ্পনী, চিতা এই সকল দ্রব্যের কা**থ পান** ক্রিলে সর্বাধকার তার বিবাদ পার।

অগ্নিৰেধাক্ষরান্তে বং নাশমায়াতি হীখন। বাতশ্বহর: ক্ষাপো ওড়ুচা। মৃত্তক্যা চ।। শ্বরোগী প্রের প্রারম্ভে পজ্ঞাদি দিয়া তথারে নিজ শ্রীর শ্রিক্ষেদ প্রদান করিবে, তাহা হইলে সম্প্রিকার স্বর বিনাশ পার গুরুষী ও দুখার কাথ বাতিক শ্বর বিনাশ করে।

ছরালকৈ রক্তঃ কাথঃ পিত্তস্থুরহরঃ সূপু।
শুরু পিপটিমুকৈন্চ বালকোলীরচন্দ্রিঃ।
নাজাঃ কাথঃ সেয়ুক্ত সম্ভন্তিঃ সহপর্গতিঃ।
নবালকঃ সর্বালকঃ সম্ভন্তিঃ সহপর্গতিঃ।

হ্রানভার কাশ পান করিলে শিভন্তর বির্ভি পার । ৩৩ী। কেতা পাপড়া, মুখা, বালা। বেগার মূল ও চলন এই সকল ক্রবার আগ করিলা য়ত কহযোগে তথ্যীভূর্ব ভ্রালভার চূর্ব প্রকেশ দিরা পান করিলে ক্রেন্ড ছার বিন্ত হয়। বালা, তথ্যী ও ক্রেডগাপড়া ইহাসিগের ভাব সর্ক্রকার নুম হরণ করে।

হাপশ্চ তিজ কৈরওগুড় চীশু । পিওজুরহর: সাচে শৃগুনাং বোপস্তুসং।।

চিত্রতা, এরও, গুড়ুচী, গুঠী ও সুগা ইছানিগের কাশ করিয়া পান করিলে পিতশ্বর বিনাশ পার। অতঃপর জন্যান্য যোগ ক্ষিত হুইডেছে।

> বালকোশারপাঠাতিঃ কণ্টকারিকমুগুকৈঃ। জুরনুচ্চ ক্লভঃ কাথতথা বৈ সুরদারুণা।।

বালা, বেশার মূল, আক্ষাদি, কউকারি, মূখা এই সকলের রাখা পাল করিলে সর্কাপ্রকার ছব বিদ্রিত হইলা যাত্র এবং দেবদানত আথেও স্বর বিনাশ পাইতা থাকে।

ধন্যাকনিষমুন্তানাং সমধ্য স ভূ শকর । পটোলপত্রহুক্ত ওড়ুচীত্রিকগার্তঃ। পাডোবিলজুরহরঃ ক্ষাক্তয়ভনুৎ বিদং॥

ধনিয়া, নিৰ, মুখা, পটোৰপত্ৰ- গুৰুচী, ও জিফলা এই সক্ষ প্ৰবেদ্ধ কাম কৰিয়া মধু সহযোগে পান করিলে সর্বাধানার ভূম বিনাশ পাল এবং জুধা হৃদ্ধি হৃদ্ধ ও বংত্রোগ বিন্তু হুইছা ধাকে।

## ষ্ঠিতকীপিগপলীনামামলীচিত্রকোদ্ভবং। চূর্বং জুরঞ্চ রুখিতং খন্যাকোলীরপর্লাটে:॥

হরীভকী, শিশ্পনী, আগলকী ও চিতা ইহাদিগের চূর্ণ করিরা ধনিয়া। নার মুল ও ক্তেপাপড়ার কাথের সহিত পাধ করিলে স্থর বিদাপ নাইরা থাকে।

আমলকা। গুড়ুচা। চ মধ্যক্তং সচন্দ্ৰং। সমন্তন্ত্ৰনুক সাথ সালিপাতহরং শৃণু।।

আমলকী, গুডু চী ও রক্তচল্য ইহাদিগের কাথল্মধুনহগৈলে পান বিলে স্থাপ্রকার স্বার বিনাল পার। একণ সাহিপাতিক্তর যোগ জবণ

হরিতানিয়তিকলামুক্তকৈর্দেবদারণা। কথারং কটুরোহিণা। সপটোলং সপত্রকং। ত্রিদোষজুরমুক্ত স্যাৎ পীতত্ত ক্তথিতং কলং।

ছরিজা নিখ ডিক্লা মুখা। দেবরাক কচুকী পটোল পটোলপজ ই সকল জবোর কাব করিলা পান করিলে জিলোর স্থার বিবাল পাইরা বিকে।

কণ্টকার্য্য নাগরস্য গুড় চ্চা পুকরেণ চ। জন্ম নাগৰলা চুর্গং তিলোয়ঙ্গুরনুদ্ধবেৎ।।

কন্টকারী, শুঠী, গুড়ুচী, কুড় গোরক্ষাভূদিরা এই দক্ষ ক্রব্য ভূপ বিয়া দেবন করিলে নিদোব স্থার বিনাপ গ্রাপ্ত হয়।

ককণাতজুরে দেরং জলমুক্তং পিপানিনে। বিশ্বপূপ্টকোশীরসুক্তচন্দনসাধিতং।।

বাতসেম্বররে রোগীর পিশাসা হইনে ৬৯% কেতপাপড়া, বেশার ইন, মুখা ও রক্ত চন্দন এই ক্তন জব্যের সহিত ধন সিদ্ধ করিয়া উক্ত বাকিতে শাব করিতে দিবে।

# বিল্যাদিপঞ্মুলনা হাথঃ ন্যাধাতিকে জুরে।

বাতিকজ্বরে বিদ্যাদি পঞ্চয়ুল জর্ঘাৎ বিদ্যু শোণা। গান্তারী, পাঞ্জী ও মাণিয়ারি এই সকলের কার্য পান্ন কর্মাহিচের।

পাচনং শিশ্পদীমূলং গুড়ু চীবিখন্ডেবজং। বাতজ্বর দ্বরং কাথো দণ্ড: শান্তিকরঃ পরঃ। শিত্তজুরসূত্র সমযুহ কাথ্য পর্ণ দ্বিদ্বোয়।

শিশাদীযুল, অন্তা ও ৬ঠী এই সকলের কাথ পাম করিলে উদ্বেদ্ধ শরিশাক হইরা বাতিকজুর বিনাশ পাইরা থাকে। কেওপাপড়া ও নিম্ব ইহাদের কাথ মহু সহবোগে পান করিলে পিত তুর বিনট্ট হয়।

চিরতা, যুখা, রক্তচন্দন, স্থাদি কুল, বেগারে শিকড়, ক্ষেত্রপাপড়া এই সকল এবা সমস্তানে লইয়া মোট ঘুই তোলা এহণ করত বঙ্কিশ ভোলা অপের সহিত দিছ করিয়া আটভোলা জবনিষ্ঠ খালিতে মামাইবে। ঐ কার্থ জর্জতোলা চিনির সহিত দেবন করিলে গৈতিক বৃদ্ধ, পিপাদা, লাহ, অক্ষচি ও বমি প্রশান্ত হয়।

ছুই তোলা ধনিয়ার চাউল বিশাধোনে বার তোলা জলে ভিজাইর। রাখিবে। পর দিব প্রাওঃলালে কিঞ্জিৎ শৃক্রা সহবোগে সেই জল পান করিলে জুররোধীর অন্তর্দাহ বিদ্বিত হয়।

কটকারে বিলের হাল, গ্রসঞ্চ, গাল্পারীর হাল, মুখা, শুঁঠ, চিরজা, সোলাহাল, আর্থণা, ইল্ল ধব, পাকল হাল, সুরালভাও কটকী এই সমন্ত প্রবা সমজাগে দইরা যোট সুইডোলা করিবে। পরে উহা বজিল জোলা জলে নিছ করিরা আট ভোলা অবশিক বাহিতে নাম ইবে। এই কাশ লেখন করিলে ব্যতিক, গৈতিক, লৈখিক বল্পুল ও চিরোৎপর রাজিশ্বর বিশাশ প্রাঞ্জ হয়।

পিপুর, বছ, বেলিসার, সৈত্ত্ব লবর্ণ ও গোলমরিচ এই সক্ষ এবা সমস্তাশে প্রবণ পূর্বক পেবণ করত ছুর্ব প্রস্তুত করিবে। ঐ ছুর্ব ছারা জনসহবোগে নদ্য গ্রহণ করিলে গ্রিলোবক স্থায়ে আজাত ব্যক্তির আন-সর্বায় হয়।

## বিধানে ক্রিয়মাণেশি বস্য বংজা ন জায়তে। পাদরোভ শলাটে বা দহেলৌহশশাকয়। ।।

चत्रतारंगं जरिष्ठका बहेरन यमि छैदशामि धात्रारंग मध्यानां छ ना इत. जारा बहेरन उठ स्मीर्थनाको बाहा शाम छ ननावेषान जठछ कहित्रा मिरव।

# विका भाष्ट्री भाष्ट्रीमण्ड विभागा विक्रमा विद्रः। मनीत्रा (क्रमः कांथः मर्ककृतवित्माधमः॥

কটুকী আক্নাদি, পটদ গোরককর্মী, বিকলা, তেউড়ী ইহাহিশের কার্য হরের সহিত পান করিলে উদরভেদ হইয়া সর্বাঞ্চলার ভারের শান্তি হয়।

এক ভোলা শেকালিকা কুলের পাতা ও এক ভোলা কেত্রপাপড়া এই ছুই তোলা পাত একটা পাতার পুটলী ক্রিরা রাজিকালে দক্ষ করিয়া রাখিবে। পরণিব আতে ভাহার রস মধু সহবোগে সেবন করিলে পুরাতম স্থার পারোগা হয়।

পদতা আদ তোলা গুলঞ্চ আদ তোলা, কেতগাপড়া আদ তোলা ও মউরী আদ তোলা এই কর তথা একতা করিয়া দেড় পোরা জলে সিভ করিবে। ঐ জল স্কালে বিঞ্চিৎ ও বৈকালে কিঞ্চিৎ দেবন করিলে হুই তিন দিন মধ্যে ভূতন রুসম্বার আরোগা হইয়া থাকে।

খুলের বুঁড়ি এক হটাক বার্টিয়া এক সের জলের সহিত মিজিড করিখে। পরে খানিকক্ষণ হাতদিয়া নাড়িতে থাকিলে, জনন্তর একছটাক জীরাভাজাচুর্ব উহাতে মিশাইয়া হাত ও পদতলে মর্দন করিলে পৈত্রিক ভবে আজান্ত রে:গীর হাত পা ভালা দুর হয়।

এক ভোলা গুলঞ্চরস সেবৰ করিলে সামান্য গৈতিক **স্থার বিনাপ** পাইলা খাকে। এই ঔষধ সেবনাতে কটী পথ্য সিতে হয়।

কত্ৰজ্ঞানি হেলাফুল জনে সিদ্ধ করিয়া কাপ প্রস্তুত করিবে। সেই কাপ এক তোলা দইরা অন্ধ পোয়া বিহরির জনে মিশাইরা দেবন করিনে পৈত্রিকস্কুর বিদ্যুত্তি হয়। ভাষাজারা একডাগ, লোবিত গছক থকডাগ, শোবিত পরিষ একডাগ, জারিত অর্ণবাদিক একডাগ, গোড়া দেবুর রুলে শোবিত হিলুদ এক ডাগ, অল এক ডাগ, রুগাল্পন একডাগ, জারিত অর্থ এক ডাগ, এই সমস্ত বল্ল একল করিয়া যত হইবে, তত পরিষাণ কম নিলা উহা বর্জন করিবে। উভদরশে বর্জিত হইবে এক রুডি পরিষাণ বলী প্রস্তুত করিবে। রোগা বিবেচনার ঘণাবিধি অন্থ্পান সহ এই বটী দেবন করাইকে বিব্য ক্রেডাল হল।

শোধিত করণান, লোধিত নিব ও সোহাগার থৈ এই বন ত্রবা অত্যেকে চারি আনা ওজনে দইরা জনসহথোগে বর্ষন করিবে। উভনরশে মর্কিত হইলে একরতি প্রমাথ বড়ী প্রস্তুত করিতে হইবে। কিঞ্জিৎ আদার এসের সহিত ঐ বড়ী ১ টা বা মুইটা সেখন করিলে মন নির্মত হইরা বাইবে, ভাষা হইলেই সাবার্থ স্থার হংস-প্রাপ্ত হর।

ছরিতা ও নাক্তরিতা এই মুই এব্য চূর্ণ করিব। শিরীৰ কুলের রস ও। ছত স্ক্ৰোগে ন্যা গ্রহণ করিখে চাতুর্বক স্বুগ্ন বিনাশ পাইবা বাকে।

भाग्नर मक्कर वर्गमञ्जर छाम्रामर ह ।
हेम्मर भक्कमर रक्कर विश्वस्य ह ।
साधीकमर मक्क् नक्षायकीक्षणर मुन्नीः ।
साधीकमर मक्क् नक्षायकीक्षणर मुन्नीः ।
साधाक्रिक्षायकार देवत्या इत्यः मश्च मुन्निख्यः ।
क्ष्मायकारम्देनर दक्ष्मावकारम्य ह ।
क्ष्मावकारम्देनर साधाक्षण्य विष्ठक्षणः ।
क्षिण्यकारम्देनर चारावक्षण भूनः भूनः ।
भूनर्नवात्रामदेनर मश्चरात्रर भूशक् भृथक् ।
विश्वा क्ष्माण ह कार्या देवत्याक्षण्याम्याः ।
साधार सामाविश्वर हश्चि विष्णाक्षण्याम्याः ।
साधार सम्मदेश्वर विष्ण छाम्राम्बिक्छवाः ।

व्यस्थाम् विश्मिक्टिकृतं मृत्रः राष्ट्रगण्डः छथा । सम्पाद्यिः वित्रमाधिक कामनाक स्नीयकः । ्भानमार्क्षृणनामात्रः भाषानाः मृन्यनामकः ॥

পারদ, গদ্ধক, অর্থ, অত্ত তার্নু, সোহাগা, পঞ্চনবর্ণ, বল, বিষ্কৃ, বারদল, বলক এই সকল এবা সহস্তাগে লইয়া ছুঞ্জাজ্বস, কেউরতিয়ার রস, কাক্যাচীর রস, বিশুপত্রের ও প্নর্নবার রসে পৃথক পৃথক সাতবার করিয়া ভাবনা দিবে। পরে চণকপ্রাধ বল্পী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধকে শোষশার্দ্দ্রির করে ইহা হারা গুলা, প্রদর, প্রস্তুত করিব। ইহা হারা গুলা, প্রদর, প্রস্তুত করিব। ইহা হারা গুলা, প্রদর, প্রস্তুত করিব।

পর্কতোলা শোষিত গল্পক, অল্পতোলা শোষিত শারদ, ও বৃকপুলোর শাতার রদের সহিত আতপতাপে দর্কন করতে শোষিত মৈঞ্জন এক ভোলাঃ দারবুল এক ভোলা, বিষ এক ভোলা এই পঞ্চ দ্রব্য একত্ত করিরা আদার রসে এক প্রহর যাবং মর্কন করিবে। উত্তয়রপ মর্কিত হইলে সূর্বপ পরিবিত বড়ী প্রতে করিবে। আদার রল উল্ল করিরা এক ছ্টাক ও একযায়া কল্লমী অহুপান দিরা ঐ বলি সেবন করাইলে সদ্য স্বর বিনাশ পাইরা থাকে।

শে কর পাঁচ সাত দিনের অধিক বইসাহে এবং যে ক্রান্থে করের আধিকা আছে, তাহা সদ্যা আরোগা করিতে বইলে বিশুক্ত পার্দ্ধ, গাল্পক, বিক, আরিজ তাত্ম, এই কর এবা সম্ভাগে এইগা পুর্বক আগার রলে নাজবার জাবনা দিরা একএইর দর্মদ করিবে। পারে নিসিদার রলে নাজবার জাবনা দিরা ওকএইর দর্মদ করিবে। পারে নিসিদার রলে নাজবার জাবনা দিরা উত্তমরূপে এক প্রহিরকাল দর্মন করত এক রতি প্রদান বড়ী প্রস্তুত করিবে। আদার রসাও বলু দিয়া এই ঔবর সেবন করাইতে হয়। সেবনান্তে রোগীর গাত্রে সর্বণ তৈল মাধাইবে, আর্র্ক্ত গামহা বার্হালাক মুহাইছা দিবে এবং ইক্ল্ , ডালিব, পানিক্ল, ইত্যাদি ধাইজে দিবে। একদিয়ের বধ্যে স্থার উপশ্ব করাইবার আজিনার হইলে হুইটা বড়ী এক মাধা পারিদাণ কজলীর সলো মর্পন করিবা এক ছটাক উল্ল আগার রসের সহিত দেবন করাইবে। জ্বরতে বিদ্যান্ত্রের বোলাও পারিভ্

থাত তোলা চিনি এক চ্টাক ছাগছ্ও এবং এক তোলা ভেলাই চো
পাতার রস এই তিন এবং একর করত রোগীর গারে তৈস মাধারীর।
ঐ ঔষধ সেবন করিতে দিবে। পরে আন সমাধা ককাইরা জর ভোলন
করিতে দিবে। নিশাকালে লেপ গাতে দিরা শরন করাইবে যথন অধিক
পারিমাণে খেদ নিগত হইরা যাইবে, তথন রোগীকে শ্যা হইতে উঠাইবে,
কিছ সে দিন আর কিছু আহার করিতে দিবে না। এইরপ করিশে
নিঃগদেশ পুরাতন স্বর আহরাগা হইবে।

রবিবারে অপামার্গের মূল উত্তোলন পূর্বাক আদশানি তপারির সহিত রোগীর মূথে ছাপন করিবে এবং তার্হাকে আতপতাংশ গাত্রে ঘোটা কাপড় বা লেপ দিরা শরন করাইছে। রোগী শরন করিরা সেই ঔষধি চর্বাণ করুড় জ্বন্দা করিবে। যথন অতার বর্গ নির্গত হইবে, তথন উঠাইরা পর্যাধিত সের জ্বোক্তন করিতে দিবে। এইরপ করিলে প্রাতন স্বর দ্রীভূত হইরা গাবে।

চারিদাবা গাওজবাব তির মাবা গুলবনকনা, চারি মাবা কেতপাপড়া।
ভিনমারা হেলাফুল, চারিমাবা সমূল লাছ ও চারিমাবা মকোর বীচি এই
লমস্ত তারা একর করিমা অন্ধানের জালে বিদ্ধ করিবে। তিন ছটাক অবশিকী
থাকিতে মানাইরা বিনের মধ্যে ভিনবার সেবন করিতে হইবে। একমাবা
মাকসির ও এক ভোলা গুলবনকদা ইয়ার অন্ধূপান। এই ঔবধ সেবন
করিলে পিডায়ার ও বাভিকস্কার বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

কট্ৰী, বেগার শিকড়, পদ্ভার্থা, বাদা, রক্তক্ষন ও কেতপাপ্তা এই দকদ এবা সমভাগে দইনা যোট চুই তোলা করিবে। পরে বলিও ভোলা কলে উহা দিছ করিয়া আট ভোলা অবশিষ্ঠ থাকিতে নামাইরা আর্ছ ভোলা শর্করার সহিত্ত সেথন করিলে পিতন্ত্র ব্যন্ত পিপালা, দাহ ও অক্টি বিমাশ এবাধ হয়।

যদি স্বরে শবশশকির প্রাণ হর কিয়া জ্ঞান হর্মন হইরা পড়ে ডাহা। হইনে সুই ডোলা নিদিশাপাতা যদিশ তোলা জ্ঞান দিছ করিয়া আটভোলা থাকিতে নাঘাইরা অর্জ্যতোলা মরিচচুর্ণের সহিত ছিল্লিত করত মেবল করাইবে।

গৈত্তিক জুরে শিপানাও দাহ উপস্থিত হইলে একভোৱা পক্তাঃ একভোগা হবের চাউল এই মুই ত্রংগ ব্রিশা ভোগা জ্বলে নিজ করিছা আটতোলা অবশিষ্ট স্থাকিতে বামাইবে। উহা শীতল হইলে অর্ছতোপক মধুর সহিত মিজিত করত দেবন করিতে দিবে।

গণিয়ারি, গান্তারী, নিষ্ক, সোণা, পাছস, এই প্রকলের ছাল্য শানপানী, গোন্ধুর, রহজী, চাকুলিরা ও কণ্টকারি এই সমস্ত এবা সমস্তাগে
একর করত চুই ভোলা করিবে। পরে বরিশ ভোলা জল দিয়া সিদ্ধ করিবঃ
আইভোলা থাকিতে মামাইরা অন্ধিভোলা পিপালীচুর্গ প্রকেপ দিরা দেবন
করিবিদে বাডালৈমিক বার ও তথ্যহ কাম, পার্খবাখা, অন্ধীর্ণ প্রভৃতি
উপাদ্দ বর।

গুনক, ভাঁঠ, মুখা, দলমূল, চিরতা, এই সকল দ্রব্য সমভাবো প্রহণ পূর্ব্বক মোট ছুই তোলা করিয়া বনৈশ তোলা জলে সিদ্ধ করত আট তোলা বাকিতে নামাইবে। এই কাথ সেবন করিলে পুরাত্ত খুর দুরীভূতী হর।

প্রসঞ্চ, বৃহতী, ভূমি আবলা, দাক হরিলা, দেবদাক, ইস্কায়ব, স্থামানতা, মঞ্জিল কটকারিঃ কেতপাপড়া, পিউলিছোপ, ওঠী, প্রকাশনী, নিমের হাল, কুড, মুখা, পদ্মকাঠ, বলা ছুবুর, চিরতা, স্থামবানকের শিকড়, হাড়ভালা, কুলার দুল, পিপপনী, সরল কাঠ, লঠা, ভেলার মুটি, কট্লী, পিশানী, আত্রানি ও ধনিরা এই সকল দ্রব্য সমভানো গুরুপ পুঞ্জ ছুই তোলা পারিমাণ সঞ্চিত করিবে। অনন্তর বহিশে তোলা জলে নিম্ন করিলা আট তোলা অবলিই বালিতে নামাইরা তাহাতে অন্ধতোলক মন্ত্রা আট তোলা অবলিই বালিতে নামাইরা তাহাতে অন্ধতোলক মন্ত্রা আট কোলা, বেবন করিলে বাতঞ্জ, পিতজ্ঞ, লেবজ, সমিপাতজ্ঞ, দ্রব্য, মতত্র, অন্তঃ হু, বহিছ, ধাড়হু, বিষধ, ইত্যাদি স্বরু, শ্লীহা, অন্যমাধ্য ক্রেডির মিনাশ পাইরা থাকে।

ধস্থলের বুলা কেওপাপড়া রক্তচন্দ্র, বালা, কটকী, ধনিরা, পালতা মুখা এই সকল এবা প্রভাবেক মুখ মাধা লইমা অর্থনের কলে সিম্ব করিবে। ভিন মুটাখ অবশিষ্ট থাকিতে মাঘাইয়া রোগীকে স্বেশ্ব করাইলে বাতিক ও পৈত্তিক স্কুর বিমাল প্রাপ্ত হর।

শোষিত কটিবিব, গোলমরিক, বুখা, কুড়, মহান্মরী বচ, আষর এই সকল প্রণা প্রত্যেকে এক ভোলা পরিমাণ গ্রেহণ করত এক প্রহর যাবং আলার রলে মর্কন করিরা সর্বপ প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। আগার মূল ও মধু অভূপান সহযোগে এই ঔবধ স্বেদ্ধ ক্রিতে হর। এই ঔবধ শ্বাদ্ধা সরিপাণ্ডমূর প্রশাস্ত হইরা থাকে। হছ নথা নিছ করা ধুজুরবীল এক ভোলা। আর স্বীজী একডোলা। উঁচ এক ভোলা। বীজপুনা হরীভকী এক ভোলা এই একল জবা চূর্ণ করিবা চারি ৮৫ পর্যান্ত আদার রুসে বর্জন করত নালর সদৃশ বড়ী প্রস্তুত করিবে। আদার রুস ও গরুর সহবোগো এই উক্ত দেবন করিলে উর্থা স্থিপাত ক্রুপ্রশাহিত হয়।

গানারকল, অনপ্রস্থা, পার্থুল, ব্রক্তর্গন, ইতিবৃধু, বেতচলার, বেণার লিক্ষেও বউলপ্রপা এই সকল ক্রব্য সমজানো লইয়া মোট ছুই ভোল গ্রাহণ পূর্বাক অর্কালের জনে সিম্ম করিবে। পারে এক পোরা অব-শিক্ট থাকেতে নামাইয়া ভাষাতে কিঞ্জিৎ শর্করা প্রকেপ দিয়া নেবৰ করিবে। তিন ক্রী অন্তর সেবন করিতে হয়। ঐ এক পোরা ক্রম ভারিবারে সেবন করিবে। ইহাছারা প্রভিন ও অন্যান্য গ্রম আরোগ্য

হই আনা পরিমিত ওজনে কার্চের অভার এক ফাঁলা জলের সহিত রিশিত করত সেবৰ করিলে স্বিপ্লায় ও বিরাধ উভয়বিধ স্বর্ট বিলাশ প্রাপ্ত হয়।

ক্ষকুদের হকের পরের রগ ছারা বক্ষ গ্রহণ করিলে চাতুর্বক স্বর মিসুরিত হয়।

গোদভি হরিডাল, হৈলুল, অনৃত, শিশাকীবীক্স, এই সমন্ত ক্রমা সব-পরিয়াণে টেহণ পূর্মক ক্রপে মর্কন করিয়া সর্বপ পরিমিত বড়ী গ্রন্থত করিছে। এই বটিকা দেবন করিলে ন্যমুস্ত জীবন্ধ উপশ্যিত হবিয়া থাকে। কক্ষুরে এই ঔষধ দেবন করাইরা ছুই দক্ত পরে বাতানা মিলাইয়া থাক্রাইডে হর। কক্ষুরে আনার রুল, শিক্ত খুরে পানের রুল এবং অতিকশ্বরে চিনির রুল ইয়ার অনুপান।

পদতার রস কেহিবোগে উচ্চ করিয়া ভাষার সহিত আদার রস নিবিত্ত করত কিকিং দবণ সহবোগে সেবন করিলে গৈতিক তার দুরীভূত আঃ।

রক্তকনন বেগার শিক্ত, গুলকা ওঁঠা নিমুলের শিকভের হাল ও থমিরা এই সকল এবা সমভাগে গুহুণ পূর্বক উহার আট গুণ কলে সিম্ব করিরা অর্কাসের অবশিক্ত মাকিতে নামাইরা লবণ ও তিক অনুপান যোগে লেবৰ করাইলে রসহার পদায়িত হয়। া শাসকের শিক্ত আটগুণ জলে মিজ করিয়া তাহার চতুর্থাংশ পরিমাণ অবশিষ্ট থাকিতে মাঘাইয়া সংগ ও তৈল অমুপান বোনো সেবন করিলে ক্ষিয়ারর প্রায়িত হয়।

মিনা, মুখা, বিক্ষা, গুসঞ্চ, বিমপাতা ও প্রতা এই স্কর তার সমপরিমানে এমন পূর্বক আটগুল জনে সিম করিয়া অর্থ পোরা অবশিষ্ট ব্যক্তিতে নামাইয়া চিনির সমিত মিজিত করত সেবন করিলে রুনমূর পূরী-কুত হইবা থাকে।

খেত জনার শিক্ত, খেতকবরীর শিক্ত ও খেত অপরাজিতার শিক্ত এই অবাত্তর প্রত্যেকে একতোলা পরিষাণ লইরাও গণা গোলমরিচ ও ভিক্তিং গুড়ের সহিত মর্থন করিরা ভাছা এক সপ্তাহ বেবন করিলে প্রা-তম স্থ্য প্রশ্বিত হইয়া থাকে।

এপাইচ ১ টা, দৰক সাডটা, জীয়া অৰ্দ্ধডোকা, ইন্তৰ্থ একডোকা, লু কৰা অৰ্দ্ধডোকা, গোপমরিচ অৰ্দ্ধ ডোকা, কটকী অৰ্দ্ধ ডোকা ও চিয়তা অৰ্দ্ধ ডোকা এই সকল এবা একএ করিয়া মৰ্দ্দন পূৰ্বক বঁটা কয়ত এক মধ্যাহ মেৰন করিলে ধাতুছ কয় দুয়ীভূত হয়।

আকুলা জনপ্রের শিক্ষের ছাল বার্টিরা রবিবারে দেবক করিলে পাঁলাজুর আরোগ্য হইয়া বাকে।

মন্ত্ৰের ফাঠ ও বেগায় শিক্ত করে বছন করিলে পালাকুর দ্রীভূত হয়।

পাণের গোড়ার শিক্ত পানিবারে, জাগাইরা রবিবারে নিরাম করত ভেমাখা পথে রোগীকে দুইরা গিরা পোনহত খারা হলের ছই সুম অক-ত্রিত করত রোগীর খাতে বা গকরেশে বাহিলে তিম্বিনের মধ্যে পানান্তর পলারিত হয় ৷

বাল গাঁচের নীচের আপাদ্যুদ ছবরতিঃ বরিতান ছই রতিঃ স্থারী একটা, পাম পাঁচটা, এই বর মধ্য চূপের সহিত মর্দন করত সেবন করিলে পালাক্সর দুরীভূত হইরা থাকে।

আকুলো নাটার শিক্ত তিনটা গোলবারিছের সহিত বাটারা ঘটরনমূল বড়ী প্রস্তুত করিবে। গরে সেই বটকা বালিমুখে স্থানের সহিত সেবদ করিবে প্রস্তুত্ব শাস্তুত কুর বিদাশ প্রাধান্তর। পর্করা দৰি ও ধি এই তিন জবা সক্ষতাগে সইরী বুর আর্কিবার সালো সেবন করিলে ভা হিক কর ও পালাত্তর দুরীভূত খগ ।

একভাগ পে কোবিব, হুইভাগ ভূঁতে হরমূলী, এই উভর দ্রবা উচ্চের পাতার রমের সহিত মার্চন করিবে। পারে মায়কদার সমৃশ বর্জী প্রস্তাকরিতে হইবে। যদি বাতিক ভূরে অর্থবা মেমাগ্রুরে কলা উপদ্বিত হর, কিয়া র্যন্ত ব্যক্তির নাড়ী নরম হয়, তাহা হইলে তাহাকে ইহার একটি বাঁ ভূইট্য বড়ী কিঞ্চিন চিনির শ্রাপ দিয়া বাটীয়া সেবন করাইবে।

গারদ, গছক, বিহুলার, হরীজুকী, বহুড়া, আমলকী, উঠি, শিপুলমরিচ, হরিতান, এই সমস্ত এবা সম্ভাগে নইনা এই সমস্ত জবোর সমান
গছক ভাছার সহিত মিজিভ করিবে। মমস্ত বস্তু চুন করিরা ভালভার রবে
ছুই দিন মর্কন করিবে। অনতব মরিচপ্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিরা ছারাম
শুছ করিতে হুইবে। ধখন শুর হুইবে, তখন চিনির সহিত উহা সেবন
করাইবে, আয়াল্য বা ভেদ হুইলে মনু সহযোগে দেবল করাইতে হয়।

তটি, সৈত্বৰ, পিশ্পনী ও গোলগরিত এই সকল এবা সমস্তাণে চূর্ণ করত আলার রলের সহিত আকঠ বদন মধ্যে বারণ করিবে, তাহা হইলে পুনং পুনঃ কক নির্বত হইতে থাকিবে, ইহাবারা স্বর ও তৎসহ হদর পার্থ গলা প্রভৃতি স্থানের বেদনা দুরীভূত হর এবং বসা সাহি নির্গত হইয়া দেহ লক্ষু বোধ হইলা থাকে।

বেণার শিকড়, আঘলা, রক্তচন্দন, আক্রাফি, শুনিকুল, বালা, শ্রীতকী, মুখা, শিশালী, চিতামুশ, ও বিভুল এই সকল এব্য সম-ভাগে গ্রহণ করত ঐ সবত জব্যের সমান লেছিভন্ম উমাতে মিশাইমা জলে বর্তন করত চারিরতি শরিষাণ বড়ী করিবে। ধনিয়াবাটার জনের শৃহিত ঐ বঁটা সেবন করিলে শিক্তব্য বিনাশ পার।

বেণাযুদ্য, পান্তবাষ্ঠ, তাঁঠ, চিরতা, বলাতুরুর, হাড়জোড়া, গাক্ত শিপদী, দেবলাক, শাঁচী, নীনবিগ্টী, ইপ্রদান, আনুনাদি, মঞ্জিনি, শ্রামানতা, নজিবার হাল, কেতপাপড়া, ধনিসা, বালা, মুখা, কন্টবারি, প্রমানতা, মুড়, অনন্তযুদ্য, রুশমুদ্য, কট্নী, ও গুলক এই সকল ক্রয় সমতাগো লইয়া মোট ছই তোলা করিবোঃ পারে বলিশ ভোলা কলে নিক্তি করিয়া আইতোলা অবশিক্ত থাকিতে নালাইয়া অন্ধতোলা মন্তব্যোগে নেশন করিনে প্রকাহিক প্রস্ক, ব্যাহিক স্বন্ধ, কানস্কর, শানুক্ বুরি, বিষ্ণযুদ্ধ, সভত শ্বন্ধ, সভত শ্বন্ধ, প্রভৃতি বিষাশ পাইন। শাহনী

ক তোলা পটোলের পাতা ও এক ভোলা ববের তওুল একজ করিল চারি পল জলে দির করিবে। এক পল অবশিষ্ট থাকিতে নামা-ইবে। চরিল রতি মধু এলেশ দিরা এই ঔবণ লেবন করিলে পিতম্ব প্রশমিত হব।

ইই তোলা কেতপাপড়া চারিপন জলে দিছ করিয়া এক পদ আবশিট থাকিতে নামাইবে। পরে চারি রাজি মধু ওাকেশ নিরা লেখন করিকে শিকত্তর দ্রীভূত হয়।

ক্ষেত্ৰণাপড়া, রক্তচন্দন, বালা ও শুঠী এই সকল বস্তু প্রত্যেতি চারিশ রতি প্রমাণ লইরা একত করত চারি পল কলে সিদ্ধ করিছে। এক পল অবশিষ্ট থাকিতে নামাইরা মধু প্রক্রেশ দিয়া সেবম করিলে পৈত্রিক জুর বিবাশ পার।

হুই তোলা ধনিরার চাউন চারিপাল কলে সিম্ম করিরা এক পাল শেব থাকিতে নামাইখে। রাত্তিকালে নিম্ম করিরা রাখিতে হর। পারে প্রভাতে চলিশ রতি শর্করা মিজিত করত নেবন করিলে পিরস্কার ও তক্ষনিত অন্তর্দাহ দুরীভূত হয়।

মুখা, রজ্বন্দন, কেওণাগড়া, কটুকী, বেগার শিকড়, পটোকের পাতা, বাদা এই সকল প্রবা ,এত্যেকে ২৩ রতি প্রমাণ প্রথণ করত অকজ করিয়া চারি পদ জনে সিম্ব করিবে। এক পদ অবশিক থাকিতে নামা-ইবে। ইয়া দ্যাতিস হইলে চারিশ রতি চিনি বিপ্রিত করিয়া সেবন করিতে হয়। ইয়া ঘারা পিতস্বর বিনাশ পার।

ভালিদের ছাল। লোধুকাট ও ভূষি কুমাতের মূল এই সকল ক্রের্ছ চূর্ণ প্রভোকে চারাশ রাউ এবং চারিশ রাউ শিপালীচূর্ণ গ্রহণ করত একত করিয়া মধু সহ লেহন করিবে আর্থান চার্ডিবেশ ইছা ধারা পৈতিক প্রব্রে উপকার দর্শে এবং হিকা ও প্রীহা প্রশাসিত হর ি

জীরা; ভাঁচ মরিচ, শিশাদী, শোধিত গান্তক ও গোধিত পার্ত এই সকল এবা সম্ভাবে লইয়া আদার রসের সহিত মর্থন করত হুই রখি পরিষাণ বড়ী প্রকৃত করিবে। পানের রসের সহিত এই বড়ী সেকর করিলে বাডাল্য বিনাল প্রার্ভ হয়। মুখা, কটকী, কিস্মিশ্, কেতপাপড়া ও নিষি এই সকল জনা সমভাগে অংশ করত মোট হুই তোলা করিবে। পরে অর্দ্ধ দের ভালে নিষ করিলা অর্দ্ধ শোরা অংশিট বাকিতে নামাইবে। কর আক্রিবার অত্যে অর্দ্ধ হটাক প্রহাণে প্রতি ঘণ্টা অন্তর সেবম করিবে বুর প্রশাসিত হয়।

হুই ভোদা শক্তিনপু ও ছুই ভোদা ছুঁদি কুল একর করিয়া জ্বাসের জলে সিত্ত করিবে। অর্জেক শুদ্ধ হুইলে উত্তোপন করত কিঞ্চিৎ শর্করঃ ফিশ্রিত করিয়া জ্বর্জ ছুটাক পরিমাণে শ্রুতি তিন ঘণ্টা জন্তর সেধন করিকে অর দুরীভূত হয়।

পার্দ একভাগ, বাস্ত্রক একভাগ, তাবু, একভাগ, হরিতাল একভাগ বিষ একভাগ, ত্রিফলা একভাগ, ত্রিকটু একভাগ এবং এই সমস্ত হোব একত হইলে শত হর, তত পরিমালে জরপাগবীজ, সমস্ত এবা বিজিত করিবা হই দিন অনবরত ভূলরাজের রুগে মর্কন করিবে। অনতর ইয়ার এক রুতি প্রমাণ সেবন করিলে বিরেচন হইলা দেহ বিভন্ত হয়। বিস্তেচ-লাস্তে মৃত বিজিত সম্প্রমাণসাদি সেবন করিছে পারে। যাদিপাতিক ভূরেক এই ঔবধ প্রয়োগ করা যার।

পারদ একভাগ, গদ্ধক পারদের বিশুণ, হিন্দু পারদের ভিন্তণ এবং
দ্ধিনীক পারদের চতুওঁ ল এই সকল সাম্মী একল মিলিত করিয়া দ্ধীত্র
কাবে পেবণ করিবে। উত্তবরূপে পেবিত ছইলে ভিন রভি পরিবাণ বদী
অন্তত করিবে, রোগীর অবস্থা ও বলাবল বিবেচনা করিয়া অনুপান দিতে
বন্ধ। ব্যবহার এই ঔষধ দেবনীয়।

গোমুর বারা সংশোধিত বিধ একডাগ, বরিচ একডাগ, পিশালী একডাগ, গান্ধক একডাগ, গোছাগা একডাগ, এবং জহীরের রমে শোষিত ছিলুল ছুইডাগ এই সকল প্রবা একতা করিছা খলে উত্তযরপে পেরণ পূর্মক সুগের ম্যার বাঁচলা প্রস্তুত করিছে। এই ঔবধ দালাং শিথের ছুলা। বে প্রায় বাঁচলা প্রস্তুত করিছে। এই ঔবধ দালাং শিরের ছুলা। বে প্রায় বুছলা প্রস্তুত শারেশ। এই ঔবধ দারা ভাষাত পারালভ হর। প্রভাব এই ঔবধের গুণে বৈশ্ব দালায় করিছে পারেশ। এই ঔবধ দার্ব সহিত পোরেশ। এই ঔবধ দার্ব সহিত পোরেশ। এই ঔবধ দার্ব সহিত পোরেশ। এই ঔবধ দার্ব সহিত গোরেশ করিলো সকল প্রকার ক্রম শান্তি পারালার রামের সহিত সেবন করিলো গান্তিক স্বার বিশ্বত হয়, আলার রামের সহিত সেবন করিলে জীবণ সারিপাত্তিক স্বার পালার হয় এবং জ্বীরের রমের সহিত সেবন করিলে জীবণ সারিপাত্তিক স্বার পালার হয় এবং

বাদিন ক্ষালীরার সাহিত 'লেম্ম করিকে অভীর্ণ ক্র বিষ্ট হবঁর।
থাকে। এই ঔষধ সেম্ম ধারা নবজুর এক প্রছরের নথো অশান্ত ছরমধ্যবিধ ক্র নিরান্তির নথো এবং সামিশাতিক ক্র সাত দিনের মধ্যে
বিষ্ট্রিত হয়। চারিটা বটা এই ঔষ্ণের পূর্ণনারা জানিবে। মুবা ব্যক্তির
শক্ষে পূর্ণথানার ঔষধ সেবনই ব্যবছের। হছা বাদক, প্রী ও ফীশশরীর
বাক্তি অর্থ্যান্তার এবং অত্যন্ত শিশু এবং অত্যন্ত শীগু বাক্তি সিকি
খানার দেবন করিবে।

গদ্ধক, পারা, দোহাগার বৈ, থিয় ও সরীত এই সকল করা সকল ভাগে পইয়া বুজুরপত্তৈর রসে 'মর্জন পূর্বক রোজে গুড় করত ছুই বুতি প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। স্থুর বিরাধে এই ঔবধ সেবন করিছে হয়। আগার রস ইয়ার অমুপান।

চারি মাঝা পারক, চারি মাঝা বিষ, ছই মাঝা জারকল, সাভ মাঝা পিপ্সনীচূর্ণ এই সকল জব্য একতো মর্কন করত ছই রতি পরিমাণ বড়ী গুলুভ করিবে। আদার রস, পানের রস ও খন্যসের পাতার রস ইহার জন্মুপান। ইহা সেখনে সারিপাতিক জ্ব বিদ্রিত হয়।

শুর্ছী। পিশেলী, ছুরাল্ডা, ব্রীচ, ফুড়, কাঁক্ডাশ্লী, কুফ্জীরক। কট্কুল, এই সকল ত্রব্য সমভাগে চূর্ব করত মধুর সহিত লেহন করিলে লারিপাতিক শ্বন, হিছা, খাল ও কঠরোধ অভৃতি বিনাশ পার।

ভিল তৈল সহযোগে দ্ব লভন প্রতিদিন দেবন করিলে বাভবার্ণি ও বিবয় কর বিনাপ পার।

ভাঁৱ, হরীভকী, পদ্মকার্ত, গুলঞ্চ, দুরালজা, রক্তচন্দ্র, ইক্রয়র, কটকী, বালা, ধনিয়া সোঁদাল আটা, আক্নাদি ও মুধা এই সকল ক্রয় সমস্তাকে নিজিত করত যোট ছই ভোলা করিছে। দক্রিশ ভোলা জলে নিজ করিয়া আট ভোলা অংশি উ খাফিতে নামাইতে। জর্ম ভোলা মরীচচুর্ব প্রকেশ দিরা এই বিষধ সেবন করিতে হয়। ইহা ছারা জুর, তৃকা, দাহ, খাস, ভার, বিনাশ পার।

নিষ্টের কচি পাতা অথবা জুলের কচি পাতা বাটরা কাঁজির সহিত দম্ম করত সেই কেণা গাতে ৭ৰ্জন করিলে অ্ররোগীর দাহ নিবারণ হয়। সন্মিনার বীল, গৈছব, ভুজ, ও ব্যেত স্থিদা এই সকল এবা সমগ্রিয়াবে ালা করক ছাগীহুষেত্র কহিও ঘর্ণন করিবে। পরে সারিপাতিক **ছুরে:** ইহার নক্ষ এহণ করিলে তন্তা বিদাশ পায়।

কুকার্য পূজু টের ডিমের অভায়রত্ব তরল পদার্থ ছার। অঞ্জন দিলে,নক্ষ তেনুগ করিশে অবংশ তাহা পান করিলে নাহিপাতিক স্বর দুরীত্ত হর।

যে স্থার দিবান্ডাগে থাকে না, কিন্তু রাত্তিকালে হয়, সেই স্থার বিনাশার্থ কর্মে কাক্যাধীয় শিক্ত বন্ধুম করিবে।

ি ত্রিক্ষা, পটোবপতে, বাসকের শিক্ত, গুলক চিতার শিক্ত, কটকী প্র বচ এই সকল ক্রবা প্রতাকে আঠার রতি শরিষাণে দইয়া একত্র করত চল্লিশ্ পদ ক্রেল সিদ্ধ করিবে। এক পদ অবশিক বাজিতে বামাইছা আই মারা মধু প্রকেশ দিয়া দেশব করিলে শক্তুর বিনাশ পার।

শুঠি মন্ত্ৰীচ যমানী, দুৰ্ধামূল, কটনী, বচ, চিতামূল, খেডসৰ্য প ক নামনহাদীন শিক্ত এই সকল জনা প্ৰতোকে উনিশ ন্নতি পান্নমাণে কইনা চান্ত্ৰি পান জনে সিদ্ধ করিবে। এক পাল অবশিকী থাকিতে নামাইনা আই-মানা মধু প্ৰক্ৰেণ দিয়া সেবৰ করিলে ককৰ্ত্ব বিনাশ পার।

রহতী, দেবলাক, শিপানী, মিষছাল, কুড়, গন্ধগন্ধী, গুলঞ্চ, ওঁচ ও ঠিন্তা এই সকল জবা প্রত্যেক আঠার রাতি পরিমাণে গ্রহণ করড চারি প্রত্য জ্বলে সিদ্ধ করিবা এক পশ অবশিষ্ট থাকিতে মামাইবে। বিংশ্তি রাতি মধু প্রক্রেশ দিয়া সেবন করিলে কক্ষুর বিনাল পার।

কাকড়াশ্লী পিশোলী, কটখল ও কুড় এই সকল ত্রব্য সমভাগো আহণ করত চূর্ব করিয়া চারি মাবা মধুর সহিত সেবন করিলে কল্বর দুয়ীভূত হয় :

ন্ত্ৰ ভোলা পিপালী চাক্তিপৰ জনে যিত ক্তিয়া এক পৰ অৰশিক থাকিতে ৰামাইৰে। বিশ্বতি মধু অথবা চাত্তি মাবা পিপোলীচূৰ্ব প্ৰক্ৰেপ দিলা উহা দেবৰ ক্তিনে কক্ষ্ম দুৱীভূত হয় :

ামকের পাতা ও তুল পেবণ করত হই তোলারন প্রস্তুত করিছে। কিন্তু জন নিমা পেবণ করিবে না। চলিশ রতি মধুর সহিত এ রম নেতুর করিনে পিতামেম শ্বর বিনাশ পার।

গ্রসঞ্চ বাধনহাটী। চিরতা কটকী কটকারি, ইক্রদন প্রাশস্তা। বুধা, শুঁতি ও পটোলপাতা এই সকল জবা প্রতোকে চলিশ রতি পারবাথে লাইবা চারি পূল লগে শিক্ষ করতঃ এক পুল অনশিক্ট থাকিচে নামাইলে। ্টিশ রভি মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে পিত্রেম স্বরু, শিশাসা, শৃষ্ট অকচিন বেদশা, হর্মি গুড়ভি দুরীভুত হয়।

এক ভোলা ধনিয়ার চাউপ ও এক তোলা পটোলপাতা একতে চারি াক জলে সিঁছ করিয়া এক পল অবশিশু থাকিতে নামাইবে। উত্থাতে বহু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে শিন্তিগ্রেশ্বন্ত বিনাশ পায়।

ইক্রথৰ মুখা পটোলপাতা, গুলঞ, গুঁঠ, নিমহাল, ৰটকী ও রক্ত লান এই সকল জবা অভোকে ভূড়ি রতি লইয়া একতা করত চারি পল লানে সিম্ভ করিবে। এক পল অবশিক্ত থাকিতে নামাইয়া এক ব্রতি মধু ভালিশ রতি পিপানীচূর্ণ প্রকেপ দিয়া দেবন করিলে পিত্রেশ স্থার ও ক্ষেনিত ভূফা, অকচি প্রভৃতি বিনাশ পাইয়া থাকে।

ভূঁটা রক্তচন্দ্র, বালা, ধনিয়া, মালুক কলা কটকী, শুলুকার্ক, কলঞ্চ ছরালভাচ ইজ্রবন আক্ষালি ও হরীতকী এই সকল ছব্য প্রত্যেকে তের রতি পরিবাণে নেইরা চারি পাল কলে সিল করিবে। এক পাল অবলিক বাকিতে মামাইরা মধু বা পিপুলের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিবে শিক্তরেম্বর বিনাশ পার।

ছই যাব। পিপ্পনীচূর্ব, ডিন ঘাহা বিশুল, ছই মাবা শ্রীবিষ এই কয় এবা একত্র করত বেগুৰের রসে মর্ফন করিরা মট্টর প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। আলার স্থানের সহিত ঐ বটা সেবন করিলে প্রিক্তেম্মন্ত্র পালাহন করে।

গদ্ধক, গোহাগা। পারণ, হরিতাল, এই চারি এব্য সক্তাণে গ্রহণ করিলা হুই দিন ঘাবং রোহিত মংতের পিছের সহিত মর্ক্র করিবে। উভ্যরপে দর্দিত হুইলে ডিমগুঞা পরিমাণে বটিকা গ্রন্থত করিবে। ইহার একটা বড়া দেবন করিলেই কিল্পকালমধ্যে ঘান হুইলা যার। এই উঘ্য দেবন ঘারা হুর শান্তির পর বার্ডাকী ও ঘোলের সহিত্য আহ পথা দিবে।

পার্দ, তাসু, সন্থক, পিশ্পদী, জরপাদবীক, কটকী, হরীতকী: তেউড়ী, গাব এই নরটা পদার্থ সমান অংশে গ্রহণ করিয়া একত্রে সীজের মুক্তের সহিত মর্কন করিবে। এই বড়ী বনুর সহিত সেবদ করিছে জাতি সম্বর নবস্থর প্রশাস্ত হয়।

বিষ একভাগা, হিলুল ভাহার হিতপ, লরপান্দীল বিবের তিনত্ত

সোহাগা বিষের চারিগুণ এই স্বল এব্য একত্র করিলেই ঔষধ প্রস্তুত ইইণ। রোগ্যের অবস্থা দেখিরা অস্থানের ব্যবস্থাপূর্বক ভাষার সহিত এই ঔষধ সেবন করিলে সন্তোধ্য বিনাশ পার।

জয়পাদবীজ, গরুক, বিষ, পারদ এই চারি তাব্য সমভাগে দইরা য়ু সুমারীর রসের সহিত পোষণ করিবে। উভামরণে পৌষিত হইলেই তল্পজ্যারিরস মাধক ঔষধ হয়। ইহা সেবনের পারিমাণ চুই রতি। তিনি ও জল ইহার অন্থান। ইহা সেবন করিলে বিরেচন হইরা নবজুরু নিবারিত হয়। গেলিন স্কর ইইরাছে, সেই দিন হইতে সপলা করিয়া পঞ্চ দিবলৈ, ষ্ঠ দিবলৈ অথবা সভ্য দিবলৈ এই ঔষধ সেবন করিবে। এই ঔষধ সেবন করিরা পাটোল ও মুগের বুব পথা করিতে হয়।

পারদ, গাছক, মনংখিলা, লেখি, ত্রিকটু, তাদু, ছিছুল, লীস এই জনত তাব্য সমান অংশে লইরা উত্তমত্রপ পেষণ পূর্বক বড়ী করিবে। এই উধ্ধ গেষৰ করিলে এক দিনের মধ্যেই ববছর প্রায়িত হয়।

ৰুপান্ধর চিকিৎসা-—বে গৃছে কুপান্ধরী রোগী থাকে, সেই গৃছের মধ্যে মার্ক্সারের বিষ্ঠার খুপা প্রদান করিলে কম্প সূরীভূত হয়।

মরীচ, কাইকেন, সেঁকোবিষ, এই তিন ক্রব্য সমপরিয়াথে কইছা। জামের রসের সহিত মর্মন করত আর্ক রতি প্রমাণ বড়ী প্রাপ্তত করিবে। শানের রস্বোগো ইখা সেখন করিলে কম্পার দুরীভূত হর।

বেণার মূল, ধনিকা, তঁঠী, রক্তচদন, ক্রদকের জাঁটা, এই কর হেবা সমজাণে পইরা মোট হই তোলা করিবে। পরে উহা শিলাতে কুটিয়া আহুলের জলে সিম্ব করিবে। আইপোরা অবশিক্ষ থাকিতে উজ্ঞোনন করিতে হয়। শীতল হইলে বন্ধু প্রকেশ দিরা দেবন করিলে কলামুরা ত তংলহ শিরোবেশনা বিনাল পাইয়া থাকে।

নিরামধার—একভাগ পারন, একভাগ নোহাগা। একভাগ মন্ত্রিত ভ চারিভাগ বিব এই সকল প্রব্য একত্র করিরা চড়ব্রিংলতি প্রহর পর্যন্ত বার্ষার বংশ্যাশিকে ভাবনা দিবে। ইয়ার তিন রতি পরিমাণ দ্বী আলার রলের সহিত সেবন করিতে হর। এই উব্ধ হারা মধ্যার প্রায়িত হয়। শিভাবিকা হইলে মন্তকে জলসেক করিতে পারে এবং দেহ সন্তাশের প্রায়লা থাকিলে তক্র পথা বেওনা যার।

অবস্তঃ একডার পার্দ ও ছুই ছোন গ্রুক ন্ইয়া ভূপরাজের রনে

নি করিছে হইবে। পরে গছক ও পার্ম উভন্ন বে পরিমাণে এইণ লা ইইবাছে তাহার এক চতুর্ঘাংশ পরিমাণ হত ভামু ও দেখিতস্ম হার মহিত একতে করিলা পাক করিতে হইবে। পাকের সমরে পোই লাই বারা চালনা করিবে। জনতার গোময়ের উপার একথানি কলাপাত লাইরা সেই পাতার উপারে ঐ উব্ধ ঢালিরা দিবে। তথ্য উহা পর্ণদীর লাইর হইবে। তৎপরে উহা খলের মধ্যে কেলিরা চুর্ণ করিবে। উল্লম লা চুনী কত হইদে এক দিন পর্যান্ত নিসিম্পার রুসে ভাবনা দিবে। ক্রনতার জনতা, তিক্সা, ইউট্নারী, বাসক, বামনহাদী, তিকটু, ভূলরাজ, চিতার লিকড়, ও মুক্তিরী ইহাদিগের রুসে এক সম্ভাহ ভাবনা দিরা অনুনিত জন্ধারে জ্বেদ প্রদান করিয়া লইদেই ঔষধ প্রস্তুত হইল। হরীত্রী, তাঁহ ও প্রভূচীর কাথ প্রমুপানে এই ঔষ্ণের চারি রতি পরি-াণ সেব্য করিতে হয়। ইহা ধারা প্রেম্পুর বিন্ত হয়।

ছাশরমানি নামক রকের পাতার রদ করিয়া ওজ্বরা নক্ত **প্রছণ** স্থানিলে ঐকাহিক হুর বিনাশ পার।

বাসকের শিকড়ের রস, আগা, শুঠী, শিপানী, দর্ ও মরীচ ক্রি সকল জবা সমস্তাগে গ্রহণ করত মোট হয় তোলা করিবে। ইয়া প্রস্তুত্ত সকল করিলে ডিম দিনের মধ্যে ঐকাহিক স্বর প্রশাসিত হয়।

কাকড়াপজী, পিপ্পদী ও আতইম দূর্ব করত মরু সহযোগে মর্কন পূর্বাক তিমবার, বা চারিবার জিব্বাতে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ দিয়া নেখন করিলে বার ও তংস্থাকাশ ও বিধি বিবাশ পার।

যতিষয়, স্থামানতা, আকা, মেনিকন, রক্তচন্দন, নীলোৎপন, গান্তারী-নন, পদ্মকাঠ, নোহছাল, ডিকনা, পদ্মবীজ, নাগেছর, বেণাসুল এই সক্ষ ব্যা প্রত্যেকে এক দায়া পরিমাণে কইরা চূর্ব করিবে। পরে তণ্ডুনোদক বিষি মাধার সহিত উহা উক্ত করিয়া মেধন করত সেবনান্তে মনু, ধৈ ও চিনি ভাষণ করিবে। ইহা দারা বাতগিত স্বরু ও তৎবহ পিপানা, দাহ, ক্রু, বিদি, ভাদি প্রভৃতি বিনাশ পার।

শুঁচ, ওলঞ্চ, চিরতা, মুধা, শালপাণী চাহুলিরা, কটকরি থোকুর এই সক্ষ রয়ে প্রতোকে অ টাইস রতি পরিমাণে দইরা চারি পদ জনে নিম্ম ক্ষত এক পদ অবশিষ্ট থানিতে নামাইবে। পরে ৪০ রতি মধ বিলোঁ দিয়া দেখি করিলে বাড়গৈতিক বুর বিভাগেক। দাই অকচি প্রভৃতি ধংস হইয়া খাকে।

নারিপাতিক হরে.—সামিপাতিক হুরে উপবাস, বাসুকালেন, বত নিতীবন, অবদেহ ও অঞ্জন এই হুন প্রকার কর্মের অন্তর্চান করিবে। ইহার কারণ এই যে, এই রোগে মেলা প্রধান, স্থতরাং অপ্রে কর বিনাশ করিয়া পরে শিত ও বাতিকের চিকিৎসা করা বিধেয়। টারা নেবুর রস, জাদার রস, বিটপবর্গ, সৈত্বর লবণ, এইসকল ত্রবা, উল্লে ক্লে পেবণ করিয়া শক্ত দিতে হয়, তাহা হইদেই শির্ভিড হুল বহিগতি ইরা শরীর সত্ব ও বেদনা পুনা হয়।

তটি পিশ্পনী, মরীচ, কটকস, কুড়, হুরালভা, কাকড়াশুলী ক্রিক্সীরক, এই সকল লব্য সমপরিষাণে দইরা চূর্ণ করত মধু বা আঁদার রস যোগে শেহব করিলে নারিপাতিক শুর এবং ড্ংসহ খাস, কুস্কু ক্রিক্তি ইনাল পার আরু শরীর উক্ত হর।

বচ, মরীচ, মম:শিলা, শিরীবনীক্ষ, লগুন, সৈল্পন, শিশপদী এই স্কল। বা সমকাশে নইরা গোষ্ডে শেবণ পূর্ব ক অঞ্চন দিলে সারিপ,তিক স্কুট্ট শুস্বিত হর।

শুৰ পারদ, মৃত তাদু, মৃত দীদ, মনাশিদা, ছুঁতে এই পঞ দ্রা প্রত্যেকে এক এক আগ পইয়া গোবক চাকুদিরার মনে একদিন মুদ্ধন করিবে। উত্তদর্গ মর্কিত হইলে চনক প্রমাণ বড়ী করিতে ইইবেশ এই এবংকে কুলবশু করে। এই বড়ী—লগে বদিরা বক্ত প্রহণ করিবে হত্তর নারিশাতিক জুর বিদ্রিত হয়।

পারদ ভক্ষ, অঅ. রোপা, মৃত পেছি, অর্ণাকিক, চিডা, সোঁহাগা ত বিকটু এই সমস্ত ক্রবা সমস্তাগে কইনা একত সিলিড করিছে। অমস্তর আক্রাদি, নিমিন্দা, যাউহিছুও বিদুস্দের কাথে একদিন মার্কিড করিলা আমধ্যে অবক্ষা করড ভ্রম্বলো প্রথমিক করিডে হইবে। এক বালা নির্মাণে এই উহণ দলমূলের কার্ণের সহিত প্ররোগ করিডে হর্ম এই উহণ ছারা অঞ্চন বা নত্য গ্রহণ করিলে গারিপাতিক প্রর পদানুদ্ধ ক্রিছে।

ইহাকে জরম্ভন্তন কহে।

রনদিশ্ব, ডাশু- গেহি, চিতা, মোহাগা বর্ণর ও বিকটু এই সমস্ত ব্যুক্তমান অংশেগ্রহণ করিয়া আকলের হয়ে এক দিব তেওঁ চিতিড কাৰে। ইবার বাদ- নত ভৈরব। ইবা আকলের ফীরের দ্বিত্ত নিজিত করিলা দিনিলা নত প্রথণ করিলে সালিপাতিক ত্র দিন্ত ধর। অকলাট ত গছক একভাগ পারদ কইলা রশুনের রুসে এক প্রহর মর্দান করিবে। উত্তদরপে মর্দ্দিত হইলে তাহা রশুনের রুসের সহিত দিখিত করিরা নতা প্রহণ করিবে। ইবা হারা ত্রেরোগাভিত্ত অচেতদ ব্যক্তিও চৈতন্য প্রাপ্ত হল। ইবাকে মঞ্চন্ত্র বৃহত্তি বিন্তি হয়।

ী পারদ একজাগ, লেছি একজাগ, পিণ্ট্র একজাগ, গার্ক একজাগ,
এই সমুদার প্রবা একত্র করিয়া যত হইকে তাহার তিনগুণ জয়পালবীজ,
এই সমস্ত স্থান একত্র মিজিত করিয়া তাহার বিশুণ পরিমাণ জ্বীরের
স্থান উহার সহিত মিশাইরা মর্দ্দ করিবে, উত্তমরূপ মর্দিত হইলেই
সম্মাতেরক নামক ঔষধ প্রস্তুত হইল। এই ঔষধ বারা চল্পে অজন
করিবে সর্মাহিদ উপাত্রবহুক্ত সামিপাতিক শ্বর বিষ্কৃত হইল। থাতে।

कर्म करिकाती, प्रांत, कर्म त कर्ण जाम अदे शक जरा निय-कार्ग वर्षमा-निक्षित करत पश्चिम नियम कामकामात तरा प्रवीच कतिरक । जेक्समी प्रक्रित हरेरल वजी व्यक्त कतिरव । देशांक्क क्षम्म तम कर्म । बरे बड़ी प्रमिता करक प्रमुख कतिरल गर्काविय स्माय युंक क्षम अस्म कर्म । बरे बड़ी प्रमिता करक प्रमुख कतिरल गर्काविय स्माय युंक क्षत्र अमाद विवस्त हमा।

করিং। পরে কটুল তালমূলী, গুড়রা, কেণ্ডরতে, গোষাফল, জরন্ধী করিংন। পরে কটুল তালমূলী, গুড়রা, কেণ্ডরতে, গোষাফল, জরন্ধী পুরুক্তি এই সংগ্রহরের প্রত্যেকের পাতার রস আর্ছ তোলা লইনা ক্রেই রমের সহিত উক্ত কজ্জনী মর্চন করিবে। জনতার উহা ওছ করিয়া সর্বপের ন্যায় বদী করিতে হইবে। ইহার নাম জৈলোকাহ্নরে। এই উহ্ব মেবন করিলে সাহিপাতিক স্বাহ বিনাশ পার। বদি রোগীর শারীরে অতান্ত তাপ থাকে, তাহা হইবে এক রতি প্রবাণ বদী করিয়া প্রায়োগ করিবে এবং ঔষধ সেবনাত্তে বারিকেলোদক শাম করাইবে।

অন্ধ তোলা পারদ এবং অর্থ তোলা গশ্বক একর মিজিত করিয়া কজনী করিবে। ঐ কজনীর সহিত অর্থ তোলা অর্থমান্দিক মিশাইবে। অনস্তর শিবজনী, নিশিকা, মরীতকী, আমলকীবিদ, কাঁটালী এই প্রাক্তিরের প্রত্যেকের রস অর্থ ডোলা লইমা ঐ কজনীর মহিত বিশিক্ত করিব। মর্জন করিবে। উত্তযন্ত্রপ মর্জিত হুইন্দে মুর্লের স্বাপ্ত এক একটা বড়ী করিতে ছুইনে। ইছার নাম সক্ষ্মাতিকর । আলার রাসের সহিত এই ঔষধ সেবন করিতে ছব। এই ঔষ্ঠে সারিপান্তিক মুদ্র এবং আংশী ও স্থাতিকা রোগ বিন্দ্র ছব।

হিলুন, বিবং ক্রিকটু, বরিছ, সোহাসা, পিশুল ও জারতী এই করা করা ছুবা পরিবাবে কইনা চুর্গ করিবে। অবস্তর এই চুর্গ জারীরের রসের সহিত নিশাইবা উভসরপ মর্কন পূর্বাক এক গুরুা পরিয়াবে বলী প্রস্তুত করিবে। ইহাকে জানুক্ষভিরব বলে। এই বল্লী আ্লার রম অন্থপানে স্বেন করিতে হয়। ইহার ছুইনি ফিলা ভিন্তী বড়ী প্রয়োগ করিলেই সারিপাডিক শ্বর পলারন করে। এই উব্ধ লারা ক্রাইবিধ শ্বর, ক্তীসার, জীর্ণ শ্বর এবং আধ্বাত নিঃসক্ষেত্র বিময়ী

এক জোলা পারা ও তিম ভোলা গন্ধক এই উভয়ে কজলী এছত করিয়া দেই কজলী চিরতার শিকভের রলে আট দিন ভাবনা দিরা নিটেবার রোভিত ভক করিবে। অনতর ভাষাতে শোষিত ধিব দিশাইয়া বীনরার চিভার শিকভের রলে মাড়িবে। পরে মংক্রপিতে কির্থকন্দর্শ করত গুলাপরিয়াণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। আধার মন শহুপানে এই ওছা পেবন করাইলে সারিপাতিক তার বিশ্বিত হর। এই ঔবধ্ সেবন করাইলে সারিপাতিক তার বিশ্বিত হর। এই ঔবধ্

ি বিশ্ব, ত্রিকটুন গল্পক, লোহালা, সৃত তালু, গুজুরার বীজ ও হিলুক্ এই সমস্ত প্রবাদ সমস্তাপে লইনা জন্তবী পাতার রলে এক দিন মর্থন করিবে। উত্তর রূপে বর্ধিত ছইলে চপক পরিমাপে বড়ী পাত্রত করিবে। উত্তর রূপে বর্ধিত ছইলে চপক পরিমাপে বড়ী পাত্রত করিবে। ইয়ার নাম আনন্দ ভৈন্নবী। আকল মুনের কাম অফুপানে এই উত্তর দেবন করিতে হয়। তিকটুর সহিত গেবন করিবেও হয়য় লাইপাত্রিক প্রকুল্পীত্র হইয়া খাবে। ধনিরা, পিশ্বন, শাঁতি করিবা ও করিবা তালেন দিলারী চুর্প মিজিত করত তালা অফুপান করিবা আনলতেরবী বড়ী নেবন করিবেও তালাক করিবা আনলতেরবী বড়ী নেবন করিবেও বালাক করিবাত করিবা আনলতেরবী বড়ী কেবন করিবেও সাহিত্যালিত করিবা গালিক স্থানার করিবা গালিক স্থানার করিবা গালিক স্থানার তালাক করিবাত প্রকাশ করিবা গালিক। এই উব্ধের নেবন করিবেও সাহিত্যালিক স্থানী করিবা গালিক। এই উব্ধের নেবনাত্রে কটুকরৈ স্থান

বিন্ , ত চ ব লীয়ত সদভাগে লইছা । দাধির স্থিত ধর্দন ব্রিরাণ ভক্ষণ করিবে। তাহা হইলে শীঅই লালিগাতিক স্থান বিষ্ণুরিত হয়। এই ঔবধ সেবনাস্তে কাল জক্ষণ করিবে না। এই ঔবধ সেবনাস্তে যদি বহুগল্লের কার্য পান করা যার, যাহা ছইলে লাভ কিলের মধ্যে পাণার রোগ প্রদান্ত হয়। যে ব্যক্তি গাল্ড ছুটে আক্রান্ত ছুইরাছে, সে এই ঔবধ এক বিছপরিমাপে লইমা সোমরান্তির ভৈলের সহিত লেহৰ করিবে, তাহা ছইলে লে রোগ ছইতে যুক্ত হইতে পারে। দহির> মাত, শর্করা ও মর্ম লহিত, এই ঔবধ প্রেরাণ করিবে। মুক্তরুক্তু রোগ কিলুনিত হয়। মুক্তরুক্তু রোগে এই ঔবধ সেবম করিবা ওৎপত্ন ব্যক্তার, পর্করা ও মর্ম সহিত পান করিবে, উহা শীতল ছইলে ধ্যুর সহিত অধ্যা ওলায় হুছের সহিত পান করিবে। যাবসীর মেছ রোগে ক্রক্তার লাখ জন্পানে এই ব্রিকা প্রেরাণ করিবে।

ভাশু। গান্ধক, পারক, শ্বেত গুলা, মরীচ, হরীতকী, 'মংদ্যের পিরত জমপাস্থীল, এই সকল দ্রবা সমস্তাগে লইয়া বর্ষন করিকেই সমিপাড-ভৈরব নামক নমন্ত্রমালক ঔবধ প্রস্তাহর। চারি রতি প্রমাণ মেষদ করাই ইয়ার নিরব।

একভাগ পারদ্ধ এক ভাগ গান্ধক, ভান্ধভাই বিন এই তিব ক্রবা একত্র মিজিত করিরা তালমুলীর রলে তিন দিন মার্কন করিতে হইকে অমন্তর উবা কাচকুপীর মধ্যণত করিরা কথা করতা দেই কুপীলি মৃতিকালিও বার হারা লাভ বার বেউন করিবে। তুলমন্তর কুত্বীপাকে পুঁট প্রকাশ করিতে হইকে। পারে দাভিন্দ করিবে। তুলমন্তর কুত্বীপাকে পুঁট প্রকাশ করিতে হইকে। পারে দাভিন্দ করিবে। নামাইরা জীয়া, ফুল্ফনীরা, হিন্দ, নার্জিকাভার, নোহাগা, গুল্ডুল, পঞ্চনবন, ঘরকার, ন্যালী, মরিচ ও লিপুল এই করেক ক্রব্য স্থাকিরেশে গ্রহণ পূর্মক ভাগর কার্ম করিয়া সেই কার্মের সহিত্ত উবা একমিন বর্মন করিবে। প্রকাশে করিয়া সেইল কার্মের সাহিত্ত উবা একমিন ক্রমন করিবে। প্রকাশে প্রথম প্রস্তুত কানে বত পরিমাণ পার্ম গুলিভ হুইকে, স্বান্ধ করিয়ার সমর জীরা প্রকৃতি ক্রব্যক্ত তত পরিমাণ নাইকে। গ্রহী করিব পাঁচ রভি পরিমান নইরা পান্ধের রসাক্ষ্পাতে ক্রমন করিতে হয়। ইয়াকে প্রাণেশ্বর রসাক্ষ্যে। এই উব্ধ হারা সামিশাভিত্ত ব্যর্গ বিদান্ধ পার। উল্লেক্সিক ও এই উব্ধ প্রকাশ করিতে স্থারে। কিন্ত নবস্বারে এই উন্নধ দেবন করিয়া কিন্তিত উক্ত জল পান করিতে হল। শীতত্ত্বর, গাঁহস্বর, পূঁল, গুলা ও জিলোগ বিকারেও এই ঔষধ বাবহার হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবনাতে রোগীর গাঁতে চলন বেপান করাইতে পারে। এই ঔষধ দারা বিবিধ অভিসারও বিন্তি হয়।

পারক একভাগ, হিলুল একভাগ, এবং ক্রমণানবীক।
ভিনভাগ, এই সমুদার প্রবা একভিত করিরা দতীর কাথে বর্জন
করিবে। এই ঔষধ ভিন রতি পরিমাণে সেবন করাই বিধি, আনার
ক্রম ইহার অভূপান। ইহার নাম শীভভঞ্জীরস। এই ঔষধ সেবল
করিলে এক প্রহারের মধ্যে নবস্তুর বিনষ্ট হর্টরা বার। এই
উষধ সৈননের পর কিঞ্জিৎ শীভল জলপান করিবে। ইকু ও মুগের
কুম এই উব্ব সেবনের পর হিতকর প্রা। শর্করা, দ্যি মিলিভ অন্তর্ভ

শীরণ ও গান্ধক সমভাগে লইন। গুলুরার কলের রমের শহিত একদিন মর্কন করিবে। অনতর মন্ত্রীত চূর্ণ, শিশালী চূর্ণ ও ওঠীচূর্ণ এই ত্রিবিব চূর্ণ প্রত্যাকে পারদের সমাবাংশ গ্রহণ পূর্বক উক্ত উবধের প্রত্যিত ভাগের সহিত মিশ্রিত করিয়া লইকে। এই ঔবধের নকা গ্রহণ ফারিলে সামিপাতিক কর ফিদুরিত হয়। ইহাকে উন্মন্তর করে।

চারি ভাগ তামু, তিনভাগ জরপালবীজ, ছই ভাগ লোহাগা, ও একভাগ বিব এই সকল প্রবা একত্র করিরা ওচীর কারে হর্দন করিবে। ক্ষমন্তর্গ তহ হুইলেই গৃত সঞ্জীবন রস গুলুত হুইল। ছই যাবা পরি-মানে সেবন করাই এই ঔবংগর বিধি, ত্রিকটু, চিতা ও সৈম্বর ইহার অনুপান। এই ঔবং সেবন যার ছরের তাপ বিদ্রিত হয়। এই ঔবং শেবনের পর রোগীর গাত্রে কপুর যিশ্রিত চলন প্রদান করিবে, ঐ চল্ল কাংলাপাত্রে রাখিতে হয়। ইক্রুবন, হোল ও অতি উৎকৃত্ত লালিখানের অয় এই ঔবং সেবনের পর পর্যা। এই ঔবং হারা সত্ত-স্বর, বিষয়ন্তর, শীতপুর্যবন্ধর, দাহপুর্যক্ষর, সন্দায়ি ও বাত রোগ শ্রন্থ বিষয়ন্তর, শীতপুর্যবন্ধর, দাহপুর্যক্ষর, সন্দায়ি ও বাত রোগ শ্রন্থ তিত্তে উপকার দর্শে।

একভাগ পারদ, চুইভাগ গছক একর মিজিত করিয়া বলে স্কর্ম পুঁর্মেক কছেলী প্রস্তুত করিবে ৷ অন্যায় একভাগ পাল, এক ভাগ লেখি, একভাগ ভাশু, একভাগ বিদ্যুক্তভাগ হরিতান্যএকভাগ কড়ি, ওকভাগ বনালান্য, এক ভাগ হিন্দুন, একভাগ চিতা। একভাগ হাতিউল্লা, একভাগ আভিব, একভাগ ত্রিকটু ও একভাগ বাণিবিদ্যুক্ত এই ক্ষেত্রী হবা একতিত করিলা চূর্শ করতা ঐ কক্ষণীর সহিত একতিত করিবে। পদ্মে ভিনদিন অবহি আদার রসে মর্দন করিবা তৎপার ভিনদিন মিলিনার রসে এবং ভিনদিন করভীপত্রের রসের নাইত মর্দন করিবে। অনন্তর কাচকুশীর মধ্যে অবহুত্ব করিবা বানুকা বজে বিশ্বার পানি করিবে। পাক সমাও মুইলে আদার রসের সহিত কর্দন করিবা করিবে। পাক করিবে। পাক সমাও মুইলে আদার রসের সহিত কর্দন করিবা করিবা এই ভবধ ধারা সাহিপাত রোগ দুরীভূত হয় ইতাকেও মৃত্যুক্তীবন রস করে।

বিশুক তামু একভাগ, একভাগ মনীচ এবং একভাগ বিষ এই তিন এবং একঅ করির। চূর্ব করিবে। অনন্তর বিবলালনীরার রসে মর্দন পূর্মক পূটপাকে পাল করিতে হইবে। এই ঔষধকে সম্প বড়বানসরস কহে। এই ঔষধ বোগীর অবহা বিবেচনার ছই বা তিন বড়ি প্রদান করিতে পারে। তিকটুর সহিত এই ঔষধ সেবন করিলে তিলোবজনা বিকার নই হর এবং উঠা বারু রোগেও এই ঔষধ প্রস্তুক্ত হইরা খাকে।

পারদ, গছক, ছরিতান, রবঃশিলা অজ, হংস্থাতে, (এক প্রকার মূল বিব) সাকর্ব, কালসপবিব এই সমস্ত পুরা সমস্তানে স্ট্রা তাহার সহিত একশত পঞ্চাশনী করপাদবীক্ষর্ নিজিত করিবে। জনতর সমস্তান্য একল পেবিত হইলৈ দংলা, মহিব, মর্ব ৩ হাসন ইহালিগের পিতে প্রতাদে এক একবার করিবা চারিবার ভাবনা দিয়া এক ওছা পরিমাণ বড়ী প্রকৃত করিবে। শীতন জলের সহিত অববা নারিকেলোদকের স্থিত এই ঔবধ সেবন করিতে হয়। ইহা ভারা সমিধাতক্র বিনাশিত হয়, ইহাকে রহহাভ্যান্য রম কছে।

পারদ, গশ্ধকাসীস, ছাবর বিষ, জন্ম বিষ এই সকল জব্য একজ কাঁরবা মথক, বরাহ, মরুর, ছাগল ইহাদের প্রত্যেকের পিতে পৃথক্ পৃথক্-ভাবনা দিয়া লইবে। এই ঔষধকে স্টাকাভরণ কহে। তৈরব এই এখনের আবিহার কর্মা। এই ঔষধ সম্প্রকার নারিপাত সুর ত্রে। আত্রতির রশের সাহিত এই ঔষধ পান করিতে হয়। স্টিকার শুগ্র হারা এই ঔষধ প্রদান করিবে।

ছই ভাগ বিব, চারি ভাগ বরীচ ছই ভাগ গছক, এক ভাগ ছিলুল এই সকল জব্য একজ করিরা আকলচ্পের রুসের শহিত খলে মর্মন করিবে। ইহাকে পঞ্চানন রুস ক্ষে। জুরুরপ হতীর শক্তে এই ঔষধ নিংছের দুলা। এক গুল্লা পরিয়াণে এই এবধ সেবনই নাৰ্ছের।

এক ভাগ পারদ ও চুই ভাগ গৃহত একট মিজিড করিরা জাট নিম যাবং চিরভার রলে প্রং পুন: মর্মন পূর্বক ভাবমা দিবে। তথ্পরে পারদের অউমাংশ বিষ মিজিড করিরা চিভার রুলে ভাবমা বিরা লইবে। গৈতিক বুরে এই উব্ধ প্রয়োগ করিতে ছইবে, ইছার নাম নিমোদশীহার রুল। ভাতর্কের বেরপা হিমরাশি বিনাশ করেন, এই উব্ধণ্ড ডগ্রুপা বিনাশ করে।

াণারদ্য তাৰু, শেষি, অভ, সীস, বন্ধ, গান্ধন, হানুভাগ ও বিৰ এই নৱ প্রধা প্রত্যেক আই তোলা করিরা লইরা চূর্ব করিবে। উত্তয়-রূপ চূর্ব হইলে আদার রলে ও কাক্ষাচীর রলের সহিত নর্ধন করিতে হয়। তংশরে মংস্ক, শুকর, ছাগল ও মহিষ ইংগ্রেম্ম প্রত্যেকের শিতে পৃথক্ পৃথক্ ভাগনা নিরাভংশরে ত্রিকটুর কাইে ভারবা নিরা কইবে। তুললীশাতার রলের সহিত থক গুলা পরি-হাবে এই উন্ধানেন্দ কর্মাই বাদছের। উন্ধানেন্দেশে করি নেক করিবে। অভ্যন্ত পাহ ধাকিলে চিনিপানা পান করিতে পারে। এই উন্ধান রলরাজেল বলে। ধ্যন্তরি শেষ এই উন্ধ্যের আনিম্প্রা।

কটকারি, মিলিলাও নাটাকরজা এই তিন এখেরে র্সের সহিত গল্প বিলিত করিলা ভূত্ অহি সন্তাপো পানাইয়ে। গল্প গদিলা হবন তর্ম হইবে ওখন ভাষাতে গল্পকর সহতাগো পারক একান করিবে। অধ্যার সহত উত্তর্মণ মিজিছত হইবে নাবাইবে। পারে জীতন ছইবে রর্জন পূর্মক কফানী প্রভাত করিবে। এই উব্ধ এক রতি পরিবাপে দেবন করাই বিশি। এক নাবা পরিবাপে জীরা, এক কানা পরিবাপে দেবন করাই বিশি। এক নাবা পরিবাপে জীরা, এক শারিণ।তিক অন্তে এই উমধ দেবন করিলা গার্ম জন পান করিতেই হয়। ইহার নাম গাছকজানী। এই ঔমধ শর্করার নাইত দেবন করিলে হার্দ্ধ রোগা, ওকের সহিত্ত দেবন করিলে আবরোগা, হার্গাং হুছের সহিত দেবন করিলে রক্তাতীনার এবং অভ্যুরের রলের রুমের সহিত দেবন করিলে রক্তাতীনার এবং অভ্যুরের রলের সহিত দেবন করিলে রক্তমন প্রভৃতি প্রশাস্ত হয়। এই উমধ ঘারা আরুর্মৃতি হুইরা বাকে। যে সকল পিরসংমুক্ত ঔম্ম উক্ত আহে, ভাহা বলবান ব্যক্তিকে মেবন করাইবে। এই মকল ঔমধ দেবন করাইলা রোগীকে জলসেক ও অবসাধন আন করাইলে বিশেশ উপকার দর্শে।

পার্দ, গর্ক, বিব, মরীত ও ইরিডাল এই সকল এব্য সবভাগো
লইরা শিলাতে মর্দন করিবে, মর্দন করিতে করিতে কল্পনিং ইইনেই
ঔবধ হইল। এই ঔবধকে কেডালরস করে। এক রতি শারিষার্শে এই
ঔবধ সেখন করাই বিষেদ্ধ। ইবা ছারা সাধ্যাসাধ্য হাষ্পনিধ ছোরজর
সালিপাতিক হার বিষ্কি ছব। যাহার কল্তপংক্তি মৃদ্ধ, বাছার সরস্ক ভাল হইবাছে, যাহার ইজির সকল বিদল হইবাছে, বে মান্দ্র হোছাভিত্ত ও বাছার কেই লিও হইবাছে, সেই রোগীকে এই ঔবধ সেখন করাইলে আন্ত প্রভীকার হার।

প্রীহালিত জীর্ণস্থরে—চিতামূল, সৈত্বৰ, বিকচু, হিল, জীয়া,
বুলজন্ন, বৰজার, বন্ধদানী, চিরতা, বিট্পবণ, ক্লফারা, এই সকল
ক্রয় সমতাশে চূর্প করিবা জহীরের রনে মর্কম পৃত্যাক জহীরের
রুম অসুপারে কৃই মানা তক্ষ্ণ করিবে প্লীহাজিত জীর্মজুর বিসুরিত হয়।
ক্রামুত্যা, অন্ত, প্লেহজন্ম, শুল জ্পানধীর, সমুসক্ষেমা,
চিতামূল, জীরা ছিল, বর্গান্ত, সাচীকার, সৈত্তক, নীলবড়ি, চিরতা,
বিট্লবণ, ক্টিকারি, মূলকার এই সকল ক্রয় সম্ভাবে লইবা চূর্ল
ক্রত জহীরের রনে মর্কম করিবে। উত্তর্গণ মন্তিত হুইপে জহীরের
রুল অনুপানে হুই মানা সেবৰ করিবে প্লীহাজিত বুর, শোক,
পাত্, জন্ম, শুন প্রজৃতি বিনাশ পার।

চিতাবুদ্য বিকশা বিকট্ট বিচয় বুখা হয়ীতকী শিশালীমুদ্দ, বেগামুদ্য দেবদাক চিয়তা, খদঞ্চ বালা, কটুকী, কটুকায়িত্সঃ ্নেহি এই সকল জন্য সম্ভাগে মন্ত্রত বোগে মর্মন করত বদরাছি আনাগ বৃদ্ধী আন্তর করিবে। স্থানিরাখাড়ার রসের সহিত ইয়া দেবন ক্রারিলে বাতিক, গৈতিক, নৈছিক, সামিণাড়িক, মদ্দুল, বিষয়ত, ক্রারিল খাড়ছ সম্বাধিক স্থার, বিমি, হিকা, খাস, অকচি, প্লীহা, গ্লুমা, মন্দায়ি, রক্তশিক সকল বিনাশ পার।

মূল সহিত আলকুলির গাছ চারি সের লইবা বোল নের কাঁজির লহিত পাক কারিবে। ইথল চারি সের মাত্র অবশিষ্ট থানিবে, তথম ইান্দিরা সেই কলের সহিত ওঁঠ, বৰকার, হিল, ইমন্ধর, বিট্লবণ, উর্বাহ্ন কাল লবণ, অন্তর্ম লবণ, সমূত্রকোর মরীচ, বমানী, জীরা, কালজীরা, সোহাগা, চিডাব্ল, চই, অপাক্ষার, ডালসাড়ার কার, বিভ্ল, শিশুল, এলাইচ, গুড়বক, তেলপাড়া এই সকলের প্রত্যেকের চূর্ব এক ভোলা বিভিত করিবা এবং বোল ভোলা মন্থ্ প্রকেশ নির্মা বোল মাধা পরিকাশে সেবন করিবে। আলকুলির রস ইবার অনুপান। ইহাঘারা প্রীহাল্ক, গুজ প্রভৃতি বিনাল পায়।

জড়িখাত এবং অভিচার জনিত ছবে বিষ এবাাদি ও বিদ্যাল্প প্রবাসিধে, সান করাইবে না।

জোৰজমিত ত্বে রোগীকে নধুর বাকা বলিবে, কঠোর বচন প্ররোগ করিবে না, রোগীর জোধ পরিত্যাগ করা উচিত জার পোকজ ত্বরে ও ভরজ বুরে যাহাতে রোগীর গন সর্কাণ প্রকৃত্ব থাকে। ভাহাই করিতে হর।

সন্ততন্ত্রে:—ইপ্রথম, পটনপাত, কটকী এই সকল ত্রবা প্রত্যেকে ৫৭ দ্বতি পরিমানে সইনা চারিপাল জনে পাক করিখে। এক পল অবনিট থাকিতে নামাইনা চালিশারতি মধুও শিল্পনীচুর্ব মিল্যুইনা নেবন করাইলে সপ্তত স্থার বিল্যুক্ত হয়।

পটনপত্ত, আনন্তমূল, মুখা, কটকী এই স্কল এবা প্রান্তোকে ছাজিল রুডি পরিমাধে নইরা চারি পন জনে পাক করিবে। এক পদ অবশিষ্ট থানিতে নানাইরা কিঞ্চিৎ মধু ও চারিল রুডি শিগুলচূর্ব অক্সেপ্টিরা সেবন করিনে সন্তত জ্বর বিদ্বিত হয়!

ু**গুপ্**ণা নিমহান, বচ, কুড়, হরীতকী, সরিষা যব, এই সকল **প্রবা** বিজিত করিয়া রোদীর শরীরে শুন মিলে সম্ভত বার প্রায়ন করে। জাগন্তকর্ত্তে — বাত পিত কক হঠাও কুপিত হবরা খোরতর ক্ষর উৎপাদন করিলে ভাষাকে হ্যাহিক আগত্তক ক্ষর কৰে। বিষয়তঃ। জীবা, চিনি, এই সকল এবা আভোকে চারিমানা পরিষাধে নইরা জাদে, ধর্মন পূর্বকে মধুর সহিত সেবন করিলে উক্ত স্বর অশ্নতি হয়।

जीर्य वादिक बुद्धः — कक लिखबुक रा कक्काण खुद्ध इहेटन केन्द्र रा झीहा लाक क लाभ इड. जाहारक जीर्य वादिक बुद्ध बटन इ कक्कोता. कूफ भावसून, ठाउँछीतून, उडी, अनक, नणवून, गक्षणकी, काकड़ालुकी, खुद्धानका, वासनदानिश्च पृथः (१६७९ वर्षण कहे नक्ष्म जवा अर्जाक अक्षणाया लिजियारन नहेशा अन त्यत्र श्रीपृद्ध मिक कदित । अक हहे।क जवनिक पाकिट्ज रामाहेश किकिए मध्न अदक्षण निष्धाः (भरम कदितन केक बुद्ध अध्योगिज हत्र ।

বিষয় হয়ে.—র্থা, আসলকী, গুলক, তঠি, কণীকারি, এই সকল তথ্য প্রত্যেকে ব্রিশ স্থাতি পরিয়াশে কইয়া চারি পল জলে নিয়া করিবে। এক পল অগ্নিক আফিতে নামারিয়া চলিখ রাভি পিপুলচূর্ব ও বিশ্বিধ মরু প্রাক্তিশ কিয়া সেবম ক্রিলে বিষয় তুর দুরীভূত হয়।

কুই ভোলা ক্ষেত্ৰপাপড়া চারিপল জনে সিদ্ধ করিরা এফ প্রঞ্ অধ্যাত বাকিতে নাদাইরা চলিপ য়ড়ি যধু প্রকেপ নিরা করোলেড ড অত্যে বাসক পাতার রদ ধূই ভোলার সহিত দেখন করিলে বিহম শ্বর প্রামিত হয়।

আপাতপ্ৰন ক্ষজীয়ক চূৰ্ব ও পুরাতৰ গুড় একর সভ্চুক করিয়া কিছুদিৰ দেবন করিলে বিষম স্বর সূর্যাভূত হর আর ঐ লাভ্চুতে খেত জীয়া ও দ্রীচচূর্ব মিজিত করিয়া সেবন করিলে ঐকাহিক স্বর বিবৃষ্টিত হুইয়া থাকে।

গুলক ও লেকানিকা পাতার রস আজোকে দুই তোলা পরিমানে লইনা চারি পান জনে নিজ করিবে। একপান আবস্থিত থাকিতে শামাইরা দুই তোলা মধুস সহিত বেংন করিলে বিষয়সূর বিমান পার।

## লুরাতীশার চিকিৎশা।

বানা, আভিস, বেন্ড চি, সুখা, গুটী, এই সক্ষ দ্রব্য প্রত্যেক আটাইশ রতি পরিমাণে নইরা এক্স করত চারি পন কলে নিম্ন করিবেঃ এক পল অবলিউ থাকিতে নামাইলা টক ডালিমের রস অস্থান যোগে সেবন করিলে বাতিক পুরাতীসার বিমাল পার। এই ঔবব সেবনাত্তে ব্যস্থের হও পথা বিধে।

জীরা। প্রক, আক্রাদি বুলের চুপ্র লোহাগা, জারকন এই
সক্ষ প্রব্য সম্প্রাণে গ্রহণ করত ভাজিরা আতপ তত্ত্বের জনে
সিছ করিবে। পরে ভালিবের মধ্যে প্রিয়া ছুঁটিরার আগুণে দল্প করত
শীতন হইলে সেই ঔবধ বাহির করিরা প্রবিধ্য চারি রতি পরিমানে
বক্তী গুপ্তত করিতে হর, চেলেনির জনের সহিত গুজাতে ও সন্ধ্যাকারে
গ্রহী নেবন করিলে প্রতিনার বিবাশ পার।

ভিক্তান লিপ্ন, একডান বিষ, ঘুইআন হিন্ধুন, এই সমস্ত তবা বিজিত করত কাষীরের রসে মর্কন করিতে হইবে। উপ্তমরূপে নর্কিত হইনে মূলকবীক্ষক এক একটা বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইহাকে মৃত্যস্ত্রীবনী বড়ী বলে। লীভল স্থানের সহিত এই ঔবধ সেবন করিনে স্বরাভী-লার প্রশাস্ত হর, ভীবন সারিপাতিক বিবৰ স্বরেও বিস্টিকা রোনেও এই ঔবধ প্ররোগ করিতে পারে। বিজুল, বিষ, ডিফটু, সোহাগা ও গ্রুক এই সকল জ্বা লছ-ভাগে এবণ পূর্কক মিজিত করত জবীরের রলের সহিত বিশ্রহর পর্যান্ত ধর্মন করিতে হইবে। উত্তমরপ মর্কিত হইকে এক গুঞ্জা পার্নি-মানে বড়ী করিবে। হইা হারা খারাডীপার প্রশান্ত হয়। খান, কাল-গ্রহণী অভীনার, সাহিপাতিক, সপস্থার বায়ুরোগ, গৈহ, আরীপ্র-শ্রহায়ি এই সকল রোগেত এই ঔষধ গ্রেরোগ করিতে পারে

একভোলা হিছুলোত্তৰ পারদ, একভোলা লেছি, একভোলা নোহাগা, একভোলা গছক, একভোলা শঠী, একভোলা ধনিরা, এক ডোলা বালা, একভোলা যুখা একভোলা আৰু নাদি, একভোলা জীরা, একভোলা আভিদ, এই সকল এব্য বিভিন্ত করিয়া চূর্য করিছে। অনভর এ চূর্য ছাগীছারের সহিত পেনণ করিয়া এক বাবা প্রমাণ করী প্রস্তুত করিবে। ধনিরা ও জীরার যুন, সিছি ও শণবীজ, মনু ও ছাগীছা, মঙ, শীজন জল, নোচার রস, অথবা কাঁচড়ার রস ইহার অসপান। ইছা বারা একজ, বন্দা, ও বিদোধ অনিত বাবতীর অতিসার প্রশাস্ত হয়। খুন, মন্দারি, প্রহণী, অর্প, অর্পিন্ত, হাস, ও প্রমা এই সকল রোগেও এই ঔবধ বিশেষ কলদারক।

চারিতাগ গান্তক, চারিজাগ পারদ, অকডাগ সাজিমাদী, একডাগ মোহাগা, একডাগ বৰজার, একডাগ পঞ্চাবণ, একডাগ বিজ্ঞা, একডাগ বিজ্ঞা, একডাগ ইপ্রথম, একডাগ জীরা, একডাগ রুজজীরা, একডাগ চিতা, একডাগ্ হধানী, একডাগ হিছুদ, একডাগ বিজ্ঞা, একডাগ ভদ লা, সমস্ত ক্রবা একড মিজিত করিয়া চূর্ব করিবে। এক মামা পারিমাণে এই উম্ব সেনন করাই লিকি পাদের রুক ইহার জন্তু-পার। এই উম্ব সেনন করিয়া তিন পদ গর্ম জন পাম করিবে। ইয়া হারা জ্বাডীসার, অতিক্ষতি, তিলেমজমিত জ্বা, এইনী, কাত্তু-রোগা, পুন, পরিশাবস্থা প্রভৃতি প্রশাস্ত হয়।

ছই কোনা পারেন, চুই তোলা গছক ও ছুই তোলা অত এছন করিছে ছইবে। 'প্রথমত: পারেন ও গছক একত্র পেষণ করিলা কঞানী করিবে-ঐ কজানীর সাহত পুর্বোক্ত অত ও ছুই তোলা ত্রিকটু চূর্ব একত্রিত করিবে। অন্তর মুই তোলা কেন্তর্গুতর রস, চুই তোলা ভূজনাজের কর্ম, ছুই তোলা নিসিখার রস, চুই তোলা, চিতার রস, ঠুই তোলা ভটি, আভিস, দুঝা, দেবদাক, পিপুন, বঁচ, যথানী বালা, দনিয়া, কুইচির ছাল, ব্রীভকী, থাইকুল, ইন্তেম্ব, বেল্ডাইচ, আক্ নাজি, যোচার রুম এই সমস্ত বন্ধ সমভাগে গ্রেছণ পুর্বাক চুপ করিবে ৷ এই চুপ মধুর স্থিত মিজিত করিয়া দেবৰ করিলে স্বরাভীসার বিষ্ট হয় ৷ (১)

হিল্প, কপুর, মুধা ও ইজায়র এই এবা চর্ট্টর সমস্তাদে গ্রহণ পুর্মক আফিল্পের জলে ভাবনা দিয়া সইবে। ইয়াকেই অতীয়ার বারণরন কচে। ইয়াবারা সক্ষরণ অতীয়ার বিনাশ পার।

লিখি ও ধনিলা এই হুই লুবা চূর্ণ করত লাজ প্রথাৎ ধইরের সভের লহিত লেখন করিলে খুরাতিসার বিদ্রিত হয়।

धारगी सारमत्र हिकिश्मा।

জাতিকদানি অধ্নীকনটিয়ক,—একডাগ জাতিকলা একডাগ সোহাগা, একডাগ অতঃ একডাগ পুতৃয়াবীক চুইডাগ জাকিং এই বকল বস্তু একত করত গোড়াইলের মসে ধর্মন করিতে হুইবে। উত্তম-ক্রপ মর্কিত হুইলে চগকের ন্যার বড়ী করিবে। রোগের অবস্থা বিবেচনা করিয়া ইহার অগ্নপাবের ব্যবহা করিতে হর। ইহার নাম জাতিকগানি অধ্নীকশাটরুল। ইহা হারা অহ্নী, জামপুন, রুকলোম ও প্রাণ্ড অর্ক বিন্ত হর। অহ্নী রোগে মধুর সহিত এই ঔষধ সেবন করা উচিত। এই ঔষধ সেবনাতে দ্যি যিক্সিত অন্ধ্রা করিবে।

অপর গ্রহণীরপাটরস।—অর্কডোলা সোহাগা, অর্কডোলা অর্বারা, অর্কডোলা জান্তাকল, অর্কডোলা বেলত ঠ, অর্কডোলা ধনিরসার, অর্কডোলা জারা, অর্কডোলা মুর্কানুল, অর্কডোলা শ্রহণিরীক, অর্কডোলা চোরপুল্টী, এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া ঐ সকল চুর্ণ মিজিপ্ত করেড বিলুপার, কার্পানকল, সাঞ্চে লাক, লীরাই, সাঞ্চা লাকের মুগ, করেচির হাল ও কাঁচড়া এই সকল জব্যের প্রজ্যেকের রলে পৃথক লুখক প্রশেষক্ষ করিছে হইবে। উত্তমরশ মর্কিত হইলে অহন্তর্জা প্রমাণ বঢ়ী প্রস্তুত করিবে। ইহাকে অপর গ্রহণীকপাটরস কছে। এই ঔবব ভিরা দিবল সেবন করিডে হয়। এই ঔবব সেবনের পর একপল পরিমাণ

<sup>(</sup>১) পিত্তমনিত মুরের যথো পিতৃত্বনিত আতীলার হইদে কিয়া অতীলার রোগীর ছুর হইরা যদি দোব ও সুযোর সমস্তাব হর<sub>়</sub> তাহা হইদেই নেই রোগকে বুরাতীলার বলা নিরা থাকে।

দধির মতি পান করিতে হর। বহু উনধ্বারাও যে এইণী এখান্ত ইর নাই, ইহা ঘারা তাহাও প্রশাস্ত হয়। আহপুন, অর, বান, কান, প্রবাহিকা এই সকল রোগেও এই উন্ধ প্রয়োগ করিতে পারে। যে সকল প্রবা সেবন করিলে রজনাব হইবার সকল, তাহা এই উন্ধ নেব্যের পার পার্রিত্যাগ করিবে। এই উন্ধ নেক্যান্তে রুক নার্তাকী, যাহ্ন করিও বোল পর্বা দিবে। এইনী রোগে বারুর প্রাবন্য বিষেচনা করিও তৈল সেবন ও বাবের ব্যবস্থা করিবে।

লাভীকদাদ্যবদীকা।—চারিদাবা অন্ত, চারিদানা পারদ ও চারি

থাবা গান্ধ এই তিন এবা একটা পরিকার পাধরের পানে বাটিরা

থাকন পূর্বক কলালী প্রন্তুত করিবে। অনপ্তর এই কলালীর সহিত

অর্কতোলা লাভিকলা অর্কতোলা গোচার রসা অন্তর্তালা মুখা।

অর্কতোলা নেরাচালা, অর্কতোলা আভিসা, অর্কতোলা জীরা ও

অর্কতোলা নরীচ দিলাইবে। অনব্রর এক নাবা বিব খিলিত করিরা

উত্তম্বপ চূর্ব করিবে। তথপরে নিসিন্দা, বিজ্ঞা, আমা অর্থাী।

লাভিক কেবরতে, আক্মাদি, ভ্লরাজ, এই সকলের পাতার রবে

ভাবলা দিরা ফুলের অ্রির নাম বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইলাকে

ভাবলা দিরা ফুলের অ্রির নাম বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইলাকে

ভাবলা দিরা ফুলের অ্রির নাম বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইলাকে

ভাবলা করা, অনুপত্তি, অসাধা ও জীর্লগ্রহণী, অভীসারি, বাস্কুরাগ্রাণ

প্রকৃতি করিবেটা করে। এই ঔবধ ভারা আর্থাহনী, বাসুরোগ্রাণ

প্রকৃতি করিবির নাম ও আন্রর্জান বিন্তু হর। শত শত্ত ঔবধেত বে রোম প্রশাস্ত্র না হয়, ইহা ভারা ভাবাত প্রাণিত হবল

থাকে। লগভীতদে এই ঔবধ রোমসমুক্তের ভরিণ ব্যঙ্গণ।

পর্গকাবলী।—তিব তোলা পারদ তিব তোলা গাছক তিন ভোলা সুখা, তিম ভোলা কোঁছ, তিম ভোলা ধাইকুল, তিম ভোলা বেলওঁঠ, তিম ভোলা বিব, তিম ভোলা ইজ্ঞাব, তিম ভোলা আক্রালি, তিমভোলা জীরা, তিব ভোলা বনিয়া, তিব ভোলা রসালম, তিন ভোলা মেহাগা। তিন ভোলা খিলাজর্থ, তিন ভোলা রিফলা, তিম-ভোলা অত্ত, হই ভোলা বুনহুড়ি, হই ভোলা ঘণ্ডম, ইই ভোলা পারিফল, ইই ভোলা আঁচড়া, হই ভোলা দাড়িম, ইই ভোলা পারিফল, ইই ভোলা নাগকেনর, ইই ভোলা জাম, ইই ভোলা দায়ির মাত, ইই ভোলা লাভী, ইই ভোলা কেণ্ডমতে ও ইই ভোলা ক্ষরাল এই সমস্ত জকাএকজা মহিল পুর্কাক দুই যাব। প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে।
টুইাকে পর্বকলাবলী করে। এই বড়ী বোলের সহিত দেবৰ করিতে
হয়। ইহা ঘারা প্রহণীপুল, লাহ্ড মধ্যারি, স্বর্স জবি, হর্ষি,
প্রকৃতি রোগ বিষ্ট ক্টরা ধাকে।

বজুকগাট্রস।—পারেদ, গন্ধক, আদিং, ঘোটার রস, ত্রিকট্ ও ত্রিক্লা এই দকল তাবা সম্ভাগে আহল পূর্বক মর্কম করিতে হইবে। আনস্তর মিজিপাতা ও ফুজরাজের রমে সাতবার ভাবনা দিয়া নইবে। ইহাকে বজুকপাট্রল কছে। তিনরতি প্রমাণে এই ঔষণ সেবন করা বিধেয়। মধু ইহার অসুপাম। এই ঔষণভারা অনাব্য অহনীও প্রশাস্ত হয়।

ভাতীক্ষণরস।—পারেদ, অঞ্জ, রুসসিন্ধুর, গর্ক, জাতীক্ষ, ইপ্রাবন, ধুভ্রার বীঞ্চ, লোভাগা, ত্রিকটু, বুখা, ছরীওকী, আন্ত্রের আঁঠির সাম, বেলত ঠ, ধুখা, বীজপুর, ভাজিমের মঞ্চল এই সকল জ্বা ভুলা পরিমাধে গ্রহণ করিমা লিছিপত্রের রুসের সহিত ওলে মর্কন করিবে। উভ্যরণ মর্কিও ছইলে একরতি প্রমাণ বড়ী গ্রহুত 'করিবে। জ্রাচির ছাদের রুদের সহিত এই খবন সেবন করিতে হর। ইহাকে জাতীক্ষরণ করে। এই ঔবন দারা আমাতীনার বিন্তু হর ও অরিভূমি ছইরা থাকে। সন্ধু ও বেলত ঠের সহিত এই ঔবধ সেবন করিলে
ভ্রম্ভাইনী বিন্তু হয়, গ্রহ জাতীক্ষরের কার্থের সহিত দেবন করিলে
ভ্রম্ভাইনী বিন্তু হয়, গ্রহ জাতীক্ষরের রুদের সহিত দেবন করিলে
ভ্রম্ভাইনী বিন্তু হয়, গ্রহ জাতীক্ষরের রুদের সহিত দেবন করিলে গ্রহণী
বিন্তু ছইরা থাকে।

গ্রহণীগজের বটিকা।—পারদ, গ্রহক, দেছি, শৃথা, সোহাগা, হিলুন, দানি, তালীলপাল, দুখা, ধনিরা, জীরা, গৈর্থ, ধাইকুল, লাভিন, ভাঁই গৃহধুম, হরীতকী, জেলা, তেলপাল, লাতীকল, লবল, লাকচিনী, ওলাচী, বালা, বেলতাঁই, মেনি ও ভাল এই সকল বস্তু সংজ্ঞানে লইরা হাগলুমের সহিত দুর্দন করিতে হইনে। উভমান মার্কিত হইলে দুইমামা প্রমাণ কড়ী করিবে। ইহাকে গ্রহণীগালের বাহিনা কহে। এই উহব হারা গ্রহণী, স্বর্কু ক্রমান শুলা, মান্দ্রিক, কামলা, কপুর্ব কুলা, ও জিনি রোগ বিদ্যালয়। এই উহব বল, বর্গ, আরু ও অমির্কিক করিব। বিদ্যালয়। এই উহব বল, বর্গ, আরু ও অমির্কিক করিব। বিদ্যালয়।

পীব্যবদীরস।—অন্ধাতালা পারস, অন্তালা আত, অন্ধাতালা গ্রহ, অন্ধাতালা রেপা, অন্ধাতালা লোহ, অন্ধাতালা গোহাগা, অন্ধাতালা রমাপ্রন, অন্ধাতালা অপনাজিক, একডোলা লবন্ধ একডোলা দুলা, একডোলা আন্ধানি, একডোলা জ্বালি, একডোলা জাতিল, একডোলা বামা, একডোলা কুর্মান, একডোলা ক্রাইজাড়া, একডোলা ক্রাইজাড়া, একডোলা ক্রাইজাড়া, একডোলা ক্রাইজাড়া দাক্রামি, একডোলা জাতীকল, একডোলা ভাঁঠ, একডোলা বেলভাঁঠ, একডোলা লালা, একডোলা লাভীকল, একডোলা ভাঁঠ, একডোলা বামা, একডোলা লাভীকল, একডোলা ভাঁঠ, একডোলা বামা, একডোলা লাভীকল, একডোলা ক্রাইজালা নালা, একডোলা লাভিমের ছাল, একডোলা বাম্ক্রন, একডোলা ক্রড, এই সমন্ত ত্রব্য একর করিয়া কেণ্ডর তের রব্যে নাভবার ভাবনা দিতে ছইবে। ওংগর হাগাছডোর সহিত মর্ক্রম করিয়া কর্মার বড়ী প্রভাত করিবে। ইছাকে পীমুববদীরস করে। পোড়া বেল ও ওড়ের সহিত এই ববিধ সেবন করিডে হর। বাবতীয়া অভীকার, এইনী, পুরাডম গ্রহণী, উলরাম্যর ও প্রমেহদোর এই ববিধ হারা বিন্ত ইইমা পাকে এবং ইহারারা অগ্রির উন্ধীপন হয়।

প্রহণীপার্ক কর্মন। — হুইডোলা পারদ ও ছুইডোলা গছক একছ বর্দন পূর্বক কর্মনী করিতে ইইবে। পরে পারদের বোড়পাংশা অর্ণজন্ম ছুইডোলা নিষপাতা, ছুইডোলা জাতিদলা ছুইডোলা জরিলী ও ছুইডোলা ছোট এলাচ এই সকল সামনী চুই করিরা একটা বিছুকের মধ্যে রোজিবে। পরে প্রটপাকে পাক করিছা ক্রিল ছুইলে প্রহণ করিবে। প্রতি হিন পাঁচ রভি প্রমাণ এই ক্রমণ এই ক্রমণ এই ক্রমণ করিবে। প্রতি হিন পাঁচ রভি প্রমাণ এই ক্রমণ কেবল করিতে হয়। ইহা ছারা প্রহণী, অর্শ ও স্থাতিকারোগ বিনক্ত হয়। বিশোষতা কালা স্থান, অভানার, উপ্র প্রহণী, ও আম্বর্দল ইয়া বিশোষ উপকারী। ইয়াছারা দেহের প্রক্রি সাধন, বলস্ক্রিন ও অগ্নির উদ্দীপন হইয়া বাকে। ক্রমণেব অরং এই ভ্রম্বের আবিছর্জা।

অগজ্ঞা প্রশের রবের সহিত সরিচচূর্ব মিলিড করিরা ন**ল্য** জ্ঞাহন করিলেথামধীরোগ বিনাশ পার ।

একতোলা মরীচচুর্থ, ছুইতোলা শুঁচ, চারিতোলা ছুর্চির **হালঃ** একতোলা প্রোতম গুড় এই সকল এবা একনিও করত সেবন **পূর্বক** কিছিৎ ভক্ষণান করিবে। ইহাতে শুহনী বিদুরিত হয়। । আর্দ্ধিতোলা বিছরি ও একতোলা ইসব**ওল ও**কত করত <mark>সেবক</mark>। করিবে।

মাগকেশর রক্তদেন করন্ধ ক্লার্ডন, ওগরপাত্না, মরীচ বংশ-লোচন, ওড় বক্ পিপপনী, চিতামুন, ভাসীনপত্র, এনাইচ বিভন্ন ডেলপত্র, হরীভকী, ক্লাজীরা, আমলা ও কর্পুর এই সমস্ত প্রব্য প্রভাবে চুইডোলা, সাভপান নিভিচ্প, এই সকল প্রব্য একতা করিয়া বঙ্ড হইবে, তও পারমাণ চিনি উহার সহিত একত্রিত করত সৈবন করিলে গুহনী বিনাশ পার। অধিমান্দা ও অতীসার রোগেও ইহা হারা উপকার দর্শো।

শুঁচ, আত্তিস, মুখা এই সকল জন্য প্রত্যেকে ৫৬ রভি পরিমাণে লইয়া চারিপল জনে সিদ্ধ করিবে, একপল অবলিট্ট বাঁকিছে সামাইয়া কিঞ্ছিৎ মধু প্রকেশ দিয়া সেবন করিলে গ্রহণী বিধুরিত হয়।

পরিছ্ত পাতে কিঞ্চিৎ গুড় গুড়ের ছিওণ মনু, চারিওণ কাঁজি এবং আটগুণ দধির দাত একজিত করত স্থাপন পূর্বাক ধানোর দধ্যে কাখিবে। পরে উহা বিরুত হইলে উরোলন করত হুঁ কিয়া নেই জন্ম পান করিলে প্রাথী রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

শুর্থী, যবকার, গবক, জীরা, আডিস, বেলপ্রীয়, ধাইপুশা, ধনিরা, বরজেন্তা, রসাঞ্জন, আক্ নাদি, মুধা, কাঁবড়া শুলী, সৈত্রত, বেশু পুনা, বালা ও ইন্সবদ এই সকল বস্তু একজিত করত সেবল করিবে। কল জবধি কুড়ি রডি পর্যান্ত ইখার দাজা। মধু, অজন্ত্র বা চালুনির জল ইহার অনুপান। ইহা ছারা গ্রহণী রোগ বিনাশ, পায়, অগ্নিমান্ত্র রোগেও বিলেশ উপকার দর্শে।

একশত পদ কুর্নির ছাল চেহিট্রি সের জলে সিল্ল করিরা বর্ষন্দিবিরে যে বোল দের দাত্র আবদিউ আছে, তথন তারার মধ্যে কুজ্ পল চিনি দিখে। গুড়ের ন্যার পাক ছইলে তহুগো আকন্যদি, বর্মজান্তা, বেলপ্রতি, প্রতি, গাইলুল, সুখা, লাড়িবছাল, আভিস, ঘোচরল, লোগ রুল্লেন, গনিরা, বেগাখুল, বালা এই সম্ভ জারের অভ্যেকর স্থান্ত্র এক পল দিবে এবং জ্বাগত নাড়িতে থাকিবে। গারে নাবাইরা শীতল হইলে একপল মনু মিজিত করিয়া শইবে শিশুই ইইখা না যায়, এরপ গাত্তে রাখিতে হয়। বাসি জন্মত্ন মহিত প্রতি দিন ইহার প্রকৃত্যেনা অবলেহ করিলে অর্থাৎ লাইনা সেবন করিলে সর্বপ্রকার গ্রহণী বিনাশ পায়।

ভূলরাক্ত বরাক্রান্তা, বেলগুঁচ খেত খুনা, ঘোচরসা পাক্রানি, সিবিশাতা, আতিস, পানিকলের পাতা, বাসা, দাভিবপত্র, ইজবন, পুনা ধাইপুলা, দাক হারুলা, হরীত নিগছাল, লিপ্পলী, তণ্ঠী, চিরতা ও জাবের ছাম এই সকল জবেরর মূর্ব সমতাগো ছইরা সমত জবোর ক্ষান স্বর্হির ছালের চুর্গ উহার সহিত মিজিত করিবে। মধু, তারের মধান স্বর্হির ছালের চুর্গ উহার সহিত মিজিত করিবে। মধু, তারের মধান স্বর্হির হাতির রুক্তি এক বাহা প্রিমাণে এই উব্ধ অভ্যন্ত সেবন করিলে বাবতীর প্রক্ষী ধ্বস হইরা থাকে।

বিশ্বপাত্র সিধিচ্ব, নিসিলার পাত্র ও নিষ্পাত্র এই সমস্ত এবা সম্ভাগে গ্রহণ পূর্মক চারিআমা মাত্রার গ্রভঃহ সেম্ব করিলে গ্রহণী বিনাশ পাইরা থাকে। শীতন জন ইহার অভ্পাম ।

একভোলা পুরাতৰ আমেুর কেলী, একভোলা ব্তেৰুমা, একভোলা বেলশুঠ, একভোলা শিসুল আঠা, এই সমস্ত অন্য একত্র মিসিত কর্ত আতপ ডঙ্বের জলের সহিত বাটিয়া সেবন করিলে গ্রহণী বিনাশ পার।

## কাসচিকিৎসা।

শালণাণি, চাকুলিয়া, বাকুড়, কটকারি, গোপুর এই সকল অবা শ্রন্তোকে চারি মাবা পরিমাণে দাইয়া একদের জনে সিম্ব করিবে। এক চ্টাক অবশিক্ত থাকিতে নামাইয়া হুই রতি মধু প্রকেশ দিয়া গেবম করিলে কানরোগ বিমাণ পায়।

আকলহান, মনঃশিলা ও মরীচ এই ভিন রেখ্য বিজিত করত আকলের আটার ভাবনা দিরা বর্তি গুলুত বরিবে। এই বর্তি গুলু হুইলে তাহা ব্যালিয়া খুম গুহুণ করিলে সর্বপ্রকার কাসরোগ ব্যা হুইরা বাকে।

একডোলা বৰকার, একডোলা পিপালীচুৰ্, ছুইডোলা ব্রীচচুৰ্ত আটডোলা দাড়িঘৰীঅচুৰ্ব এবং বোলডোলা পুরাতন ওড় এই সকল এবা একত করতা অংশ সক্ষিন করিয়া ছুই আনা পরিষাণে বটী অভিড করিবে। উক্ত জনের সন্থিত এই উবধ সেবন করিতে হয়। ইয়াখারা ভীৰণ কাস বিষষ্ট হয়, কররোগোল ইয়াখারা বিশেষ উপকার মর্লে। এই উবযুক্ত সম্পর্কর চুর্ব করে।

একভোলা মনঃশিদা, একভোলা আকলের ছাল, অন্ধতোলা তিকটু এই সকল প্রবা একতা মিজিত করত অহামধ্যে নিকেপ করিবা বেই পুষ পান করিবে। পরে জলমিজিত চ্পাত তাগুল নেখন করিতে ইয়। অইরপ করিলে দর্শপ্রকার কাল্যোগ বিনাশ পাইয়া খাকে।

্ আকা, আনশা, পিণ্ড শৰ্জুর, শিশালী ও মায়ত এই সকল জন্ম সমভাগো চূর্ব করত য়ত ও মধুযোগে অংলের করিলে পৈতিকু কাম বিনঞ্জ হইছ। খাকে।

তেঁৰুল শতের কাথ এছত করত তাহার সহিত সৈদ্ধধ লবণ ও হিছা মিজিত করিয়া সেবন করিলে কাম রোগ বিনাশ পাইয়া থাকে।

মুদাগুছ, পিশানীচূর্ব ও চিতার শিক্ত এই সকল এবা সম্ভাগো একল করত বহুর সহিত মিজিত করিয়া দেখন করিলে কাসভোগ মংস মুইয়া থাকে।

বাসক পাডার রস মধুর সহিও মিজিড করিয়া গেখন করিছে। কাস নউ হয়।

ছরীতকী, মুখা, জাকা, শিক্ষালী এই সকল জব্য সম্ভাগে **এই**খ কন্নত স্কত ও মধুর সহিত অবলেহ করিলে কাম বিমাল পার।

ৈ সৈত্বৰ, কওঁকারি কল। জীরা। ক্রজীরা এই নক্ষ এবং সমস্তাবে ক্রিয়া জন্ম করিবে। পরে উহার পাঁচ রতি জন্ম মধুর বহিত মিজিত ক্রিয়া শেহৰ করিলে কাল বিমাশ পার।

মধুর স্থিত আদার রস বিভিত্ত করিয়া স্থেন করিলে কাসরোগে জনেক উপভার দর্শিয়া থাকে।

ব্রেন পক্ষীর নাংস দেবন করিলে কার্ম্নোটো উপকার দর্শে।

একনি বংশ্যে কলে হত মাধাইবে, পারে নেই ক্ষাটী গোনহসংখ্য প্রেয়া অগ্নিতে বিদ্ধ করিবে। পারে তাহার আঁচি কেলিয়া দিয়া কিঞ্চিৎ মুবের মধ্যে রাখিনে সর্বপ্রকার কাসরোগ বিমাশ পার।

দলীয় পিশানী, ক্লাকা। পিও খ্রুর ও ব্রিময় এই সক্ল

ত্ত্বা একত্র নিজিত করত রত ও দত্তর সহিত নিশাইর। গেক্স করিলে কাম বিন্ত হয়।

পারন, গল্পক, মৃত পেছিল সোধাগা, রাখা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞা, বেলগাঞ্চ, গল্পকাঞ্চ, বার্টিদগু ও বিষ এই সকল এবা সমস্কাশে গ্রহণ পূর্বকে একর দর্মন করিবে। এই উবৰ ছই রাভি পরিষাধে সেবল করিলে বাতজ্ঞানিত কাসরোগা বিদাশ পার। ইছার নাম অন্তর্জানিরস।

## ৰত্নাচিকিৎশ।

প্রথমতঃ আইপন চিনি একটা পাতে অগ্নির উপর চড়াইছা
দিবে, উহা দেহন করিবার উপায়ক হইলে ভাষার দখ্যে বেলিপ্রা
নাসকছালের চুর্ন হই পল পিপালীচুর্ব ক্রছই পল ছত দিয়া নাডিড়ে
ধাকিবে। লীওল হইলে নামাইয়া আইপল মধু উহার সহিত মিজিকরিরা লইবে। একভোলা পরিমানে উহা সেবন করিলে হন্দারোগ্ধ
হিনাল পাইয়া বাকে।

আছিতোপা সিহরি একছটাক ছাগছ্যের সহিত বিশাইরা প্রভাছ দেবন করিলে যথা বিদ্যারত হয়।

চিনি, পিপানীচূর্ণ ও কিন্বিদ্ এই কয় জব্য মধুর সহিত বিশিক্ত করিলা অবদেহবোগ্য করিবে। উহা প্রভাহ হর সভি পরিবাশে দেহন করিকে বজারোগে উপকার দর্শে।

মাধন, মনু ও চিনি এই তিন এবং সুমপরিখাণে নইরা দেবন করিলে বন্ধারোগীর শৃথীরে বলাধান হর, প্রভরাধ রোগের প্রান্ত ক্রো থাকে।

কাক্ষকণ হতের সহিত সিদ্ধ করত সেবন করিলে বছরারো উপকার দর্শে।

আর্দ্ধনের জনের সহিত হুইতোলা হৃণহাংগ পান করিবে। পার এক হটাক ছানীহয়ের সহিত এই যাংস্ ব্যটিরা সেবন ক্রিলে থক্মারোগ দুরীভূত হয়।

্ত্রিশ রতি শুলী, বিশু রতি শিশালী, বিল রতি মহিলা ও বিশ রতি দশমূল এই শমন্ত ত্রবা থক্ত সার্রা অর্থসের জন্ম নিত করত অন্ধ পোলা অবলিষ্ঠ থাকিতে নাথাইরা ট্রাকিরা নেই জন শেষণ করিলে ক্যারোগ বিদ্যুত হয়।

ছাগন, খৃগ বা কপোতের মাধ্য প্রথমতঃ স্থতে উভযরশে ভাজিৰে। শরে তাহা চূর্ণ করত অজন্তুরে নিজিও করিঃ। সেবন করিশে করেরোন বিলেশ উপকায় দর্শে।

ষিহরি, শত্দুনী, বড়এলাইচ, অর্থান্ধা, গুলঞ্চ, নালা, বাসকা জীরা, প্রাক্ষা, শিশালী, মারচিনি, নাগকেলর, বালা, হোট এলাইচ, বংলাচেন, জারফল, অন্ধুনিচান, ভেজপান, শুড়ী, বেড়েলা, অগুষ্ক চল্লব, থালির, মুখা, বেলগুঁচ, তানপাত্র, জটাঘাংলী নিজ, পূন্ধানা, শান্ধী এই সকল মাধ্য চূর্ণ করত সমস্তাণো এহণ পূর্মক যিনিড করিবে। পরে উহা মধুর সহিত নিরস্তর শেহন করিতে হয়, ইহা হারা ব্ল্যারোগে বিশেষ উপকার দর্শে।

অন্ধতোলা দার্চিনি। এক্তোলা বরীচ, একতোলা চারি আনা এটী, দেও তোলা শিশালী ও চারি আশা বড় একাইচ এই বকল প্রবা একত্র করিয়া বত ব্রবে, তাহার সমান চিনি বিজিত করিয়া কাবিবে। পরে দেবন কালে চারি আনা পরিষিত চিনি বিলাইয়া বেবন করিতে হয়। ইহা বারা যক্ষারোগ বিনাশ পান।

রালা, অনগন্ধা, কর্ণুর, ধানকুনী, শিলাকড়, তিক্তর ও দেখি এই সকল প্রব্য সমতাশো দইনা বিজিত করিবে। ইবা দেবদ বারা বক্ষারোগ বিবাশ প্রাপ্ত হয় ইবাকে রাজানিদেখি করে।

বাৰরের বাংস রতে ন্টাজিরা তাহা চূর্ণ-করিবে। এ চূর্ণ হাগইজের স্থাইত মিলাইরা দেবন করিলে ক্কাবোগ বিমাশ পার।

## স্থান চিকিৎনা।

পুঞ্জতম শুক্ত ও সর্বাধিত করিয়া সেবন করিলে বাল রোগ বিনাল প্রাপ্ত হয়।

উৎস্থান্ত সংগ্ৰাণার রলের সন্ধিত বিজ্ঞিত করিলা দেবন করিলে বাল রোগে উপকার সংগ্রাণ

চল্লিশা রতি বছ বপুদ্ধ ভাষ সেবৰ করিলে খাসরোগে উপকার ছর। ইয়া বালকাদগের প্রেক্ট বিলেশ উপকারী। া বিদ্ধুপর,বানুকশনত বেওডান্ড্রনি এই তিন প্রকার পরের রস সম ভাগে এবন করত যেটি ছুই তোলা করিবে। সম<sup>্</sup>শ তৈলের সহিত উহা শেষন করিলে স্থাসরোগ প্রশান্ত হয়।

পোপালীচূর্ণ ও ব্যুরপুক্ত ডাখ সমকাণে আহণ পূর্বক বধুর সহিত মিলাইরা বিষেত্র মধ্যে ৭০৮ বার নেহথ করিলে খাসরোগে উপকার মর্বে।

অন্ধ ভোলা বিষ্টু, অন্ধ ভোলা চিতা, অন্ধ সের ছাগ হয়, এই সক্ষ এবা একত করিয়া এক ধ্যের জলে নিন্ধ করিবে। আনজের অবশিক্ত বাহিতে নাগাইবে। ঐ জল প্র্য় প্র: কিন্ধিৎ কিন্ধিৎ নেবৰ করিবে তবকখান বিদ্রিত হয়।

্একটি ভাষুপাতে প্রাতন হত পাক করিবে। হতের বিশুণ আদার রুল উহার মধ্যে কেলিরা দিতে হয়। যথন আদার রুল মরিয়া হঙ্ মার অবলিক্ত থাকিবে, তথম নাধাইবে। ঐ হুত বক্ষমুলে ও পৃষ্ঠ-থেকে মর্ক্র করিলে হাসরোগ বিশাল পার।

নিশি কুথাওের শন্য চারি যাবা পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক উক জালে মিজিত কর্ত দেবন করিলে খাসরোগে অবেক উপনার দর্শে।

শিপালী, বরিষা, পুরাতন গুড়, রাষা, কিম্মিস্ ও মরীচ এই সকল দ্রো প্রত্যেকে সম্ভাগে গ্রহণ পূর্বক চূর্ণ করিবে। পারে উহা একরিও করিয়া তিল তৈল সম্ মিজিত করত চারি মানা পরিহাণে সেবন করিতে হয়। ইহায়ারা শাস রোগ বিনাশ শাম।

্ শ্র্মিরতি মরিচচূর্গ গুঞাকরতি। নিসিকার শিক্তের হাল চূর্ব একত্র করিল। প্রতিদিশ দুইশার বা তিনবার সেবন করিলে খাল স্থোগ বিনাশ পাইলা থাকে।

পারদ ও গছক সমভাগে লইনা হস্তকুমারীর রনে এক প্রছর মর্কনা করিবে, পরে উহা একটা ভালুপাত্তে রাখিল। রুসগদ্ধকলেক উহা লেপন পূর্বাক খালুকাবত্তে একদিন পাক করিবে, শীভদ হইলে উহা আহ্ম করিবে। ছই রভি পরিমানে এই উবৰ সেবন করিতে হয়। ইহা হারা উর্ম্বাস বিয়ত হয়। ইক্রবাক্ণীর মূল, দেবলাক, তিকটু ও লক্রবা ইহার অহ্পান।

একভাগ, পার্দ একভাগ অবিাধিক একভাগ অণ্, অভিতার

# भोगू र्कालांक भेजी किए पृष्टिशांश L

ৰুভা। শতাভ গাইক পারদের বিজ্ঞান কৈছি চারিভাগা এই সমস্ত এবং একট করিব। কটকারির রদে সাতেবার ছালীছ্যে সাতবার, বার্টিবপুর। রাই সাতবার ও পার্শিতের রদে সাতবার, ভারনা দিবে। অনস্তর ইই রতি প্রমাণ বড়ী করিতে হইবে। ইছাকে শাসকাসচিভাগনি করে। পিশ্পনী ও মধুর সহিত এই উবৰ সেব্য করিতে হয়। ইছা খারা শ্লান ও কাল বিষ্ট হয়।

শবংগর সহিত বাঁটি সর্বপ্ত তৈন বিশাইরা বক্তর্বে সেক দিছে।
খাদ রোগের ভাস বইরা থাকে।.

## वर्भाविक्यमा ।

বোৰাকসভূপ ভ্ৰানতে হাকিয়া বলবারে বলিতে বর্ষ করিছে। বিদ্যাতিত হংয়া বাকে।

বরাকটকীর যুলের ছাল কোন দিয়া কিবা কাঁজিয়ারা পোবণ করিয়া বারে অলেপ দিবে আর নরাকটকীর মুলের ছাল ও বিটলবণ পুট ই এরা একর পোবণ করুত অলেপ দিলে সঞ্চশ্রকার অর্লরোগ বিদ্যুক্ত শার।

্ৰোঘাকনের চূর্ণ এড়ের জনো পাক করিয়া মেই চূর্ণ যার। বর্তি অক্ত করত মেই বর্তি মধবারে দিলে অর্গ বিনাপ আরু হয়।

া ভেলা ও তিল সংগরিষাণে যিজিও করিয়া সেক্ষ করিলে অর্শক্ষেপি বিবাশ পাইয়া পারে।

তপারির সহিত তালসূলীর লিকড় চিখাইরা খাইলে অর্ণরোহে। বিশেষ উপান্যর দর্শে।

'হরিদুর্ভ ব বনসাবিজের জাঁটা মিজিত করত এলেপ দিলে জর্গ বিশাস পার।

্ধোল্ডশ্রেলে উপকারী, কিন্তু উহা খাওলেঘাজনিও অর্গে বিশেষ ক্ষমায়ক ব

চারিজাগ রননিশুর, বাঁচ জাগ নোহাগা, ও পাঁচ জাগ জন এই ক্ষম দুবা একর যিশিও করিয়া খেও পুনর্শবার রসে তিন দিন স্থা কিরনে জাবনা দিতেছইবে। পরে ছই রতি প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔবধ অর্পরোগের অঞ্চলকরণ, ইহাছারা বাড়ইশামা রোগ্ড প্রমান হয়।

আঁইতোলা মাধন, আঁইতোলা চিনিং ছাই আমা শিপানীচুর এই আঁইতোলা হরীতনীচুর্ব এই করেকটা এবা অর্ছপোলা লীতন জন্মে নিভিত্ত করিলা প্রতিদিন নেবন করিবে। এই উম্ম ঘারী এক সম্ভাহ মধ্যে অর্লরোল প্রাজিত হয়।

একটা বা একথণ্ড ওলের গালে উত্তৰত্বশে সৃতিকার কেশ দিক্তে পরে দেই ওপ অবদে দুই করিবে, উত্তৰত্বশ দুই বইলে ওপ বাছির করিয়া খাঁটি সহিষার তৈল ও লুখণ দিজিত করিয়ালেবন করিবে। দিল ক্ষেত্র এইরপ করিলে অর্থ রোগ বিশাশ শার।

একভাগ রুস্সিল্র। একভাগ অত, একভাগ দ্বাহীরক, একভাগ ভায়, একভাগ কাছলেছি এবং এই সমত এবোর সমান গালুক এই সম্ভ একত্তিত করিরা ভেলার রুসে একদিন মর্মন করিখে। উভয়মণে মর্মিত ইইলে ঘুই রুভি এমাণ বড়ী প্রস্তুত করিরা সইবে। ইহাকে চল্লাকরস বলে। ইহাবারা সমল প্রকার অর্শ বিনক্ত

ইরিভাল ও অপাদারের লিকড়ের কার এই ছই এবা একজে উত্তযরপে বর্গন করিয়া ভদ্ধারা নেশ এবান করিলে বছদিনের শিক্ষার্শ বিনাশ পাইরা থাকে।

তিন সের কলের মধ্যে এক হটাক বুলকুঁড়ির পাতা বিষা তাঁহা ক্লিছ করিবে। উত্তদরণ নিছ হইলে এ কলের খেল এবান করিলে অর্পরোগ আরোগ্য হয়।

বিট্নবৰ্ণ ও ঘণানীচুৰ্গ এই ছুই জন্য বোলের সহিত লেখন করিলে । আর্লরোগীর কোষ্ঠ পরিষার হল ও বিশেব উপকার দর্শে।

পাঁচতোলা ভাঁচ, পাঁচতোলা পিপালী, পাঁচতোলা দরীচ, চারি ভোলা মাগেষর, ভিন ভোলা ভেজপত্ত, ছুইভোলা গুড়মক্, একডোলা এলাইচনীজ, এই সকল জন্মের চুর্ণ এবং এই সমস্ত জনোর সমান ভিমি এই সমস্ত জন্ম একজ বিভিত করিয়া একটা পাত্তে ছাপম করিবে। আটমানা পারিমাণে এই ঔবধ সেবন করিতে হয়, গাঁরম জন ইয়ার অফুর্নিনি

ে বাদ পরিত্যানীয় শর গুলনেশে মুবার যুখ একান করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

অভ্যন্ত অন্নপোয়া ভুক্লিবার স্থাস সেবন করিলে অর্থরোধ্যে বিলেশ উপকার হয়।

## প্রমেহচিকিৎনা +

ছইডোলা আমলকীর বল, তুই মাবা ছারপ্রাচুর্ব ও তুই আহা এপ্র একর মিত্রিত করিয়া লেহন করিলে প্রয়েছ রোগে বিশেষ উপকার सर्ग ।

 একাসর অশের সহিত এক:পারা কাঁচা গোছয় শেবন করিলে धारम् पारतागा स्त ।

🍎 কৃত পার্দ, বাং, অর্জুমহাল ও চিনি এই চারি আরা সমস্তাগে লইরা বোট ভুই তোলা করিবে। পরে পাক্ষনীর রবে উহা জাট গ্রহর পর্যান্ত উত্তয়রশে মর্কন করিয়া চারি রাডি প্রমাণ এক একটা বটা প্রস্তুত করিবে। এই বটী সেধনে প্রয়েছ আরোগ্য হয়,এডস্ক্রিয় একডোলা গুদক্ষের ছাল মধু সহ বাটিয়া লিছে প্রলেশ দিতে হয় !

চারি জানা পরিমিত মধুর সহিত এক আমা ওজনে অন্তর্কর পালে। লেখন করিলে প্রথমছ রোগ পরাজিত হইয়া থাতে।

क्षरमह द्वारगद अर्थगादशाय नाहुद जानिका स्निव्ह जनरमरो উন্ধ জন্মের নেক নিতে হয়। বদি পিডের আধিকা দেখা বার, ভাষা ছটলে বিরেচন করাইবে আর যদি শেখার আহিক্য দৃষ্ট হয়, ভাছা बहेटल यमन कतान निर्धत ।

বেশার শিক্ষত অথবা ডিলবাটা কিয়া খেড চলন বাটিয়া শরীরে র্নেপন করিবে। বাহাতে কোর্ছ পরিছার বয়, তরূপ ঔবধ সেবন করাইবের উষ্ণ রুপান করাইতে বর, কিন্তু উহা একবার মাত্র বলক · কেওয়া চাই ৷ সভা য়ত কিঞ্চিৎ উভা করিয়া সেবন কয়াইতে হয়-সভ্যাত ইক্রমণ মেখনীর। একোন কিম্বিম ও ভূমি কুমানের রুগ পের। পিকর্মতি এমেছের অধ্যাবভার এই নকন ছার। विद्याद डेलकान् मटर्न ।

যদি মেঘাজনা আনেং জাত্ত, তাত্তা হইলে তাঁচ, চিজাবুল, निश्नमी, निश्ननीयुन ७ है एवर जबन जबा सम्बाहन नर्मा (मार्ड ছইডোলা করিবে। পরে ব্যত্তিশ ভোলা জলে ঐ সকল জব্য দিল।

পাক করিবে। আটিভোলা অধনিক থাকিতে উহা নাঘাইয়া সাথিতে হয়। উহা পান করিলে কফজনিত প্রমেতে বিশেষ উপকার দর্শে।

ৰুণী, ভাকুলিয়া, শালণাণি ও কণ্টকারী এই সকল তাব। স্মৃতাংশ সইয়া নেটি দুইভোলা করিবে। পারে অংশবরত হাগালের মাধ্যের বহিত এ সকল তাবা পাক করিব। সেই যুব ছাঁকিয়া কইতে ব্য়। এ যুব পাল করিবে বায়ুক্তনিত প্রদেহরোগ প্রশান্ত হইয়া থাকে।

পাঁচরতি শিশাক্তপু কিঞিৎ মধুর সহিত মিজিত করিয়া প্রত্যন্থ দুইবার সেবন করিবে। এক স্প্রাহ্ এইরপ করিলে শুক্রবৃদ্ধিজনিত প্রমেহ রোগ প্রশাস্ত হইয়া থাকে।

পূঁই গাছের একটা মূল উৎকৃষ্টরূপে বাটিয়া এক পোয়া জলে মিশা-ইয়া পান করিবে। অনস্তর কাঁচা কলারের ডাইল ডিজাইরা ভাষা, চিনির সহিত মিজিত কর্ড ভোজন করিবে। ইহাবারা তিব সিবস ব্যো প্রমেষ রোগ পরাজিত হয়।

আছলকীচুৰ্ চারিরতি দইয়া কিঞিৎ মধুর সহিত মিলিত করত। কেবিল করিলে প্রমেষ বিব্*ড* হয় ।।

গোটাকত কাৰাবচিনি, আর্হি গাদ ও মিছরি এই তিন তবা একটপোত্রে রাখিলা ভাছাতে এক ছটাক লগ দিলা রাত্রে এক ছানে ছাপ্র করিবে। প্রভাতে উছা সেবন করিলে অসাধ্য প্রবেশক বিনাশ প্রাপ্ত হল।

আর্থ্য ছটাক মদিনা গর্ম জনে বিজাইরা প্রাত্যকারে দেই জন্ম দেবৰ করিলে দূত্র প্রমেহ দুরীভূত হয়।

লাউবীজের মধ্যে যে শাঁস পাকে, একটা পাথরে জনযোগে নেই। শাঁস মর্থণ পুরুক সেই জল পান করিলে গুমেহ রেগ দুরীভূত হয়।

হুই আনা পরিমাণে ছরিতাচূর্ণ ও একতোলা আগদকীর রম এই ছুই এবা একত করিয়া কিঞিং শর্করার কহিত গ্রেবন করিলে যে কোনরপ প্রমেষ্ট ছুউক্ বা কেন আরোগা ছুইবে।

ছুই তোদা বটের বুরি একডোলা কাঁচা গোহুছের দহিত সেহুছ করিলে প্রমেহ বিন্দ্র্য হয়।

শ্বই তোলা শক্ষুদীর রস অর্থগোরা গ্রাহ হারের সহিত নিজা ব্যক্তিক নক্ষ্য অধ্যান অন্তর্গাণ্য হইনা থাকে। বিবিতোল। পরিমাণে ছলপান্তের ওঁটো কইবা পরিভ্ত শিলার বা হামানদিতার অন্ধাইটো করিবে। পরে একটা ভূতন দৃতিকাশাত্রে এক ইটাক জল দিয়া ভাষার দথো ঐ ওঁটো কেলিয়া রাজে শিশিরে রামিয়া দিখে। প্রভাবের উহা হাঁকিয়া সেই জল পান করিতে হয়। বহা ভারা এক স্থাহ যথো প্রান্তেক হুইয়া থাকে।

্ৰিনা জলে হিঞালাকের রস হই তোলা বাহির করিয়া আদ শোরা কাঁচা গণ্য হুছের সহিত উহা সেবন করিবে। ইহা ছারা শানেহজনিত প্রজাবের ঘাতনা বিদ্রিত হয়।

হুই আনা ওজনে কাঁচা হরিপ্রাচূর্ণ ও একতোলা আমলকার রস এই হুই অব্য চারি আনা ওজনে মধুর সহিত এক সপ্তাহ দেবন করিলে বর্জপ্রকার প্রায়ের রোগ প্রকৃষিত হয়।

এক আনা উৎকৃত গাঁদ ও ছাই আনা আইসখেওছার মূল এই ছাই জব্য একতে পেবণ করত ছাইটা বড়ী প্রস্তুত করিবে। ছাই বারে প্রতিদিন এইরণ ছাইটা বড়ী গোনন করিতে হয়। ইহা বারা অংশদিনের বাংগাই প্রজাবের জালা হ্রাস হাইরা বার এবং ক্রেমণাঃ প্রজাব বারে ক্য ছাইবা আরোগা হাইরা থাকে।

হুই ওলা পরিবাবে দেখিততা ও দুই ওলা পরিবাবে লবত এই দুই জবা একজ করিব। বজড়ু মুরের রসের সহিত দেখন করিলে প্রমেৎ শেষিত হইবা থাকে।

একটা মেরাপাতি ভাবের মুখ কাটিয়া ভাষার মধ্যে ছুই আমা জ্ঞানে কপূঁর কেলিয়া দিয়া রাত্রে শিলিয়ে রাধিবে, পর্দিদ প্রভাতে গেই জন সমস্ত পান করিতে হর। ইছা ছারা সম্য প্রয়েছ পারোমা ক্রি কিন্তু শরীরের, ফ্যাবন বিবেচনার দিবে; কারণ স্কীণ্যল হইকে ক্রেমার ২৪ ফ্টা অক্টান থাকিবার সম্ভব।

শব্দি হটাক তেলপাতার ভাঁটা শব্দিশারা জনে ডিজাইরা রাধিবে। থাতে নেই-জন পান করিতে হয়। এইরূপ এক সপ্তাহ শেবন করিনেই খাহেই প্রশাস্ত হয়।

সূত্রকৃত্র চিকিৎসা।

মরীত্রী। বৌপার, সোলার, কুল্প কলার, বিলুহাদ। হ্রালভা বই সকল,এবঃ এতোকে লাভাইশ রভি, সমত অধ্যের চুর্ব একল করিয়া চারিশন জনে হুত্ অধি সন্তাশে শাক করিবে। এক পর্ন অবশিক্ট থাকিতে নাবাইয়া হাঁকিয়া চারিরতি বনু অক্ষেপ দিয়া পেই জন দেবন করিকে সর্বাঞ্জনার মূত্রকানু রোগ প্রশান্ত হয়।

তিন রতি শিশাক্ষত্ন কিঞ্চিৎ সধুর সন্থিত মিজিত করিরা লেছন করিলে শুক্তবিবৃদ্ধিকনিত যুৱারুক্ত্ব পরাঞ্জিত হয়।

পুই রতি পৌহতক কিঞ্চিৎ মধুর সহিত বেহন করিলে মুদ্ধরুছু, রোগে বিশেষ উপভার বর্লে।

দুই তোলা আমলকীর রস ও দুই আনা হরিদুট্ এই হুই দুরা কিঞ্চিৎ বধুর সহিত নিশাইনা সেব্দ করিলে ,ব্যায়ন্দু প্রশাস্ত হুইরা বাকে।

বৰকার ও চিনি এই দুই দুবা সমতাগে বিশিত করিয়া সেবশ করিলে যুক্তরুচ্ছালো বিশেষ উপকার হয়।

কিন্দিৎ কানীর চিনির সহিত এক গোয়া ছানার জন বিভিত্ত করিছা দেবন কয়িলে সর্বাধানার মূমকুন্দু প্রদান্ত হয়।

একভোলা গোপার ও একভোলা কটকারি এই দুই দুবা একজ করিরা অর্থনের জলে সিভ করিবে, অর্থনোরা অবশিক্ট বাজিতে মার্যাইয়া বাব করেক বাতানা দিয়া নেই অল সেবৰ করিলে মুজ্জুন্তু, রোগ এপার হয়।

গোক্রের কার্থ প্রস্তুত করত তাখার সহিত তিম রতি ববকার দিশাইরা বেবন করিবে। এইরশ করিলে প্রীবেশনিত মূত্তুক্ প্রশাস্ত হয়।

একভোলা ক্ৰীকারীর রস কিঞ্চিৎ গগুর সহিত বিলাইয়া সেব্ন ক্রিলে যুক্তরুজ্বুরোগ আরোগ্য হুইগা থাকে।

আমনকীর চূর্ব চারি আনা ও এড় চারি আনা এই দূই দুব্য একর নিজিত করিয়া নেবম করিদে ব্রঃজ্বু রোগ এশান্ত হর।

অর্কতোলা আফলার চূর্ব এক হটাক অঞাদুবের সহিত সেখন করিলে স্তক্ষত্র প্রশান্ত হয়।

গেরাছনের গাছের পাড়া আদিরা ছেঁটিয়া অর্থপোরা রূম করিছে। কিন্তু ভাষাতে জন কিয়া ছেঁটিকে না। প্রভার প্রভাতে জন্ম কিছ সাহারের পূর্বে নেই দ্রম সেবন করিতে হয়। তিল্পিন এইরপ সেব্ধ ক্রিলে মুক্তুনত, প্রশাস্ত হয়।

টেকশের (বাহাকে হিন্দিতে ভিণ্ডিখনে) গাছের দিকত পর্ক্ত ভোগা বাটিয়া চন্দনের ন্যায় করত ভাষার সহিত কিঞ্চিৎ কাশীর টিমি মিজিত করিয়া সেবন করিবে। ইহা হারা এক স্থাহ মধ্যে মুজ্জু প্রথাত হয়।

# মূত্রাঘাত চিকিৎনা।

পুৰতোৰা শ্যাৰীক ও চক্ষিপ যায় সৈত্ত্ব একৰে কাঁজির সহিত বাৰ্টিয়া নেৰন করিলে সর্বাহ্বাহাও প্রশান্ত হয়।

ভালদুলীর কাৰ প্রস্তুত করত তাহার সহিত হত, তৈল ও দুদ্ধ মিশাইলা লেগন করিলে গুড়াবাত রোগো বিশেষ উপকার দর্গো !

বানুকের দ্বার্থ প্রস্তুত করত তাহার সহিত চারি রতি শিশা**কতু** বিশাইয়া র্মেবন করিলে মুকোবাত আরোগ্য হইরা বাকে!

থকটা পরিষ্ঠ পাত্রে কিঞ্চিৎ জল দিরা ভর্ষো কিছু বুছুৰ দিরা রাজে শিশিরে রাখিনে। শর্দিন প্রভাতে উহা দেবন করিতে বুরু, ইয়া বারা সুবাহাতে উপকার দর্শে।

দিশি কুখাণ্ডের জলের সহিও তিনির সর্থত করত ব্যক্তার বিধিত করিয়া সেখন করিশে, মুত্রাখাত প্রশ্বিত হয়। ব্যক্তারের যাতা সল হাইতে তিশা।

রুসমিন্দ্র, অন্ধ ও গান্তক, সমভাগো দাইরা মধুর স্থিত মর্কন করিবে। এই উষধ এক মাধা পরিমাণে দেবন করিতে হয়। মধু ইবার অহুপাম। ইহারারা মুলাবাত ও বহুমুল রোগ প্রশান্ত হয়। মজুছুবুর চুবু এক কর্ম মধুর সহিত মিলিড করিয়া তারা এই উব্ধের অহুপানার্থ প্রযোগ করিলে অথবা এই উষধ দেবনান্তে তারা দেহন করিলে আন্তেউপকার দর্শে।

## অব্যরী বা পার্থারচিকিৎদা।

মুই জালা গোজুর্বীজচুণ, জন্মতোলা চিনি ও জন্ম পোলা যেনের মুখ এই ভিন জন্ম একজ করিয়া সেন্দ করিলে জন্মরীরোগ জারোগ্য মইলা পাকে। পোরক চাকুনিতা ও তানমুনী এই হুই তথ্য বাটিয়া থাকি জনের নৃষ্ঠি নেবন করিলে অবিদ্ধে পাথরি রোগ বিনাল আঞ হয়।

্ একডোলা দুখা ও একডোলা চিনি এই মুই ন্নব্য একন বিভিত্ত করিয়া কেবৰ করিলে পাখরিরোগ আরোগ্য হয়।

বৰণ রক্ষের হাল দুই তোলা কইয়া চারিপল জলে কিছ করিবে। একপল অবশিকী বালিতে নামাইয়া চারি মালা প্রাতন ওড় তাহার সহিত বিশাইয়া কিঞিৎ উক্ত বালিতে বালিতে সেবন করিলে পাশরি রোগ বিনাল প্রাপ্ত হয়।

অন্ধনের জলে অন্ধতোলা সজিনীর শিক্তের ছাল সিম্ব করিছে। জন্মশোষা অবশিক থাকিতে নামাইয়া সেই জল গেবন করিলে পাথরি রোগ বিনাশ পার।

ছুই ভোশা পক ভিতৰাউর রস ও চারি রতি ববকার এই দুই জব্য একজ করিরা কিথি চিনির সহিত নেখন করিলে শাখরিরোগ রিদাশ পাইরা খাতেঃ

একডোলা মসিমা রাত্রিকালে এক হটাক গর্ম জলে ভিজাইন। রাখিবে। প্রদিন গ্রাভ্রকালে গ্রাক্তর দেবন করিলে পাধরী বিনষ্ট হয়।

কিঞ্চিৎ মধুর সহিত চারি রতি যবকার সের্ম করিলে পার্বরী রোগে উপকার দর্শে।

চারি জানা যবকার ও চারি জানা নারিকেলের রূপ এই পূই- এবা অন্দের সহিত বর্গন করিরা সেবন করিবে। ইহা দারা লাভ দিনের মধ্যে পার্থরি প্রশান্ত হইরা বাকে।

একতোলা সন্ধিনার ছালের চূর্ব প্রোতন গুড়ের সাইত নিমিত করিহা দেবন করিলে অখারী অর্থাৎ পাধরী রোগ প্রশ্বতি হয়।

বহুমূত্র চিকিৎসা।

খাৰকলায় চূৰ্ব, বক্তিমধুচূৰ ও দধু এই তিন ত্ৰব্য সমভাবে প্ৰছৰ পুৰবিক দেবন করিলে বভ্যুত্ত স্থোগি গুলান্ত হয় ।

থক্তবুর চূর্ব গরু এই দুই ক্রা একবিত করত তদ্বারা লেগ প্রকান করিলে ধঙ্গুর রোগ দুরীভূত হর। অর্থনের হথের সাহিত কলপাতা আনতা গুলিরা দেই দুও এক অংকরের মধ্যে তিনবারে পাদ করিবে, এইরপ করিবেই বছবুর রোগ দুরীভূত হইরা থাকে।

উৎকৃষ্ট য়ত মধ্যে কল্পুৰুৰ ভালিবা পাইলে বছৰুৰ রোগে বিশেষ উপকার দর্শে।

দুইতোলা আৰদকীর রস বধুর সহিত খিজিত করিয়া প্রতিদিন দুইবার বা তিববংর সেবন করিলে বত্যুত্র রোগ প্রশান্ত হয়।

চারি খানা পরিনিত কুখুম রাত্তিকালে জলে ভিজাইরা রাখিবে-পরে প্রভাতে নেই জনের সহিত চারি খানা পরিমিত উৎকৃষ্ট যথু মিজিত করিয়া দেবন করিলে বহুমুত্রোগ অপাত হয়।

ত অন্ধিতোকা কাঁড়ডের বীক ও দুই আনা পরিষাধে দৈছৰ এই দুই প্রবাং একল্ল করত জন দিয়া দেবৰ করিবে।

া চারি ভরি খাঁদঞ্চ ও চারি ভরি চাউলভালাচ্প এই দুই একা একর করিলা রাজিকালে বেবন করিলে বহুমুত অশাক্ষ হয়।

ক্কতিৰ ভাষাও পুরতিব গুড় এই দুই এবা একত করিয়া প্রতাহ সেধন করিলে বছনুত্র রোগ প্রশান্ত হয় ঃ

ছপত চাট্যকলা, ভূমিকুদাবের মুসচূর্ব ও শতাবরীচূর্ব এই সকল এবা একত করিয়া তৎসদপরিষাণ ছবের স্থিত নৈষ্দ করিলে শত্যুত্ত রোগ বিশাপ পাইয়া খাকে।

#### শতীয়ার চিকিৎসা।

বনিয়া, মুখা, পাখরকুচি, ইক্রেছৰ ও মোচরস এই সমস্ক জুব্য একতা করিয়া কাথ অস্তুত করত সেবন করিলে অতীসার রোগ প্রশাস্ত হয়।

হয়ীত্বী, দেবদাক, বচ, পুৰা, আতিস, এই সকল জব্য থাত্যেক ভিনৰাৰা পরিবাৰে দাইয়া চারিপল জলে সিদ্ধ করিবে, একপল শেষ থাকিতে নাসাইয়া বিশ্বিৎ শুক্তী চূর্ব প্রকেশ দিয়া সেবন করিলে আসা ভীসার নিবারণ হয়।

তাঁঠ ও শনিবা এই দুই জবা প্রত্যেকে একডোলা পান্ধিয়ারে কইবা চুর্ব করত অর্দ্ধনের ভালে নিম করিবে। অর্দ্ধনের অংশিক পালিতে নাবাইনা ঐ জল হাঁকিয়া নেখন করিতে হয়। দ্ধ বা পরিপার বিদের শাস চিমির পানার মহিত সেবন করিটো অভিযার নিধারিত হয়।

আটমান। বেলভাঁট পেবন পূর্ত্তক একপোরা ছাগছবের সহিত লিছকরিয়া ভূকা বজ্রখণ্ডে হাঁকিবে। পরে চিনি, নোচরম ও ইক্সবব এই তিন জব্য সমভাগে দইরা মোট চারি মাবা করত সেই মুখ্রের শুহিত মিখাইরা সেবন করিলে রভাতীসার বিনাশ পায়।

আৰু কাম ও আৰ্থকী পাডার রস মুই তোলা কিঞ্চিৎ মধুর সহিত বিশ্বিত করিয়া সেবন করিলে রক্ষাতীসার দুরীমূত মইলা মাকে ৷

পোধন বালা, বেলভাঁঠ, বেণামূল, বিয়াজান্তান বলিয়া, মুখান শুন্তী, ও বাইকুল এই সমস্ত কেব্য সমস্তাগে দইয়া গোট ছুইডোলা করিবে। পারে বজিপ ভোলা জলে উহা সিম্ব করিয়া আটভোলা অবলিইই বাকিতে নামাইবে। এই হল সেবৰ করিলে সর্বা প্রকার অভীসাম শালি হয়।

কৃষ্ণি মুধা ছেঁচিয়া দেড় পোরা জন ও জর্কপোরং ছাগছডের সহিত সিম্ব করিবে। জর্জপোরা মাত্র অবশিক্ট থাকিতে নামাইরা ইাকিয়া সেই জন মেবন করিলে আমাতীসার প্রশান্ত হয়।

অন্ধতোলা কাঁটা নটে পেষণ পূর্মান্ত তণ্ডু লক্তনের মহিত সেংব করিলে রক্তাতীসার দুরীভূত হইবা খালে। ধংক্তম বিবেচনার সিকি মান্তা কাঁটানটে এবণ করিতে খন্ন।

শুলী, নুধা, ধনিয়া, বেলগুঁচ, বাদা ও আজিন এই সকল ত্রুগ্র সমস্তাগো লইরা ঘোট ছুই ভোলা করিবে। উহা বজিল ভোলা জনে নিম্ম করিয়া আট ভোলা অবন্ধিত থাকিতে নামাইতে হয়। এই কাথ মেখন করিলে আমাজীয়ার ও তৎসহ বজ্রবা ধিনাল প্রাপ্ত হইরা বাকে।

ধনিরা, যব ও পদ্তা এই তিন রাধ্যের **কাপ প্রভত করত** নেবন করিকে অতীকার ও বদম নিবারিত হয়।

ইন্রথবের কার্য প্রস্তুত করিয়া সেব্য করিলে শিকাতীদার দুয়ীভূত হুইয়া থাকে i

মুখা, কুটজের হাল,হরিন্রা ও আজিস এই করেক এব্য দিলিত করিয়া ইহার কাশ প্রজত করত দেবন করিলে রক্তাতীসার হিলাখ পাল্ল। ক্ষিত্র সম্ভোজত দৰির সহিত ক্ষম তোলা জয়িত্রি শেষণ করিপ্লা একটি কাঁচা সাড়িষের রসের সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিলে জতী-নার প্রশাস্ত হয়।

ব্যেলা গাছের কুঁড়ি এক সিকি পরিয়াণে সইয়া কিঞ্চিৎ চিনিব্র সহিত মন্ত্র পূর্বক সেবন করিলে রক্তাতীসার বিনাশ পাইয়া ধাকে।

কচি বিলু স্থ করিয়া ভাষার শন্য হুইভোলাও হুইভোলা ইস্কুঞ্ এই উত্তর ত্রব্য বিভিত্ত করিয়া সেবন করিলে আমাশার প্রশান্ত ছুইয়াবাকে।

ওঠী, আৰুনাদি, বরীতকী ও ইজ্রয়র এই কলেক প্রয়া মিজিড করিলা স্কার্য প্রস্তুত করত সেবদ করিলে আযাতীসার বংস হইলা যাত্র।

্আন্ত্রের অস্থি, বেলপ্ত চিন্দাঞ্চিরে খোদা, কুউজ ছাল,মুণা এই স্কল্ এক্যের কাশ্যেনন করিলে। স্বকাতীমার দুরীভূত হয়।

ছুইভোলা পরিষ্ঠে গান্ধাইণের প্যভার রল দেবদ করিলে সামালর বিমাল পার।

মোচর্ম, মুধা, ভঠী, আক্যাদিশ্ব, ধাইপুঞা এই সকল জব্য নমভাগে শইরা বশুর কহিত বিভিত করত কেইন করিলে কর্মগ্রকার নতীসারের নিবৃত্তি হয়।

## অগ্নিমান্যচিকিৎনা।

ছর যাবা বরীতকী, হর মাবা শুঁঠ, ও হর মাঘা চিনি এই তিম আবা একতা পেবৰ করতঃ সেবন করিলে ককজমিত মন্দায়ি বিমাশ পাঠ্যা থাকে।

ছুইভোগা শথাড়াছ দেবুর রূসে কিছাইরা প্রভাব চারি রতি প্রবাধ দেবৰ করিবে। প্রভাতে ও বৈকালে ছুইবার সেবন করিতে হর। শীতন লগ ইছার অন্তপান।

একভোদা ঘৰানী ও একভোদা ওছী চূর্ব করত এক শোরা উচ্চ দেল পাঁচ দও পর্যন্ত ভিজাইয়া রাখিবে ৷ পরে কেই কল দেহন বিলে কলায়ি, অজীর্ব ও উদক্ষীতি আহোগা হয় ৷

তিৰ বৃতি হৈছ, এক আলা ব্যানী ও চুই আনা ব্যাস এই তিব প্ৰৱা

একত্র পোষণ করত বিট্ কবণের সহিত দোবন করিকে এলুনামি ও অজীব বিসুরিত হয় :

্বর ৩ বংকারচুর বে'লের সহিত বিভিত করত থোলার গরিব করিয়া ক্ষেও প্রদাস করিশে বিশেষ উপকার দর্গে।

্ভগী, শিলাদী ও সিছি এই তিন এব্য সহতাগে **গ্রহণ পৃথা**ক চূর্ব করিছে। সম্বাকালে চারি আনা পরিবাণে উহা সেবন করিশে সন্মান্তি বিনাশ প্রাক্তি হয়। শীতদ জন ইহার অসুপান।

সিকি পরিষিত শ্রমানীর স্থিত হুই আ্যা সৈত্ত্ব সেধন করিছে। অনেক উপকার দর্শে।

পুদীনা, বিট্দাবন, হরীতকী, চিতামুদ, দোহাগার থৈ, নিকটু।
বহানী, হোটএলাইচ এই সকল জবা প্রত্যাকে অন্ত্তোলা আহন
পুর্মক চুর্গ করিয়া শেবুর রুদে ভিজাইরা রাখিবে। প্রতিদিন ইহার
দশরতি দেবন করিলে স্পায়ি রোগে বিশেষ উপকার হয়। শীতদ
কল ইহার অত্পান।

পিপানী ও হরীত্রীর ভাষ প্রস্তুত করত ভাষার সহিত কর্নতোলা সৈত্ব বিভিত্ত করিয়া দেবন করিলে সন্দায়ি বিনাশ পাইয়া বাবে।

পিপানি, হরীতকী, চিতাযুল ও দৈশ্বর এই সকল এবা সক ভাগে গ্রহণ পূর্মক চূর্ণ করিয়া গ্রহ জলের সহিত সেখন করিছে ক্যায়ি বিশাশ পার।

শিশ্পদী ও হরীতকী কাঁজিতে সিম্ম করিয়া সৈহবের সহিত হেবন করিলে মন্দায়ি বিদ্যান হয়, অজীৰ বিনাশ পার এবং শুম উজ্ঞার হলৈ তাহাও দুরীভূত হইয়া থাকে।

এই রোগে সমাধির রক্ষা করিতে হর। বিষয়ায়ি হইলে বার্থকন করিবে। তীক্ষাধির শিশু শান্তি করা বিধের এবং দলাগ্নিতে কক ক্ষোধন করিখে হর।

সৈত্বৰ, হরীচকী, শিশ্পদী, মুখা, চিতামূল এই সকল এবা সমভাগে এহণ করত চূর্ণ করিয়া চারিমানা পরিষিত গর্ম জলের সাহিত্য শেষন করিলে মনায়ি: দূরাভূত হইয়া থাকে।

# ্ৰজীৰ্চিকিৎনা।

তঠী ও ধনির্বা এই হই প্রব্যের কবি প্রস্তুত করিয়া দেবৰ করিনে। সামাজীর্ব বিনাশ পাইয়া থাকে।

প্রতিপ লাল পান দার। বিদ্যানীপে বিলেব উপকার দর্শে।

শুই আনা লোহাগার বৈচ্প, এক আনা পাণড়ি খরের চ্প, ও শুই আনা চা বড়ি চ্প, এই কয় এবা একত করিয়া আডপতত্তের জনের সহিত চারি রাডি পরিয়াণে সেবন করিলে স্থীপ রোগ প্রশাস্ত হর।

শুর্তী, শিপানী, হিং, কৈশ্বৰ ও মনীচ এই সৰত ক্রবা সমভাগে আহন পূর্বক শেষণ করত উমন্তে লেগ এবান করিনা নিজিত হইলে মন্ত্রতীয় অজীর্ণ বিনাশ শার ।

্শতাৰ প্ৰান্তে সুণের জল লেবন করিলে বিশেষ উপকার দর্শো। পুঞাভাতে গালোখান পূর্বাক মুখ খেতি মা করিয়া প্রয়ে বাসি জল পাম করিলে অস্ত্রীর্ণ রোগা বিবারিত হয়।

বিট্যবণ দুইআনা ও জাজি হরীতকী চূর্প দুই আনা এই দুই এবা একর মিজিত করিলা রাজিকালে সেবন করিলে সর্বপ্রেকার অজীর্থ প্রশাস্ত হয়।

্ একডোলা শুন্ধী ও একডোলা ধনিয়া আৰ্ছ সের জনে সিছ করিয়া আৰ্ছ পোয়া অবলিট পাকিতে মামাইবে। ঐ জন সেবন দারা অজীব রোল বিনাল পার।

অনেকে বলিয়া থাকেন যে, এইছাতে আন, পূর্বকি নিট্রিত হইলে। অন্তীর্ব রোগে বিশেষ উপকার সংখি।

শ্রন্থা, হরীতকী, দৈশ্বৰ, হিং, দেবদাক ও কুড় এই সকল এবা ভালিতে পেষণ করিরা পেটের উপর প্রদেশ দিবে। যদি অন্তীর্ণরোগে পেট স্ফাপিরা পাকে এবং বেদনা বাকে, তাহা হইলে ইয়া স্বাস্থা প্রদান বিত হয়।

দুই শাবা দৈয়েৰ এবং লবন্ধ, বৰাৰী, কৰ্নুৱ, ও জীৱা এই সকল এবা অভোক এক কানা পরিবাধে দইয়া একত করত প্রভাহ প্রভাতে নেবন করিবে। যকলার, ত্রিকলা, হোট এলাইচ, নৈত্বর, প্রেমা, বিট্নবর্ণ, থে বি, বিকটু, মোহাগারিও এই সকল এবং প্রেচেকে এক তোলা পরিমানে এহণ পূর্বক চূর্ব করত কাগজী নেরুর রুসে ভিজাইরা রাখিবে। এক রতি পরিমানে এই ঔষধ সেবম করিতে হর। শীওল অল ইবার জন্মণাম।

#### ক্ষিচিকিৎসা।

দুই তোলা বিভ্লচূৰ কিঞ্জিও বধুর সহিত দিখিত করিয়া সেব্যু করিলে ক্ষিরোগ নাই হয়।

একতোলা মুখার রল দেবন করিলে জিমি রোগে বিলেব **উপকার** সংশ্।

শাংক শাংকর রল দুই ভোলা পরিমাণে নইরা কিঞ্চিৎ বধুর সহিত মিজিত করিয়া দেবন করিলে জিমিংরোগ ধংস হয়।

় চারিখানা পরিধিত নিধুর স্থিত পালি**ডা বাদারের প্**ররুত জনতোলা যিশিত করত সেবন করিবে।

প্রত্যাহ প্রত্যাতে প্রদাশবীজ চারি আমা দইরা খোলের সহিত মর্ক্তর পুর্বক সেবল করিলে জিমি রোগ বিদাশ পার।

ধর্ম পরের রলের সহিত ক্রিণ্ড দবন প্রক্রেণ দিয়া সেংখ করিলে জিমিরোগ ধংস হয় :

টাট্কা প্লাশ্ৰীজ মধুস্থ শেষণ পূৰ্বাক সেবৰ করিলে ক্ষিরোটন উপকার দর্শে।

নারিকেলের জল সধুর সহিত সেবৰ করিলে হুমি বিনাশ পার। আনারসের পাতার রম এতাই অর্ছহটাক হিসাবে তিমবিল সেবল করিলে হুমি ধংস হইরা ধাকে।

চারিতোলা নেধুর মূল ও চারিতোলা খর্জ রপজের রুদ একজ ক্র লেখন করিলে ক্রমি বিমাশ পায়।

ভেঁতুৰ পাতার কাই কিৰিরোগে বিশেষ উপকারী। এক হটাক চুগের কল ও এক হটাক বাসি ক্র করিয়া বেৰম করিলে কৃষি ধংগু পার। মূৰ জোলা কাঁচা ওপারি পেষণ কয়ত একপদ পরিমিত দেখুর বুল মিলিত করিয়া দেখৰ করিবে ৷

তাঁঠ, বেনতাঁঠ, বাদা, সেত অপরাজিতা মূন, বিমৃক্তক্, আর্কুন ছান, অর্কুনত্ন, বিভূক, ধুনা, গুগ্গুস এই সকল দ্রন্য প্রত্যেশে সমস্তানো এখন করত একট চুর্ণ করিবে। উচ্চ জনের সহিত ইছার চারি মানা প্রতাহ মেধন করিনে ভূমিরোগ বিনাশ পাল।

এক রতি গোমর ও ছুই রতি ইক্তৃত একত করিয়া বড়ী প্রস্তুত করিবে। বধন ক্রমিল্লনিত বেদনা উপস্থিত হইবে, তথম জন হারা টুহা সেবন করিতে হয়।

ঋষ্টোর। প্রশাশ বীজের রুম কিঞ্চিৎ যধুর সহিত মি্ত্রিজ ক্রিয়া মেবন করিলে ক্মিরোগ বিমাশ পার।

শর্কুরপতের কাপ প্রস্তুত করিবা রাখিবে। তৎপরদিন দেই কাথের জাহিত কিঞ্ছিৎ মধু মিজিত করিবা সেবন করিলে ফুমিরোণ বিদ্রিত হয়।

এক সিকি বিভ্ৰের লাঁক এবং অব্জোলা দাড়ির গাছের মূলের হাল এই ছই এবং জল হার। উৎস্কৌরণে পেৰণ পূর্বক মধুর সহিত মিলাইয়া সেবন করিলে কোওঁছ হুমি ধংস পার।

এক ছটাক পদ্ধিষাণে ভাটপাতার রস প্রত্যহ সেবন করিলে বিশেষ উপকার হয়।

্ একডোলা চুপের' জলের সহিত একডোলা পাবারনের পাডার রস জ্বেম করিলে বাবভার কৃষি বিদাশ পার।

এক আনা পরিষিত বিভ্লের শাসচূর্ণ ও কিঞ্চিৎ বয়ু থকত। যিকিত করিয়া দেবন করিলে জিবি বিশাপ পাইয়া থাকে।

হুইভোলা আল্ছেওড়ার পাতার রল দেবন করিলে জিডি জিলাশ পার।

কভোষা শাক্তেশাকের রস। একভোষা কেউরের রস এবং লোমহু এই তিব প্রব্য একল দিলিত করিব। দেবন করিকে শেশাইরাথাকে।

> েবে শ্বা ক্ষে কেই প্রার গাছের পাতার রন ক্রটাক এরও তৈব ও এক হটাক নারিকেল সুভ

এই মন্ত্রেক প্রের একজ করির। সেবন করিলে ভূমিক্ষণিত বেগনা বিহ্নাল পায় এবং মলের সহিত ভূমি নির্মাত হুইরা গাকে।

একপদ তাজের সহিত হুইভোলা ভিতনাউৰীজনূৰ্ পেৰণ কর্জ সেবন করিলে কৃষি বিনাশ শার।

ছুইতোলা বচ, ছুইতোলা বিজন ও ছুইতোলা নিমছান একত্ত করক জনে নিম করিবে। সেই জন লাগ্লীরে মার্লনা করিলে ভূমি বিনাশঃ পাইয়া বাবে।

ত্র্যাতঃবালে থোরাসামি ব্যাক্ষীর সহিত কিঞ্চিৎ সৈত্বৰ স্বেৰৰ করিলে ক্রিমিরোগ বিনাশ পাইলা থাকে।

গর্ম কলের সাইত উচ্চে শাতার রস দেবন করিশে জিমি বিমাশ পার।

প্রভাব নোমরাজের বীজ পর্যন্ত হাক জনের সহিত সেবন করিলে ভিনদিনের বংগা জিমি বিনাশ পাইলা থাকে।

অর্দ্ধনের জলের সহিও ছুই তোকা দাজিব মূলের ছাল দিছা করও আদশোয়া অবলিউ থাকিতে নামাইবে। সেই জল প্রত্যাহ ভিনবায়ে কেবন করিতে হয়। ভিনদিন মধ্যে ক্রিমিরোগ প্রশাস্ত হয়।

শীতদ জনের সহিত চারি আনা পরিমিত ব্যানীচুর্ণ দেশন করিকে ক্ষমি সকল বংগ হইয়া থাকে।

মবকার, হরীওকী, সৈম্বর বিভ্নন ও গুণারোচনী এই সকল জবা তক্তের সহিত পেষ্ণ করত দেবৰ করিলে ক্রমিরোণ বিশ্বল পার।

প্রাশ্বীক ধ্যানী, ব্যধ্যানী, বিকলা এই স্কল প্রব্য স্থভার্নে প্রহণ করত যত হবলৈ, তাহার ফর্ছেক বিভ্রম্বীক প্রহণ করিছে। এই স্থক্ত অব্যান্ধ্ করিয়া গ্রম কলের সহিত স্বেব করিলে ফুলি বিদাশ পার।

## পাঞ্জ জ কামলা চিকিৎসা।

রাষিকানে দেখিপাতা জনে ভিজাইর। রানিমা ভাষার পর দিবস প্রভাতে অর্দ্ধতোদা পরিমিত ইক্,গুড়ের সহিত পেষণ পূর্বাক দেবন ক্রিলে পাতু ও ক্ষিণারোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইরা খাকে। - চারি আনা ডেউড়ীচূর্ধ ও অন্ধতোলা চিমি এই মুই এখা একজ করিয়া প্রাতঃকালে দীওল জলের সহিত সেবন করিলে ভিন্বার খা চারিবার ডেদ হইয়া পীঙ্ ও কামলা রোগ বিনাশ পায়।

ৰোধাকন চূৰ করিল। ভাছার মাল গ্রহণ করিকে বিশেষ উপকার মর্লে।

 কিঞ্চিৎ মর্র সহিত হই আন। পরিমিত দাকহরিদ্রাচূর্ব দেবন করিলে কামলা ও পাওু ধংল হইরা থাকে ।

🕆 কাকরোপ শিকড়ের রস বাছির করিয়া সেই রস যারা দক্ষজ্যণ করিবে পাত্ ও কাধলা বিনাধ পার।

বিকটু, ক্ষাতিল ও শেষিভাষ এই সকল দুবা সমপ্রিয়াণে গ্রহণ কির্থিয় যত ছইবেন তত পরিমাণ অন্যাক্ষিকচুপ গ্রহণ করিবে। পরে সমস্ত দুবা একত করিয়া মধু সহযোগে মর্মন পূর্মক মোদক গুল্লত করিবে। এই মোদক যারা নিংসংখ্য কাষ্লা ও পাতু বিমাশ গ্রাপ্ত ছয়। বরংক্রম ও রোগের অবস্থাদি বিবেচনার সূথ আনা বা চারি আনা পরিষাণে এই যোদক দেবন করাই বিধের।

শ্বেণ প্রশের রস বাহির করিগা তদ্বারা চল্পে অঞ্ন অসান করিনে বিশেষ উপকার দর্গো।

প্রতিদিন প্রাভাকালে চারি আনা চিনির সহিত হুই আনা তেউট্টাচূর্ণ নিজিত করিয়া সেবন করিলে পাঞ্ ও কামনা বিনাশ প্রাক্ত হয়। রোগীর বর্জেন জন্প হইকে এক জানা তেউড়ীচূর ও ছুই আনা চিনি প্রবণ করিবে।

্ৰয়ীতকী ও এড় এই দুই দুব্য প্ৰত্যহ সেধন করিলেও বিশেষ উপকার দর্শে।

চিনি, আৰলা, ত্রিকট্, ইউ, গেছিচ্পু, মধু ও ছরিজা এই সকল জব্য সমভাগে অহণ করিয়া সেবন করিলে পাতু ও কামনা বিনাক পার। নেবনের পরিমাণ অভিভোগা।

প্রথমতঃ অনন্ত মূদের ভাগ প্রস্তুত-করিরা তাহার সহিত তিব রুতি নিলাদল দিলিত করিবে। প্রতাই উহা সেবন ক্রিলে অচির্কাদ বংগ্রই পাওুও কাবলা বিবাশ পার। ত্রিকলার কার্ম প্রস্তুত করিতা ভাষা মধুর সহিত সেমন করিলে। বিশেষ উপকার হয়।

নিম্ছাল, দাক ছরিজা- তিম্পা ও গুলঞ্ এই সকল এখোর রূপ বাহির করিরা প্রভাই প্রভাতে সেবন করিলে পাতু ও কামণা রোগ দুরীভূত হয় !

ছুই রতি বা তিন রতি উত্তম মধ্যুক্ত প্রত্যত সেবন করিলে কামলা। রোগ বংস হয়। একতোলা খেত প্নির্বার রূপ ইছার অভূপান।

অন্ধিতোলা মধু ও ছ্ইতোলা গুলঞ্চদ এই উভয় প্রব্য একটিত ক্ষিয়া প্রত্যন্ত লেবন ক্ষিলে বিশেষ উপক্ষি দর্লে।

গোরক চাতুনিয়া ও তেউড়ীর শিকড়ের চূর্ব এই ছুই এবা চিনির মহিত একভিত করিয়া সেংন করিলে আতাকল দর্শিহা শাকে।

ত্রিকলা, বিভ্লা বিকট্ন দাক ছরিতার ছাল ও লেছিডার এই ক্ষুব ক্ষুব্য সম্ভাগে গ্রহণ পূর্মক চুর্ব করিখে। পরে ঐ সকল চুর্ব শিক্তিক করিলা দেবন করিলে অচিরে পাঞ্ ও কাষণা বিনাশ পার। সেবনের পরিমাণ বয়কেব বিবেচনার মুই আনা বা চারি আনা। অন্নপান মধু।

গিরিমানী, হরিছা ও আমনা এই তিন ত্রব্য সমভার্ণে প্রহণ পূর্বাফ চূর্ণ করিবে। শীতদ জনের রহিও উহা সেবন করিকে পাঙ্ ও কামলা রোগ বিনাশ পাইরা থাকে। সেবনের মাত্রা অনিভালা।

দাক হরিরার চূর্ব ও বেও চন্দন সহতাগে এহণ পূর্বক মধুদ্র সহিত যিখিত করিয়া লেহন করিলে বিশেষ উপদার দর্শে। মুই আ্না অধ্যা চারি আনা মালা ঔষধের পরিমাণ জানিবে।

আমন্ত, হরিল্লা ও নিরিমাটী এই সকল এবা সম্ভাগে গ্রহণ পুর্বক চুর্ব করিলা মধুর দহিত মিজিত করত মেত্রে জগ্রন প্রকান করিলে নিশ্বের উপকার হয়।

নাধারণতঃ বাতিক পাত রোগে থিক ক্রিকা, পিতকনিত রোগে শীক্রল ক্রিনা। কফজনিত রোগে উচ্চ ও রক্ষকিরা এখং ফিলা পাত। রোগে দিখিত ক্রিয়ার অস্ঠান করা সর্বতোভাবে বিধের।

## हिक् । छ वसन हिकिथ्ना ।

কিঞিএ মধুধ সহিত এক আমা পরিমিত মনুরপুক্ততা কেবন করিলে হিকাও বয়ন রোগ প্রশাস্ত হবরা বাকে।

চারি আনা চিনি, ছুইডোলা টাপা কলার, বাছের শিক্ডের রস আবং হল রতি হল্লাচচুর্ এই ডিন**্জব্য একল নিন্মিত করিলা সেবন** করিশে বিশেষ্ট্রণকার দর্শে।

া কিঞ্চিৎ দয়ুর সম্ভিত কলা গাছের শিক্ষ্যের রল একভোলা নেবন করিলে আও বিকা প্রশমিত হবুরা থাকে।

রক্তচন্দ্রের সহিত ভনছ্য অধবা আগতার জল দিশাইয়া তদ্ধারা ব'ত এখন করিলে আভ কল প্রাপ্ত হওরা বার।

বহেড়া কল চূর্ব করিয়া চারি জানা পরিখাণে গুরুণ পূর্বক ভাষার সাহিত কিঞ্চিৎ মরু যিশাইয়া ভাষা লেহন করিলে হিভারোগ প্রলাঘিত ভইয়া থাকে, ইয়া দায়া আস রোগেও যিলেম উপকার হয়।

শেছরের মাতি নিকি মাতা আহণ পূর্বক পেষণ করিয়া মধুর সহিত মিশাইয়া ক্ষেন করিলে বে কোনরপ হিলা বাংমন ইউক না কেন, আরোগ্য হইবে।

কুলের বীজের শাঁদ এবং থৈচুব এই ছুই জব্য পুদ্য পরিষার অহণ পুর্বাক সমুর বহিত দিলাইরা লেহৰ করিলে হিন্ধা প্রাণাস্ত হর।

কেশিরার শিক্ত চূর্ব করির। সেই চূর্ব মধুর সহিত ব্রিঞ্জিজ করত লেছন করিলে বিলেব উপকার হয়।

পেটের উপর তৈব মাধাইরা উক্ত বেদ প্রদান করিলে হিকা বিনাশ পাইরা থাকে।

চিনিং আমনাচ্ৰ, শুঠীচ্ৰ ও শিকাৰীচ্ৰ এই সকল এবা জুলা পৰি-নালে গ্ৰহণ পূৰ্বক মধুসহবোগে নেহন কৰিলে হিকা প্ৰশামিত ছইয়া বাকে ৷

থকতোলা পটলের রলের সহিত কিঞিৎ পরিষাণে স্থুমিলিত করিয়া সেবন করিলে কম্ম নিবারণ হইয়া থাকে।

ভ্ৰম্প্ৰের সৰিও দক্ষিকার বিষ্ঠা বিভিন্ত করিয়া ভয়ারা দক্ষ শ্রেষ্প করিলে বিষ্কা প্রশাষত হয়। একভোষা শুঠী, অৰ্দ্ধশোরা ছামীছ্য এবং অৰ্দ্ধশোরা জন এই সকল দ্রব্য একত্র করির। সিম করিবে। অর্দ্ধশোরা অবশিষ্ট বাহিতে সামাইতে হয়। ইহা সেবন করিলে হিলা রোগ গুলাত হইরা পাকে।

আল্তার জন হারা নক এইণ করিলে হিভারেটেগ বিশেষ উপকার সর্লিয়া থাকে।

আৰ্থ পিরিমাটী ও কট্কী এই ঘুই এবা তুলা পরিমাণে লইর। হর্মন পূর্বক মধুর সহিত লেহন করিলে হিকা দুরীভূত বইর। থাকে।

একতোলা টাবালেরের রস, ছই আনা সচল লবণ এবং অর্দ্ধতোলা মধু এই সকল দুব্য একর বিজিত করিয়া সেবন করিলে হিলা দুরীজুত হইরা থাকেঃ

তাৰাকপাডা বেলপে কোটে, দেইরপে হরিতার পাত। কুটির। ভাষার ধুম শান করিলে অভি হত্তর হিকাও দুরীভূত হয় ।

ছুইডোলা পরিষিত ইক্রমনচূর্ণ দইরা সধুর সহিত মিলিত করত লেহন করিলে যে কোনমণ হিকা ইউক্না কেন আরোগা হইবে। ইছা হারা খাসরোগেও বিশেষ উপকার দর্শে।

মুড়ি জিলান লগ দেবনে এই রোগে বিশেষ উপকার দর্শে। 🐊

হৈ, সুনের বীজের শাস এবং রসাঞ্জন এই কর এবা সমভাগো গ্রহণ পূর্বক চূর্ণ করিয়া মধুদা সহিত দিলিত করত পেহন করিলে বিশেষ উপকার হয় ৷

ধুই আনা শিশপদীচুর্ণ ও এক জানা মহরগৃত্য কম এই চুই জব্য একজ করিয়া মহুর সহিত মৈলিত করত গেহন করিলে হিছা রোগ প্রশান্ত হয়। হুতার স্বাসরোগেও ইহা হারা বিশেষ উপকার সর্লো।

তানশানের জন পান করিনে সচিরে হ্তর হিবা **এশান্ত হুইরা** থাকে।

গোৰমরীচচুর্থ কিঞাৎ চিমির স্থিত মিজিত করত বারমায় মুখে দিলে যে কোনরপ হিকাই হউক্ না কেন, সুরীভূত হয়।

একভোলা আনারসের পাতার রস কিঞ্চিৎ শর্করার সহিত বিশাইর। সেরব করিলে হিকারোগ দুরীভূত হইলা থাকে। ১

এক হটাক গণ্য হ্য ও এক হটাক ভাবের জল একত করিয়া সেংক ক্রিলে হিলা প্রলাভ মইয়া থাকে : থেত চল্পন কল্ক হুই সানা, ছুই,তোল। আছ্লকী রস্থ কিঞ্ছিৎ অধু এই তিন এবা একত করিয়া দেৱন করিলে ব্যন্ত বিকা নিহা-রিড ছইরা থাকে।

বিড্ল, শিশানী, কুড়, বিশ্বিশ্ আফলা ও কুলের বীজের শাঁম এই সকল এবা জুলা পরিমাণে এবণ পূর্মক চূর্ণ করিয়া কিজিৎ মন্ত্র কিঞ্চিৎ চিনির সহিত মিশাইড়া দেহন করিলে হিকা দুরী-ফুত হইটা থাকে।

যেরপে ভাষাক দেবন করে, সেই রপে কলিকার গাৰ্কনার কাজিরা ভাষার ধৃষ্পান করিলে ছিকা রোগ প্রশান্ত হয়।

শিশালীচুৰ্ ও ধেছরের যাবি এই ছই এব্য তুল্য পরিষাধে শইরা কিন্দিৎ বধুর সহিত বিভিন্ত করত দেবন করিলে হিকা দুরীকৃত এইরা থাকে।

চারি আনা শিশ্পনীচুর্গ, হুই আনা মন্ত্রগুক্ ভাত্ম ও চারি আনা বধু এই তিন ক্রম একজ করিয়া বেছন করিলে হিন্দা অপাত হয়।

এক আনা পরিমানে শ্রাণীজের দাঁাস সইরা ভাষা পেষণ পূর্বক কিঞ্চিৎ মধুর সাহিত সিখাইয়া সেবন করিলে হিকা ও ব্যব রোগ নিবারিত হয়।

প্রথমতঃ একটি নারিকেলের দানা আগুণে পোড়াইবে। পরে সেই আলাটী থীরে খীরে ছুলিরা খীতল অলের মধ্যে নিজেপ করিবে। অমন্তর কিরৎক্ষণ পরে সেই ক্ষল ছাঁকিরা মান্যটী কেপিরা দিবে। অম তোলা মধুর সহিত সেই ক্ষল পান করিবে। কিঞিৎ কিঞ্চিৎ করিয়া পাঁচ সাত্রারে পান করিতে হর। ইছা হারা সর্বাঞ্চার হিকা প্রশাস্ত হইরা খানে।

আইতোলা ৰেও দৰ'প পেহণ পূৰ্মক আইসের হলে সিক করিতে হয়। অধ্যান আই দ্বী অপ্য অপ্য অধ্যান গায়ৰ করিবে। পরে কেই এক বছে ই কিয়া পান করিলে হজর হিকা দ্রীকৃত হইলা আছে। আই হটাক হিলাবে প্রতিদিন তিনবার বা চারিবার পান করিতে হয়।

া ৰোদানা নাল্লিকেন্দের নানা ছাগীপ্রস্তের সহিত বর্ষণ করত ভাষার এক ভোলা অহণ করিবে এবং ভাষার সহিত প্লই প্রভি রসমাণিক 🙊 চারি আনা চিনি মিলিত করিলা দেশন করিলে হিকা রোণ দ্রীভূজ ক্রা থাকে।

মরীর, ভূড় ও যবকার এই তিন এবোর চূর্ণ সমভাগে লইরা গার্ম জনের সহিত্ত দেবন করিলে হত্তর হিঞা রোগ এশাস্ত হয়।

ে কিন্ধিৎ চিনির সহিত দুই যায়া পরিয়িত বড় এলাইচের চূর্ব বিজি**ত** ক্রিয়া নেবৰ করিলে হিজা রোগো বিশেষ উপকার দর্গে।

ওঠী ও হরীতকী এই ছই অব্যের চূর্ব সমভাগে গ্রহণ করত গার্থজন্মের সহিত দিশাইয়া সেবদ করিলে হিকা রোমে বিশ্বের উপকার হয়।

কিঞ্চিৎ নৈত্বের সহিত হুইতোলা পরিবাশে আমার্থের রুগ সেবল করিলে হিলা পুরীফুত হয়। বহঃক্ষম ও রোগের প্রাবলা বিবেচনার তিন বা চারি তোলা রুস প্রহণ করিবে।

এক পাতা আন্তার জলের সহিত অন্ধতোলা চিনি ও একচীক নাজিবরস বিজিত করিয়া সেবন করিলে হিলা রোগে বিশেব উপকার নুচর্ব।

পুরাতন থড়ের সহিত শিশানীচুর্ব হিচ্ছিত হরিয়া ওদ্যারা নয়। শ্রহণ করিদে বিভা রোগ দুরীভূত হবৈয় থাকে।

# শুল ও পরিগামশুল চিকিৎনা।

শুক্রবং ব্যাদক ক্রেক্তিরা এই সকল পুনরেন্ত্রীর পাকে উপকারী বিশেষতঃ বাসুত্রধান পুনে উপ্রতিকা করিতে হয় ৷

র্ত্তেত্তের ছালের কার ও আপাদের কার এই এই জবা একজ করিয়া জন দিয়া মেবন করিলে শুলরোগে উপকার দর্শে।

শানুকের থোলা তথ্য করিয়া নেই তথ্য বর্জেন ও প্রকৃতি বিবেচনার বার বইতে চলিশ রতি শর্যান্ত থাহণ করিবে। গ্রন জনের সহিত দেই তথ্য সেবন করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

ইজন্বের কার্থ প্রস্তুত করত নেই কার্যের সহিত হুই রুভি বা ভিন রুভি হিং ও হুই রুভি বা ভিন রুভি নে বিক্লি লবণ দিশাইছা সেবন করিলে আমহান সূরীভূত হয় ৷ স্থাত পশুর বা পানীর মাংলের বৃষ দেবন হারা পূল রোগীর বিশেব উপকার কর্মেঃ কিন্তু কোন কোন চিকিংসক উহা অহিতকর ব্যাস্থাকেন!

যে সকল ঔষণ ছারা অরিবৃত্তি হয়, আমনোধ নত করে এবং প্রীরে বলাধান হয়, সেই সকল ঔষধ দেবৰ ছারা আধশুল নিধায়িত হইবা থাকে।

শভাহ হুইতোলা শতহুগীর রুস নেখন করিলে পি**ডজনিত** খুসরোগ সুরীভূত্ হল এবং ভশানিত দাহও বিবাশ পাই**য়া** বাবে।

ৰদি পুনৱোগী সভাত কল হইনা যান এবং সভাত দাহ উপস্থিত ক্ষা ভাষা হইলে মনচূৰ্বের পালো শীতল করিনা ভাষার সহিত কিঞ্চিৎ মধু অন্দেশ পূৰ্কক লেবন করিবে।

চারি দায়া মধুর মহিত চারি তোলা শতমুলীর রস সেবন করিলে। কুলবেদনা এশান্ত ঘইনা পাকে।

পুশ্রেরেণ বমন ও বিরেচন করান আবস্তান বোধ ইইলে ডিজ ও
প্রধার ক্রবা ছারা বসনাদি করাইডে হয়।

হিন্দ ও সেবির্জন লবণ এই ছুই এবা একত্র যিজিত করিয়া সেবৰ করিলে শুনরোগে উপকার দর্শে।

তঠী, গৈছৰ, ঘৰানী ও হরীজকী এই চারি ত্রয় পুল্পরিয়াণে আহণ পুর্মক ভূপ করিরা প্রভাব দেই চূর্ব গুই আনা বা চারি আনা ব বারিয়াণে দেশন করিলে অচিয়ে পুলরোগ দুরীজুত হইরা গাকে।

• ওঠী, চৈ, শিশালী ও শিশালীমূল এই সকল এবার কার্য অজ্ঞত করত তাহার সহিত কিঞ্জি সধু দিশাইসা দেবন করিলে সৈতিকী পরিগামখুল বিভূরিত হয়।

ভিষের পুটনী গর্ম করিয়া ভাষা পেটের উপর চানবা ভবিষে বাভিক শুল প্রশাস্ত হয়।

গোজুর, যক্তিনধু, কুশবুল, শতমুলী ও বেড়েলা এই সকল এবা সংক্রাণে নইনা গোট ছই ভোলা করিবে। পরে অর্ক্রনের জলে এ সকল এবা নিত্ত করিবা অর্ক্স পোনা অবশিক্ত থাকিতে উজোলন পূর্বাক ভাষা দেখন করিলে পুলরোগা দুরীভূত হয়। ক্সন্থানের রুস মুই তোকার সহিত কিঞ্জিৎ মধু মিশাইছা সেবন করিলে ক্ষক্তনিত পুলারোগ প্রশান্ত হয়। প্রভাতে দেবন করাই নিধি।

হরিশের শৃক্ষ অন্তর্গুমে তাম করিতে হর। নেই জাম তিন রাজি কইরা গান্য স্থান্তের সহিত মিশিত করত দেহন করিলে কন্পুন আরোগ্য-কইরা থাকে।

ৰমানী, গৈছৰ, হরীতকী ও তাঁচ এই সকল এবা আতোকে চলিল রতি পার্যাণে এহন পুর্বাক একত করিবা চারি পাল কলে নিছা করত একপন অবশিক্ত বাকিতে নামাইবে। চল্লিল রতি মধু প্রক্রেশ বিয়া উহা সেবন করিবে শুনরোগ অশান্ত হয়।

চারি রতি মরীচ, চারি রতি ভগী, চারি রতি পিশাদী, চারি রতি মৈন্তব, বার রতি শব্ধ ক্ষম এবং দুই রতি ছিল এই সকল প্রবা একত করিয়া উক্ত মালের সহিত পাদ করিলে জিলোধজ্যিত সুলরোগ বিদ্বিত হইরা থাকে।

মত্র, যুত ও জিফলা এই তিন এবা মধুর সহিত মিশাইরা নেহম ক্রিলে শুনরোগ বিমাশ পাইরা বাকে।

কুড়চুৰ নৈদ্ধবের সহিত দেবৰ করিলে পুলরোগ বিদ্রিত হয়।
হরীত্বী, শিশেলী, তঠী, গুলঞ্চ, বহেড়া, শতন্ত্রী ও দরীত এই
কক্ষেত্রা সমভাগে এহণ পূর্বাক মোট দুই ভোলা করিয়া অন্ধ্যের
জনে নিছ করত অন্ধ্রণোরা অবলিক্ত থাকিতে নাধাইবে। তহা
দেবৰ করিনে শৈত্রিক প্রিণাধ শুন বিদ্রিত হয়।

ওঠী একডোলা। ওড় দুইভোলা ও ত্রিপভোলা তিল এই সকল ক্রয় একত্রে দুর্ভের সহিত পাক করির। সেবন করিলে পরিনামপুল আরোগা হইছা থাকে।

হোলল নেবুর কার্য প্রজ্ঞত করির। তাহার সহিত দুই আ্যা সৌবর্জন লবণ ও কিঞ্জিৎ বধু যিখাইরা সেবন করিলে পার্যপূত্র, ফুলপুন ও বজিপুন বিনাশ পাইরা থাকে।

তিগভন্ম শুঠী, বৃষ্টিনগু, ব্রীডকী, বহেড়া, দৈয়াব, আমদকী ভ শিশালী এই সকল অবোর চূর্প সমতাগে লইরা ডাহায় সহিত কিঞ্ছিত ইত ও কিঞ্ছিৎ মধু মিজিড করত দেহন করিলে পুনরোগ বিদ্যুত্তি ইইরা বাকে, কিন্তু এই ঔষধ দেবনাকে সুক্ত পাম করা বিশ্লেম শোহত্র', হরীতকীচ্ণ' ও অগ'বাকিকজন্ম এই সমূল জন্য সমভাবে নইয়া য়তের সহিত সেবৰ করিলে সর্বপ্রকার পুনের বিয়তি হয় 1

তিমাধ রতি শালুক ভাষা বাহিশোর। কলের সহিত শিক্ষ করিয়ণ
লেবৰ করিলে পরিধানপুণকনিত বৈদন। নিবারিত হয়।
ৄ

এক ভোলা গুঠী। একতোলা এরণ্ডের লিকড়, এই ছুই এবা একত্ত করিয়া ৩২ ডোলা জলে নিম্ম করত আঁটডোলা অবলিট খাকিতে নামা। ইয়া ছুই বুতি হিন্দু ও যাম্পা রুতি নাচল প্রণ উহার সৃষ্টিত শিক্ষিত ক্ষমত সেবন করিলে বাডিক খুল বিনাপ পায়।

শৃতৰূপীর রস মধুর মহিও দিখিত করিবা প্রভাতকালে সেবন ভারিলে শৈতিক প্রাধানিকাশ পার।

৩৯ শিলানী, শিলানীর শিক্ষ, চিতার শিক্ষ, চৈ এবং তিন প্রকার নবন অর্থাৎ সৈত্রৰ বিট্ ও সচল পবন এই সকল প্রবের। প্রত্যেকের হক্ষা চূর্ব এক আনা শরিষাণে থাইন করত গার্ম জলের বাহিত বিশাইরা সেবন করিলে অন্পদিনের মবোই পুল রোগ বিনাশ পাইরা থাকে।

কিঞ্চিৎ সে বিষ্ঠান লখণে লখণের ছিপ্তণ তিভিড়ীকার,তিভিড়ীকারের বিশ্বণ জীরা এবং জীরার বিশুণ মরীচ এই সকল এবা গ্রহণ করত টাবা লেবুর রলে মর্মন করত চারি রতি প্রায়ণ বটিবা করিছা লেবন করিলে লীকাই শুলরোগ নিমাল পাইরা থাকে।

## তৃকা চিকিৎদা ৷

বরক মুখে রাখিলে তৃকারোগে বিশেষ উপকার দর্শে।
আপল পরিষাণে বার বার কাঁজি দেবন করিলে তৃকা নিবারণ হর।
বসন করাইলে তৃকারোগের শান্তি হর, কিছ করজ তৃকার নতে।
'বাটিবসু ও কিল্ নিল এই গুই তাবা একত করিয়া লীভান জলের
বিশ্ব সেবন করিলে তৃকা নিবাল পাইয়া থাকে।

া মউরিদ্ধ প্রটণী করিয়া ভাষা পিরিছ্ত জলে। ভিজাইয়া নেটু প্রটণী পুরুঃ পুনুহ চুবিলে ভূজা বিনাল পায়। নঠী, কিশ যিন্ বভিষ্থ ধই, আনন্তমুদ ও পিশেনী এই সকল ক্রব্য সিভ করিয়া সেই মঞ নেবন করিলে গুজারোগে বিশেষ উপকার সর্মে।

ক্ষিত্র পরিছ্ত দীতন জনে গোটাকত মউরি ভিজাইরা রাখিটো নেইজন একটু একটু পান করিলে ভূজার নিয়ন্তি হয়।

ত একঞ্চের রুস করিয়া সেই রুস একজোলা পরিষাণে সেবৰ করিলৈ ভূঞা বিনাল পার।

হুপক ছুবুরের রল একতোলা দোবন করিলে ভ্ঞারোগে বিশেষ উপভার দর্শে।

কতকগুলি কাৰাৰচিনি শরিষ্ঠ জলে নিখ করিয়া নেই জল বার্থার পান করিলে ভূকা নিবারিত হয়।

আন্দের কচি পাতা জলে সিম্ব করিবা সেই জলের সহিত ক্ষাঞ্চিৎ মাধু মিজিত কয়ত সেবন করিলে ভূকা রোগের উপশব হইচা বাজে, বসম রোগেও উহা হারা বিশেষ উপকার হয়।

গান্তারীর কার্থ প্রস্তুত করিয়া সেই কাবের সহিত কিঞ্চিৎ শর্কর। বিশ্বিত করত সেবদ করিলে তৃষ্ণায়োগ বিনাশ গাইনা বাঞ্চে।

জাদের করি পাতা পরিষ্ঠ জলে সিদ্ধ করিয়া সেই জনের সহিত বনু মিজিত করত দেবন করিলে তৃফা রোগ বিনাশ পরিষা পারেন, ইয়া-বারা বনন রোগেও বিশেষ উপকার হয়।

দাদখানি চালের ভাত রান্ধিরা দেই তাতের নহিত কিকি-মণু বিভিত্ত করত দেবন করিলে তৃষ্ণা ধংগ হইয়া থাছে।

শসার আঁতি আর্থাৎ বাহাকে বুকা কছে, তাহার জন নির্মত করিছ। সেই জন কিঞ্চিৎ কিঞিৎ পরিপাণে বার বার পান করিলে ডুকা রোগা বিনাশ পার।

ষ্টিনশু বটের বাুরি লোড কাই। চিনি, দাছিব ও দশু এই স্কল দ্রবা একত পেঁবণ পূর্বকৈ ওওুলোদকের সহিত সেবন করিলে ভ্রুটা বিনাশ পার। ইয়া ছাঙ্কা বহন রোগেও বিশেষ উপকার হয়।

ক্ষিত্র কৰিও চিনি নিজিত করিয়া নেখন করিলে তৃকা রোগে বিশেষ উপকার দর্গে। ক্রমার বন্ধ করের ক্ষা, বধুন হ্রা, ইক্রুস, সীখু এবং সন্যাব্য কর ক্রোর রন হারা প্রত্ব গ্রহণ ক্রিলে তৃকা বিমাশ পার। ভালুগোরে ইহা বিশেষ উপকারী।

বাহার। মুর্বান, বাহাদের দেই কক্ষ, তাহাদের তৃথা রোগ হইলে স্থ সংখ্যুর রুস সেবন করাইবে, ছাগাবাগ্যের শীতন মূব ভাষাদের শক্ষে বিশেষ উপক্ষারী।

পুৰ টক আমানী ৰান্তা কুলমুচা কন্নিলে তৃকা নোগো আভ উপকার সূত্রে ।

বিগণাড়া সিম্ব করিয়া সেই জন পর্য থাকিতে থাকিতে সেক। ভারিলে ককল ভূকা নিবারিত হয় ধনং ইবা দারা বৈপুন লমিত ভূকা প্রশা মিত হবাম থাকে।

শীতন জনের সহিত হিকিৎ হথু যিজিও করিবা নেকৰ করিলে বয়ন ছইরা ভূঞা নিবারণ হয়, বিশ্ব আফট পারিবানে পান করা বিধের।

ভাবের কল এবং ডালশারের কল ছকা নিবারক।

রাত্রিকালে এক দের উভজনে আদ পোলা হৈ ভিজাইরা রাখিবে। অভাতে দেই কল হাঁকিলা ভাষার সধিত চারি যাবা চিনিং চারিবাবা কল। চারি যাবা বধুও এবং চারিবাবা গাভারীকনচূর্ব বিশিত করও দেবন করিলে। ভজা বিবারণ কর।

নীলোংশল মধু বটের ছুরি, খই ও হুড় এই নকল জব্য মর্ছন পূর্বক লেই চুর্ব চালি আনা পারিমাণে মুখে রাখিলে ড্কা বিদ্যিত হইছা থাকে।

পিশালী শিশালী মুগ, বেলউ'ট, চই মূল ও অভ্যরণাতা এই সক। পুরা সমভাগে অহণ পূর্জন লোট ছুই ভোলা করিবে। পারে অর্ছসের জলের সাইত উহা সিম্ব করিয়া অর্জ পোরা অবশিক্ত থাকিতে নামাইয়া পার করিলে ভুকা বিসুদ্ধিত হইয়া ধাকে।

ৈ হোট এনাইছের গোনা নিম করিলা নেই কন এক চাম্চে বা ছু চাম্চে করিলা পান করিলে ভূজা বিদ্রিত বইরা গাকে।

ইবনের মধ্যের সহিত মধু ও বাঁড় গুড় নিজিত করিয়া লেবৰ করিছে ভূকা বিনাশ পায় ! মধু, দাড়িছ ও টাবা দেখুর পাশের থেই একদ দুবা একজে প্রেন পুর্ব করদ করিলে যে কোনরপ ভ্রা ইউক্লা কেন্দ্র-অপনিত ধ্রীয়েঃ

প্রথমতঃ জন উষ্ণ করিরা নেই জনের মধ্যে কিন্তিৎ চানিকেশ করিবে। যথম জনেতে চার কর নির্গত হইবে, তুরুম নেই জনের কথিছ কিঞ্চিৎ মধ্য চিনি চা মিজি মিলাইয়া নেধন করিলে অচিরে ভূকারোগ প্রশাস হবয়া বার :

অমু, শত্র বা কাবশাভার রতের সহিত বধু মিনিত করিমা গ্রুব করিলে ডকুবরা ভূজা রোগ বিশাশিত ছা।

#### चक्रि डिक्टिमा

সার্চিমি, সুধা, এলাইচ ও ধনিধা এই সকল মুদ্য সমভানে এইগ বুর্মক একতে চর্গ করিয়া নেই চুর্গ মূবে রাখিলে অফচি বিনাশ পাইছা বাবে ।

সরীচ্য পুলীমান পায় ভেঁতুল ও সৈত্বৰ এই সকল দুব্য সমভাগে **অবশ** পুনীক মাৰ্কন করত ভাষা দেখন করিলে অকটি বিনাল পায় !

পূৰা। আৰম্ভনী ও দারটিনি এই তিন সুবা সমতাগে অহণ পূৰ্মীক চুৰ্ব কমিৰে: ঐ চুৰ্ব বুৰ্বে মাৰিলে অকচি বিদান পাইয়া থাকে।

আহার করিবার এতে বোলহার। কবল অর্থাৎ কুলসূচা করিছা তৎ-পারে আহার করিলে অকচি বিনাশ পাইয়া বাকে।

কার্ডিনি, কেবদাক, আমলকী, শিশালী ও চৈ এই সকল গ্রা সমস্তারে আহণ পূর্বাক চূর্ব করিয়া নেই চূর্ব বুবো রারিলে অকচি রোগ অধানিত কয়াঃ

া এক পোরা মিহরি ও অর্থা নের পক্ষ থাকের রস এই মুই দুবা স্থানে চড়াইলা রস প্রস্তুত করিতে বর । সেই রলের সহিত এক হটাক গোলাণ কল শিলিত করিবে। অন্তঃহ অর্থা হটাক পরিখাণে ঐ প্রল-লেবৰ করিলে অফচি বলায়ি ও অজীপ অস্থিত হইনা বছকে।

আহার করিবার পূর্বে জিলাতে জীরা ভাজার চূর্ব করণ পূর্বত তজ্ঞের কবল করিবা পরে আহার করিবে। এইরপ করিলে অ্কা বিদাশ পার।

# শাসুর্বেয়োক পরীকিত সুচিনোগ।

উৎকৃত্তী যুহজাত বছা যোগ জীয়া কোন্তম যাল্লা সংগ্রন্থ করিয়া সেখন বিলে অফ্টি বিনাশ পাইনা থাকে।

শনার পাতা কদলীপান্তবারা জড়াইছা কলার খোলার ছোটা বারা বিশ পূর্মক অগ্নিতে নয় করিবে। উপরের হুদলীপান্ত দত্ত হুইলে অর্থাত ললাপাতা দা পোড়ে, এইমপে পোড়াইছা সেই শসাপাতার সহিত্ত তেপ ও ক্ষর নিজিত করত ভোজন করিবার পূর্মে ছুই আদে বা ডিন্ট্রার্স লঙ্ক কর তাহা ভক্ষণ করিবে। এইউপ করিখে অচিরে অক্টি রোগ লভারন করে।

মউরোলা বংশ্রের বৃদ্ধের সাহিত আদার রস বা আমকলের রস মিলিড করিয়া সেবৰ করিলে অঞ্চি বিনাপা গার।

# इक्विकिथ्ना ।

যবিত থেত চৰম ছুই তোলা, আমদকীর রস চারি ভোলা ধবং মধু চারি মাখা এই তিন দুবা একত করিয়া দেবন করিলে ছর্নিয়োগ বিনাশ পাইরা থাকে।

মন্ত্ৰীচ কন্ত্ৰন, জানকন ও পিশ্ৰনী এই নকন দুবা সম্ভাগে অহণ পৃথাক চূৰ্ব কন্তিনা সেই চূৰ্ব মধুন্ত সহিত বিভিত কয়ত লেখন উন্নিৰে ক্ৰিয়োধা বংগ ক্ট্ৰা কাকে।

খেত চন্দান বেণাবুল, বালা, ভগী ও বালকের হাল এই সকল পুৰা সমস্থানো আহণ পুৰ্কাক চুণ করিলা নেই চুণ তওুপঞ্জন ও মধুর : লহিত মিশাইজা লেখন করিলে বিশেষ উপাধার দর্শে ।

শুদ্ধ আথবা রুক্ষের ছাল পোড়াইরা তারা জলে নিক্ষেশ করিবে, পারে নেই জল পাব করিবে বিশেষ উপকার সর্পে ছু

্ হুই তোলা তালা খুগ চারি পল জনে নিষ্ক কাইরা এক পল অবলিক বাহিতে বারাইনে। ঐ জপের সহিত হারি যায়া লাকচিমি ও চারি,যায়া বিহুর্ব বিভিত্ত করিরা সেবন করিলে হৃষ্মিরোণ বিনাশ পাইরা থাকে।

তীরা, ত্রিকটু, হরীতকী ও ধনিলা এই সকল ত্রনের চূর্ব সম্ভাগে হব পুঞ্জ সধুর সহিত বিশিত্তরিয়া লেখন করিলে বিশেষ উপকার যাবা হয় ও নাুরিকেনের জন এই ছাই এবা প্রত্যেকে এক ছটাক পরিদাপে সইরা একএ করত উথা তিমবার বা চারিবার পান করিবে। মুখ্য কাঁচা প্রথম করিতে হয়।

্ইতোলা ধরীত্তীচূর্ণ মধ্যু সহিত দিবিত করিয়া সেবদ করিলে। ভূমিরোগ প্রশান্ত হয়।

বরীচা ওঁনক। হরীভকী। প্লিশানী এই সকল ক্রেরে চূর্ব স্বা ভাগে এইন পূর্বক ধরু সহযোগে মাজিয়া ভাহা দেহন করিলে হর্মি বিনাশ পার।

দল তোলা নৈত্ৰৰ জৰু তোলা গৰা স্ততের সহিত বিভিত্ত করিয়া ধেৰৰ করিলে আশু উপকার দর্শে :

ভূই তোলা ক্ষেত্ৰগণড়া চারি পৰ জনে সিদ্ধ করিয়া এক পৰ অয়নিট থাকিতে নানাইকে। এ জনের স্থিত চারি মানা বহু দিজিত করিয়া ক্ষেত্ৰ করিলে হর্কিরোধ বিনাশ পার। ইবছ্ক থাকিতে নেবন করা বিধেয়া

হয় রতি গিরিমাটী ও হর রতি বালাচূর্ণ এই তুই ক্রব্য ত**ুবোদকের** সৃহিত মিলিত করিয়া সেবন করিলে আশু কল দর্শিরা খাকে।

লীতদ জলে বিমৃতি পরিষিত মৃতি ডিজাইলা অর্ছ বন্ধী এক ছাবে ছাপন করিবে : অবস্তর তালা হাঁকিলা সাওবার বা হয় খ্রুরে সেই কল পান করিলে হর্ছি প্রশ্নিত হইলা থাকে।

বচ আড়াই আমা, গদ বচের বিশুণ, বিশিন্ধ গদের হিশুণ, কুলনীর কিল গদের তিন অগ এবং একটা রেডির কল এই সবল ক্রা একত করিছা দশ হটাক জলে নিম করিবে। আছিন শুড় হইলে উহা নারাইছে হয়। প্রতিদিন জিন বার আছি হটাক যাত্রার ঐ কল লেবন করিলে অভিন্নে ছার্চি বিনাশ পাইরা থাকে।

ছুইতোলা কেওপাপড়া চারি গল জনে সিদ্ধ করিরা এক পল অবশিত বাজিতে নামাইবেং <sup>এ</sup> জনের সহিত চারি মাবা মধু প্রক্ষেপ নিরা ক্রেছ করিলে হুর্ছিরোগ বিমাশ পার।

অর্থ্য পোরা তালা মুগ জলে কেনিডা কিয়ৎকণ রাখিবে। পরে মুকিডা যেই জলের কহিত চারি আনা থৈ চুর্গ্য চারি আনা চিনি ও চারি আবা মধু মিজিত করিয়া দেবন করিলে হর্মি বিনাশ শাইরা ভাকে।

# কাৰ পায় কেনোক শনীবিদত **স্**টিবোগ।

পিত বা অঞ্জনা হবি অখিনে ওলক, বিক্লা ও পদতায় কাব প্রকৃত করত বধুর সহিত নিজিত করিলা দেবন করিলে বিশেব উপকার কর্মো।

ক্ষাইচ, লাজ, নাগেখর, কুলের বীজের সাঁল, খই। প্রিয়ল্ কুষা, গুজ্চদান ও শিপানী এই সকল জ্ব্যু সমজাগে থাকা পূর্বক চুর্ব করিয়া জাহার সহিত্য মধু ও কিঞ্ছি চিনি বিশিত করও নেইন করিলে হর্ষি জোগ বিনাশ পাইয়া খাকে।

ছবিরোগে প্রথমতঃ উপবাস করাই বিধেয়। দোনের প্রাথমা হইলে । প্রথমতঃ দেখা ও পিতবিনাশক উদধ হারা বিরেচন করাইবে, কিছু বাসুক্রনিত রোগে বিরেচনাদি উচিত নহে।

#### শপশার চিকিৎসা।

গোড়্য, রাই সরিখা ও সজিনা এই তিন দুবোর ধূম **গাং**শ করিবে।

অতিদিন সরিশার তৈলের সাইত ব্রতন সেবন করিলে অপস্মার রোগ ক্ষাণিত হয় ৷

একভোলা বচচ্পের নহিত চলিখা রাড বঙু বিভিত করিলা সেবন করিলে বিলেব উপকার মর্লে।

প্তমুশীর রুল ছ্জের সাইও লেবৰ করিলে বিশেষ উপকার পর্মে।

ভাষী ভোগা প্রাতন ভ্যাথের রস, ছই ভোগা বর্তিমণ্, হুই ভোগা াখী রম ও ছুই ভোগা মনু এই সকল দুব্য একত করিয়া সেবন করিলে অপন্যার রোগ এশমিত হুইয়া খামে।

আজীলাকের রস মধুর সহিত দেবন করিলে অপদার রোগ **প্রশ**হিত ইয়া বাবে ।

ষধুর সাহিত ববচুর্গ চারি আখা সূেবল করিলে এই রোগে বিশেষ উপকার কর্মো

বধন অপস্থারে মৃক্ষ্রি হয়, তবৰ কাগজের পদিতা করিলা বই করত হারার ব্যঞ্জক ধরিলে অধিনতে মুক্ষ্রিবনাশ পাইলা থাকে ব চারি দের মৃদ্ধিত স্তুত, বারাজর শের স্থাণ্ডরন, কদকার্থ এজিনগু কারের, এই সমস্ত একটি করিরা বোল দের জলে দিল করিয়া বৃদ্দ উদার অধানিট থাকিবে, তথ্য বর্গ্রেম ও রোগের অবছা বিধেচ্নার অক ইতে তিন ভোলা পর্যান্ধ সেবৰ করিবে ।

নিসিধার পাতার সুনের সহিত আফিং গুলিরা ওলারা দক্ত এহণ ক্রিলে এই রোগে বিশেষ উপকার গুইরা পাকে।

# হলেগচিকিৎনা।

হুছোগে বৃক্তবোদ্ধা, গুক্তিকরপ্রবা ভাষার, নদীব্যাল স্থাব, এই সক্ষ বিষয়ে।

বরভাঃ অর্থ গাঙের হালের চ্বি হাপহ্য; রড. বধুও চিনি এই সকল দুবা সমভাগে বিশাইরা ভোজন করিলে হলুোল বিনাশ পাইয়া বাকে ঃ

দশবুদের কাথ গ্রন্থত করত তাতার সহিত সৈত্ব ও সর্বণ তৈন নিশিত করাইরা দেবৰ করিনে বাতজবিত হতুোর অপসায়ৈত হইর। বাকে।

এক আনা পরিমাণে বিভ্ন চূর্ণ পোষ্টের সহিত **নিংশইয়া সেবৰ** করিলে ছচ্ছোগ বিনাশ পাইর। থাতে ।

সুধা, নাক ব্রিপু। বাগকেশর। হোট এলাইড, ত্রিকট্, ব্যানী। শিশানীস্থ, চিডা, খ্রীবেড়, ও রঞ্জেলর এই সকল দুব্য সমস্তাগে অহপ করত চূর্ণ করিবে। এ চূর্ণ একতা করিয়া প্রভাৱ হুই জালা পরিধাণে লইয়া বধুর সহিত দিজিত করত নেখন করিলে যে কোনরণ ক্রোগ ইউক বা কেন বিদ্যা হুইবে।

অর্জুন গাছের ছালের রস চারি লের এবং গান্য হস্ত চারি লের এই ছুই এবং পাক করিবা বধন হতদারে অংশিক পাকিবে, তথন মানাইকে। এ হত প্রত্যহ এক ভোলা শাহুই ভোলা পরিবাপে বেনন করিলে ছালুগা ভুরীকুত হুইবা থাকে।

# কুঠ চিকিৎসা।

া <u>মরিলা, চিতাৰ্ণ, বুণ, বরীচ, বাণা, দুর্</u>ধা, আকল আঠা, মনসাসিলের আঠা, এই সকল দুখা সৰভাবে গ্রহণ পুর্বিক বলে বর্জন করিরাবেশম স্করিলে সামাধা কৃষ্ঠ রোগ দুরীভূত হইরাধা<sup>নি</sup>ক।

মুন্ত কৃষ্ণ সর্গের মন্তক, অন্ত ও পূক্ত জাগা করত অবশিষ্ট অংশ অন্ত পূর্বি সম্ভ করত নেই ক্তম্ম সোমসাল্গবীলের তৈলের সহিত বিশাইর। ক্রমারা মর্মন করিলে গানিত কুঠ বিনাশ পাইরা পাকে।

কটুতৈদ্য তিদকুল, গোতুর ও দৈছৰ এই সমস্ত তাব্য একত কয়। লেখিশাতে ঘর্ষন করিয়া রেতির শুভ করিবে। চরণ শ্রেটি উহা হারা লেশ অধান করিলে কুর্তরোগ বিনাল পাইরা থাকে।

চারিতোলা সোমরাজবীজ ও এক তেংলা হরিতাল এই হুই দুবা নোমুল বায়া পেৰণ করিলা দেশ প্রকাব করিলে থকা রোগ বিনাশ প্রায়।

কাৰকাশশার শিক্ত কাছির সহিত শেষণ করত লেপপ্রদাব করিছে। কিটিৰ মুঠ ও সজ্জুঠ দুরীভূত হইরা বাকে।

চাকুৰিয়া বীজ, বৃদ ও ভছরকরঞ্জা ধীজ সুবা পরিষাণে এছণ পূর্বক গোমুতে পেবন করিয়া দেশ একান করিলে কুঠ রোগ বিনাশ পাইলা থাকে।

এক ভাগ সন্থক ও একভাগ হবজার এই চুই মেবা এইণ করত কট্ট ভোশে মর্মন করত দেশ একান করিলে সিম্ব কুই বিনাল গাইরা খাকে। বাসুজনিত কুঠে হত সেবন, গৈতিক মুঠে হক্তব্যেকণ ও বিশ্লেচন এইং লৈশিক কুঠে ব্যন করান বিধেয়।

- কুঁচকৰ ও চিতার শিক্ত এই হুই এবা বৰ্ষৰ কয়ত ভদ্মারা দেশ প্রদান করিলে কুঠরোগ অপনিত হুইয়া থাকে।

ন্নাই সরিধার তৈল আট পাল, ককার্য ক্রকটারা আট তোলা, নিজ্ নারি ভোলা, এই সকল মেয় চারি সের জনে পাক করিয়া জন শুরু হইংগ নারাইবে। এই তৈন মর্মন বারা কুঠারোগ বিবাদ পাইয়া থাকে।

সন্ধানিক। ও আশাহের কার এই দুই এবং মর্কন করিয়া ওফুরির লেপ প্রকাম করিকে স্ঠরোগ শ্রাজিত হইরা খাকে। হাতীর চর্মভন্ম ও চিত বাজের চর্মভন্ম এই চুই করা এইজ করিয়া কটুডিল সহ হর্মন পূর্মক আলেপ দিলে মুঠারোল বিবাস পাইয়া থাকে।

ভূড়, সৈত্বৰ, বিভ্নঃ হরিছা, বেত সর্যপাও চাকুলিয়া বীজ এই সকল এব্য সমস্ভাগে আহণ পূর্বক কাঁজিতে মর্মন করিয়া প্রবেশ দিলে সক্ষ কুঠ প্রশমিত হয়।

পেলেপোকা বাটরা ওদ্ধারা লেগ অদান করিলে কুর্চরোগ পরাক্তিত হবরা বাকে।

নোল সের ভলাতক চেথিটি নৈর জলে পাক করিয়া বোদ সের দ্রুল জন্দিট থাকিতে হাঁকিয়া দইবে। পরে চারি কের হত বোল সের হুছ ও খোল দের চিনির সহিত সেইজল পাক করিবে। বধন গুড়ের স্যার হইবে, তথ্য নামাইয়া রাখিবে। এই ঔবধান ভোলা প্রিয়ালে জক্ল করিলে ভূউরোগ ধ্যা হইয়া থাকে।

সিজের নগের মধ্যে রাই সরিবা পূর্ব করিবে। পরে সেই নদ্ পুঁটের আগুণে পোড়াইয়া সেই জন্ম সর্বপ তৈল সহ মর্চন পুর্বক প্রদেপ দিলে বিচর্কিকা তুর্ব দুরীভূত হইয়া থাকে।

্ আকলের জার্চা, হরিতাল, মনংশিদা, তিল, মরীচ এই সকল ক্রম্য একতে মর্কন পূর্বাঞ্চ ভজ্বারা প্রকেপ প্রদান করিলে মুর্চমোন বিনাশ পায়।

বে স্থানে দক্ত কুঠ হইরাছে। প্রথমতঃ দেই স্থান সূচি স্থার। উত্তর্থরপে চুগকাইবে। পরে সোমরাজের পাতা সম্প্রেমি চুর্ কব্লিয়া সেই স্থানে দিলে অভিরে জারোগ্য লাভ করা যার।

ছরিয়া, দুর্মার শিক্ড, কাটবিষ, বুল, বক্লগড়কু, চিডার শিক্ড, দুর্মীয় ও জেলা এই সকল বস্তু একর করিয়া আকলেয় আটা ও গিজের নির্মাণের সহিত মাডিয়া লেপপ্রদান করিলে কুঠরোগা ইংল ছইয়া থাকে

ে স্থলাগাছের কার হরিডার সহিত বাটিয়া দেশ অদান করিলেও কুই প্রদায়ত হয়।

ভূষ্ঠরোগীর গাকে প্রথমতঃ তৈদ মাধাইর পরে করবীরের ছাল এঁড়া করিয়া গেই এঁড়া ধর্মণ করিলে বিশেষ উপকার দার্মিরা থাকে। আহিন্ ৰেওড়ার ছাল জলের কহিড উত্তর্জণে বাটিয়া চলনের নারে। ছলৈ ডাফা দেশন করিলে ছুলি ছোগ আলোগ্য হট্যা গাকে।

প্রথমত: অংশ অংগ পরিমাণে অস্ত্যান করিয়া এক সের পর্যান্ত চোলা সেবনে মন্ত্যান করিবে। এক দের প্রতাহ সেবন করিলে দিন করেকের যথ্যে কুঠে বিশেষ উপধার হয়।

নোনালুপাড়া কাঞ্জির সহিত খাটিরা তদ্ধারা দেশ প্রদান করিবে বিবার কিটিন ও নজকুঠ প্রশ্বীত হয়।

রসাঞ্জন ও তহর কর্মানীক জুলাপরিয়াণে গ্রহণ পূর্বক কদ্বেনের মনে পেনণ করিয়া কুঠে প্রহান করিলে ফুঠ প্রশাস্ত হইরা বাকে।

আপাং পাতার রমের সহিত মুদক্ষীজ পেষণ করত ওদ্ধারা দেশ অসম করিলে নি্ধ্যু কুঠে বিশেষ উপকার ফর্মো।

কদলীভন্মের সহিত হরিতা যিল।ইয়া প্রদেশ নিলেও নিগ্নু কুর্ছ পরাজিত হয়।

মনঃশিলা পুঁতিয়া, লোৱে বিভ্ল, কুড় ও মরীর **এই সকল এব্য** সম্ভাগে গ্রহণ পূর্বক চুর্গ করিয়া তাহার ম**হিত তৈল মিশাইয়া** শেশ প্রদান করিলে কুঠ রোগ বিশাশ পায়।

পাতি পেরুর রসের সাহিত হরিতাল ঘদিরা রেডিপ্রক করত ভাহা আরা দেশ প্রদান করিলে হলি নামক ফুট পরান্ধিত হয় !

চাকুন্দিয়ার বীজ নিজের আঠান ভাবনা দিরা চোনার সহিত মর্কন করত রেণ্ডের তথ্য করিয়া বেশ প্রদান করিলে কিটিন সূঠ বিনাশ পাইটা থাকে।

ষাট্কিরিন গান্ধক, চুনা ও দোহাগা এই সকল এব্য সমস্তাধে আহপ পুর্বক অসংযোগে মর্কন করিয়া লেপ দিলে দক্তরোগ বিনাল পার ।

হাতীর মূত্রে হাতীর মনজন্ম বরিশ সের এক একবার করিয়া একবিংশতিবার ইাকিবে। সেই জলের সহিত হয় কের এক পোল। লোমরাজ্যের বীজ মিজিত করত পাক করিবে। যখন যদ হইবে, তথম বামাইতে হর, উহা য়োগভানে বর্ষণ করিবে খবন কুঠ বিমাশ পাইর।

একটা নারিকেলের মুখ কাটিলা তাহার অভ্যন্তরে কডকগুলি চাউল (বিয়া ১৫।১৬ দিন রাখিলা দিবে। পরে সেই ছাউন পাহিলে তাহা ৰাটিরা ওজুারা দেশ অসান করিলে বিশাদিকা নামক ভূষ্ঠ বিনাশ <sup>আ</sup> পার।

একভোলা ছবিভাল, এক ভোলা পারদ, এক ভোলা মনঃশিলা।
এক ভোলা গাছক এই সকল প্রবা একত করিয়া আমানিতে পেবল
পুরাক এক টুকরা নেকড়ায় উহা মাধাইবে। পরে ঐ বস্তুথণ শুকাইলে
মাতি প্রস্তুত করিবে। সেই বাভিতে ডিল তৈল লেপন করিয়া একটা
শাঁড়াসি ঘারা সেই বাভী পরিতে হয়। ঐ বাভি ছালিয়া ভাষার নীতে
একটা পাত্র ছাপন করিবে এবং একটু একটু করিয়া বাভির উপরে
ভিল তৈল শিবে, গোট এক পোরা তৈল এরপে শিতে ইইবে। বাভি
ছলিয়া নীতে কোঁটা শোঁটা করিয়া বে তৈল পভিবে, নেই ভৈল ঘারা
লেপ প্রদান করিলে সক্ষা প্রকার কুঠ বিনাল পাইয়া থাকে।

গন্ধক, বঁলগুলীবীজ, পারদ, কুঁচের শিক্ত, পুরাতন ওড়, মনু, নিষ্টাল, বক্তুদের শিক্ত, সিজের আঠা, চাকুন্মিয়াবীজ, মনংশিশা, পুরুত্তত্ম, রাখাল লাশার শিক্ত, বুল, রাখা, নিশ লাজনা, চিতার শিক্ত, বকণ তৃত্ব, ও ভেলার মুটি এই সকল ক্রবা খুলা পরিমাণে গ্রহণ পুরুক কাঁজির সহিত মর্মন করিয়া তদ্ধারা সেপ প্রহান করিছে কণ্ড, মণ্ডব, বিচার্কিরা ও মুক্ত বিনাশ পাইনা থাকে।

কাক্যাচীর পাতা তক্তের সহিত্য মৰ্কন করিছা লেপ প্রদান করিছে। কুঠ রোগ বিনাশ পার।

গুলাঞ্চর শিক্ত, চাকুলিয়া বীজ, তোক ও কর্ম এই সকল জ্ব্য বাটিয়া লেপ দিলে হুজ ও অন্যান্য কুছ বিনাশ পায়।

চারি আনা খদির ও ছুই ভোগা নিমের শিকভের ছালের রুন একর করিবাঁ প্রভাহ নেবৰ করিলে ভুঠ রোগ বিনাপ পাইরা থাকে।

রসকর্পার ও শেঁকে। বিষ এই ছই এবা গ্রহণ পূর্বক একত্র করিছা। একরতি চন্দনের সহিত বিশাইরা গ্রহত লেগ দিলে ধবল গ্রেগ্র আরোগ্য হইছা থাকে। বদি কুকুড়ি বহিপতি হয়, তবে কর্ণার ও চলাই শিশুমিকা লেগ দিবে।

বিশহাল, পলতা, কটকারি, গুলক্ষ ও বাস্কের হাল এই সকল ক্রব্য প্রত্যেকে একপল পরিয়াণে শইনা একর করত চৌবটি সেল ক্রব্র সিদ্ধ করিবে। বধ্ব যোগদের অবশিষ্ট থাকিবে, ত ধ্য ভাহার মধ্যে চারি দের হত নিকেশ করিবে। পরে ক্ষম শুরু ইয়া হত্যাত্র আংশি ই থাকিতে হ্ইপল পাঁচজোলা লাভ রভি করিয়া হারীভকীচুর্গ বহুড়োঁ চুর্গ আমনকীচুর্গ এবং শুঠীচুর্গ কেনিয়া শিরা- নাজিলা সভর নামাইবে। এই শ্বীবধ প্রভাৱ হুই ভোলা পরি-মানে সেবন করিবে সর্কা প্রভার কুঠবোলা বিনাশ পাইরা থাকে।

গদ্ধক চুর্ণ ও সোহাগার গৈচুর্ণ এই সুই অব্য সমভাগে গ্রহণ পুর্মক ভাষাতে গর্জনতিল মিশাইরা চলনের ন্যায় করিবে। পরে ভাষাতে ৮/১- কোঁটা পাতিনেবুর রুস দিবে। দুমুরপাতা দিয়া মঞ্চ স্থান চুলকাইমা সেই স্থানে গ্রে উব্ধ একবার প্রলেপ দিলেই বক্সরোগ বিশাল পাইরা বাকে।

#### ভগদর চিকিৎসা ৷

বননানিকের আঠা। বেত আক্ষের আঠা, দার্চিনি, হরিত্রা এই সকল এবা সমতাগে লইবা মর্কন পূর্মক তাহা একথানি নেত্যার মাথাইবে। উহা শুরু হইলে তদ্যারা বাতি নির্মাণ করিয়া সেই বাতি আক্ষ্মিত করত তাহার খুম লাগাইলে জগন্মর স্নোগ এশ্মিত হুইয়া হাকে।

এই রোগের অইমাবছার বীরাসনের ব্যায় উপ্তেশ্য, হিল্লেচন এ ব্যন্ত বিধ্যা

া গাঁধার রজের সহিত কোঁচো সিছা করিয়া তাহা ছারা দেশ আদান করিলে ভগলর রোগ বিমান পাইয়া বাবে।

ি তিল, হরীতকী, নিমপাতা, হরিলা, বচ ও বুদ এই সকল দ্রব্য সমভাবে অহণ পূর্মক বাটিয়া লেপ গুলান করিলে ভগলমু রোগ দ্রানাজ হরিল থাকে।

ত্রিশলার ফার্ণের সহিও কুরুরের অছি পেরণ পূর্বকে ডফ্ট্রারা **লেগ** জ্ঞান করিলে উপাশ্বর রোগ দুরীভূত হয় /-

শুখনেশ ঝোঁক বসাইরা রক্ত যোজণ করাইলে এই রোগে বিশেষ উপানার দর্লে :

একভাগ পারক, মুইভাগ গছকে একর য়তকুরারীয় রকে তিন্দিন
কবি পুর্বক সর্পারের তুলা ভাদু ৩ নেছি বিশাইয়া একটা পারেয়

উথরে স্থাবিদে। পরে বিপ্রহা পর্যান ক্ষেদ প্রদান করিয়া উহা ভাগ করিবে এবং ঐ ভাগ আলোড়ন পূর্বক কাগজীলেবুর রুখে সাতবার ভাবনা দিয়া পরে পুরণাক করিবে। এক রুভিপরিমানে এই ঔমধ্য দেবন করিভে হয়। ইহা বারা স্ক্র্তিকার ভগস্বর বিন্দ্রী হয়।

শুকী, পুনৰ্বা, বটপত ও গুলক এই সকল ক্ৰয় সমস্তাগে শুক্ত বাটিয়া প্ৰদেশ বিদে ভগকর রোগ ধংল হট্যা বাকে।

শিশালী ও আক্লা এই চারি ক্রব্য ঐত্যেকে হুইডোলা ধর্ গুণ্ডল দশতোলা এই ক্রল ক্রব্য হতের সহিত ঘর্ষন করিয়া এক ভোলা পরিয়াণে বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ শীতল ক্রমের সহিত্য দেবন করিলে ভগান্দর রোগ বিনাশ পার, ইয়া ধারা ভগন্মর বিনাশ পার। অর্থা, এয়া রোগেও বিশেষ উপকার দর্শে।

মাজ্ঞারের হাড় তিফনার স্বাধে নর্কন করির। তজুরা লেপ্ত প্রদান করিলে জন্মর রোগ উপাদ্ধিত হুইয়া থাকে।

তিন তৈল চারি নের যোল নের জলে নিছ করিয়া চারি বের শুল হইলে চিতাধূল, আকলধূল, তেওঁড়ী মূল, কাকরোনমূল, কেওঁটা মূল, ছুব্রমূল, খেতকরবীর রন, মনসানিজের আটা, বচ, বিষলালনিরা হরিতাল, নাজিঘাটা, লতাকট্কী এই সমূলারের প্রতোকের লাঁচ মারা হর রতি করিয়া লইয়া উহার মধ্যে কেলিয়া দিবে। নির্কান হইলে নামাইতে হর। এই তিল ভাগলরে দিলে অভিরে রোগ প্রশাহত হইলে বামাইতে হর। এই তিল ভাগলরে দিলে অভিরে রোগ প্রশাহত

শুরী, শিশালী, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, মুর্যা, বিষ্ণুত, গ্রুমণ, চিতাছ্ল, শুর্ছী, এনাইচ, শিশালীবুল, দেবদাক, বনিরা, ছরু, চি, রাধালপদার মুল, হরিজা, বিউন্দরণ, সৈত্ত্বত, গ্রুমণিশালী এই লক্ষ্য অব্য প্রতেকে ওক্তোলা, প্রগ্ গুন চুরায়তোলা এই লক্ষ্য প্রত্যা করিয়া বহু নহযোগে মর্ক্য পূর্বা প্রত্যালা করিয়া ফেবন করিতে হয়। ইহা হারা তিন স্থাহ মধ্যে ভগকর আরোগ্য হুইরা শাকে।

# আগু,ব্রেদোক পরীক্ষিত মুটিযোগ ৷ উপদংশ ( গরবি ) চিকিৎসা ৷

নিৰপত্তের সহিত জল গরৰ করিয়া শেই জল বারা শেতি করিনে সাধারণত বিশেষ উপকার দর্শে । এই রোগো কথার ভাইল, টক, লাক, সংজ্ঞ, দবি আহার নিবিছ !

ত্রিকলা প্রত্যেকে সম্ভাগে গ্রহণ পূর্ম ক মধুর সহিত পাক করিয়া প্রদেশ দিলে উপদংশ রোগ বিনাশ পাইরা থাকে।

কুনপারের কুঁ ড়ি, আকদের পাতার রস, আপাংপাতার রস, বাহন-ছাসির রস। হিছু ল এই সকল তবা প্রত্যেকে একডোলা পরিমাণে লইরা ঘর্লন পুর্বাক একথানি বস্ত্র থকে লেশন করিবে। শুভ ছইলোঁ নেই বস্ত্রথক ছারা ব্যতি নির্দ্ধাণ পুর্বাক স্থানিরা ভাষনা দিলে উপদংশ্য প্রশান্ত হয়।

রসাঞ্জন ও মধু। এই উভর মিজিত করিয়া কেশ আগান করিলে। উপাদংশ প্রশমিত হর ।

পিরীয় ও রসাম্বর এই হুই প্রবা একটা মিভিড করিয়া লেশ দিলে উপসংশ প্রশাসিত হয়।

ত্রিকলার কাথে ধেতি করিলে বিশেষ উপকার দর্গে।

শিরাসকাঁটার মূল হাতে মর্কম পৃথাকি কলিকার নাজির। বৃধ লেক্স করিলে অবিলয়ে এই রোগ বিদ্যাত হয়। প্রতিধিন পাঁচ হয় বার সেক্স করা বিধের।

এক ছটাক পান্য রত অনিতে চড়াইরা দিবে। যথন গার্ম হইরা কুটিতে থাকিনে, তথ্ন অর্ত্তাধা জালাল চূর্ব তল্পা নিকেপ করিবে। উভারে পাক হইরা ফলমের মত হইলে নামাইকা রাখিনে। এই উম্ব প্রত্যাহ ডিব চারিবার দেশন করিলে প্রতিরে গার্মি আরোগা এইরা থাতে।

গ্রেমতা উংকৃত বাঁটি সরিবার তৈল অনুমান এক ছটাক পথিতি ভয়বিনা নিবে। বধন কুটিতে থাকিবে, তখন উহায় মধ্যে ডিবলী বাভারিটা নিবপাতা দিবে, নিবপাতা দধ হবৈদে একটা পাটনাই কছামরিচ দিবে, দহাটা দম হবৈদে তথপরে একটা র্ভ্বের কো দিশে, তথা দধ হবৈরে পর একটা ক্তুমিনা চুচা চিংড়িয়াছ বাবা তালিবার

ক্ষমা তৈলোপরি দিবাঁ যাত্র সক্ষবর্গ হয়। দিবে, প্র সাছতী কাজা ছইছা ক্ষমাগ্রে হইপেঁ নাগাইবে। প্র তৈল প্রত্যাহ তিম চারিবার দিলে হয় নাতদিনের মধ্যেই উৎকট উপদংশ আরোগ্য হয়। ইহা ছারা থে কোনরূপ কত হটক না কেম প্রশ্মিক হইবে সক্ষেহ নাই।

#### শ্লীপদ ( গোদ ) চিকিৎনা।

ক্ষক পুত্রার মূল, নিসিন্ধার মূল, পুনর্বার মূল, সক্ষিণার্থের ছাল, রাই দর্শণ এই সমস্ত অব্য তুল্য পরিমাণে অব্য পুর্বাক দর্কন করিয়া লেশ প্রদান করিলে গোদ আহ্বোদ্য হইরা থাকে।

যদি পিডজনিত গোদ হয়। তাহা হইদে গোড়াঞ্চির বিল্লছ-শিরা বিশ্ব করত রক্ত দোকণ করিলে একামিত হয়।

ছরিদুাচূর্বের সহিত গুড় ও গোমুত্র দেবন করিলে সীপদ রোগ সুরীভূত হইরা ধাকে।

খদির ও নিমের শিকড়ের ছ.ল এই এই এব্য তুল্য পরিয়াবে শইরা বাটিবে। এই ঔবধ সেহন করিলে গোদ আরোগ্য হইরা খাকে।

থেত আকলের শিকড়ের হাশ কাঁজির সহিত বার্টিরা প্রলেপ দিনে গোদ দুরীভূত হবরা থাকে।

জীয়াপ্তের পর রস ও মাটাকনঞ্চার পর রস সমস্তাণে নইয়। কিঞ্চিৎ সরিবার তৈলের সহিত মিশ্রিত করত নেবন করিলে গোদ আরোগ্য হয়।

এই রোগের অধ্যাবছাতে উপথান দেওমা বিষয়। তদনস্তর ছেফ, প্রলেপ ও র্জেক ছারা রক্ত লোকন করা উচিত। বাহাতে নঝগা কোষ্ঠ পরিষ্কার হয় তাহা করিবে, শরীরে ককের আধিকা না হর, করি-মরে দৃষ্টি রাখা উচিত।

সরিবা, এরতের শিক্ত, পুনর্বা, গুডুরা, সাজিনা ও নিগু । এই সকল এবা তুলা পরিমাণে লইরা শীওল জলে ধর্মন পুরাক গোলের উপর ধনপ দিলে অভিত্রে আরোগা হয়।

আকলের শিক্ত ও বাসকের বন্তন সম পরিমানে নইনা কাঁজির সহিত মর্মন পূম্মক গেপ প্রদান করিলে যে কোনরপ সোস মুউকু মা কেন আরোগা হইবে ৷ শিশালী, বচ, দেবদাক, পুনর্ববা, বেল, ও রছণারক এই সমস্ত প্রবা সমজানা লইর। একত দর্শন পূর্বক বলী করিবে। কাঁজির মহিত এই বলী সেবন করিতে হয়, ইবা হারা সীপদরোগ বিনাশ পাইল বাকে।

বীক্ষতাভ্কের ছালের চুর্ব চোনার সহিত বিশ্ববিদ্যা **এপেণ হিলে** অ<sup>শ্বে</sup>শিকের বংগাই দীপন রোগা এশায়িত হয়।

## অমূপিন্ত চিকিৎসা।

্ একভোলা মণ্ডের সহিত একভোলা আমনকীয় রস মিতিত করিয়া পান করিলে অরপিত বিবাশ পাইয়া থাকে।

এই রোগে অধিক পরিষাণে ডিজ জ্বা সেবন করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

৩৯ীঃ প্রতা ও ধনিয়া এই সকল এব্যের কার্থ মেবন করিলে অসপিত রোগ প্রশাষিত হয়।

বিষদা, নিমহান, পনতা ও গুলক্ষ এই কর জন্য সমস্তাপে সইয়া মোট হইতোলা করিবে। পরে কর্মসর জনে উহা সিত্ত করিরা কর্ম শোলা অবশিক খানিতে নামাইরা চারি আনা পরিষিত মধু প্রক্রেপ নিরা সেবন করিলে অরণিতরোগ দুরীভূত হয়।

বুনাও নৰে এবং ভাৰও নহে, এই প্ৰকারের মধ্যবিধ একটা নারিকেনের মুখ কাটিরা জন ফেলিয়া দিবে এবং উহার মধ্যে বে পারিনাবে সৈত্বং দরে ভারা পূর্ব করিবে। পরে উহার মুখ আঁটিরা নারিকেলটার চারিদিকে হুই ইঞ্চি প্রক করিব। ইতিকার লেপ প্রদান পূর্ব ক
বিল মুটিরার অগ্নিতে দশ্ব করিবে। উত্তমগ্রণে দশ্ব হইলে নারিকেলটা
ভালিয়া সৈত্বৰ ও নারিকেল মিজিত করত প্রভাগ্ মুইবেলামুইবার সেবন
করিবে। নীতন কল ইহার অম্পান। সেবনের পারিমাণ ব্যক্তম
বিকেনার অন্নিভোলা মুহতে একভোলা জানিবে।

পুষ্ণেতন গুড়ের সহিত আমলা ও ভীমরাজের চূর্ণ মিলিড বরিয়া নেবন করিলে অলপিত রোগ দুরীভূত হয়। ্ থারেছে এইডান্ডে, করা কিছু আহারের পূর্বে থাটকও চাউল যুৱৰ যা কিঞ্চিৎ জগ সভ ভক্ষণ করিলে অমেক উপকার দর্লে।

তত্নী ও পদতা এই ছই ত্রব্য প্রত্যেকে একতোদা পরিমাধে সইনা নুষ্ঠানর কলে নিম্ব করিবে। আদ পোরা অবশিক থাকিতে নামাইতে হয় হ হা স্ক্রেনে অন্তলিক প্রশাস্ত বইনা বাকে। বিশেষত হাতিক অন্তলিতে ইয়া নিশেষ ফলপ্রদ।

আমশা, প্রাতন গ্রন্থ, শিশালী এই তিন জবা প্রত্যাকে সমজালো আমগ পূর্বাক্ মর্জন করিছা নেবন করিনে রৈত্যিক প্রদাসিক রিনাল পরিয়া গাকে।

এক দের ছতে আইনের শঠী চূর্ব প্রথমতঃ ভাজিবে। পরে অবা একটা পাতে আট দের কাঁচা চ্ডের সহিত চ্ই দের চিনি প্রসিয়া দেই ওঠী চূর্বের উপর চালিরা কিয়া নাড়িতে বাকিবে, সান্ধানে নাড়িবে মেন্ ভলার বরিরা না বার। পরে বড়ী বার্যু বার এরপ অবহার নামাহিরা ভাষার স্থিতি শিপ্পানী, আমনকী, বংশানেচন, মুখা, জীরা, ধনিরা, হরীতকী, গুড়হত, কুঞ্জারা, তেরপাতা ও বড় এলাইচ এই স্কলের প্রভাবের চূর্ব বেড় ভোলা এবং বরীত ও নাগাকেশর চূর্ব প্রভাবের হর মারা পরিমাণে মিশাইবে। পরে শীত্র হইলে উহার সহিত তিন শক্ বন্ধ নিশ্বিত ভারিরা ভাশন করিবে। এই উন্ধানে ওঠী থত বলে। ইবা বারা সূত্র অমণিত রোগ প্রশান্ত হয়। নেববের পরিমাণ চুর্বভোল। শীত্রণ প্রথ ইহারশ্বন্ধান। ইয়া বারা পামবাত, ব্যি, পুলু ও ছ্রোগত বিনাধ পাইরা প্রতের অমণিত রোগ প্রশান্ত হয়। নেববের পরিমাণ চুর্বভোল। শীত্রণ প্রথ

শ্রেষ্ট পদির। বর্তিমধু ও লাক হরিছার কার্টের সহিত মধু বিভিত্ত
করিরা দেবন করিলে অরপিত রোগ বিনাপ পাইলা থাকে।

্ৰিশ্ দিল্, যদু ও **ও**ড়ের সহিত ব্রীভকী সেবৰ করিলে অপ্লেশন রোগ অপান্ত হয়।

একটা দেখিলা অধনতঃ গ্রেম করিয়া ভাষাতে বিক্লা বালি দেশ এয়াম করত এক রাজি এক ছানে সংখ্যাপন করিবে ৷ পরে কে ক্ষুক্ত মধুত পর্কার সহিত থিকিত করত সেবম করিবে শিক্তালিক অমুণা মুরীভূত ক্ট্রা থাকে ৷

# পার্কেদোক পরীক্ষিক মুটিবোগ।

াল্ট্রার সহয়ে পরিপক্ষ দেবুর রম চিনির সহিত নিপাইরা দৈর্থন করিলে। ইপেন উপকার দর্শে।

সম্বানালে ম**ুনি সমি**ত পিপ্পদীচূর্ণ নিশাইরা সেখন করিলে জনপি**ক্ত** রোগ পুরীভূত হয়।

আছারাতে আচগনের পূর্বে একর্টি চাউদ মুখে দিরা **লগ দি**রা শিদিরা ধাইবে।

শুঠী, কটকী, গুলঞ্চ ও পলতা এই সকল জবোর স্বাধ গুল্লত করিছ। ভালার সহিত মধু গুল্পেশ দিনা সেবন করিবে।

আভ্যানোর থাঞ্জির সহিত কুঞাজ পেবণ প্রুর্বাক অহোরাত-উহাতে ভিজাইরা রাখিতে হইরে। অনস্তর মান্ত কল্টী হার যুচ্চ নদীরা, লালিঞ্ শাক, রহংশাতা বিশিষ্ট, বটে, বেড পুরুর্বা, রহতী, কলরাজ, নম্পা, কেশ্রাজ এই সক্ষের রসে পেবৰ করিবে, ভাৰরা দিবে এবং পুনঃ পুনঃ ্টি প্রদান করিতে হইবে। যে পর্যান্ত নিশ্চক্রক না হর তাবং প্রাক্তপ ্রব্রিবে। ঐরপে অত্র শ্রেধন করিয়া দইবে। স্বর্ণদাকিক ও শাঞ্চে শাকের লে কান্ত লেখি দেশৰ করিয়া ভাতায়ি সম্বা আদান পুথাক অগ্নিবৰ্ণ विद्या भारत विक्रमात कार्य राज्ञमात निर्मा विद्या विश्वास বিক্লার ভাগ হইতে বিক্পভাষা কেহিচুর্ণ উল্বত করিয়া গেতি করিতে হৈছে এবং কুটাকিবলৈ শুদ্ধ করিছে। অনপ্তর ক্তীকর্ণসাল, বিকলা, রুত্ব লারক, মান, ওল, হারযুচ, ওঠী, মশ্দুলী, মুবিরী ও ভালমুলীর রুলে সকল্পে প্টেকিয়া করিবে। এইরপে লেহি বিশুদ্ধ হয়। খেড শুল্টা, বোজনেড়েলা, ওড়ুচী, অপাথার্গ, হোট মটে ও পুনর্মবা এই সকল এবং ব্যাতৰ মণ্ডুরের উপরে ও নীচে ছাপন পূর্মক গোমুরে তিবদিব পাঞ্ -রিবে। পরে উহা আঞ্চাষিত করিয়া ডিনদির অন্তর্বাপে রাধিবে। পরে গাঁও করিলা স্থা কিরণে শুরু করত চূর্ব করিলা লইবে। জর্মনী, এরওযুদ্ধ বাদা ও কাইভার রচের সহিত বারবার মর্মন করিয়া পার্য শোধন দরিতে হর। ববনীত নামক গায়ুকচুর্ব ভুজরাজের রুমে আপ্লাধিত ্রিয়া কেহিশারে ছাপম পূর্বক ভ্রাকিরণে শুভ করিবে। এই একার ভিন্তার শুক্ত করিতে ক্টবে। পরে স্থলত বদরালাবের উপর চড়াইর। বাস দিবে। উহা গুলিঃঃ গেলে ভুসরাজ রুসপূর্ব একটা পাত্রের উপর বত্র আচ্ছানুন করিয়া ততুপরি আঁ পাছক ঢালিয়া দিবে। পরে ইইবার

খেতি করিয়া শুরু করিয়া মইবে। এইরেশ করিনেট গায়ক শোধন হয়। পুর্বোক্ত প্রকারে শোষিত অন্ত হুই পুল, এক পুল দেছি, চারিতোলা ভিত্র চুর্ণ এই সকল প্রবা একত্র করিয়া ধানকুনী, গভাগিপালী ও তাল-ৰুশীর রুদ্ধে ভালীপাক করিবে। শতমূলী, ভ্রম্বাঞ্জ, কেশ্রাঞ্জ ও কাঁটা-ৰটিক দলে দিতীৰ স্থানীশাক করিয়া ডিকলা ও ভাৰস্থকের রুমে তৃতীয় বাদীপাক করিবে। পরে উহা চুর্ণ করিয়া সইবে। ছুইডোলা পার্ম ও ্ইতোলা গল্প গ্রহণ পূর্মক সকল দিলাখতে স্থত্তে বর্ষণ করিয়া जन्मनी खन्न कतिरव अदर नृंसिनिचित खलामिहर्न, छ वह, है, बमानी, जीयां क्षाबीया, सन् का, जिकट्टे, यूथा, विस्त, शिल्पनी यून, प्रशासार्ग, তেউড়া, ডিডা, দন্তী, ব্রেড শুল টা, ভুগরাজ, মান, খারকোন, নতোৎপদ, ্রেশ্রাক, কালাকড়া এই সকল মধ্যের অভ্যেকের ছুর্ণ চারিভোগা<sub>,</sub>র ংক্ষণান জিফলাচুৰ মিজিত করিবে। এই সম্ভ তাবা লেছিপাতে রাখিরা আসার রসের সহিত ধর<sup>্</sup>র করিবে। পরে হণ্য কিরণে ভিন্তার ভারতা দিবে। ভবনভার বলে কালার রনের সহিত পেব। বরিয়া াদরাভিত্ন নাম শুটিকা করিবে এবং ছালাতে শুভ হুইলে নিজান ভানে কাৰ্ণন কায়ৰে। ইহাকে ক্থাৰতী গুড়িকা কৰে। আতে ও আহাতেৰ ারে ইয়ার ভূইটা বড়ী সেবন করিতে হয়। কাঁজি ইহার অভূপান। এই উবধ দেবদের প্র এত। নারিকের ও বধুর ক্রব্য কেবন করিবে না। क्ष पाता जलतिया, क्षमा- शुन, शांधु, त्नांधा, केनतरतार्था, क्षम्रतार्था, ্জা, পঞ্চবিধ কাস, অৱিষান্দ্য, অক্টি, শ্লীহা, স্থাস, আৰাহ, আঘৰান্ত खक्कि द्वांग विन**के ए**त्र।

#### পত্রতি চিকিৎসা।

ীলোবপান, বেগার শিক্ত, রজ্ঞান ও যতিবধু এই সকল ত্রী সমভাগে আহণ পূর্মক হুড়ের সহিত খাটিয়া লেশ প্রদান করিছে ক্ষোভ কুছিএশাবিত হয়।

কুর্মাংসের বোল সেবনে বিশেষ উপকার দর্শে।
কৌনে বারা রক্তমোক্ষণত বিশেষ উপকারী।
রাকাল ক্ষার শিক্ত চূর্ণ ফরিয়া এরও তৈবের সহিত বেশ প্রদান
ক্ষিৰে।

# আৰু কোনোক পরীকিত সৃতিযোগ।

একছটাক গোদুতের, সহিত হুইভোলা প্রও তৈল ও এক সামা আছু কলু দেবন করিলে অনেকাংশে উপকার হয়। ভুইভোলা এরও এক ছটাক গ্রুম হুছের সম্ভিত্ত দেবন করিবে।

### আনরক্ত চিকিৎসা।

প্ৰক আমা কলিচুণ, এক আন। হরিসাচুণ, এক আন। মধু একত করিছা। মেৰৰ করিবে।

**দক্তাৎ** সাভিবিষাং প্রেমার সামেসালাং স্থাপরাং ।

আন্তের ও শুঠারিশ্বনত সমান্যাড়িবরস বারা সমর্গ করত পান করিবে ।

এক চুটাক দুর্ম্মার রস অর্থ চ্টাক চিনির সহিত মিভিত করিয়া। তার্ম করিখে। প্রতিদিন চুইবার বা ভিনবার সেখন করিতে হয়।

্র্ছ রতি পরিমাণ, ট্রপাকলার শিক্ত বর্তন পূর্মক সেবন করিছে। বিশেষ উপকার দর্শে ।

্জান্ধিতোল। পরিষ্ঠ চিমি, এক আনা জারদল চূর্ব ও এক ছ্টার্ছ বেশের মত এই সকল জন্য একত করিয়া কেবন করিবে। এইটাতে এ আরংকালে মেন্দ্র করিতে এই ১

পানসুৰি পাতার রনে অহিকেন ও জানকৰ বৰ্ণ পুৰ্কক নাতির চারিদিকে শেশ প্রদান করিলে বিশেষ উপকার কর্নে।

প্রতিলো চিমির সহিত মুইতোলা যাখন দেবৰ করিবে। লবণ ও কুলের কুঁড়ি ছুল্য পরিমাণে মুর্জন পুরুষ কেব্যু করিবে। কি

লবণ ও কুলের কু ড়ে ভুল্য পরিমাণে মন্ত্রম পুনকৈ লেবম ক্রিছিব। ফ্রি অনুষ্ঠিতোলার অধিক লেখন করিবে থা।

এক হটাক চিমির সহিত অর্ছপোরা বাতাপি লেবুর রঙ্গলেবা।

স্থ কুঁচ পরিবাধে আফিং একটা পাতিবের্র অভ্যান্তরে পূর্ব করি। ভাষার চারিবিকে দেশ প্রকান পূর্বক প্রুটের আগুবে হয় করিবে। প্র অন্তিশারা শর্করার কহিত পানা ক্রিয়া দেরক করিতে হয়।

#### वांक्स्स हिक्थिना ।

গ্ৰহণ প্ৰ ছাগছৰ একত্ৰ কৰিয়া তদ্ধান্ত লেশ আদান কৰিলে বাত-ব্যক্তক্ষতি বেশনাৰ উপাশৰ হয়।

কিঞ্চিত্ৰ হুড ও কিঞ্চিৎ মধুর সহিত হুইডোলা ঘটিনধু চূৰ্ণ বিভিত্ত করিয়া দেইন করিলে বিশেষ উপকার দর্শে ৷

ভূষিকুমাণ্ডের ক্লড়র্গ ও ম্বড়র্গ ছত ও ছাত্তর সহিত বেবন করিছে। ছালীর্থে তিল সাত্রার ভারনাগিলা সেই তিল দেবা।

ক্লক ডিল জলে পেখন করিয়া প্রদেশ ,দিলে বাতর্ভক্ষিত বেদ্যার উপাশং হয়।

লাল্লিরাযুল, বিকটু, বিকলা, আজা, গুণ্ডল এই নমুনারের চুৰ্ প্রভাবে সমজাগে ধ্বং এই সমস্ত চুর্ণের সবাম পৌছচুর্থ এই সকল একত্র মিজিজ করিরা টাবালেবুর রসে ও বিকলার কাথে মর্কন করিবা। বদর পরিমাণ গুড়িকা প্রজ্ঞাক করিবে। ইহাকে লাল্লালিলেছি করে। এই উবধ মধুর সহিত সেবম করিতে হরণ ইয়া বারা আজাহৃত্যুটিত, স্কাল্ডিক রাধানাধ্য স্কাশ্রনার বাতর্জ বিন্তু হয়।

এগার আনা ধনিরা, এগার আনা ওঠী ও এগার আনা ওর্ঞ এই সকল এবা অল্প সের জনৈ নিম করিয়া অর্থগোয়া উল্লেখিক থাকিতে নামাইলে। ঐজন বেবন করিলে নিশেব উপকার কর্মে।

কতকঞ্জী তিল কাইখোলার জাজিয়া কাঁচা হুছে মৰ্থন কয়িৰে। উল্লা ছান্তঃ শ্বরীয়ে লেশ প্রদান কয়িলে নাডয়ক বিনাশ পায়।

গুলকু, শতমূলী, বিশ্বলা, কটকী ও প্রাটন এই সকল প্রব্যের হার। করিয়া যধুর সহিত বিভিত্ত করত পান করিলে বিশেব উপকার দর্লো।

্রনক্ষের কাপ- ক্লক ও চূর্ণ নেকর হারা এই রোগে বিশেষ উপকার ভা ।

এই রোগে বিরেশক ঔষধ যারা কোর্ছ পরিকার করিলে বিশেষ উপকাস ক্রিয়া বাকে।

এই রেন্সে পুরাতন মবের পালো, পুরাতন মবের নালার পুরি, গীর ভূম মহিবীয়ুম ও চাগীযুর বিলেশ কলনাদ।

কুই জানা ছতশিক বা পদাল ও হই ডোলা গুলাকের কাব লেবা।

#### বাতচিকিৎসা।

জাফিং ও খুতুর শত রম একত ধর্ণ পূর্বক বে ছালে বেছনা, তথায় দিলে বিশেষ উপকার দর্গে।

সহস্কৰ্ম পাঁটি সরিবার তৈল, ।এই তিন এবা হিলিত করিব। বৰ্জন করিবে আর পর নাই উপকার ধর।

বদিশাত হইয়া কোন ছান কোনে অথবা কট্ কট বারে, ডাছা হইলে বড় এরও পাতা বারদ করিয়া সেই ছাবে বন্ধন করিলে বিলোধ কল দর্শে। মনসাসিজের পাতা পর্য করিয়া নর্ম হইলে উচ্চ খাকিতে থাকিতে তাথা বেলনা ছাবেন বন্ধন করিতে হয়।

প্রতাধ রাজে আহারের পর এক ছটাক গোছজের সহিত এক ভোদ। এরও তৈল বিভিত্ত করিয়া দেবন করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

বে ছামে থাতজন্য বেদনা হয়। সেই-ছানে তেশিরা দমসার জাটা দিলে আরোগা হয়। কিন্তু সেই আটা জন্য ছানে না সাগে এয়ত ভাবে দিয়ে।

কিঞিৎ খাঁচী স্বৰ্গতৈলের সহিত অন্ধ্র ছটাক গাঁজা দিছ করিয়া সেই তৈক কেপৰ করিলে কর্মগ্রকার বাডরোগ বিনাপ পাইনা পাকে।

পুরাতন ওল, লকা ও রাইস্বপ এই তিন এবা একলে পেবণ করিয়া ভৰায়া দেশ প্রদান করিলে বাতলমিত বেদনা প্রশাসত হয়।

সাধারণতঃ বাতে কেরোদিন তৈল বিদেব উপকারী। রোচন বসিধা বেলনান্থানে ঐ তৈল মানিল করাতে অনেকের রোগ আরোগ্য হইলাছে। আলা ও সজিনার ছাল সমভাগে গ্রহণ পূর্বক মর্মন করিয়া ভদ্ধারা তেপ প্রভান করিনে বাতজবিত স্মীতি ও বেদনা গ্রামান্ত ছয়।

ভঠীচুৰ রোজে জবৎ তথা করিয়া বাডজনিত বেদ্বাছানে দিলে বিশেষ উপাকার দর্শে।

প্রতাহ প্রভাতে এক তোলা রহন সেবন করিলে বাত দুরীভূত হয়। ছরিমাঃ মোরা ও সৈদ্ধব নবন এই ডিন ক্রব্য একত করিয়া বেদনাছায়ে প্রদেশ দিশে বিশেষ উপকার হয়।

মূমকার ও আদা এই দুই জব্য একজ বাটিরা বেদনা ছালে পেশ দিলে ব্যক্তিশাকার দলিবা বাকে।

#### শোধ চিকিৎসা ্য

বিক্ষু, তিকলা, দলী, অপানার্গ, বিষদ, ও ঠা, পুনর্মা এই সকল তথা সমস্তাগ এবং এই সমস্তের ভূদর পেছি সকল তথা একত ক্রিরা কইবে। ইছা যারা ভ্তর শোল, ছেলির, উদ্যুদ্রোগ ও জলোদর বিষয় হয়।

নপ্রতের **কার্য প্রদা**ত করিয়া ভাষার সহিত গুণ**ুগুপু লেখন করিলে।** বিশেষ উপকার দর্শে।

্রেটি এনাইচ, পিপানী, মুখা, গিপানীমূল, কটামাংনী, পুনরবা দেবদাক, চিডা, রাখা, চৈ, গুলঞ্চ, গুড়ী, তেজপত্র, কুদথ কলার; মাগ্রেকার ও দাকচিনি এইসকল পুন্ত প্রত্যেকে পাঁচ আনা পরিমাণে কইয়ঃ এক সের জনে সিদ্ধ করিবে। এক পোগা অবশিকী থাকিতে নামাইতে হর। এই জল দীওল করিয়া চারিবার স্বেশন করিবে। চারি আনা মধু প্রকেশ দিয়া দেবন করা বিধি।

হুইতোলা গোহুত ও হুই ভোলা তিফলা একত করিয়া সেবন করিছে। বিশেষ উপকার দর্শে :

দেবদাক, ত্রিকটুন তেওঁড়ী ও চিতার শিকড়ের কার্য বিশেষ ক্লঞ্জন।
ছুখুরন ব্রীতকী, পলতা, ইজবাক্ণী, চলন, দাক্বরিদা, শিপানী,
ব্রিষ্ঠু, দতীপুন ও আক্নাদি এই সকলের ভাষ গুলুত করত হুতের স্থিত সেবদ করিলে বিশেষ উপাকার হয়।

বিশৃপত্তের রস সেধন বারা শোষরোগে বিশেব উপকার এইছ। খাকে।

উঠী, দেবদাক ও ওগ্ওলু এই সকল একোর কাথ খারা বিলো উপকার হয়।

কটুকী, ব্লিকুটু, দান্তী, বিড়ক, ব্লিকলা, চিন্নডা, দেশগাক, ভেউড়ী, পুঞ্চ শিশ্পনী এই সকল জন্য পদপরিমাণে এবং এই সমস্ত প্রবার বিঞ্ কৌছ, সকল জন্য একজ করিমা কইবে। মুক্তের কহিত এই ঔষৰ লেখ-ক্রিডে হয়।

## আয়র্বোধার পরীক্ষিত সুট্রবোগ।

#### শ্বভিতচিকিৎস।

আখারের সমর কেনল নাত্র ছ্যের নহিত আর ভোজন করিছে অর্থনা কেবল মাত্র মাধ্যের যুধ্বর সহিত দেবন কীরতে পারে, পরে সারংকালে কম্মুলের কার্য-পেরন করিতে হয়।

সক চাকলি নামক পিঠা নৰনীতের সহিত দিশাইয়া সেবৰ করিলে। বিলের উপকার দর্শে।

ু রাজনের সাল ও মাধন একজ করিলা লেখন করিলে নিপেন কল এছে: হওয়া দার ৫

## পুণচীচিকিৎ গা

কেন্দাক ও সজিনা কাজির সহিত শেবী করিলা কেশা আদ্ধি করিলোঁ অশস্ট্রী আরোগ্য হট্য। থাকে ।

গুলঞ্চ, দেবলাক, দুখা এই ডিম ক্রব্যের স্বাঞ্চ প্রস্তুত ভারার স্বান্তিত কর্পার দিন্তিত করিয়া লেপ আলান করিবে ৷

#### আমৰাভচিকিৎনা ৷ 📧

কাঁচা গুড় কাৰাই- কেঁউ, ৰজিদাছান ও উই বাটা এই চারি প্রহা গোৰুকে পেৰণ করিয়া এলেণ দিলে আমধাত বিমাল পাইলা থাকে !

ছরীতকী মূর্যাও একমাজেল এই মূই ক্লবা থকক করিছ। দেবন করিলে বিশেষ উপধার দর্শো।

বালির বেদ হারা আহ্বাড বিবাশ পার ৷

और রোগের অবদাবভার উপনান দেওরা বিধি, তথপরে অ্থিরভিত্তর

কুঁ, ডিজ, বিরেচক এই সকল পুরা লেবন করিবে 🕴

এক ছটাক গরৰ কলে। অৰ্থ ভোল। চির্ভা ভিজাইরা রাখিয়া পরে। নেই মন পান করিকে আম্বাভ বিনাশ পার।

পিপালী চূৰ্বেৰ সহিত দশমূলের কাম দেবা।

পরণ, ধর্ক পেহি, অল্ল, ভূঁতে। নোহাগা, নৈত্বৰ এই নমন্ত পুষ্য ভূলা পরিবালে চূর্ণ করিবে। জনমন্ত চূর্ণের -বিজপ কণ্ডের প্রথমগার্গ পুরু চমূর্বাংশ তেউড়ীচূর্ণ ও ভিডাচূর্ণ এই সমস্ত ক্রম্য একক করিলা হাডের সহিত কর্মন করিবে। উত্তমরণ মন্দিত হইলে মুই মারা পরিমাণে খুটিকা প্রস্তাকরিতে হর। তিক্লার চূর্ণের সহিত এই ঔষধ সেবন করিবে। এই ইহারারা আনবাড়ে গুলা, পুন, উদর্রোগ, যুক্ত প্রাহা, অন্তবিদা, ভাষদা, পাঙ্গু অকচি, শির্গেশ্ল, বাডরোগ, গুর্নী, গ্লগ্রু

হরীতকীচুণ, নারেদা বেরুর রস ও ওপঞ্চের কার্থ এই তিব এবা একত করিরা লেবদ করিলে বিশেষ উপকার হর।

দেবদাৰ, দশ্যুৰ, গুলকা, শুঠী রাছ। ও এরপ্রযুব এই সকল জন্য সমস্তাগে প্রহণ পূর্বাক মেট ছই ভোলা করিবে। পরে অর্দ্ধ সের জনে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোরা অংশিক থাকিতে নামাইরা এরগুতৈন কিন্তিৎ মিজিত করত স্বেন করিলে আমধ্যে রোগ বিনাশ পাইরা বাবে।

কচি সোঁদোশপাতা থাঁটি সন্নিয়ার তৈলে ভাঞ্জিয়। দেবৰ করিছে বিশেষ উপকার দর্শে।

শুঠী, হৈ, চিতামূল, শিশানী ও পিশানীযুদ এই স্বয়ন্ত ক্রব্য সমতাণে এইণ পূর্মক নোট হুই তোলা করিবে। পুনরে অর্থনের জনে দিম করিরা অর্থ পোরা অবশিষ্ট থাকিতে নামাইনা নেবন করিবে আমবাত রোগ সুৱীভূত হবরা থাকে।

রুষপরেক, তেউড়া, দন্তী, গ্রাক্তাপালী, মান, ব্রিক্তার, এই সমস্ত ব্রুহা পুলা পরিমাণ এবং এই সমস্ত ক্রব্যের পুলা পৌছ এই ব্যক্ত ক্রব্য একত্র মিক্সিড করিয়া কইবে। সিংহ ফেরণ করিণীগণকে বিনাশ করে, সেইরুপ এই উবর আন্বাভিরোগ বংগ করিয়া বাকে।

# উদরীচিকিৎসা।

গান্তারী সচল গৈছর, মহানী ধ্বকার, বিভুল, হিল শিশানী, চিভানুল, গুঠী এই সমস্ত প্রবা তুল্য পরিমাণে চূর্ব করিবা সেই চুর্বের ছুই তোলা হতসম মিজিত করিবা সেবন করিলে সর্বাহ্যকার উদরী রোগ বিনাশ পার।

বাতিক উদন্তী রোগে—পিশানীচূর্ণন দৈছৰ ও তক্ষ একত মিজিত ক্ষানা দেবা।

লৈ যিক উদরীতে—তিকটু - সৈত্রক, বমানী ও জীয়। সমভাগে পইরা চুপ্ করত সেধন করিবে।

বদ্ধোদত্তীরোগে—লৈদ্ধণ, ব্যুব, জীরা ও যথানী সমডাগে দিজিত করত দেবা ৷

ওঁঠা মরীচা পারদা গল্পা লোহাগা, প্রত্যেকে একভাগা, জরপান মুইতাগা এই সমস্ত একা একত চুর্গ করিয়া লইবে। মুই রভি পরিমাণে এই ঔষধ দেবন করিতে হয়। স্করা ইহার অত্পান। এই ঔষধ দেবন করিয়া বভ গাণুব জলপান করিবে, তভবার বিরেচন হইরা উদর্বোগ নিবারিভ হয়।

মহিষদ্র পান বারা উদরী দুরীভূত হইরা থাকে।

প্লীছে।নরীতে (—শতমূলী, সৈশ্বন, মধু; গুড়,শুঠী, ভৈদ ও বচ এই সমল দ্রুৱ্য সমভাগে লইয়া একত কয়ত সেবন করিছে।

জলোদরীতে—প্রীহোণরীতে যে ঔরণ নিধিত হইল, উহার সহিত্ত আকটু মিলিও করিরা ধেনণ করিলেই জনোদরী প্রশান্ত হয়।

গোমুত্তের সহিত দশমুদের কাথ দেবন করিলে বিশেষ কল দর্গে। আর্ছটাক এরওতৈশের সহিত চারি আনা প্রিমানে পিপানীচূর্থ বেবন করিলে সর্বপ্রকার উদ্বী প্রশ্বিত হয়।

আর্ছ পোয়। ভঞ্জের সহিত এক তোলা মধু দেবন করিলে বিলেশ উপকার মর্লে।

পিশেলীয়ূল, চিতা, অজ. ত্রিকজয় ও সৈত্বধ এই সকল জবা এক একজাগ এবং এই সময় জবোর সমান পোইচ্প এই সমস্ত দুবা একজ ভরিয়া লইবে। ইয়া স্থাঞ্চলার উদ্যুৱোগের নিয়ন্তিকর ।

ভাৰক্ষচূৰ্য ছয় পাল, তঞ্চচূৰ্য ছই পাল, ছয় ছয় পাঁল একং জন ছয়পাল একত্ৰ নিজ করিবে। ছুই ভোল। অমাণ ইছা সেবৰ করিতে হয়। খন ছুইবেই পাক সমাত ইইলা থাকে।

यहर ७ श्लीश हिकिदना ।

মীথ ৪ বন্ধ রোগী ব্যক্তি সর্ধনা পরিভৃত থেকে পরিভৃত ছাতে। বাস্তুকরিবে। জনবারু অধাছাকর ছইলে যে ভান পরিজনেস করা নর্মাধা ভাষার পাকে বিধেয়। যাহাতে নর্মাণা কোঠ পরিয়ার থাকে। গেছের বলর্মি হয়, তম্মাপ কার্য্য করিবে।

মানকচুর মূল, আপাংখুল, গুলঞ্চ, বাসকহাল, শুঠী এই স্কল সূৰ্য। সমভাগে গ্রহণ পূর্বক কাশ প্রভাত করিলা সেবৰ করিলে স্নীহা ও বঙ্কও মন্ত হউলা বাবে।

উক্ত গোষ্ট্ৰ হার। সীহা ও মন্ত্ৰ- ছানে কেক দিলে বিশেষ উপকার ইয় এবং গোষ্ট্ৰ দেবনও বিশেষ কৰ্মপ্রাস।

পুরাতন **ও**ড়ের সহিত তালের জটার কার যিতিত করিয়া **সেমন** করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

এক ভারি মূলকার ও চারি আনা হিল্প একত্র করিরা একটা পাঁভি লেবুর রলের সহিত ধর্মন করিরা সেবন করিলে স্নীহা বিনাশ আ্র হইলা থাকে।

প্রভাৱ প্রভাতকালে উৎকৃষ্ট চিনির সহিত এক বিংগুক কাঁচা পৌপের আঠা সেবন করিলে বরুৎ প্রীহা বিনাশ পার। বয়ংক্রণ ক্ষম হইলে এক বিজ্বের কম আঠা দিবে।

প্রোতন শুক্ত জীরক, ভেলা ও হরীতকী এই সকল দুব্য একত্রে আর্দুন করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই বোদক সেবন দারা প্রীহা প্রিমাশ পাইরা থাকে।

এই প্রকার প্রক্রিকি আছে বেন রবিবার দিবলৈ পান মরীছের মুনের রস সেবন করিলে প্রীহা বিনাশ পার। ইহা বাবহার হারা অধ্যক্তে নীরোগ হইতে দেখা গিয়াছে।

ক্রিকিং তিস ও কিঞ্চিৎ সৈদ্ধা, ছঃপদ রুতের সহিত মিশাইয়া সেবন করিলে প্লীহা বিনাশ হয় (

যবকার এবং পদাশ গাছের কার এই ছুই দুবা একতা করিয়া সেংখ করিলে প্রীহা আরোগা হইনা থাকে।

চারি তোদ দেখি চারিভোদা অজ, মুই ভোদা ভাষা, আট ভোদা পাতিদের্র হাদ, আট তোদা হরিগের চর্মভার এই সকল দুবা জাদের সাইত একর মর্জন পূর্মক মন রতি প্রমাণ এক একটা বড়ী করিকে। ভাষাধের সাইত এই বড়ী এক একটা সেবন করিলে যকুন ও প্লীহা বন।শ পাব। ি হিন্দ বিৰুদ্ধ অগামাগণিত আৰু মণ্ডত, নিজপত এই সকল অব্য অত্যেকে একভাগ এবং এই সমুদায়ের স্বান দৈয়েও ও সৈত্বৰ স্থ সমতের সুন্য পেহি ও তামু এই সকল এবা একত হিজিত করিয়া বটী করিবে। ইয়া হারা প্রীয়া, ধতুন, গুলা, আম্বাত, অর্ল, উদরী, মুক্তা, পাত্তু, হলীমক, এইণী, মতীনার, যথ্যা ও লোধ বিষ্ঠ হয়।

হিন্দুন, গন্ধক সোহাগা, অত, বিধ, এই সকল তারা প্রভাৱেক এক পল, মরীও ও লিপানী প্রভাৱেক অর্দ্ধণল, এই সমস্ত তারা মর্দ্ধন পূর্বক এক বল পরিমাণ বড়ী করিবে। শেলালিকা পাভার রম ও মন্ধ্ ইহার অমুপান। ইহা দারা নর্ম প্রকার প্রীহা, মন্দান্তি, জুরু, কাস, খাস, ববি, তামি প্রভৃতি বিন্তী হর। গহরাম্ম বাধ এই উব্ধের আবিহর্জা।

রেছের গাছের ছাল ও ত্রিকতাঃ এক এক ভাগ এবং এ**ই লমভের** ক্যাম কৌছ একত্রিত করিলা লইবে। ইছাকে রোহিতক কৌছ বলৈ। ইহা দারা শ্লীহা, অগ্রহাংস ও মন্ত্রং বিনাশ পার।

#### উন্মাদ রোগের চিকিৎনা।

স্পান্তের কাথের সহিত ছাগ্যাংগ্রের যুখ সেবৰ করিলে উশ্বাদ রোগে বিশেষ উপকার দর্শে।

উদ্ধান রোগে বিরেচক ঔষধ ধারা তেল করাম বিষের। দীক্রন জবা ভোজন করিতে দিবে। ববচুর্ন ও গোণ্সচুর্ন দিছ করিয়া সেমন করিতে দিমে। প্রায় হল্প দোহন গালে উচ্চ থাকিতে থাকিতে মেনন করাইবে। দারীরে প্রাতন হ্লভ মাধাইবে। হাগ্যাংস, কচ্ছপাযাংস, প্রোল; প্রাত্ম কুমাও, হিঞা দাক, হৃতির জন, গর্কড ম্বঃ ভাবের জন, শতমুকীর রস, দিহরির পানা এই সকল সেবন করাইবে।

क्यू टेउटलत मण बाहा डेशाम हाटा परवक छेशकाह पटर्न ।

ছত পান করাইলে এবং বধাবিধি মাগ, যজ্ঞ, ছোম ও কেবার্ছ-নাদি করাইলে অনেক পরিমাণে আগতক উত্থান রোগে উপকাম হয়।

দিশি কুখাতের রম ওড়ের সহিত মেনন করিলে উপাদ রোগ কুরী-ভূত চুইরা থাকে। ভঠী, পিশ্বনী, মন্ত্রীয় ছিল, সৈত্বৰ, কটকী, শিরীবনীক। ভব্র কর্মবীজ ও ছেত স্থাপ এই সকল ত্রব্য সমস্তাগে এহণ কর্মভ গোদুরে পেবণ করিয়া গাতে মর্মন করিলে উল্লাস রেগে প্রশাস্ত ইয়া।

রোগীকে কোঁকিলের মাংস ভোজন করাইমা বায়ুপুন্য স্থানে নিজিত করাইলে রোগ প্রশমিত মুইবা থাকে।

চারিমাবা আকীরন ও ভূই মানা কুড়চূর্ব একত করিয়া দেবৰ করিলে উন্মান রোগ দুরীভূত হয়।

চিনি কিবা মিছরির সহিত কুমাধ্রম সেবৰ করিবে। বচের কাথ উম্বাদরোধ্যে বিশেষ উপকারী। বালার কাথে অনেক উপকার দর্শে।

চড়াই পাখী মারিয়া তাহাকে রেণ্ডে তছ করিবে। উউবরপে তছ হুইলে তাহাকে চূর্প করিতে হুইবে। ঐ চূর্প দুর্বের সহিত শিক্ষিত করিয়া দেবন করিলে উমাদরোগ বিমাশ পাইরা খাকে।

এই রোগে রোগীকে ভর দেখান, সমর বিশেবে প্রভাগ দাব এবং ভাহার মনে আনন্দ উৎপাদনকরিবে।

ধনি কোন অভিনয়িত পৰাৰ্থের অভাবে নন কছির হইর। উন্নাদ রোগের উৎপতি হয়, তাহা হইনে তদহুরূপ ত্রবা প্রবান হারা এবং নানাবিধ প্রবোধ বচন হারা তাহাকে আরোগা করিবে।

লোড, খিংনা, রোক ভয়, শোক, কাম গুড়তি কারণে উন্ধান রোগ মইদে ঐ সকলের বিশরীত ক্রিরার অন্তর্ভান মারা রোগের শান্তি করিবে।

, তথুলোমকেই সহিত খেত অপরাজিতার শিক্ত গটিয়া পুস্লাতন খুতের সহিত নতা এছণ করিলে উত্থাদ রোগ বিমাশ পাইয়া বাকে।

য়াধান খনার মূল, হরীতকী, ভাষলকী, বহেড়া, বেণুকা, দৈবলাক,
এলবালুক, লালপানী, মুখা, তগরপাছকা, হরিল্লা, দাক হরিলা,
অন্তর্ল, স্থানালতা, প্রিন্তু, তাহীশপাল, নীলোহপাল, এলাইচ,
দন্তীমূল, মহিনা, লাড়িববীজ, বাগোধর কুল, রহতী, নালভীতুল,
বিভৃত্ব, চাকুলিরা, রুড়, রক্ত চন্দ্র ও প্রকাঠ এই সকল তবা প্রভাৱে
কুই ভোকা পরিখানে লইরা বোল দের কলে নিছ করিবে। চারি নের
অবলির পাকিতে তর্গো বোল দের হত দিয়া পাক করিবে। ক্রিক্তি

ম্বর্লেই পাক সমাও ম্বল । এই য়ত সেবন করিলে ও শরীরে সংখাইলে উত্যাদ রোগ বিমাশ পার ।

# ওল্যুচিকিৎসা ।

ত্রিবিধ স্বেদ থারা গুলা রোটেগর উপাশ্য হইরা থাকে। গ এই রোটেগর অধ্যাবস্থাতে বারুদ্ধন করা এবং গাতে বিষ্ণু তৈস ফর্মন করা সর্বথা বিধেয়।

নৈত্রৰ, টিডা, শিপানী, শিপানীখুন ও ব্রেড জীরক এই সকল ক্রম মঞ্জের সহিত্য পান করিলে ওলারোগে উপকার দর্গে।

ভাষু, পারন, গন্ধক, জনপান, ত্রিক্লা, কটুকী, এই সকল এবা অভোকে সমভাগে অহণ করিলা কারতার পেশণ করিবে। নিছ শরিষাণে এই উবধ সেবন করিভে হর। এই ঔবধ সেবন করিলা গরীষ জন শান করিবে।

হরীতকী, বিং, লবণ, ঘমানী, ঘবক্ষার ও ইনছুব এই সকল ক্রব্য ছয়োয় সাইত শান করিলে গুলা রোগ এশিন্ত হয়।

জোক ছারা রজ্জবোক্ষণত এই রোগে কলতাম।

দুই ঘাৰা কুড় চৰ্ব ও দুই আৰা সজিলার কার এরও তৈলের সহিত্ত বিজিত করিলা সেবন ক্রিলৈ বাতিক গুলাবিদাশ পাইলা খাকে।

ছারি আনা ঘৰকাল্পের সহিত একডোলা এরও তৈল সেব্য ।

শার্ম, ভূঁতিরা, গদ্ধক জর পাল, পিশালী, সোণালুর মঞা এই লক্ষ্য ক্ষা সমজাগে লইয়া সিজের ছুগ্ধে পেষ্ণ করিবে। আঘলকীর ছুলের সহিত এই ঔষধ সেবন করিতে হয়।এই ঔষধ সেবনাত্তে ডিক্টিটী

প্ৰেদ বিনিধ । পিওলৈদ, ইউকাশেদ ও কুন্ত শেদ। সিদ্ধ মাণলাদি যালা বে খেদ প্ৰদান করা যাল, ভাছাকে পিও খেদ করে। কাজি
প্রভৃতি হারা ঘট পারিপূর্ণ করিলা তজারা খেদ প্রদানের নাম কুন্ত
খেদ এবং ইউকচূর্ণ উক ও কাঁজিতে পুবাইলা ভাহা যালা বে খেদ
প্রদান করা যাল, ভাছাকে ইউকা খেদ কহে। ইহার মধ্যে যে কোনরপা
খেদ প্রদান করা ঘাউক্ না কেন, শুক্তরোগে বিশেষ কল দ্বিনি থাকে
লক্ষে প্রদান করা ঘাউক্ না কেন, শুক্তরোগে বিশেষ কল দ্বিনি থাকে
লক্ষে প্রদান করা ঘাউক্ না কেন, শুক্তরোগে বিশেষ কল দ্বিনি থাকে

কলের রূপ ও স্থিমিজিত আর পথা বিবে। ইবাহারা ওলা রোগ্ অশাস্ত হর।

হরীতকী, দত্তীমূল ও চিতামূদ এই করেক মধা প্রভাক চল্লিশ্ব শাস্থ পরিমালে লইনা বজে বছন পূর্মক চৌবাটি সের জনে পান করিবে। আট দের অবশিত পানিতে পাঁচ পদ প্রতিন গুড়ওচারিপদ তিনতিল দিবে। পরে চারিপদ মধু, চলিশ রতি হরীতকীচুর্গ, আট ডোলা দাক চিমিচুর্গ, ৮,ভোলা ডেলপ্রচুর্গ, আট ডোলা এদাইচচুর্গ ও আটডোলা মামেশ্বর চুর্গ দিলা সামাইবে। এই ঔষধ সেবন করিয়া উক হ্রাপার করিতে হয়। ইয়া বারা গুলু রোগ্য প্রাণ্ড ছাইরা থাকে।

#### চক্রোগের চিকিৎসা ৷

হরীতকী রতে তাজিয়া জলের সহিত নাটিয়াচকের বাহিরে নিজে চক্রোগ অপান্ত হয় ।

ষচ, রজচন্দন, শুখী, গিরিসারী ও চাথড়ি এই সকল এবা একত্ত বর্জন পূর্বাক নেত্রের চারিসিকে লেপঞ্চনান করিলে চকুরোগের নির্কি হয়।

বিকট্ন বিকলান কাকড়াগুলী, শবিরায়া, শুর্চী, রাক্ষা, নীলোৎপদ্ধ কাকোলী, গঞ্জিদ্ধ, বেড়েলা, কেশরাজ, কন্টকারী, ব্রহতী, শেষ্ডি, অজ-এই সকল দুবা প্রত্যেকে এক পল গ্রহণ পূর্বক বিশলার কাশ্য ভূজরা-জের রম এই চুই ত্রবাহারা প্রত্যেকে সাতবার ভাবনা দিবে। শদ্ধে বদরান্তি প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইবাকে নমনামৃতপেতি করে। ইবা হারানুস্ক্রপ্রকার মের রোগ বিদ্যাতি হয়।

ভহর করঞ্জার বীজ, ত্রিকটু, ও মনংশিখা এই সকল পুরা ভূল্য পরিমাণে ডক্স করত তথুবো নেত্রে জন্ধন প্রদান করিলে চক্তুরোগ বিনাশ পাইরা খাকো।

করবীরের কচি শাও। ছিন্ন করিলে তাছার অঞ্চতরভাগ হইতে **তে** রুম বহির্গত হয়,নেই রুম নেত্রে দিলে মর্ম প্রকার চক**ুরোগ আংরালা** হুইয়া থাকে।

কিঞ্ছি ভাকিং গ্রায় মনসালিজের প্রের রূপে ধর্মন করিছে।

পরে উহা নেত্রের পাড়ার লেপ এলাব করিলে চক্লুরোগ্ রিলাপ পরি।

ঁ কাঁচা কাগজিলেবুর রস চক্রোগের পকে নিশেষ উপকারী। তনগ্র চকে অধান করিলে চক্ উঠা প্রশমিত হয়।

নিলি দাড়িবকলের দানা টিপিলে যে রস বহির্গত হয়, সেই রস ছক্ রোগের পক্ষে বিশেষ উপকারী।

দ্রিকলা, শদ্ধকান্ঠ, ঘঠিমধু, এই স্কল দুবা প্রত্যেকে সম্ভাগ এবং এই সমত দুব্যের সমান লেছি এই স্কল দুব্য একর করিয়া লইবে। ইহাকে তিমিরহর দেহি কছে। চন্দ্রমা বেরণা তিমির বিনাশ করেন। সেইরণ ইহাহারা সকল প্রকার বেত্রোগ প্রশাস্ত হয়।

গিরিমাটী, রক্তচন্দ্র, শুঠী, চাখড়ি ও বচ এই স্কল দুবা সম-শুয়ো নইরা জনে বর্ষণ পুর্বাক গোলেপ দিলে দুকু উঠা ভাল হয়।

দুই টুক্রা কাগজে আফিং লাগাইরা দুই বিকের রগে দিলে চক্ত রোগ বিনাশ প্রাথ হয়।

ভৌতুগভার হারা,দের ধেতি করিলে চকু রোগ বিমাশ পাইরা গাকে।

জনতীপাতা হেঁটিয়া কটি প্রস্তুত করত চকুর উপর বন্ধন করিছে। জন্ধুয়োগে বিশেষ উপকার সর্পে।

বক্টের টাটকা আঠা চক্তে নিলে বিশেষ উপকার হয় ৷

্রসাপ্তৰ, নৈত্বৰ গিরিমানী সাক্ষরিদ্যা, ও হরীত্বী এই বৃত্তি সুন্ধা একত পেরণ করিলা লেপ আদান করিলে চক্ষুরোগ বিনাশ আও বৃদ্ধা

মুখা, ছাত্ৰবিদ্যু ও গিরীবাসী এই তিন, পুর্বা হাগী দুবো শেষধ পুর্বাক দেশ প্রহাম করিকে দ্বের রোগ প্রশান্ত হয়।

বংশকপুর অর্থাৎ কোন কোন বাশের সংখ্য কপুরের ন্যার বেড বর্গ এক প্রকার পদার্থ জন্ম উহার গন্ধ অতি চন্দ্রর উহা চঞ্চুর কাষ্ট্রে নিলে বে কেন্ত্রক্রণ চক্তরার্য হউক্ না কেন বিশেষ কল দার্মিন।

বিকলা ধারা গ্রাহত লাগ করিয়া তাহা এতাহ একজেলা নেবন্ধ ক্ষেত্রেগ নিলের বিশকার দর্শে। হরীত্তী, বচ, বহেতা, পিশ্পনী, নাডিশথ ও মনঃশিকা এই সকল জব্য তুলাপরিমাণে লইছা চ্যের সহিত খলে মর্ছন পুথাক মধু বোলে চক্লে দিলে বিশেষ উপকার দর্গে।

### নানারোপ, নানাকত ও নানাদিরা রক্তপ্রাব চিকিৎনা।

গুণাগুলের গাড়ি প্রস্তুত করিয়া তাহা আলিয়া ভাষার পূব স্থীরে। ভ নাসালছে, প্রদান করিলে নাসা রোগ প্রশান্ত কইয়া গাড়ে।

আস্তার সহিত কেওগুড়ে রস শিক্ষিত করিলা তথারা মক্ত গ্রহণ করিলে বিশেষ উপকার দর্গে ।

বার্ট পুনসীর পাতার রুম হারা কল থাহণ করিলে বিলেহ উপবার হয়।

আকলের ভাটার ধুম নানারছে, আহণ করিলে কল দার্শনা থাকে।
একভাগ পারদ, চ্ইভাগ গছক, তিন ভাগ সোহাগা, চারিভাগ বিষ ও পাঁচ ভাগ মরীঃ এই সকল এন্য আহার রনের সহিত পোষ্ধ করিলা পাঁচ রতি পারিমাণে বড়ী আছত করিবে। ইহা বারা সকল প্রকার নালারোগ ধংসাহর।

প্রথমতঃ এক সের তিনতিল প্রায়েত চড়াইরা গিলে। বধন তৈন প্রতান্ত পর্য হাইবে, তথন ভাষার মধ্যে বুল, শিলালী, দাক হরিলা, যব-কার, তহর কর্মার বীন্ধ, লৈশ্বৰ, বামনহালী এই নকল প্রয়ের প্রতোদ কের হাই ভোলা চারি বাবা হল রতি করিরা চুর্গ করত উহার মধোন কেনিরা কিবে। যথম ভিল ক্লবর্গ হাইরা উঠিবে, তথম নামাইবে। এই তৈল মালার্ড্রে দিলে সর্বাপ্রকার মালারোলা বিমাশ পাইরা গাঁচেন।

ভূতৰ যাম্পা আঞ্চলে পোড়াইরা কেই কল নারিকেলের তৈলের নহিত বিশাইরা কত ছানে দিলে নালাকত আরোগ্য হইরা থাকে।

পেরাজের রাগের নাত থাকা করিবে নাক দির) রক্ত পঢ়া আশান্ত ক্ট্রা থাকে :

বাঁটি সর্বপ তৈলের মত থাংশ করিলে মানাদিয়া রক্তমান পুরীভূত

টাইকা পৰা যুতের মক্ত যালাও মানারক আহে বিশেষ উপকার কর্মো।

চামেলী প্রেপার তৈলের স্থিত প্রাতন হত যিপাইরা বন্ধরছে বিলে যাক দিরা রক্ত পঞ্চা বিনাশ পাইরা থাকে।

### शिरहारहाश हिकिधना ।

রসনিক্ষা কৰে, তালু, দেখি, গান্ধক এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক আগ থাবৰ পূর্বাক সিজের মুখ্যে এক দিন মর্মন করিবো উভসরপ মার্মিত ছেলে একদারা পরিমাণে দলী করিবে। ইহাকে চাল্রকান্ত রস কছে। প্রতি দিন পেছিপাতে মধুর সহিত মর্মন করিবা এই বঁটা সেবন করিতে হয়। ইহা মারা এক সভাহ মধ্যে সর্ব্যঞ্জার শিরোরোগ প্রশান্ত হইসা শাকে।

মুই রগ বরিলে খেত চলন গৰিয়া তাহার সহিত কিঞ্চিৎ পরিষার্শে বিকাদন যিজিত করত দেশ প্রকাশ করিছে।

শনসাসিজের আঠার সহিত ধানি লক্ষা বাটিরা ভবারা লেপ প্রদান ক্ষিত্রে নিজেরোগ আরোগ্য ক্ষিয়া থাকে।

ৰামুজনিক শিরোয়োগ বালু বিমাণক লব্য <mark>কোজন করিবে</mark> এবং কোজ প্রবেশ ও নস্য এই সকল এবণ করিতে হয়।

্পিডখনিত শিরোরোগে পিড নাশক ত্রন্য কোজন করিতে হয় এবং হত, হুড, জনবেক, শীতন ত্রব্যের থালেশ এই সকল অমুঠান করিবেঃ

ৰটি মেছাজনিত নিরোরোগ জন্মে, তাহা হইলে কেন্, উপৰাস্ত তীক্ষতবোর নন্য এবণ, শুনুগুছণ এই সকল বাবছের।

নিশালনচূর্ণ ও টাইকা চুগ একত নিজিও করিয়া নদ্য আইগ করিলে আন্ত এই রোগো কল মর্গে।

সশস্থানর কাশ আন্তত করত তাহার সাহিত হত ও সৈত্রৰ মিশা-ইয়া নম্য গ্রেছণ করিলে স্থ্যাবর্ত লাখক শিরোলোগ বিনাশ পার। আপরাজিন্তা প্রশেষ রল কইয়া তথারা নধ্য গ্রহণ করিলে বিশেশ উপকার হয়। অপরাজিতার মূল কর্ণে বছন করিলে শিরোরোন এখাও ধরিনা
ভাবে ৷

হড় হড়ের রসের সহিত হড় ইড়ের বীজে পোকা পুর্বক লেশ প্রদান করিলে শিরোরোগ প্রশমিত হইনা পাকে।

বুচুকুল প্লা কাজির সাহিত দর্শন করিরা ভাষারা দেশ প্রদান করিলে শিরোরোগ দুরীভূত হয় ।

স্ক্রিনাছাল জনে মার্কন করিলা শেপ বিষেপ্ত বিশেষ উপকার সংগ্রে।

রাখনের সহিত শিবুলের লিক্তু দর্কন করিব। লেপ দিলে বিলেক উপভার হর।

রজ্ঞচন্দরে সহিত কাঁটালি কলা মিজিত করিয়া লেপ বিজে শিরোরোগ গুরীভূত বর।

চৌরকীটা, অঞ্জক, হোগালার শিক্ত ও পাছকাঠ এই স্কল প্রবা একর জলে মর্থন করিরা ভাষার সহিত কিঞ্চিৎ হড় মিজিত কর্ত লেপু এফান করিলে শিরোরোগ অলাভ হয়।

বিচ এবং গিল্পানী এই মুই জব্য সম্ভাগে ভূপ কর্তঃ ভ্রারা কর্মা শ্রহণ করিলে শিরোরোগে উপকার কর্মে।

ক্ষম তিলের থোনা সুলিয়া নেই তিল এবং জটানাংনী সম্ভাগে লইয়া কিঞিৎ সৈত্বৰ ও মধুর সহিত একত কয়ত লেপ দিলে আদ ৰূপঃসিয়া শিরোরোগ বিদাশ পাইয়া খাকে।

হুই তোল। পরিবারে ছাগীল্য ও ছুজ্রাল রস্থ দিলিও করও ছুর্যু-কিরণে উভগ্র করিয়া নস্য সইলে ভ্র্যাবর্ত ও অন্যান্য অনুক্ প্রকার শিংবারোগে উপকার সর্মো।

বরিণের শৃদ্ধ, হাগীয়ন্ত, রজচন্দ্রন ও নাউবীক একত বর্ষণ পূর্বক লেশ একান করিলে শিরোরোগ এলার হয়।

#### রক্তপিত্ত চিকিৎসা।

্যবুর সাহিত কোচয়ন সেনন করিলে রক্সণিত রোগ্রু এশবিত ইবা নাকে। ্রত্ত্বপূর ও বাসকের হাস ধাই সূই তথা একত করিয়া ভাষার ভাষা প্রস্তুত্ত সেবন করিলে বিশেষ উপকার সংশ্

্দশরতি পিশালীচূর্ণ ও একতোলা বাসকের রস এই হুই জবা একজ করও চারি আলা সধুর সহিত বিজিতে করত দেখন করিকে রঙাশিক রোগা সুরীকৃত মইরা থাকে ৷

ভূৰ রের রস ও মধু একর করিরা সেখন করিলেও বিশেষ কল প্রেরা বার।

একভোগা গৰা রাজ এক ভোগা মধু ও ছুই ভোগা বিচুপ একরা করিয়া সেবৰ করিলে রজনিত আশাত হর। আভালালে সেবন জরাই বিধি ।

শালকুল, শিমুলছুল ও কাঞ্মকুল আত্যেকে এক তোলা প্রিমাণে লীয়া দেবন করাইবে।

াসৰ পাও। পুটপাক করিয়া ভাষার মুবের সহিত্ত চিনি ও মধু, মিজিত কয়ত দেবন করিতে হয়।

একডোনা শিপাদী, এক তোনা তেউড়ী, এক ডোনা স্থানানতা, একডোনা ডিফনা ও ডের আনা চিনি এই সকল দুখা একড করিয়া চারি আনাপ্রধাণ এক একটা খটাকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিক জনের বাহিত এই বটীকা বেশন করিছে হয়। প্রতাতকালে কেশন করাই বিশি।

শিশালীচূর্ব ও মধু এই ছুই দুবা একত্র করিছা দেবন করিছে। বিশেষ কল প্রাধার কলা যার।

া বাসকের রুসে হরীঙকী সাত্তবার ভাবলা দিয়া লেই হরীওকী লেব্য করিলে রুজপিত রোগে বিখেব উপকার দর্গে।

#### বরভদচিকিৎসা।

শৈষ্টিক বার তেব রোগে মধুরুক্ত রাজ বাজিক বরজেনে নৈছক-চুর্বরুক্ত জিনতৈর এবং হৈছিক ব্যরভেনে ভঠা, শিশালী ও বরীচ বিশেষ উপকারী ৷ তিনার শিক্ত হরিদা। ঘবলার। ব্যথদানী ও লাক্ট্রী এই স্বল ক্রা স্বভাগে এহণ পূর্বক চূর্ণ করিলা ছড ও বছুর সহিত দেহক করিলে বিলেব উপকার দর্শে।

ত ঠীচুৰ্। পৰ্বল ও ধৰু এই ডিম এবা এবল করির) লেখন করিলে বিশেষ উপকার হয়।

বৰ্ধ রও নিশিও করিলা ভ্রারা ভ্রত্তা করিলে বিশেষ্ট উপকার: ব্যাঃ

লৈক্ষর। এ সর্বাশ হৈছেলর করণ-ও-বিশেক করঞার।

ব্যক্তিবপু ও মনু এই মুই ত্রবা একত করিব। বেহুম করিবে বিশেষ উপকার দর্শে।

বরিত্রা, কুড়, বচ, শিশানী, তারী, কুকরীরা, ব্যবসানী, যক্তিমধু ও সৈশ্বর এই সকলের চূর্ব সহজাগে প্রবন কর্ড হতের সহিত মিজিক করিয়া দেহন করিলে বরাজেন রোগা প্রশাস্ত হয়।

পারন গছক, বিষ নোখাগা, গরীচ, চৈ, চিতা, এই সকল-প্রব্য স্বশ্রিদাণে দইরা আদার রুসে সর্জন পূর্মাক তিবরতি প্রার্থা বড়ী প্রস্তুত করিবে। ইয়াকে ভিরব রুস ক্ষে। মান ইবার অস্থান্থ ইয়াবারা প্রান্ধ, কাম ও পারজেদ বিন্তু হুইরা যার।

কলিকার তেজণাত সাজিরা সেই ধূৰণান করিলে এই রোগে বিশেষ উপাকরে কর্মে ।

হৈনত্বৰ লবণ ও কুণপাত্ৰ অক্টেড হুছেত ফাজিলা সেবৰ করিলে **এই** লোগ বিমাণ পায়।

একটি পাতে বোল বের তাবিরস রাখিরা তাহা অথিতে চড়াইটা
দিবে এবং তাহার মধ্যে বরিন্তা। হড়, রহজী, হরীতকী ও জাতিপুলা
এই করেক প্রব্য প্রত্যাকে এক পল পরিমাণে পুটলি করিয়া দিবে।
জাতিপুলা হেঁচিবে মা, কিছ জ্বা নমন্ত হেঁচিয়া দিকে। পারে সারি
সের অবশিক্ত পাক্তিত পুটুলি নিজ্জাইরা নইবে এবং চারি বের
রতের সহিত পাক্ত করিবে। বর্ষা রাম হইরা ক্ষেম্ব রত্যাত্ত
অবশিক্ত থাকিখে, তর্মন তাহার মধ্যে পিলালী, ক্ষিক্ত বৈছর।
চিনিত বালা এই সক্ষা স্বয়ে প্রত্যাকের চুর্গ হুই জোলা করিছা জিলা

বাজিতে থাকিকো দীওল হইলে নাবাইরা জন্য পাতে রাখিতে হয়। উক্ত মুখ্যে সহিত এইঐবংগর অক্তোলা পরিবাণে দেবন করা বিশ্বের। ইয়া যারা স্কুত্বর অরজন্ধ রোগ বিনাশ পাইরা শাবে।

# मृष्ट् । विकिथ्या ।

ৰাতিক মুক্ৰণ বোণা হইলে বায়ুৰ্নিবায়ক ঔষধ মেৰন এবং বিক্তিত পাত্ৰে শেপন করাইতে হয় এবং গাতে শীতক ক্লপ একাম করিবে।

শৈষ্টিক মুৰ্ন্থাতে গুড়ুচীতৈৰ গাতে যুক্ত করিবে অধ্যা গুলঞ্জের স্থাস কিছা, পালভার রস, মার্চন করিলে বিশেষ উপকার হয় । র্জ্ডচন্ত্র কর্মৰ করিছা গাতে মার্চন করিলেও উপকার দর্শে।

পল্ভার রস দেশন ধার। গৈতিক সৃক্ষ্ । দূরীভূত হর।

ি কৈ বিক মুক্তি তি নিৰিপাতা ভালিয়া চূৰ্য কয়ত ভাষা গাৰে। বৰ্ষণ করিবে।

দলমুশাদিকৈল গাঁৰে যৰ্কন করিলে লৈখিক মুদ্দ্রি বিশেষ উল্লেখ্য দর্শে ৷

ি শুট্ট আজিলা কাহার চূর্ব গাবে বর্গন করিলে লৈখিক মুক্র। বিলাপ পাল।

ছরিমার ভালির তাহার চুর্থ গালে মার্থন করিলে কাচ করা। কাছারি বিশেষ উপালার দর্শে।

অধুর সহিত বিক্লাচুৰ সেবৰ করিলে মুক্তারোগ বিনাস পাইরা বাংক

্ট্টেই বৃত্ত বার। এক আহন করিলে গুদ্ধারোগ বিনাপ পার।

মধুর সহিত পিশোলীচূর্য নিজিত করত ভাষা দেহন করিলে মৃদ্ধা।
স্থাধ্যে বিশেষ উপকার সংগ্রঃ

ক্ষান্তোৰা শতমূৰী, ক্ষান্তোৰা গুঠী, ক্ষান্তোৰা বেছেনা, ক্ষান্তোৰা গুৰুক, ক্ষান্তোৰা আমা, ক্ষান্তোৰা শিশ্বনীযুদ, ক্ষান্তোৰা ক্ষান্তী, ক্ষান্তোৰা মুক্ত, ক্ষান্তোৰা খাগাকেশ্ৰ, ক্ষান্তোৰা মুক্ত, ক্ষান্তোৰা মুক্তৰ ক্ষান্তীয় সাম, ক্ষান্তোৰা ২১, অধিতোলা নৈত্ৰৰ ও অভিভোল। স্মাতি কৰিল ক্ৰম একক, কৰিছা। ছই দেৱ আলে নিজ করিয়া অভিনেৱ অবিশিক বাকিতে শামাইৰে। এই কার বার ভাগ করিয়া বার-বায়ে দেবৰ করিতে হয়। উহার- সহিত মধু শিক্তিত করিয়া-গেষৰ করাই বিধি।

় নাসিকার**ছ**ু ছারা কাগজের ধূন গ্রহণ করিলে বিশে<mark>ৰ উপকায়</mark> কর্মো।

ছতের সহিত হুরাল**ভার কার্থ একত করি**য়া কেংক করিলে এই রোগ ভারোগা হয়।

মুক্তারোগে শিশুলের মূর্ণ ও রসনিজ্ব বরুর সাইত বিজিত্ত করিবা সেবন করিবে। এই ঔষধ দেখনাতে শীতলজনে রোগীকে আন করাইতে হর এবং তাহার গাতে শীতল জন সেচন করিবে। এইরূপ করিনে মন ও মুক্তারোগ বিষ্ট হয়।

### शक्तिकदमा ।

ধৰিরার চাউল বাটিরা তাবা চিনির পাবার বাইত বিভিও করত।
 কেবম করিলে চাইরোগ বিল্ফ বর।

চলন, পদকাৰ্ড, বালা ও বেণার শিক্ত এই সকল জাৰাের চূৰ্ একত করিলা একটা বৃহৎ সৃতিকার বা কাঠের আবশাতে অর্থাৎ উলে কেলিয়া ভাষাতে জলপূর্ণ করত সেই জলমধ্যে বলিলা আম করিলে কাছ রাাো বিশাশ পাইলা থাকে।

একটি রাজা নারিকেলের রূপ কাটিরা ভাষার সংগ্য ইন্দুজ্য পুর্ন করত অপকান ছাপন করিবে। পরে ভাষা নেবন করিলে নাহ রোগ বিনাশ আন্ত হয়।

ু এক থানি বস্ত্ৰে কাঁজি মাখিলা নেই বস্ত্ৰ থানি গাছে আছেছিও করিলে দাহ রোগ বিনাল পাল।

লবি ও বেগার লিকড় একজ বাটিয়া লেপ প্রকান করিবে।

নাভিত্র উপর এক শানি কাঁলার পালা রাধিরা উর্ছ হইতে। ভাষার-উপর শীতপ কলধারা নিকেশ করিলে কাহরোগ প্রান্ত হয়। ক্ষেত্রপাপড়ার কাধ প্রস্তুত করত মধুর সহিত দিলিত করিয়া সেবধ করিলে দাবরোগ প্রশাস্ত হয়।

ভগতের কাশ মধুর সহিত সেবন করিলে বিলেব উপাকার দর্শে।

সুগের ভাইদ ভিজাইয়া তাহা বাতাসার সহিত দিভিত করত সেধ্য

করিফে দাহরোগ অলাভ হয়।

পাঁচভাগ পরিদ ও এক ভাগ তাদু একত্র করিয়া জাদীরের রুষে

যর্কন করিবে। পারে উহার সাহত পাঁচ ভাগ গঞ্জ নিজিত করিতে

হবৈ। অনুভার পানের রুষে ভাগলা দিরা ভূগর বাত্রে পাক করত ভাল করিবে। ইহাকে দেহাতক হন বলে। হই রুভি পারিমাণে এই তার সোধন করিতে হয়। আলার রুম ও তিকটুচূর্ব ইহার অনুপান।

ইহারারা লাহ সভাগ ও শিত্রকা বৃদ্ধ। বিশাশ পাইরা বাকে।

#### দম্ভরোগ চিকিৎ বা।

্ পুত, বাক হরিমান লোক্ত, মুখান আকুনানিমূল, চৈ, মরাকটকী, মারিমান পূঁতেজন্মন হত, পিশালী এই সকল জন্য সক্ষাণে এছক পূৰ্মক হাতের সহিত মিজিও করিমা মুখন্ধ্যে স্থাপন করিলে সক্ষাথকার ক্ষায়োগের উপাধ্য হয়।

্কুনিদত্তে বিশ উচ্চ করিয়া লাগাইলে বিশেষ কল পাওয়া যায়।

ু নিশিপানীচূর্ণের সহিত কিঞ্ছিৎ মধু ও কিঞ্ছিৎ হুও নিজিও কয়ত

ছুধাম্বো ধারণ করিলে দত্তপুল বিনাশ পায়।

তিক্টরণে নাত্র করিলে কররোগে বিশেষ উপকার হয় বিশ্ব স্থান কাঠে কর বাহন করিবে বা। করবী। অশবং করন, অর্জুন, আকল ও যাসতী রক্তের কাঠে দত্ত হাবন করিবে।

ত কশপ্র থকিরকাউচ্ব চোষটি বের জলে সিম্ব করিব। আট সের অবশিষ্ট থাকিতে ইাকিয়া ভাষাতে জায়িত্রি, কপুরি, ওবাক, লারকান, এই সকলের প্রত্যেকের চূর্ব আট ভোলা ও আট ভোলা থাকির নিয়া পাক করত মেই উব্ধ মুখে রাখিলে সর্মপ্রকার কর্মেয়া বিমাশ পার। কট্টিকিটিক পৰিতে জল প্ৰয়ণ কৰিয়া তক্ষুৱা কল্প করিলে দওড়োগেঁ বিশেষ উপকাৰ হয়।

পদি সভক্ত হয়, ভাষা হইলে শগতা, যিহপত্ম ও ত্রিকলার কার্যে স্থা গোত করিখে।

বদি দত্তে কৃষি আছে অৰ্থাৎ পোকা ধয়, ভাছা কইলে সিজ, নীক পাছ। কিয়াই ৯ কাকজনতা এই সকলের শিক্ত চর্মণ কয়ত গাঁতে ধর্ম করিলে পোকা সকল বিমাণ পাইয়া থাকে।

মঞ্জিন্না, লোগু, যক্কিনগু ও খদির এই সকল প্রবাসে সহিত কৈন প্রত্তিক কিন প্রত্তিক কিন প্রত্তিক কিন্তু কিন্তু

শবণের সহিত রূল মিলাইরা ভল্বারা দত্ত থার্ডণ করিলে স্বর্লোগে দিশে উপকার দর্শে :

হিজন রক্ষের কল এঁড়া করিবা করে দিলে বডরোগ নিবরিণ হট। তৈলের গঙ্ধ গুহুল করিলে দন্তরোগে বিশেষ উপকার দর্গে। ভূঁজিয়া দয় করিবা দত্তে দিলে দন্তরোগ বিদাশে পার। ভাবের জল গরম করিবা ডজারা কবল করিলে আঙ কল দর্শে।

সৈত্ত্বৰ লখণের সহিত বেত সৰ্থ বিশাইয়া তথায়া কৰল করিশেও ক্ষত্ত্বোগ বিশাশ পার ।

বাঁদি ছকার জাল কবল করিলে বিশেব উপকার দর্শে।

একভাগ রসসিল্র, এক ভাগ অর্থ, মুইভাগ মনাপিলা এই স্কর্ এবা একত করিল অভসীতেলে মর্কন করিতে হইবে। পিতাকার হইলে উহা বাপড়ে বন্ধন করিলে অভসীকলের কলে লেশন করিবে। পরে লোলাবতে ভিন দিন পাক করিতে হইবে। পরে উহা ভূগিলা মুখে বারণ করিবে ভিন্তা ও দ্যাদিগত মুখ রোগ এখাত হর। ইহাকে চতুর্ব বর্গ করে।

#### বসন্তরোগ চিকিৎ দ।।

কন্দলারির শিক্ত বার্টিনা পরীচ চুর্নের সহিত বিভিন্ত করত ক্ষেত্র ক্ষরিবে।

শীতন ললের নহিত অর্থাপোরা মধু দেবন করিখে বিশেষ কল কর্মে কেন্দ্রপাপড়া, চিয়তা, পদতা, কটকী, মুন্তা বিষয়াল, বাসকহাল, ব রামজা এইসকল ক্রব্য প্রত্যেক হড়ি হতি করিয়া দুইয়া শুল্প ক্রেয় ক্রেই নিত্র করিবে। অর্থ পোরা অরণিক বাবিতে সংগ্রহতে হয়। এই কল সুই বারে দেবন করিলে বিশেষ উপকার হয়।

্ত্র প্রীতন জলে ক্স্ট্রেক্সের ফল ধর্মণ পূর্বাক তারার সহিত হয় রজি নরীচ। ভূমী বিভিত্ত করিয়া সেবন করিলে অমেক উপকার হয় ।

আতিস, শুনী, গুলঞ্চ, ইপ্রবন ও মুখা এই সকল প্রদা আজেকে ব্যিন দ্বাভি পরিমাণে নইরা অর্চনের প্রশা নিশ্ব করিবে। অর্চণোরা অবনিথ শাকিতে মানাইডে হয়। এই জল মুইনারে সেখন করিলে হিশেব উপাকার। নানো

সময়তি হরিপ্রাচ্*রের স*হিত এক ডোলা উচ্চে পাতার রম সিশ্রিয়া সেবন করিলে মনেত উপকার হয় ।

#### পাণিবসন্ত চিকিৎনা।

ক্ষরী শান্ধের ভাটা হেঁচিরা সেই রুস গাছে বর্জন করিলে আঞ্চ ভিজা বিনাশ শাইরা থাকে।

এই রোগে রোগীকে অপপারিষাণে আহার একান করিবেঃ বলকর ত উক্ষকর তথ্য ভোজন করিতে দিবেনা পার সর্বালা এরণ সভূর্কে খ্যাকিবে বেল শুলীর মুখ হিল হট্যালা বাল গ

## উৎকাশী চিকিৎসা।

মরীচচুৰ্ৰ বিহরিচুৰ্ব সম্ভাগে বিশাইনা কৰে। মধ্যে ছুহুও রাখিতে বিশেষ উপকার হয়।

আদার ক্ষ বধুর দহিত বিশাইরা সেবন করিলে বিশেষ উপক্রি ক্ষ্য

নৰ্বপ্ৰত্তম মধুর কৰিত মিজিত করিয়া মধ্যে মধ্যে ভাষাল ভিছিৎ জিলায় এবেন পূথকৈ গেছন করিবে।

্ সরীত কিন্তিন, শিশ্চনী, যক্তিমগুও শিও থেজুর সম্ভাবের প্রছণ জি চুর্করিয়া গ্রায়ত ও মধুর সহিত মিলিত করিবা লেছন করিবে। পুসুরার থাক। পাতা ও কল ৩৯ করিবা থাকা কলিকার সালির। ভাছার বুর পান করিলে উৎকাশী প্রশান্ত হয়। ইবাদারা হাঁপানি রোগেও বিলেধ উপকার মর্মে।

সাউপাতা শুহু করিয়া ভাষা কলিকার সালিয়া ভাষার ধূম **গ্রেহ**ণ করিলে বিশেষ উপকার হয়।

জন্ধতোদা মরীচ, অন্ধতোদা গবের ভূমি, জন্ধতোদা মিহরি এ জন্ধি তোদা বস্তি মধু এই সকল প্রব্য দেজপোরা জনে নিম করিনে। তিন মুটাক সম্বাদিষ্ট থাকিতে নামাইতে হয়। ইয়া পাম করিনে উৎকাদী প্রাদৃত্তি, মুইরা থাকে।

বাসকপাড়া ছেঁচিয়া সেই রবের সাহত কিঞ্চিৎ দগু বিশাইয়া সেকা গরিলে বিশেষ উপকার ধর।

বাষনহাটী, কাকভাগ্সী, হুরালভা, শঠী, সুডা, শিশ্দী ও পুরাতন এড় এই সকল দ্রবার ভূপ সমভাগে আহণ পূর্মক সন্তিবার তৈলের সহিত মুর্মন কর্ম দেহন করিতে হয়।

#### ওলাউঠা চিকিৎসা।

ক্রণাউঠার অধ্যাবভাতে—কুক্লিয়ার প্রস্তুস লেক্র করাইলে বিশেষ্ট উপকার হইয়া থাকে।

গোলমরীচের সহিত কলনা শেরুর খোলা নাটিয়া মেখন স্বারিলে উপকার হয়।

এই রোগের ইঅপাতে তিম লাউ্যস্পরিমাণে এক্সা আতি পান করিলে রোগ দুরীভূত হর। রোগীর বলাধিকাাদি বিকেচনার হয় লাউক্ষ্ দিবে।

ছুই রতি কুজচুদান, তিবরতি অধিকেন, ও বিশ রতি পুরাভন্ত কুজু মিজিত করিয়া তিনটা বটিকা করিবে। জুনে এক একটা করিয়া এই ভিন্নী বেবন করিতে হয়।

প্রমিক পরিমাণে বরক নাবহার হার। এই হোচন নিলের উপকার হুইলা কে। নশ্দী কি যানশ্দী দলা পোড়াইরা আর্র পোলা শীতন পরিছ্ত জলে নিজেগ করিবো কিরএখন পরে সেই জল ছাঁকিরা অর্ম্বছটাক পরিমাণে মুই দও অন্তর সেবন করিলে ওলাউটা প্রনার্থ ছইটা থাকে। কিন্তু প্রদে ইহাত জানা আবস্তুক যে, কাঁচা নম্বা মরিচ প্রহণ করিবে লাঃ শুদ্ধ মন্ত্রীচ প্রহণ করিতে হয়।

্তিক কর্মার বালিপানী চূর্ন সমভাগে আহন পূর্বাক পীতদ জনের সহিত উহার হুই রাজি পাল্লমাণে সেবন করিবে।

়, একটা স্চির স্থাদেশে একটা গোলমরীত বিশ্ব করিয়া প্রতীপের শিশার সম্ব করত সেই পূর্ব নাসিকা যারা প্রহণ করিলে ওলাউঠা ক্ষতিত বিক্ষা প্রসাধে হয়।

কতকণ্ডলি বুড়ি পরিষ্ঠ জনে ভিজাইরা নেই জন খাঁতিয়া একটু একটু দেবন করিনে ওলাউঠাজনিত বমি ও ডুজা নিবারণ হয়।

ে গেঁটে পূর্বা, বড় শশাগাছের পাত্র, ইটারা করা ও আতপ ত**ু**ল্ এই সকল ত্রব্য একত্রে জল দ্বারা চটকাইয়া বছে হাঁকিবে ! দেই জল একট্টু একটু করিয়া পান করিলে ভেদ ও ভূকা নিবারণ হয় !

### উদাবত ও আনাহ চিকিৎসা।

হরীতকী, বিকটু ও পারদ প্রত্যোকে একভাগ, জয়পাল হইভাগ এই সমস্ক ত্রব্য একত্র করিল। ধানস্থারি রলে ও আবকলের রগে ভাবনা বিধে। পরে বটিকা প্রত্যত করিলা লইবে। ইহাকে দৈল্পনাথবিটা কছে। ব্যাধারা উপাবর্তা, আনাহ, প্রত্যা, পাত্র ক্রিনি, প্রত্যা, গাহকত্র পীক্ষা প্রভৃতি বিষ্টে হয়। বিদান্ধি অবং এই উব্ধ ব্যাধান্তেন।

ু মুই ভাগ তেওঁলী চারি ভাগ শিশ্পনী পাঁচ ভাগ ধরীতনী ও এগার ভাগ শুড়, এই সমস্ক প্রবা একত করিয়া মুই শানা পরিবাগ এক একটা টিবা প্রস্কৃত্ববিধে। এই বটিবা ক্রেম বারা উদাধর্ত রোগ বিবাশ পার।

্রীরজের নিক্রের চূর্ব গর্য জলে মিজিত-করিয়া লেখন করিছে। নিক্রমেটি বিজ্ঞা পাইয়া ধাকে। একপদ শর্করা, ছ্ই তোজা পিশোলী চূর্ব ও একপল তেউকীর লিকড়-চূর্ব একত করিয়া মধুর সহিত মিজিত করত দেবন করিলে উদাবর্ধ রোগ বিনাশ পাইয়া থাকে। ছুই তোলা পরিবাণে দেবল করিতে হয়। ভোজনের মধ্যে দেবন করাই বিধি।

ক্সামাণতা, তেউড়ীর লিকড় ও হরীতকী এই তিন ক্রমা একজে নিজের আটার ভাষনা দিয়া সেবন করিলে আবাহ রেচগে বিশেষ উপজ্ঞার সর্লো।

ু সুইতোলা ছুকের সহিত ছুইটোলা এরও তৈল বিজিত করিরা সেম্ম করিলে উদাবর্ত রোগ প্রশান্ত হর।

তেউড়ীর শিক্ত, হরীতকী, সুগ্রোর শিক্ত ও ধর্কার এই সক্র ক্রা সমভাগে পইয়া রতের সহিত মিজিত করত সেবন ক্রিলে উদাবর্ ্রাগ বিনাশ পার।

দরনাকন পুনকটু, কুড়, সৈদ্ধন, খুল ও খেও সরিনা এই সক্ষ রবা সমভাগে লইবা মোট ছুই ভোলা করিবে। পরে উহা এক পল মধুর সহিত পাক করিয়া র্যান্ত ভপরিমাণ নাতি করিবো ঐ ব্যতি স্ততে মানাইবা অহুটোলে এবেল করাইতে বর। এই রপ করিবে ফেল হইনা আনাহ রোগ বিমাণ পাইরা থাকে। ইহা হারা উদাবর্ত, শুল ও অন্যান্য করি রোগও পুরীভুত হর।

জনাৰুর গদা গরম করিয়া ওজুগরা নাজিকেশে **পেদ প্রদান করিছে** লোবর্ড রোগ বিমাশ পাইরা থাকে:

# हेन्द्रबब निव ६ हेन्स मिनाबलब केयथ ।

পার্কের সহিত গুড়ুরার রস অথবা পানের সদ মর্কন করত বর্ণ হইছে। ভদ্ধারা শিলোদেশে শেপ প্রদান করিলে ইনুন বিবাশ পাইরা থাকে। হলুটা বুল, সৈত্রব, হলিটা বুলা প্রিমাণে বাটিয়া লেপ প্রদান করিলে

ইক্সের বিব বিদাল পাইরা,বাকে।

ইক্সে কাৰ্জাইবাহাত সেই ছাবে কিঞ্ছিও ওড় যাধাইশে নিম বিনাশী

कर् त वंखरक माथाइटन देख्य दिमान गाहेबा शाहक।

তাঁজির সহিত মানিতা শাকের বীজ মর্থন করিয়া মন্তকে লেপ প্রদান। বিলে ইকুৰ বিনাশ পাইয়া খাকে। :

### উরম্ভন্ত চিকিৎনা।

ে ্ কশমূল পাঁচনের সন্ধিত চারি মাবা শিলাজসূচ্প একেপ দিয়া পান করিলে উর্ভত রোগ বিনাল পাঁর।

ি শিলাকসু, শুগ ্ডলং শিশালী ও ওচী এই সকল তথা গোৰ্ত বা সমস্মীর কাখের সহিত পেষণ করিয়া সেবল ক্ষিলে উর্ত্ত রোগী রোগ হুইতে মুক্তিমাত করে।

্ হরীতকী, ব্রেড়া, আহদকী হৈ, শুঠী, শিপালী, মরীচ,শোলীবুদ্ধ লহাপ, উইঘালী এই সকল জব্য ডুল্য পরিমানে দইয়া ব্যুদ্ধ কহিত মর্চ্ছ ক্রিয়া লেগ প্রকাব ক্রিলে উর্ভন্ত রোগ বিবাশ পার।

ক্ষেত্রানা পারণ, হনতোলা গছক, খেত ওঞ্চীক ভিন্তোলা, ক্ষেত্রী, নিষ্ট্রীক, জরপানবীক ইয়ারা প্রত্যেকে অর্ত্রতোলা এই স্বভ বাব্য একর বিভিত্ত করিয়া ক্ষেত্রী, জনীর, ধুমূরা, কানবাহী ইয়ানিগার প্রভাকের রগে ভাষনা দিবেও অমন্তর চারি রতি প্রদান বড়ী প্রভুত্ত করিবে। ইয়ার নাম ওক্ষাভ্ররণ। বিদ্যুত সৈত্তবের সহিত এই উব্য বেশকক্ষিতে হয়। ইয়া বারা অন্থান্ত স্বাকণ উক্তর রাশান্ত হয়।

#### কর্ণরোগচিকিৎসা।

নমুলের ফেলা ঝঁ জা করিয়া কর্পে নিলে কর্পরোগ প্রান্থিত হয়। বিকটু, হিজনবীক, শৃথান্তথা ও বিষ এই সকল এক্ডিড করিয়া ম্যাতের বাহিংবতী প্রস্তুত করিবে। ইতাকে ক্যুকেবুমুস করে। ইয়া হারা স্থান বাহিংবতী প্রস্তুত হয়।

টাব্যুনের্ কন্তের ও আলার রম করে পুরুধ করিলে উপভার নর্নে। করে পূলি কইলে উৎকৃত পুত্রিগীর করে তুব দিরা আন করিছে। ছুই। বিব দিব এইরপ্ করিছেন আরোগা হয়।

মানতীপাতার রস মধুর সহিত মিশাইছা কালে পূরণ করিলে কর্ণনোগ ক্রিন্ত হয়। ্ত ওঠী, বিল ও ধনির। এই সমল জনোর সহিত্র সন্ধিষ্টর বৈলী সিভ করিয়া বিলে কুর্ণপুল বিনাল পাইর। খাকে।

চোনা গরহ করিলা কাণে দিলে কর্ণপুর বিনাশ পার।

কটু তৈল কৰ্ণের সংখ্যা দিলে কর্ণনাম ও কর্ণান্দ্রে ক্রান্ত কর্ণব্রেক্তি বিনাশ পাইসাংখ্যাকে।

আর্ড ক, সন্ধু, নৈত্বৰ, ও তৈল কিঞ্ছিৎ গরৰ করিরা কর্পে পূরণ ভরিলে করিরাগ বিদাশ গার ।

্রারিকাশ চোবার কহিত বর্থ করিছা কর্পে পুরণ করিলে ভাসপত। বিষ্ট হয়।

লিজের পাঁতা আগুণে রললাইরা দেই রল কিঞ্চিৎ গার্থ কর্ত্ত করে।

সম্বের রস বিভিৎ গর্ম করিল। কর্বে পূর্ব করিলে বিশেষ উপকার জ্ম।

আত্র কের রস উবহুক করিয়া কর্পে পুরুণ করিলে বিলেক উপভার। তেওঁ।

সজিমার ছালের রস কিঞ্জিৎ গরণ করিয়া কর্ণে পুরণ করিলে কর্ণরেনিয়া অগমিত হয় (

আ্হাক্সের প্র পারে মৃত মাধাইরা প্রদীপের শিখার কন্সাইনে। পারে আহার রুম বাহির করিয়া কর্পে পুরুষ করিলে বিশেব উপকার হয়।

রন্ধ্যের রস, আলার রস, সজিনা হালের রস, রাজাম্বার **হালের** রস, ক্রসীস্থার রস<sup>2</sup> ইহার মধ্যে যে রস ইচ্ছা সেই রম সইয়া ভা**হার** ফুল্য পরিমাণ মনমাপাতার রস মিপাইরা ঝাণের মধ্যে বিলে বার্মিছ কর্মুল বিনাশ পার।

কট্কিরিও আকিং এই দূই তাব্য এক্তে পাতিলের্ম সনে বর্জন বিকি কপোতের পালক যারা কাণে দিলে কর্ণরোগ নিধারণ ছইনা থাকে। তুমুক, তাহী ও হিল বর্ষপা তৈলের মহিত যিশাইর। কিকিং সলে পাক্ রত বেই তৈক তাণে দিলে কর্মুল নিমাশ পার।

শাসন করিবার সময় কাঁকেড় গুড়া ও চোনা বিভিন্ত করিলা কীতিত গোলাশাশ পূর্বক কাত ঘইনা শাসন করিলে। কর্মপূজি ও পাথাবিদ ক্র্য-বাস পুরীভূত ঘইরা থাকে। তিল তৈল ও সজিবার আঠা একত্র দিশাইরা কিঞ্চিৎ পর্য কর্ত শীক্তিক কর্ণে প্রধান করিলে কর্ণপুল বিদাশ পার।

# কোঠ, উদৰ্দ্ধ ও শাতপিত চিকিৎসা।

া ইউক্লিটা, চাকুলিরা বীজ্ঞ, ক্লড়েন অটু কর জব্য ছুল্য পরিমানে আছ্শ পুর্বাক জলদারা বাটিরা গাড়ের লেপন ক্রিলে শীভণিক্ত রোগ বিমাশ শাস্ত ট

শনিবারির শিক্ত পেবণ পূর্কক হতের সহিত বিভিন্ন করিব। এব সঙাৰ পর্বান্ত সেবন করিবে। এইরপ করিবে কোঠ, উদর্ক ও শীতশিত রোগ সুরীভূত হর।

প্রতিন হড় ও মনানী একত করিলা সাত বিন সেধন করিলে উদ্ধ রোগ বিনাল পাইলা বাঁকে। কিন্তু ঐ সাত দিন স্থাব্য আছাত্র করিবে।

ছুই জোলা পুর.তন গুড় ও গুই তোলা যদানী একর করিয়া সেহজু করিলে শীতশিত রোগ দুরীভূত মইরা খাকে।

একতে।লা মরীচচুর্গ ও ধুই ভোলা গাবা হুড একত করিয়া বেক। ভারিকে জীতলিভাবিনাশ পার।

#### গলপথ ও গওলালাচিকিৎনা।

বিসিশার শিক্ত, তেলাকুচা ও কর্থী এই সকল স্থোর সহিত্ জিল তৈও পাক করিয়া সেই তৈলেয় নতা এইণ কয়িলে গ্লগ্ড ব গ্রহালা রোগ বিষয়ে পার।

বিনের তৈলের মসা বিশেষ কলপদ।

শেলেদেশকা বাটিয়া তকুণরা এদেশ গুলান করিলে গ্রথণ ও গ্র নামা সোণা বিবাশ পাইয়া খাচেক।

গ্ৰাণিপালীচূর্ণের সহিত মধু মিজিত ক্রিয়া ভদ্ধারা নদ্য এই ক্রিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

এই লেক্ষি সক্তমোকণ যারা এবং বছন যারা বিশেষ উপকার কর্মে কক প্রথা জোজন করা কর্তব্য। যে সকল প্রব্য কটু এবং মুগ, পাইল ও ক এই সংস্কৃত কলপ্রদ। া গ্রহণতের উপরে হড়হড়ের রুদ মাথাইলে ও রোগ এল। নিত হয়।

বকণের শিক্ষের কার্য প্রস্তুত করত দেই কার্যের সহিত্ত বধু বিশ্বিত করিবা পান করিলে গ্রহালঃ রোগ পরাজিত হুইয়া ্থাকে।

পুঁই পাতার রস সদস্যত ত গতমালা ছানে কাগাইলা সেই পাতা গুণ্ সেই ছান বন্ধন করিলে উক্ত রোগ বিনাদ্যপার।

#### কোঠবদ চিকিৎসা।

পুরাত্য তেঁতুল ও নিছরি একত্রে ভিজাইরা রাখিরা তংশরদিন আতে লেখন করিলে উক্ত রোগ বিনাশ পার।

এক হটাক বা কেড় হটাক আছার রস সেবন করিলে বিশেষ উপকার সর্বোট

গারস মুখের সহিত কিঞ্চিৎ গাব্য স্থাত মিজিত করিয়া সেবন করিলে কোর্মক রোগ প্রশাস্ত হয়।

স্থাতের সাহত সোঁগোলের কচি পাতা জালিয়া তারা ভাতের সাহত সেবন করিলে এই রোগ আরোগ্য হইরা থাকে।

পৰের জীটার রুস এই রোপে বিশেষ উপকারী।

প্রভাষ রাজে শরন করিবার পূর্বে আহারের পর এক ছট ক ইসবঙ্গন মুখে কেলিয়া দিয়া জন দিয়া গিলিয়া গ্রাইবে। ইহা ছারা রোগ প্রশাস্ত হয়।

্ৰোণামূৰী, শুঠী। জালি হরীতকী, সোঁদাল আটা, দন্তীমূল আই সকল প্ৰবা ভূস্যপায়িশাণে লইবা ঘোট ছই ডোলা করিবে। গারে উহা অন্ধিসের জনে নিম্ম করিবা অন্ধিশানা অবশিষ্ট ঘানিতে নামাইরা হাঁকিবা রাধিবে। এই জন সেবন করিলে ছই একবার দাত হইরা কোঠবছ রোগা প্রশাহিত হব।

# গর্ভপ্রাবের রক্তব্রাব বন্ধ করার এবং পর্ত না হওয়ার ঔবধ।

বেশার লিকড়, বৃহতী ও কলম এই কর প্রথা ছুলা পরিমাণে লইয়া হাগীপ্লের সহিত সেবম করিলে গর্ভজাকের রঞ্জাব বিনাল পাইয়া থাকে ৷

পুর্রের শিক্ত ওঁড়াকরিয়া গোনি মধ্যে প্রথেশ করাইকে আর ভাষার শর্ত **অনু**ধান

ুঠাৰুল চুৰ করিলা গোৰিকেশে পিলেও পরিণাবে গার্ড ছওয়া বুহিন।

ি প্রকাশবাদের লগত খেত সর্বপের শিক্ত সক্তে বন্ধন করিলে। গর্জ হঞ্জা বন্ধ হট্যা গাত ।

#### বিক্ৰখিচিকিৎস ৷

গমের ভূষি সিশ্ধ করিয়া তক্ষুয়া বেদ এচাণ করিছে বিজ্ঞানি টুয়ে বিবাশ পাইয়া থাকে ∤

ে থেত প্ৰশ্ব। ও ৰকণ মুগের কাথ সেবন, ক্রিচে বিভোষ উপকার জন্তে ।

্রজনার পিকডের হাল খাটিয়া তথানা দেশ অসাদ করিলে এই রেসি-অশান্ত হয়।

ক্ষীর কাকোনী, রক্তচক্ষর, চিমি ও বেগার শিকিড় এই সকল ক্রয়। হুছের সহিত মর্কন করিয়া লেপ এফান করিলে বিক্রমি রোগে বিশেষ উপকার দর্লে।

সাজিনার শিক্ষ গোঁত করত দর্মন করিরা ভাষার রাসের সাহিত বযু মিজিত করত সেবস করিলে দেবাভাগ্রেছ বিক্রাধি প্রাণায় ভুইরা বাকেঃ

চারি আনা পরিদিও ওেউড়ীর দ্প চূর্ব ত্রিক্লার কাবের সহিত্ দিশাইরা সেবন করিলে বিশেব উপকার সর্বে।

# বিদৰ্গ, বিশ্চোটক, ত্ৰণ, ধৰ্ম ত্ৰণ ও শস্তৰ্ভণ চিকিৎসা।

সুসাদিক্ষ ও বিশ্বগৃতিচূর্ণ একর বিজিত করিয়া ওজুটী ও নিয়ের ভাষের সাহিত অববং ধনির ও ইত্রেয়ধের ভাষের সাহিত সেবৰ করিকে বীসর্প ও বিস্ফোটক প্রশাস্ত হুইয়া বাকে।

যাব পোড়াইরা তৈলের সহ মর্কন করত লেপ কিলে ক্যারণ বিনাশ পার।

বিল্পত বাটিয়া ভাষার প্রদেশ দিলে ত্রণ রোগ নিবারিভ হয়। শিরীধছাল, বেগামূল ও মাগেশ্বর এই সকল ত্রব্য বাটিয়া প্রক্রেশ দিলে বিক্রোটকরেগে প্রশাসিত ছইয়া বাচেন।

আইতোলা ওঠী, অইডোলা পল্ডা, অইডোলা গুন্ধ ও আই-তোলা কটনী এই সকল জন্য একজ করিয়া অইটেনর জলে সিত্র করিয়া অইপোরা অবলিট থাকিতে নামাইবে। এই জল ছাঁকিয়া সেবন করিশে নামর্শ ও বিক্লোট রোগা আরোগ্য হইলা থাকে।

ত্রণ হইবার হজপাতে খুজুরা পাতার বেঁটোর লবণ মিলাইনা বংগে লেপন করিলে অধিলধে এপ বিষ্ঠ হয় :

দ্বীর সহিত শিশুপের কাঁটা বসিরা চন্দ্রের বভ করত তন্ধুরা লেশ প্রদান করিলে বিজ্ঞোটক রোগ বিনাশ শার, কিন্তু লগি নিজ্ঞাল হওয়া প্রায়ন্ত্রক।

তিল ও শেত সর্ব পা একরা করত ছংখর নহিত বার্টিরা তদ্ধারা লেপ প্রধান সরিশে রণরোগ দুরীভূত হয়।

ভিদত্তিৰ চারিয়ের, কল্কার্য বাট্যাবায়ুক চারিভোরা, অপান্ত চারিভোরা এবং কর বোল বের একত পাক করিয়া বিশ্বান হইকে পাক পরিসমান্ত হইবে। ইহা হারা এব রোগ বিনাশ পায়।

্রারি আনা তেউড়ীচূর্ণ লিভদার আথের সহিত মিশাইরা বেরন করিলে বিয়েদন হইলা বীস্প<sup>্তি</sup>ও বিক্লোটক রোগ বিদাশ পাস।

গোরোচন। ও দরীত একত করত মর্থন করির। ওক্ষুরা **জেশ** প্রদান করিলে এগরে। গুলিনাপ পাইরা খাতে । হরীডকী, বহেড়া, আমদকী, শুঠী, শিপানী, মরীর এই সকল এব্য প্রত্যেকে চারিভোলা ও গুণাগুল চল্লিল ডোলা একত্র করিয়া কর্মন পুর্বাক দেবন করিলে অন্তর্জান রোগ বিশাল পার।

#### পাঁচড়াচিকিৎনা।

তিক উত্তমত্পে বাটিয়া পাঁচড়ার, মুখে দেশ দিকে অংশ দিনের মুন্যে পাঁচড়া প্রশান্ত হয়।

পাঁচড়াতে ভূঁতিয়া চূর্ দিলেও বিশেষ উপকার দর্লে, বিশ্ব কিঞ্চিত স্থানা করে।

বাসকের পাতা ও কন চিনির সহিত ঘর্ষন করির। বেগ দিলে পাঁচড়া দুরীভূত হয়।

দৰির যাত ও কালকাস্থার বীজ একত্র গেম্ব করিয়া প্রয়োগ করিলে পাঁচড়া বিমাশ পায়। ইয়া যারা দাদরোগেও বিশেব উপ-কার মর্শে।

থিবপাতার সবিত জল গরন করিয়া ওকুারা গেণিত করিলে বিশেব উপকার হয় ।

চাল্যুগুরের সহিত খাঁটা শরিবার তৈল পাক করিরা **লেই ভেল** টিলে অপ্লাদিনের মধোই পাঁচ্ছা বিনাশ পাইরা কাকে।

লছা, কপুঁর ও তিনতৈল একতে লাক করিয়া উক্স ধাকিতে খাকিতে পাঁচড়ায় দিলে অচিয়ে পাঁচড়া বিনাশ পাইয়া থাকে।

দাধন ও গছক এই দুই জবা একত করত জদ্বারা শাদেশ দিলে। পাঁচেড়া বিনট হয়।

খুলকুড়ীর পাত্র বার্টিরা ভরারা অনেপ নিলে বিশেষ উপকার বর্ণো।
এই ব্লোগে সাধারণতঃ বাহাতে কোর পরিভার মানে ডম্প্রাডি
বৃত্তি করিবে এবং যে কোন উন্ধাই প্রয়োগ ককত্যা কেন, মধ্যে গরম
ক্রমন্তারণ ধ্রেত করিয়া মুখ ছিল করত উরস প্রয়োগ করিবত হয়।

ু স্থতের সহিত মূলাশঝ বর্ণ করিয়া ভবারা দেশ **অ**ধান করিলে প্রিয়োরোগ বিদাশ পায় :

#### ধন্তত চিকিৎসা।

মুক্তাবড়্শীর পাতার রস ছারা নস্য আহন করিলে বহুক্তগুরোগাঁ বিমাল পাইরা খাকে।

এক তোলা হতের স্থিত দশস্কের কাথ সেবল করিলে বিশেষ উপকার হয় ৷

্ জাকজের আচার সহিত কৈছব। সৰণ বিশাইরা ভয়ারা মদ্য এইণ করিলে বিশেষ উপকার মূর্যে।

# ষুক্তকটিকিৎসা ।

মরদা চড়াই পাথী রতে ভাজিরা ছক্ষণ করিলে এই রোগে বিশেষ উপকার হয়।

পানের সৃষিত দাগকেশরপুলোর আতর এক রাঠ পরিষাণে ওকণ করিবে এবং একরতি পরিষাণে ঐ আতর দইরা উপজের মুকলেশে দালিশ করিতে হয়। কিরংকণ যানিশ করিরা তহুপরি একটা পান স্থাপন পূর্বক নেকড়া যারা বস্তুত করিরা রাখিবে। মুই তিক দিন এইরপ করিনেই আরোগ্য লাভ হয়।

পালা মানক জীবের তৈল উপছে মানিশ করিলে অস্পনিনের মধোই ধন্ধক্ষ প্রশাসিত হইনা থাকে। এই ভৈল এক প্রকার বন্য মেশ্রুলাতিরা সমর্চির কলিকাতা ও অন্যান্য নিকটবতী ছান্ত্র বিজ্ঞান বিভিত্ত ভাইলে।

চারি আনা প্রিরদ<sub>্ধ</sub> চারি আনা স্ক্রিম্মু ও চারি আনা লোঙ এই তিন তথ্য একত করিয়া তাথার সহিত এক সের সর্বশ তৈল শিক্তিত করিবে। পরে ঐ তৈল ধারা উপর্ছে খেল প্রকান করিছে অস্পদিনের মধোই ধ্রাভাল রোগ দুরীভূত হয়।

প্রায়ের শিক্ত ও গোড়া মর্কনপূর্বক তাহার সহিত কিঞ্চিৎ ক্রি-প্রায়েস ও অর্থনের পরিষ্ঠ্ ত অক্সতিন হত নিশাইবে। এই সকল এবং শিক্তপের পারে হাপন করিতে হর। উলা পান করিবে হজতক হোগা প্রাথার হর। রোবিত সংক্রের শিক্ত, যথা স্বত ও রে<sup>ম্</sup>ণ্য তবক এ**ই সকত ন্ত্**ণা জকত করিয়া সেবন করিলে বিলেশ উপকার দর্গো।

ওক**লী ক্লমণান** নারিয়া তাহার হৈতন বাহির করিয়া তক্ষুণ্ণা উপত্তে নানিশ করিলে ধলভেত রোগ বিদাশ পার।

শঞ্চশিত্র সম্ভাবে আহশ করত উৎকৃষ্ট পরা হতে পাক করিবে। লেইস্ক উপাছে মর্কন করিলে ধলভেল রোগ বিনাল পার।

আৰু লহাড়ার ঔষধ।

 আজুল হাড়া হইলে সাঞ্চে শাকের শিক্ত হেঁকিরা কত সুখে কলার মাইক পাতা সাত্রপুক করিয়া দিয়া ঐ শাক কিছে এবং তাহার উপরে সাত্রপুক ঐয়প পত্র দিয়া নেক্ডা দিয়া বন্ধন করিয়া রাখিবে। ইহারারা আলুসহাড়া বিনাশ পার।

আজুবহাড়ার ছবপাতে শীতন *হলে* ময় করিয়া রাখিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

ছোট গোরালের পাতা বাটিয়া প্রলেপ দিলে অভিরে জারোগ্য হয়। ইছা নচরাচর নেথিতে পাওয়া যায়।

## গৈয়িক বেদনার ঔবধ।

ভটীচুৰ্ কাশড়ে ইংকিলা দেই চুৰ্ব বেদখাছাৰে মাশিল করিলে বিশেষ কথ পাওলা ধাল।

থামের ভূমির খেদ গুদানত ইছার পক্ষে বিশেব উপকারী।

একটা হাঁড়িতে সম্ভ গোৰর পূর্ণ করত তাবার মূখ বন্ধ করিয়া অয়িতে লিভ করিবে। পরে উল্লু থাখিতে থাকিতে উহা মারা লেপ প্রদান করিলে মৈখিক নেদনা বিনাশ পার।

ে তটীচুর্বের লাইভ সর্বাপ হৈতন পাক করিয়া জন্মুরা বালিখা করিলেও বিলেব উপকার হয়।

# ৰুক্ষ সত্ শিন্ত দুক্তে তাহার ঔষধ।

্থাদার রস ও বিঞাশাকের রস হুঙ্গের নবিত বৈভিত করিছা লেবা I অৰ্থ্য তোলা শনিবা বাটিয়া হাখের সাহিত শিবিত করত হিন্দে রাবিরা শর দিন তাহার সহিত এক ভোলা মিছরি মিশাইয়া দেবন করিবে। শরম মুখের সাহিত অঠীচূর্গ সেবনত এই রোগো বিলেন কলঞান।

#### कांगे चारत्रत्र विकिथना ।

কোন্দান কাটিলা গেলে তৎক্পাং পাগরিল করনা স্বাসরা দিলে স্থারোগ্য হর।

কাটিবামাত্র কডকামে চিনি দিলে অম্বি দুক্তসাব বন্ধ মরকার কোন বস্ত্রণা থাকে না।

পাধর সূচির পত্র হেঁটিয়া কত ছানে বস্তুন করিলেও বিশেব উপকার হয়।

ে অংশপরিষাণে কোম ছাম কাটিয়া ধেলে শীর্তীন জলের বধ্যে নেই ছাম টিপিয়া ধরিলে অবিসংহ আরোধ্য হইয়া ধাকে।

কোন ভান কাটিবায়াত সেই ভাবে টাপিল তৈল দিলে সভাবাৰ বন্ধ হয় ৷

#### কাউর রোগের চিকিৎনা।

আত্রণ চাউদ, মুক্তর ভাইদ, শুঠী ও আর্থ করস এই স্কল তথা অস্থানাস্সারে দইয়া একত বর্ষন পূর্যক প্রদেশ দিলে কাউর রোগ বিনাশ পায়।

তপ্রকলের বহিত সোদরাক্ষীক পেষণ করিয়া দেশ প্রদান করিলেও বিশেষ উপকার দর্গে।

ত্কার জল ও মৃত্যর ভাইল একজে দর্মন পূর্মাক লেশ প্রদান করিছে। এই রোগ অপথিত হয়।

প্রথমতঃ যে ছানে খাউর হইনাছে, তাহার উপর টার অর্থাৎ আনকাতরার দেশ দিবে, পরে তাহার উপর করীবতক অর্থাৎ চুঁটের। ছাট দিবে। কির্দিশ এইরুগ করিলেই কাউর রোগ বিনাশ পাইর। বাবে।

#### কালের পোড়া ফুলিলে অথবা গলদেশ ফুলিলে ভাষার ঔষধ।

সৃদ্ধাণাতার রস ও সমুজের কেণা একল করিয়া সেপা প্রধান করিবে।

ধৃষ্কর রম্ভ অহিক্ষেন, সমুক্রক্ষেত্র এই তিন রাখ্য একত্র করিরা শেশ একান করিলে অচিয়ে কুলা ও বেদনা প্রশাস্ত ক্ট্রা গাঁকে।

কারছান, কুড়, ওঠী ও রক্তারা এই কর মেরা একত্র করিরা আনার রনে মর্কন পূর্বাক লেপ দিলে অভিত্রে অলান্ত হর।

রুত্রা পাতার রবে মুসন্মর বর্ষণ করির। ভনার। দেশ প্রদাম করিবে অচিয়ে এই রোগ দুরীভূত হর ।

বিষপাতার রস ও অহিকেন একর মর্কন করিরা কেপ দিলে কুলা ও বাড়বা বিবাদ পার ।

# কুকুরে বা শৃগালে কামড়াইলে ভাষার ঔষধ।

দংখ্যর করিবাঘার রোগীকে বর্ত্তণ জলের মধ্যে রাখিলে বিলেব উপকার দর্লে :

ছব্লিছাচূৰ্য ও বিভাগের বিষ্ঠা একনে কয়ত ক্ষতভাবে প্রয়োগ ক্রিপে জারোগ্য হয় ।

শিরীষ্বীক্ষ ও সমসার শাঠা এই চুই এবা সর্দ্ধ করিছা সেপ প্রদান করিলে কুকুর দক্ষ বা শুগালক্ষ্ঠ ব্যক্তি দীরোগ হইছা থাকে।

সংবাদ পত্তে এইরপ দৃষ্ট হইরাছে বে, পাগলা কুজুরে কামড়াইলে রোলীর জনাশকা উপস্থিত হর। সেই অবস্থার রোগীর দেহের মুক্ত যোজন নিশেব উপকারী। প্রথমে ডাইন হাতের একটা শিরা হইতে অস্থান বেডুসের রক্ত যোজন করিবে। তথপরে মুই ডিব দিন বিলয়ে আবার অক্স্থান ডিনপোরা রক্ত যোজন করিতে হর, এইরপ করিকে বিশেষ উপকার মর্শে।

ক্ষার মধ্যে করিয়া রক্ত বনাতের টুকুরা রোগীকে থাওরাইলে ভুকু হইরা থাকে।

#### খাড় মাওরা চিকিৎসা।

পুরাতন পুরুরিণীক্ষাত শৈবাদ আনিরা তাহার সহিত আদার রুব ও গুণ্টী বিক্সিত করত লেপ প্রদান করিবে।

র্থেটু পুলোর শিক্ত বাটিয়া লেপ প্রামান করিলে বিশেষ উপকার হর।

# ক ক নালীয়াই অৰ্থাৎ ঘুত্রী চিকিৎসা।

্ৰুড়, আডিস, কাকড়া পৃদ্ধী, ছ্য়ালভা ও পিম্পানী এই সকল ভ্ৰৱ্য সমভাগে নইয়া চূৰ্ব কয়ত মধুর সহিত মিশাইয়া বালকেয় জিলাছ একটু একটু দিবে। ইহা যায়া যুওৱী ও কাল বিন্ত হয়।

মুক্তাবড়শির পাতার রস অর্দ্ধ ছটাক মেবন করাইলে রোগ পুরীভূত ছয়। ইছা ধারা ভেদ বা বসি ছইরা থাকে।

আর্দ্ধ ছটাক পরিষাণে উচ্চে পাডার রল নেবন করাইলে বিশেষ উপকার হয়।

ধে প্রার্থীর তীরে আয়ু রক্ষ আছে; সেই প্রার্থী বইতে মন্ত্র পতিত একটা আয়ুপত তুলিরা আনিষ্ঠা তাহাতে পাঁটি সরিবার তৈল বাবাইরা প্রদীপের শিশার গর্ম করিবে। পরে সেই তৈল আলুলে করিয়া গ্রামেশে ও কঠে প্রদান করিকে হড়ুরী বিমাশ পার।

হরিতা, লোগ, প্রিরজু, যতিগরু এই সকল এবা সম্ভাগে লইয়া তৈলের সহিত শাক করত সেই তৈল নাভি ছেখে দিলে বুডুরী বিষঠ হর এবং বাদকদিশের পেটকামড়ামি ভাল হইরা থাড়ে।

কাগজিরা পোকা কার্যাৎ অনেক দিন একাছানে কাগজ রাখিলে ভাছাতে যে কীট জাছে, নেই পোকা ছুইটা অধনা ভিন্তী এছন পুরুজ কিঞ্চিৎ দধুর সহিভ দিলাইলা সেখন করিলে হুঙ্ রী বিন্তু হয়।

इत्नेत्र जत्मत्र जाजान मध्यांत विरम्प देशकाही।

•

# চয়ী পোকার ঔবধ ৷

কপূঁর মন্ধন করিলে চবি গোকা বিদাশ গার।
তেলাকুচার পাতার সম ও আদার রম একত্র করিবা প্রবেট্টা
করিবে।

প্রভাতে জনস্পর্ক করিবার অথে তেলাকুচার পার চবী পোকা হানে বলিলে গোকা বিমাশ পার।

#### কিকারোগ চিকিৎ ন।।

া মধুর সাহিত দাক হরিলা চূর্ব জিক্ষার গ্রহান করিলে জিকারোগ বিষ্ট হর।

এনাইচ দামা রতের সহিত ভাজিরা সেই এনাইচ চূর্ব করত সধ্যে নথ্যে জিহ্নার এদান করিলে নানাবিধ জিহ্নারোথ বিনাশ পাইর। বাকে।

মানকচুর শিক্ত দশ্ব করত সেই ছাইতের সহিত সর্থপ তৈল ও লবগ শিশাইরা জিক্ষার দিলে জিকা রোগ বিনাশ পাইরা ধাকে চ

র্ভ মধ্যে বা খাঁটি সর্বপ তৈলে রশুন আজিরা সেই রশুন জিখ্যা বারা চাটিরা ভক্ষণ করিংশে বিশেষ উপাধার হয়।

তেজপত সহ জল উত্ত করিয়া সেই জন বারা কবল করিবে ।

যদি বাদকের জিলোর প্রণ হর, তাহা হুইলে জলের সহিত ক্পুর তদিয়া সেই জন হারা জিলা হোঁত করিবে।

# রালকের তালুকেশে এণ হইলে ভাহার ঔষধ :

্পৰা হতের সাহিত দৰং পরিমাণে স্থীচচূর্ব বা শুগী চূর্ব মিজিড বিষয় উক্ত থাকিতে থাকিতে দিবে । ক্তি অপ্যাবস্থার মহে। ্বচ, হরীতকী ও রুড় এই তিন ত্রব্য তুল্য পরিমাণে লইরা ওনহথের সহিত দিল্লিত করিয়া সেবন করাইবে।

## **ट्राक्टबारशत क्षेत्रथ**।

কটুতৈদ চারি সের, মাদতীপাড়া, করবীপাড়া, চিভামূদ এই সকল এব্য প্রতোকে ছই ভোলা, কল বোল সের এবং গোল্ড চারি ক্রে-একত শাক করিয়া চারি সের অবশিক শাকিতে মামাইবে। এই ভৈল মর্কন করিলে টাকরোগ বিনাশ পার।

জবাপুন্দা ও রুজবর্গা গান্তীর মূত্র একত্র মিজিত করত দেশ আদান করিবে।

চিডার খুন ঘর্ষণ পূর্বাক্ষ অপপ পরিমাণে ছিলে বেশ উৎপন্ন হর।
• টাক্কল ( এই কন বনে জদদে বা বেদিয়াদের নিকট পাওরা যার)
আনিয়া তাহা দক্ষিণ হত্তে করত টাক্ছানে অতি সামানারপে ঘবিৰে।
৪াহ দিন এইরপ করিলে টাক দুরীভূত হইরা যার।

আমলনী ও আঁঘের আঠির মধ্যা একত মর্থন পৃথকৈ লেপ দিবে।
পুঁচকল, পুঁচের শিক্ড, ডেগা ও রহতীক্ষ এই সকল ত্রবা সমভাগে সইলা মধুর-সহিত মর্থন পৃথকৈ গেপ দিলে অভিরে টাক বিনাশ
পাইরা থাকে।

কটু তৈল চারি সের, গোধুর আটসের, হাগমুত্র আউলের, কলার্থ সিল আটা, আকল আঁঠা, তীমরাজরস, বিদ লাগলিয়া এই দক্ষ হবা প্রত্যেকে বার পদ হয় মাবা একতে পাক করিয়া চারি লের অবশিক্ত থাকিবে নামাইবে। এই তৈক মুক্ত্র করিকে টাকরোগ বিনাশ পার।

# ্ৰথ শকো ( ঠুন্কো ) রোগের চিকিৎনা।

হনুদ পোড়ান হাই এক ভোলা, এক ভোলা দ্বীচ, এক ভোলা ব্লভ-কুনারী ও এক ভোলা হাঁচুটি পাতা এই সকল একত্র করিয়া হণিছুলে বর্মন পর্মক ভবে অনেশ দিবে। বতর ভাইল জনের বহিত মর্মন করিয়া প্রনেশ দিলে কাও আয়োগ্য হয়।

্ বর্ষার প্রথমে দখন দিলা র**তি হ**য় তখন দেই দিলার জনের সহিত কুত্তিকা মাধাইয়া রাখিতে হয়। যখন এই রোগ হইবে, তখন তাহা-কবিরা দেশ দিলে পাচিরে পারোগা হয়।

#### দম্ভ কড়মড়ির চিকিৎসা।

রাত্রিকাণে নিমাবশে যাহার দীতে কড় মড় হরে, তাহার মুখ মধ্যে কেই সময় অংশ পরিমাণে বালুকা দিলে আর কলাচ ওরপ হরমা। ইচ্ছিন্নারশিড় দীড়া হুইটা হুয়ের সহিত সিম্ব করিখে। মধন হ্যা পুর হুব হুইবে, তুর্থন তাহা রোগীর পাদতদে মানিশ করিতে হয়।

# ত্ব ভোলা, হথে দাঁতে পোকা হওয়া ও হক্ষতাবের চিকিৎসা।

্ৰত্নীডকী, বচ ও কুছ এই ডিন এবা চূৰ্ব কর্ত ভূগ্রের সবিভ সেখন করাইলে ভূখডোলা আরোগ্য হয় !

পান উচ্চ করিয়া তাদে বস্তুৰ করিলে মুখজাৰ কৰিয়া বায়।
আমিক প্রিমাণে তনমুগ্ধ করিও ছইলে কিঞ্চিৎ লইয়া বিভারতে
আ ওয়াইবে। তাহা হইলেই মুধ্রের ছার ইইবে সংগ্রুছ নাই।

ুধার বীজ তপু নজনে বার্টিরা তাথার কহিত চারি রতি <mark>তনমুখ</mark> নেক্ষ করিলে মুখতোলা আরোগ্য খন।

ৰচ e অঠী চূৰ্ব ছালীলুছের সাহিত চক্ষনবৰ বাটিয়া অকটু একটু কিলে ছুয়ে ক'তের পোকা বিনাল পাত ।

ুরক্রণানার মূল চর্জণ বারাও পাঁতের পোকা বিনাশ পাইলা বাকে:

#### নাতি শোপ চিকিৎসা।

্ স্থিকাপিও অনলে সম্ভঞ্জ করিয়া ভাষা মুধ্যের বধ্যে নিজেপ করিবে। কিঞ্চিণ উফ শাকিতে থাকিতে ভক্ষারা মা**ভিষেশে বে**শ্ প্রদাম করিলে সাল্যোগ্য ধর।

# পার্থবার্থা চিকিৎসা।

তঠীচূৰ্ণ গল্প গৰায়তে বিশাইলা ঈৰজ্ঞ <mark>গাৰিতে থাৰিতে</mark> গালিল করিবে।

্লতমূলী, রাখান দেবদাক, ব্রিক্রান বেণাপূর্লন দাকহারন্তান দানুকান শীবভীমূল ও সৈত্বর এই সকল ক্রব্য গাবাহত ও তৈলের সাহত শিশান ইয়া কিঞ্চিত্র গ্রেম করত লেপ বিলে পার্ম বিদ্যালয় বিবায়িত হয়।

# পা ফাটার ঔষধ }

খনত প্রিতারাত্তিকালে জাটাছানে আথতে করিলে পা কাটা নিবারিত হয়।

নোম ও কুনৰ তৈল একত করিয়া গেণা প্রভান করিকে গা কাটা। রোগ বিনাশ পার।

ধুনা, কৈছব, নধু ও কটু তৈল একত্র দিশাইরা শেপ দিকে বিশৈষ্ট উপভার মধ্যে।

বেত ধরের। সিন্দুর ও যোগ সম্ভাগে দইর। নারিবেশের তৈত্তর সহিত বিশ্ব করিবে। পরে তাহা ফাটা ছাবে লাগাইলে অপস্কানের বল্লেই আরোগ্য হয়।

্র নেত গুনাও গবা হও সবভাগে এহণ পুর্বক গুভার পারে মর্কন করত রেচিয়ে গর্ম করিয়া কটিছিলে দিশে আহ্রোগা **হইছা সংকে**।

# শিক দিয়া রক্তপ্রাব, রক্তসূত্র ও মৃত্যবন্ধ রোগের চিকিৎসা।

্ এক পোরা বিচরির পানার সহিত এক হটাক ক্রলালের্থ রস সেবন করিলে সুত্রবন্ধ রোগ প্রশাস্ত হয়।

্রুপ্রকটি রহৎ টবে গরম জল ফেলিয়া ভাষার মধ্যে কটি পর্যন্ত তুবাইয়া রোগীকে বসাইলে মূত্রবছরোগ বিনাপ পাইয়া থাকে।

দুশপাভা বা বারপাতা আন্তা ছুটে গুলিয়া অংশারারের মধ্যে সেই হয় ভিন্পারে পান করিবে। ইহা ছালা রভযুতা বিবারিত হইয়া থাকে।

ভূইপন ছানীহ্ম ও চুই তোলা পঞ্চ তৃণ একজে একসের জলে নিম করিয়া ভূইপন অধনিত থাকিতে নামাইবে। ইহা পান করিলে নিজ দিয়া রক্তকার হওলা বিনাশ পার 1

অধিক পরিমাণে ইক্রুস সেবন যারা মূত্রবছ রোগে বিভেষ উপ-কার দর্শে।

প্রক কুমাওরস অর্থনোরা, দুই আনা ঘবকারচূর্ণ ও হই আনা চিনি । একর দিলাইরা সেবন করিলে মুডবর রোগ প্রশাস্ত হর।

# চুলপাকার ঔষধ।

জামদকী, জনাপুশা ও মুখুর এই তিন ত্রবা একত মৰ্চন করিয়া লেশ প্রদান করিলে শ্বেড কেল গুত্র হয়, কিন্ত ইহা চিরামারী নাবে।

নীদপাতা জীমরাজ, ডিফলা ও কেহি এই স্কল এবা ছুলা পারিমাণে লইনা ভেডার মুখ্রে মর্মন করত বাধাইলে স্বেতকেশ তল হয়।

্জ্বাপুপা ও হণ্ডুর মিশাইরা হন্তকে সাগাইলে কেশ শুদ্র হুইরা মাকে ট

কিছিৎ পাকা নারিকেলের: সূব কাটিরা ভাষার মধ্যে তিকলার ভার, সেহিত ভীমরাজের রস পুরিরা একদাস পর্বাত হাতিকা সংখ্য প্রোথিত করিয়া রাখিবে। ক্রমে নারিকেল পচির। বাইবে। ওঁ সমস্ত পচা প্রবা একত বর্ষন করিয়া মন্তক মুগুম পূর্মক লেপ দিয়া কদলীপত্র বারা মন্তক বন্ধন করিবে। একসন্তাহ পদ্ধে প্রদেশ পূলিরা ত্রিকলার ক্রাথ বারা বেহিত করিতো যে সাত দিন মথক বায়া থাকিবেঃ মেই সাতদিন দাংসের বৃহ ওদ্ধ সেবন করিকে, ইহা বারা কেশ ক্লম বর্ণ হয়। এক বাস পর্বাস্ত নিষের তৈলের নাম গ্রহণ করিলে প্রবাং ভদ্বদ্বাস্থ

# পেট ফ্রাপার ঔষধ।

বরক সেবন দারা এই রোগ আরোগ্য ছইতে কেখা গিরাছে।
কৈন একছটাক ও সৈয়ন কিঞ্চিৎ একল করিয়া সমানের পুর্বের রাজে সেবন করিলে পেট ফাঁপো রোগ বিনাশ পার।

স্থান্ত ভিদালি দর্শন দারা পেট ফাঁশিং রোগ আরোগ্য **ং**ইরা শাংক।

দশমুদের কাথ দারা হত, তৈল কিয়া গেল ও মঞ্চা সিদ্ধ কর

#### ব্যন রোগের চিকিৎ গা।

কউকারির শিক্ত বাটিরা ব্লোর স্থিত পান করিলে ব্যব রোগ বিনাশ পায়।

অ**র্থাহটাক পাতি**দেশুর রলের বহিত কিঞ্ছিৎ চিনি বিশা**ইলা** সেবন করিবে।

তালখাঁকের জন সেবন হারা বিশেষ উপকার দর্শে। অবিধ গাছের শুভ হত্ দথ করত শীতদ জনে কেলিয়া সেই জন কেটু একটু করিয়া পান করিনে বদন রোগ বিদাশ পার ।

# · तूथ अगरनत्र के वधः।

কোৰরে সহসেবের শিক্ত বন্ধন করিলে অপে অভিরে প্রসন বন ।
কোনরে সম্প্রান্থতার শিক্ত বন্ধন করিলেও স্থানত হয়।
কাঞ্জির সহিত বুগ সেবন ক রলে অভিরে স্থে প্রস্থ বইয়া বাকে।
স্ক্রিনিজ শিক্ত শ্রান বর্ধন করত বোনিতে প্রবিক্ত করাইলে ত্র্প
প্রস্থ হইরা থাকে।

উত্তর দিকে বুধ রাধিয়া বেড কুঁচের শিক্ষ উজ্ঞোলন করত কটিতে বাহিলে কুথে অসৰ হইয়া ধাতে :

স্পৃত্যনর কাথের সহিত সৈত্বৰ ও হত মিলাইরা সেবন করিছে। পুৰুষ অসৰ হট্যা থাকে।

আক্ৰের শিক্ত। সূঁচকল ও অন্ধ্রামি গুৰাক একৰ কলে ধর্কন পুর্বাক পান করাইলে অচিয়ে হথে প্রদান হইরা থাকে।

# কালা রোপের ঔষধ।

ু ক্পাৰাৰ্গ কান্ত্ৰে কৰ্কে জিল তৈৰ প্ৰস্তুত কয়ত ব্যবহায় ক<mark>য়িৰে।</mark> কালায়োগ কান্তোগ্য হয়।

দংজিবের হত্ ও তুলার বীজ একত বর্ষন পূর্বক তৈলে পাক করিয়া নেই তৈপ কর্ণবিংয়ে দিলে স্থিরতা রোগ বিনাশ পাইয়া বাকে :

#### পেট কামড়ানি চিকিৎসা।

ক্ষিক পাঁরিবাণে ইক্রল দেখন করিলে একবার মুইবার বিল্লেচন এইছা পেট কাৰ্ডানি রোগ বিদান পার।

সুধার রস একছটকে আহারের পূর্বে সেবন করিলে পেট আগড়ামি রোপ সুরীভূত হয়।

জন্ম মুড়ি জিহাইয়া নেই জন শা্ৰ করিলে পেট কাম্ভানি বিনাধ শাষ্ট

# ংবর্গকালে শিশুদ্দির উৎরাধন্ন হইলে ভাহার চিকিৎনা।

ওক্তোলা মর্ক্সান কলায় ভেগোর রম ও লিভি রভি কর্পার একতা করিয়া মেবন করিবে। এক সপ্তাহ কাল এইনগা সেবন করিলে শিশুকের উদ্যাময় বিবাস্ত্র পার।

#### वकारिकियमा।

যথন গছ হয়, সেই সময়ে জীবপুত্তিকা ব্ৰক্ষের পত্ত মৰ্মন পূৰ্মক অনেপ বিয়া পুক্ষ সহবাস ক্রিলে সর্ভগারণ হয়।

স্থই তোলা শরপুঙ্খার শিক্ত জলের সহিত ধর্মন করিয়া সেবন করিবে।

ধকবর্ণা শেহর হুখের সৈহিত কাকরোপনীক্ষ বর্মন করিত্রা হতের সহিত মিজিত করত সেবন করিলে গর্ড হয়।

রবিবারে প্রা। নকরে অনম মূল উটোলন পূর্মক আই ভোলা পরিমাণে বতুর দিন হইতে প্রত্যাহ একবর্ণ ধেন্দ্র মুখের সহিত দেশমু করিলে বস্ত্যাও গর্ডাধ্যা হয়। সাতদিন সেবম করা বিধি।

খেত কটকারির শিকড় ও কদম্পাত্র সমস্তাগে এছণ পূর্মাক মোট পূই প্রোদা করিবে। পরে উহা হাগীহছের সহিত মর্জন করিরা শস্কুর শিন হইতে পাঁচলিন সেবম করিবে। এইরপ করিবে গর্ড বইরা থাকে।

#### राषित्र छेश्थ ।

বাধি কুলিয়া উঠিবামাত্র গন্ধবিরাজের আঠা, দীমং গরম করিয়া এক বঞ্চ কাগজে মাধাইয়া উক্ত বাকিতে বাকিতে লাগ্রিয়া নিতে, অকলৈ বা ভূইবার নিশেই বসিয়া যাইবে।

খাঁটি মধু ও চূব ছাতে একজে কেবাইরা দেপ দিলে বিশেষ উপকার কর্মে ।

্ অহিকেনের পটা বাদ্বিলে এক দিলের মধ্যেই বাদি ভারে। ক্রা থাকে। ্টুইটাপা ছলের গেড় দর্জন পূর্বকাঞ্চলেপ দিলে শানিরে বাদিল বাদিন

চিডার শিক্ষের ছাল কাঁজিবারা মর্ফন করত লেশ দিলে বার্ষি জাকোড়াতে বিলেব উপকার দর্শে।

াধকর দাঁতে বাধনের কছিত বর্ষণ করত কেশ দিলে আচিল্লে আল্লোখ্য ছিল i

কাঁটা নটিয়ার শিকত নাটিয়া মুইখার বা তিমবার দেশ দিলে অচিত্রে আরোগ্য হইয়া থাকে।

#### বলকর ঔষধ।

ি চিনির সহিত প্রতিণ শিমুলের মুসের রস সেবন করিলে সেহে মলাবাম হয়।

অনত মূল সিদ্ধ করিয়া গুড়াই কিঞ্চিৎ কৈঞ্ছিৎ দেশন করিছে। শ্রীয় বলিষ্ঠ ইইয়া থাকে।

আতাৰ প্ৰাতে কাঁচা ছরিয়া ও ইক্পুড় একত্তে সেবদ করিলে রক্ত প্রস্থিকার হয় ও থেছে বলাবান ছইয়া থাকে।

পাভিষের রস প্রত্যহ গুক চটাক করিয়া সেবন করিলে **পরীর বল**-বলিন্ট হয়।

জানের আরক দেবন বারা রক্ত পরিষায় ও বলাধান হইরা থাকে।

গুলুহ প্রভাতে জন্য কিছু আহারের পূর্বে ডিজা হোলা দেবন
করিদে বলাধান হয়।

হাসযাংস হত ও হুছে সিছ করিয়া তাহার সহিত সৈম্বর ও পিশা-পীচুর্গ মিলিভ বরত সেবন করিগে শরীরে বনহাঁ ছ হয় ও ব্রতি শক্তি ক্লমি হইয়া গানে।

হোটসিম্পমূদ ও ভাদস্শীচুৰ্ য়ত ও হুছের সাহত সেগন করিলৈ বদাধান হাটঃ

শেত কুমিয়া থাড়ার বীজ ও নেটে থাব্যের ত**ুল হত ও মধুর** লহিত মিশাইয়া প্রভা*হ নেবন* করিবে।

## বাভব্যাধিচিকিৎসা।

জীবানেশ স্বাস্তিত হইলে অখগদ্ধার শিকত বার্টিয়া লেগ গুলান করিবে।

যদি এই লোগে অরজ্ঞ হর, ভাহাহইলে টাটুকা হি গ্রন করিয়। ভাহার সহিত ত্রিকটুচুর্ণ নিশ্মিত করত সেবন করিবে ।

এই রোমে রোগী যদি কুজ হইরা বার তাহা ছইলে দশমূলের কার্য এবং গরৰ সিঠা শীড়িত ছানে ব্যবহার করিলে রোগ প্রশামিক হয়।

ু কর্পার ও খাঁটি সর্থ পি তৈম একত্র করিরা মানিশ করিংগ বাতব্যা-বিভে উপকার মর্শে।

#### বাধকের ঔষধ ও কউরঞঃ চিকিৎসা।

খড়র দিন হইতে তিন দিন পর্যন্ত প্রতাহ আহারের পূর্বে সাঙ্টি গোলমরীত ও উলট্কহলের শিকড়ের ছাল মর্মন করিয়া মেনন করিবে, ইবা বারা বাধক সুরীভূত হর ও প্রচিত্রে সন্তান ক্ষমে। ইবা বারা ক্ষমকা দুরীভূত হয়।

# বাতলমিত কামড় চিকিৎনা।

কৰ্ম শঠীচুৰ ও ভৈদ একতে উক্ করিলা মালিস্করিবে।
ভক্ত গুড়ীচুৰ আলার রুসে মিশাইলা মর্মন করিদেও বিশেষ
উপকার ব্যাঃ

কৰ্ণুর এরও তৈন ও সৈত্বৰ এই তিনপ্রব্য সমভাক্ষে লইরা থকক করত হে)তে গ্রম করিরা মানিল করিবে।

#### ব্রুচিকিকিৎনা।

কুড় শ্বামীল ও কার্যাল সম্ভাগে এছণ পূর্বক মর্থন করিল। লেপ বিশে জারোগ্য হয়। জীরা, গদ, কুলের আঁঠি, বরুষ ও কুড় এই সকল জব্য কাঁজিভে মর্কব করিয়া রখে, সেপ দিলে আরোগ্য হইয়াখাকে।

#### রশ্চিক বিষের চিকিৎ শা।

র্ক্তিকে দংশন করিবামাত্র রোগীর অজ্ঞাতসারে স্কৃত স্থানে কানী লাগাইরা দিলে যন্ত্রণা বিনাশ পার,।

গুড় দিলেও বিবের অনেক দাবৰ হইর। খাকে।

ক্ষায় গাছের খোলার রস এবং হারিজাচূর্ব একত করিলা দংশন স্থানে দিলে রশিকবিব বিনাল পাইলা খাকে।

ছাগ্ৰের নাদি ব্যায়া দংশ্ব ছাথে ছিলে বিব বিদাপ পার।

রাজ চিতার পার মর্জন করত দংশিত স্থানে দিলে আরোগ্য হইরী শাকে।

গরৰ ছবের সহিত লৈজ্ব মিলাইরা লেপ দিলে বিশেষ উপকার ২ব।

্রহুৎ রোহিত বা কাওলা খাছের আঁইন দারা দংশন ছান বর্ষণ ক্রিলে অচিত্রে ধিব বিনাশ পার।

কংশৰ ছানে বিছুটির পাতা বুলাইলে বিশেষ উপকার সর্শো।

কাঁটা বটিলার মূল বাটিলা লেপ প্রদাম কারলে র্ভ্চিক দংশনজ্ঞতি বিষেয় উপশ্য হয়।

# বোল্ভা বা মৌমাছিতে কামড়াইলে ভাষার ঐবধ।

কাঁচা পাব্রিয়া কয়ন। বর্ণ পুর্বক দেশ প্রদান করিলৈ তৎক্ষণাৎ বিষ দুরীভূত হয়।

লিউনীয়ার হোপে, নাগকেশর কুল, শুষ্ঠী ও মরীচ এই নকন জব্য পরিষ্ঠুত জাগের সহিত মর্জন করত দেশ দিলে বোল তা ও মৌমাছি দংশনজনিত থিব মুর হয়।

#### ভররোগ চিকিৎসা।

সর্দা এবং লাভা তুলা পরিমাণে মর্কন করিরা ভগ্নভাবে **লেপ বিলে** তিলেশ উপকার হর।

অশ্বর্থ গাছের হাঙ্গের ভার্থ করিল। তদ্ধার। তগ্নস্থান সেচন করিবে। যক্তিমধু ও মঞ্জিল কাঞ্জির সহিত পেবণ পূর্মক অগ্নস্থানে লেগ প্রসাম করিনে আশু উপকার হয়।

দুই রতি কড়িডশ্ব কাঁচা মুধের সহিত সেবন করিলে ভয় আছি। বধাছানে সংলগ্ন হয়।

কিঞ্জিৎ গর্ম দৰ্প তৈল মালিল করিলে বিশেষ উপকার দর্লে।
লাচতোলা গুগাগুল, একতোলা গোরকচাকুলিয়া, একতোলা লাকা,
একতোলা অর্জুন ছাল, একতোলা অধ্যান্তা ও একতোলা হাড়বোড়া
এই সক্ষ এবা একতা ধর্কন করিয়া লেপ দিলে বেদনা দুর হর, ভয়ছান
পুর্বিষ্ঠ হয় এবং শ্রীর দুড় হইরা থাকে।

এই রোগে যাংগ্যের বৃষ প্রভৃতি বলবারক দ্রব্য ভক্ষণ করা বিধের।

কুইডোলা পঞ্চমুল, একডোলা ছ্র্ম ও এক দের জন একত করিয়া।

ক্রিবে। এক পোরা মাত্র অবলিও থাকিতে নাবাইয়া পান করিকে:
ভগ্নরোগীর বেদনা ভাবোগা হয়।

বাৰ্লার শিকড়ের হালের চূর্ণ নিকটু ও নিকলা সমভাবে পুশুন পুশান ঐ তিন জবোর সধান গুণ্ডদ তাহার সহিত দিক্তিত করিয়া ক্লন বারা দিক্তিত পূর্বক লেপন করিলে ভগ্রহান পুশাবন যোজিত হয়।

বিকটু ও গ্ৰাপ্তৰ একত বৰ্ণৰ পূৰ্বাক লেপ দিলে স্বয়ন্ত্ৰীৰ ফুজিয়া খাৰে।

#### মদাত্যর চিকিৎশ।

চৈ, হিলু, ত্রিকটু, ধনিয়া, ওঁঠ, ধগানী ও রস সিন্দুর এই সকল তার সমভাগে এংগ পূর্মক একত্র করিয়া সেবন করিলে বছাভার রোক বিমষ্ট হয়।

যদি ধুঙুৱা জনা সভতা জবে। তাহা হইলে হুগ ও চিনি দিশাইর সেবন করিবে। সূরা পান করিয়া তথকগাৎ চিবি ও য়ত ওকতে **ভক্**ণ করিছে। মহতা ক্ষেমা।

চৈ, চিতামূল, পিশোলী, পিশোলীমূল ও শুঠী এই বৰণ এখা সমস্তামে এংগ পূৰ্মক মোট মুইতোলা করিয়া আন্তনের জলে নিম্ব করত অন্ধপোরা অবশিত থাকিতে নামাইবে, ঐ জলের সহিত হয়া মিশ্রির করিয়া সেবন করিলে মুমাত্যর রোগ ধিনাশ পার।

সেবির্ফান, জীরা, ধৈকল, দাকচিনি, এলাইচ, মরীচ, মহান্ত ক এই
সকল প্রবা অন্ত্যাকে একডাগ এবং মনু অর্ক্ষডাগ ও শৃর্করা অর্থজাগ
এই সমত অব্য একত যিলিত করিরা লইবে। ইহাকে অতীল লবং
কহে। ইহা হারা ককপ্রধান মদাতার রোগ বিন্তী হয় এবং উল্লায়ির
ক্রিকরে।

# मूचात्रान क्रिक्ट्या ७ मृत्य मूचक क्रेयांत केयथ ।

গ্রম তৈদ ছারা কবল করিলে আমেক থাকার মুখারোগ বিনাশ পাইরা খালে।

সুরামাংসী, নাগকেশর ও কুড় একত চূর্ণ করিলা জ্বাগত মুধে
বন্তিন করিলে মুধে সমাত্র হয়।

চারিতোদ। মরু ও চারিতোদা জন একত করিরা প্রভাষ পান। করিদে মুখের মুর্গন্ধ দূর মুর্গনা থাকে।

নার্যকেশর, গ্রহ্ম বৈধামূল, লোগু, ছাল, শিরীবছাল এই কয় জুবা সমকাণে গ্রহণ পূক্ষক মন্দি করতু গাতে দেশন করিলে শরীরের ও মুখের হুর্গন্ধ নিবারণ হয়।

্ মরীত ও কিস্থিক্ একতা করিলা, চর্মণা করিলে। সর্থাধানার সুধা লোগ বিসুরিত হয়।

ৰজুলের কল মুখের মধ্যে ছামান পূর্বক চার্কণ করত তাহার রস বিক্লেপ করিবে। ইয়া রারা মুখের দুর্গন্ন বিনাশ পার।

জ্ঞাধিক পরিবার্ণে ককা দেশৰ যারা মুখের যা বিনাশ পাইলা

জতি শুভূয়বে উঠিল শিশিরের জন মুখে দিলে মুখফাটা ও মুখের যা বিমাপ পার।

একবানি লোহার হাজার একডোলা তুঁ তিরা দিরা অগ্রিতে শোড়া-ইবে। পরে তাহাতে কিঞ্চিৎ পানপুঁ দীর রস দিরা মর্মন পূর্ত্তক কাদার ন্যার হুইলে প্রভার খাত্রে ছাপন করিবে। প্রভাহ চারি পাঁচনার উহা ক্ষত ছানে নিতে হর, ইহা হারা মুখের বা বিনাশ পার।

বালকদিপের মুখে এণ হইলে ভাচার ঔবধ। মিজের পত্রের রস ও দেবুর রস একত্র করিয়া দেশ দিবে।

প্রীসহবাদে উপস্থ কার্চলে তাহার ঔবধ।

সহবাসাত্তে গরম জল হারা ধেতি করিলে উপাশম হয়। নিমপানের রসে ধেতি করিলে বিশেষ উপাকার দর্গে। স্থীর প্রজ্ঞাব হারা ধেতি করিলেও কোন ভরের আশহা থাকে না। বঙ্গ গামার 'মুল পাণড়ি খনিরের সহিত হর্জন করিরা কেপ দিবে।

#### व्यव्हाताश हिकिद्रमा ।

হুইরতি হিন্দ ও হররতি এরও শতের কার এই হুই রাবা একত করিয়া প্রতিদিশ শরিহ<sub>ু</sub>ত জগের সহিত দেবদ করিবে।

গণিরারি ছালের রনের সহিত শিলাকস্থ সেবন করিলে মেণোরেগে বিনাশ পার। শিলাকস্থর মালা পাঁচ ছইতে দশ রতি।

রক্তমন, ওঠী, বিজ্ঞা, শিশানী, ওলঞ্চ, আমলকী, সজিনা,বরীজ দুখা, হরীতকী ও বহেড়া এই সকল এবং পুলা পরিমাণে লইফা চুর্ব করত কিঞ্চিৎ মধুর সহিত শিক্ষত'করিবা সেবন করিলে মেগেরেয়েশের বিনাশ হয়।

রক্ত ধনন ও ব্যক্ত ভেলের চিকিৎন।।

হরীতকী চূর্ণ করিছা বাসকপাতার রসে সাতবার ভাষনা দিছা। শুক্ত হইকে মধু মিলিও করিয়া সেবন করিবে । সেবনের পরিয়ান চারি মাধা । ইয়া ধারা রক্তমান দুরীভূত হয়। দেওতোলা রেউচিনি ও অর্কুডোলা রউরি দেও পোয়া এলে সিখ করিরা অর্কুপোরা অধশিক ধানিতে উজোলন করিব। তাহার সহিত কিঞ্জিং চিনি নিশাইরা নাতবারে তাহা পান করিবে। ইহা বারা রক্ত বহন ও রক্ততের দুরীভূত হয়।

চারিতোলা বাগকের পাতার রয়, চারিয়াবা ভাষিশচ্ব ও চারি-মামা মরু, একজিত করিয়া পান করিবে। ইবা মারা রক্ত বছন বিনাশ পাইলা থাকে।

# রাত্রিকাণা চিকিৎনা।

ত কট্কিরির কণ গ্রম করিয়া গেই জন ইাকিয়া কোন কাচপাত্রে বা স্ভিকাপাতো রাধিয়া মুখ্যক্ষ করত স্ভিকার পুতিরা রাখিব। তিনদিব পারে উহা উঠাইয়া সেই জন ধারা চলু খেতি করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

পাঁটার নিটুলি পোড়াইয়া জকণ করিলে বিশেষ উপকার হর।
মন্ত্র সহিত ত্রিকটু নিজত করত তথারা নেত্রে জঞ্জন দিবে।
বাসকপতে মাধ্যের জাজল প্রস্তুত করিয়া রাত্রে অঞ্জন দিতে হয়।
মাধানের জল খারা চলু খেতি করিলে বিশেষ উপকার দর্শে।
উৎকৃষ্ট দ্বিতে অস্ক্রখানি মন্ত্রীচ ধর্ম পূর্বাক তদ্ধারা অঞ্জন করিতে

করা।

#### লোমোৎপাটন ঔষধ।

রোমসামে কুমুস্ক তৈদ মানিলে রোম উঠিয়া যায়।

বরিচাল ও লাখন্ডনা এই ছুই এখ্য কলার এটিনার রলে মাজিন। ভৌমন্থানে লেশন করিলে হোম উঠিনা বীর

প্রশাস্থার ও হরিতাল তুল্য পরিষাণে কদলীর এটিরার রসে মাডিয়া দেশ দিলে রোম উঠিয়া যায়।

ারদ জনে হরিতানের চুর্নাজির। রোম ছামে লেণ বিলে রোম আচিছে উঠিন যার।

# খিল্রী রোগের ঔষধ।

শ্বশানের তথ্য, হরীতকী, কণ্ণনীর মূল এই কয় এবা একন করিয়া মর্কন করও তথ্যরা লেপ প্রদান কয়িবে।

বাতর্জ্ঞ রোগের যে সকল ঔষধ পুর্বো কবিত হইয়াছে, এই রোগে লেই সকল ঐবধ বঃবাছত হয়।

আইশ শেওড়ার হাল কলের সহিত মর্থন করিয়া চক্ষদের বত বইলে ডয়ারা লেশ প্রয়ান করিবে।

#### শিকিষাছে কাৰড়াইলৈ তাহার ঔষধ।

অন্ধ্যারা দীতদ জনের সহিত একজোনা সোরা বিশাইরা সেঁই জনে নেকড়া ডিজাইয়া পটা বাছিখে।

অগ্নির উদ্ধাপ প্রধান করিলে অনেক উপকার হর। দারটিনি ও গুড় একত্র বিভিত করিয়া লেশ দিবে। গরব জলের কেদ দিলে অচিরে যন্ত্রনা বিনাল পার।

# ংহাত পা জুলা চিকিৎসা।

বেণার শিকভের রম হক্তে মর্কন করিলে বিসেহ উপকার হয়। হিঞা শাকের রম হাত পারের তলার মাধিবে ও কাঁচা রুছের সহিত সেক্স করিবে।

হতওলেও পদতলে তেঁলাছুচের পাতার রুঁল যাখিলে বিশেষ্ট উপকার হয়।

ক্ষমি শাকের রম শাম করিলো বিশেষ উপকার দর্গো।

# ত্রীলোকের তনত্বন ন্যুন ১ করিবার ঔষধ।

মুক্তর ভাইল বাটিয়া লেপ দিলে মুখ আৰ ব্ৰাল হয়। ক্লমনীয়া বাটিয়া দেপ দিলে মুখআৰ ক্মিয়া থাকে। ( ১৫ ) রাত্রে অর আহার ও হ্রম শান পরিভাগে করিলে ভনর্থের ছার বইরা স্থাকে।

#### ন্তনর্হিকরণ ও পতিত ন্তনের উত্থান।

হখন প্রথম খড় হর, তথম ততুলের জনের মন্য **এহণ প**রিলে সেই রমনীয় জন-কদাচ পতিত হর দা ।

্র শুউল মাছের তৈল, এরও তৈল, ও অপশ্ব বেলের রুগ **একম পাক** করিরঃ স্তবে নেপা প্রদান করিলে জন পতিত হয় না।

অশীতি তোলা শুর্ডী গুৰ্ব করেল সিত্র বরিয়া অর্থেক অংশিক থাকিতে উভোলন করিয়া দেই কাথের অর্থপরিমাণ তিন-তৈন দিয়া পাক করিবে। বখন সমস্ত শুক্ত হুইয়া তৈল দানা অ্বশিক্ষ কিনিবে, তখন নামাইবে। এই তৈলের নদ্য এইণ করিলে ও কিঞ্চিত কিনিবে, দেবৰ করিলে অপ্পদিনের মধ্যেই পতিত স্তম পুনক্ষিত হয়। — ক্লুক্ত বচ, অর্থগঞ্জা ও গজপিপানী এই সকল দ্রন্য বাসিকলে ভিজাইয়া রাখিরা দর্দন করত নবনীতের সহিত মিশাইবের উহা শুনে লেপম করিলে স্তম অতি ছুল হয়।

গাখারের রদের সহিত তিলতৈল -পাক করিয়া কেই তৈগ লেপীর্থ করিশে শুল পুলক্ষিত হয় ও স্থান ইয়া থাকে।

#### ভূতিকা চিকিৎসা।

দশবুদের কার্থ সেবন হারা ছতিকারোগে বিশেষ উপকার দর্শে।

একডাগ পারস, একডাগ গঙ্কক, অর্কভাগ তারু একত্র করিছা
থানকুনীর রুসে মর্কন পূর্বক ছই রুতি পরিমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে।
ইহা হারা ছতিকারোগ এবং বুরু, ভূকা, অহুচি, খাস, শোধ প্রভৃতি
বিনাশ পার।

্নীসবাঁটির মূল চর্মণ করিলে এই রোগে আনেক উপ্রার হইতে। দেখা যায় ।

ক্টি ন্ধণ, চৈ, ত্রিকটু, সৈত্বৰ, ক্লক্টীয়া, ধ্যানী, খেঁওজীয়ৰ, নাৰছবিঞ্জাত হবিলা এই সকল প্রব্য তুলা পরিবাবে নুইবা চূর্বাক্রভ লংক করিবেন। ইহা ধারা স্থতিকা, অজীর্ব ও আম্বাত নুই হব। হুই ভোলা ঝাটিমূল অন্ধনের জলে নিকা করিয়া প্রাক্ত পোরা অবশিক্ত থাকিতে নামাইরা অন্ধ ভোলা শিপালী দূর্ণ থাকেশ দিয়া দেবন করিবে। ইয়া হারা স্থতিকাক্তর বিনাশ পার।

বেণাসূল, আডিস, হবিরা, কেত্রণপতি, গুলঞ্চ, ছুরালভা, রক্তক্ষন, বেড়েলা, খুখা, বালা ও পদতা এই দক্তন তথ্য তুল্য পরিমাণে সইমা মোট ছুই ভোশা করিবে। পরে উহা আই সের ছালে নিম্ন করিরা সেই কার্য সেব্দ করিবে সৃতিকা স্থার ও অতীসার বিদ্যাল পার।

হতিকাবিনোদরন,—পারন, গৃত্তক, ছুঁতে, সমস্তাগে আহণ পুর্বাক জামীরের রানে তিনদিন মর্থন পূর্বাক বিকটুর কাথে তিনধার ভাগধা দিনে। ইহাকে হতিকাবিনোদরন কাহ। চারি রতি পবিমাণে এই ঔষধ সেখন করিতে হর। ইহা মারা পতিলীর পুন, বিফন্তবুর, অজীণ প্রভৃতি বিনষ্ট হইরা থাকে।

#### প্রদর্চিকিৎ শ।

় শুৰু আধ্যের আঁঠির মধ্যের শাস একচ্টাক আর্কণোর। কীয়া চাগছত একজে বার্টিয়া প্রত্যাহ প্রাতে সেবল করিবে। ইহা যায়া অংশদিনের মধ্যেই খেত প্রদর বা রক্ত প্রদর বিনাশ পাইয়া বাকে।

মৰমাণত স্থতে জাজিয়া জোজন করিলে বিশেষ উপকার নর্নো।

যজনুষ্কুরের রস দুই তোলা ও কাঁচা দুগ অর্দ্ধণার। একত্র করিয়া ভাছাতে কিঞ্চিৎ সমু প্রদেশ দিরা সেখন করিবে।

্ দুইতোলা আমদকীর রগ ও অর্দ্ধ তোলা চিনি একত করিয়া। তোজন করিবে।

সূই তোলা টাপা মটের মূল ও দুইটা জবাথুলোর কলিকা কিঞিছ পুরাতন স্থিকার সহিত খাটিয়া সেখন করিবে।

দুই তেলো অশোকহাল অন্ধ সের জলে সিক করিলা অন্ধপোলা অবশিক থাকিতে নামাইবে, উহার সহিত গব্য দুগ অন্ধ শোলা মিশাইলা পান করিবে ৷

পারহা গন্ধক হোপা। শর্পরা, বর্গট এই সকল সব্য আত্যেত্র সন্ধতোলা তিন ভোলা দেখি, সমত ত্রবা একত ক্রিছা ইত্রশারীর ন্তুসের সহিত ধর্মদ পূর্বাক বড়ী প্রস্তুত করিবে । ইকাকে প্রদর্গক রুগ করে। ইহা বারা সাধ্যাসাধ্য সকল প্রকার প্রদার নিধারিত হয়।

#### আগুণে পৃত্তিলে তাহার চিকিৎনা।

কোন স্থান আয়িতে দয় হাইলে কডকণ্ডলি ততুলের মধ্যে মেই স্থান পুরিয়া রাখিলে কড়র যন্ত্রণা দুরং হল এবং ফোন্ডা বা হা হয় না ঃ

কোন স্থান কথ ছইবামাত্র সেই ছামে পাকা কলা চটকাইয়া ছাথিলে স্টিবে স্থারোগ্য ছইরা থাকে।

গোল আলু বাটিয়া ভগার। গ্রেলেগ দিলে সম্ভ স্থানে কোকা হয় না এবং যাতন। বিনাশ পার।

পুশু অধিক পরিমাণে দগৈতিলে সামান্যরূপ দক্ষভান আলোগ্য ভা

কাৰ পড়িল তাপ লাগিলে বা জনা কোন রূপে সাধান্য পুড়িকে নেই স্থান অধিতে পুনরার তথ করিবে। ভাতা তইলে বস্ত্রণী আচিত্রে বিনাশ পাল।

কেবরণাভার রব লাগাইলে কর্মছান আরোগ্য হর।

পরিভৃত চুণের জল এক ছটাক ও এক ছটাক মসিনাতিক উদ্ভব-জপে মিলাইলা তুলার ডিজাইরা সাগাইলে সম্বন্ধানে যা হয় মা এবং বাজ্যা বিমাশ পার।

#### সর্পাঘাত চিকিৎসা। #

ছব্লিজা, লোহাগা, জারিজী ভূঁতে এই নকন স্বপরিবাশে নইরা

• অল্লাবনি দর্পাধাতের উৎকৃষ্ট ঔষধ আবিভূত হয় নাই। কিনি বে কোমরণ ঔষধই বনুধ না কেব। কিছুতেই কল দর্শে না; মৃত্যাং নেই লক্ষ্য ঔষধ নিখিয়া রুখা প্তেকের কলেখর রুখি করা জনাবশ্বক। মৃত্র প্রয়োগেও অল্লাপি বিষ দূর করিতে দেখা বায়। উৎকৃষ্ট পরীক্ষিত লপের বন্ধের প্রথম বটতনা গরাগহাটা বাধেরর ঘোষের দোঝানে পাওয়া বায়। জীকানীপ্রসর বিভারের উহার সংখ্যাহ্য। আবশ্বক বইলৈ তাহা কর করিবেন। ৰোধা কলের রাসে মার্কন করিবে। ইছাকে বিষবজ্পাত্রন কছে। আর্ত্রালা পরিমাণে এই ঔষণ সেবন করিতে হয়। ইছা যারা সকল প্রকার বিষ বিনাম হয়। কাপদার্কী ব্যক্তিও ইছা সেবন করিলে জীবন লাভ করে।

অন্ধ হটাক খেত বেড়েগ। গাছের মূল আড়াইটা মন্নীচের দাহিত জলে মর্মন করিনা রোগীকে ভোজন করাইবে।

সমুদ্রয়েড় মানক গাছের ছাল ও গোলমরীচ পঁচিশনী একর জলে মর্লন করিয়া রোগীকে ভোজন করাইবে। বালক বালিকা ইইলে আড়াইনি গোলমরীচ দিতে হর।

নিষিকা গাছের পাড়া গুঠীর সহিত দিশাইয়া ভোজন করাইবে। এক চটাক কট্কিরি ও অর্জ্জ চটাক জল বিশাইয়ারোগীকে পানু করাইলে বিরেচন বা বযন হইরা আছোগ্য হয়।

্ জরশালের বীজের মধ্যত্ম শাস বহির্গত করির। তাহা বনিয়া ভত স্থানে দেশ দিলে আরোগ্য হর।

চিকিৎসাখ্যার বমাপ্ত।

# প্রকীর্ণ অংশ।

#### त्याधनविधि।

পার্বলোধন া--পার্ব শোধন করিতে হইলে শুভ সক্ষে একগত শন, পঞালপন, পঁচিন্পন, পোনের পন কিছা একপন পারুদ গ্রহণ করিবে। একপ্রের কম পার্ল কদাচ-শোধনার্থ লইবে না। কোন কোন বিজ্ঞ ব্লেমু বে, একশ্তপ্র, পঞ্চালপন, পঁচিপ্পন, দুশ্পন, একপন কিছা অর্দ্ধতোলা পারদ শোধনার্থ গ্রহণ কয়িবে। যে পারদ একবর্ষের ভান, ভাষা কলাচ সইবে না। ঔবধ প্রস্তুত করিবার সময় যে ঔবতে থেরপ পরিমাণ নিখিত আছে, সেইরূপ লইবে। ধীরবৃদ্ধি শিবভক্ত विक हिकियमक राजिएमा अकाधामान विश्व गाउन कतिता कृपात्री अवहे-কদৈবের পুঁজা করিবে। অনভর খলে রক্ষামন্ত উচ্চারণ করত পারদ ব্রাধিরা শোধনাদি কার্ব্য করিতে হইবে। খলখানি লেভি বা পাধার্ণে নির্মিত হইবে ; উহার গভীরতা চারি অঞ্জি এবং উহা দৃদ্ ও তথ ৰ্টবে। স্তিকায় গৰ্ভ করিয়া সেই গৰ্ভদণ্ডে ছাগৰিছা, ভূম ও জয়ি সংস্থাপনপূর্বক তাহার উপরে ধদ রাখিবে। এই ধনকেই ভর্তধন কৰে। এই প্রকার খনই পারদশোধনজিয়ার ব্যবহৃত হয়। " দ্বো-রেভোহর্য যোরেভো বোরাবোরভরেভান্ত। সর্বাঞ্জ সর্বাসর্বেভো সমতে কররপিতা:। " এই মতে পারদের রক্ষাবিধান করিতে হর।

সদসাগাই ও আকলরকের শীর, পদাশবীত, গুণ্ডদ এবং নৈত্বৰ এই সকল বস্ত পারদের বিশুণ প্রমাণে গ্রহণপূর্বক পারদের সহিত মিশাইয়া বর্ত্বৰ করিবে। ইহাকে রসনিগড় ধনে।

রসমারক ক্রব্যের চূর্ব যোজপাংশপরিমাণে পার্দের সহিও বিশা-ইয়া মর্জন করিতে হথনে: এই প্রকারে প্রভার প্রভিমনা সপ্তবার করিমা বিশিত করত মর্জন করিবে। এই প্রকার প্রক্রিয়াকেই পার্দের ব্যাধারণ শুদ্ধি বদা যার।

পারদের সহিত যেদের লোগ, ছরিজা, ইকীকচুণ ও ব্রের রুল নিশাইরা ফর্মন পূর্মক কাঁজিবারা গোঁও করিবে। এইরূপ করিছে পারদের সীদদোৰ বিষ্ট হয়। পারদের সহিত গোশরচাকুলির। ও আকোড়ফ্লের চুর্র বিশা-ইয়া মর্কন করিলে অন্তর্গত বঙ্গদোহ বিমন্ত হয়।

পারদের সহিত যোগালুকুলের চূর্ণ নিশাইরা দর্কন করিলে মনলোহ বিনষ্ট হয়।

্পারদের ক্ষিত টিতার চূর্ণ মিশাইরা মর্চন করিলে পারদের বিহ্নিদোধ বিন্ফ হইলাধাকে।

পারদের দহিত রক মুত্রার চূর্ দিশাইরা দর্মন করিলে পারদের ছাঞ্চালোব বিদ্রিত হয়।

পারদের দহিত ত্রিকলাচূর্ব ফিলাইরা মর্কন করিলে পারদের বিষ লোখ দৃশ্ধ হয়।

পারদের দহিত তিকটুচ্ শিশাইরা মর্ফন করিলে পারদের গিরি-দোহ মন্ট হইরা যার।

পারদের সহিত গোকুরচুর্ণ মিশাইর। মর্থন করিলে পারদের অস্থায়িলোব দুর হুইরা থাকে।

পার্দ শোশনের জন্য যে সক্ষ চূর্ব উল্লেখ করা ধেন, পার্দের বোড়শাংশ প্রমাণ দেই সক্ষ চূর্ব দইরা পারদের সহিত ফল্ম করিবে। ক্ষক প্রকার দোব নিবারণেই যুত্রুমারীর রামের সহিত কর্মন পূর্বক মৃত্তিকাপাতে স্থান করত উষ্ণ কাঁজি খারা খেতি করিবে। এইরপ ক্রিলে পার্দের সপ্রবিধ দোব দুর হইরা থাকে।

ব্রেড্রাল্যর, দেবদারে, কাক্স্তুত্বা, জরন্তী, কাক্রোল, ভালযুলী ও ছন্তকুষারীর রস এই সমস্ত বস্তার প্রত্যেকের সাহিত পারদ এক এক দিবল মর্ক্স করিবে। পরে পাঁড্রন্মত্ত্বে পাড্রন করিবে। এইরপ করি-লেই পারদ বিশুস্থ মুইয়া ঘাঁতে।

পারদের সহিত হতকুমারীর হুক ও হরিজাচুর্ণ মিশাইরা মর্কন করিবে। পরে উর্জ্বাতন্দ্রে পাত্র করিবে। এইরূপ ক্রিকেও পার্য বিশুক্ষ হয়।

পারদ একদিন স্বত্রনায়ীর রলের বহিত বর্জন করিকে পরে এক-দিন চিতার রলে মর্জন করিকে, তংগরে একদিন ক্রেনাছীর রলে মর্জন করিকে, তংগরে একদিন কাক্রাছীর রলে মর্জন করিবে। এইকণ করিকেও পারদ শোধন হইয়া থাকে। প্রথমতঃ পারদ রশ্বনের রনে মর্থন পূর্মক কাজিছারা থেতি করিখে, ক্ষরের পানের রুমে মর্জন পূর্মক প্রাহার কাজিছার। থেতি করিখে, পরে ত্রিফলার রুমের সহিত মর্থন করিয়া আখার কাজিছার। থেতি করিখে। এইলপ প্রক্রিয়া ঘারাও পার্সের সপ্তবিধ দোব বিদ্বিত হর।

পারদের উর্দ্ধ পাতনপ্রাণালী।—পাঁরদ তিনভাগ ও তামুচ্ব একভাগ এই উভদ এবা হিশাইরা জানীরের রলে মর্কন করিবে। উহা
শিশুর ন্যায় হইলে সেই পিও একটা হাভিকানধো ভাগনপূর্বক আর
একটি হাঁড়িয়ারা উহা আক্রানিত করিবে এখং উতর হাঁড়ির সামিস্থান
উত্তর্গরপে সৃতিকাশিরা কম করিবে। অনরব উপারের হাঁড়িতে জন
দিরা নিট্চির হাঁড়িতে ভাগ দিবে। এই প্রকার করিলে নীচের হাঁড়িতে
ভাসুমহ বলানি দেন পড়িয়া রহিছে। আর উপারের হাঁড়ির তপাতে
বিশ্বছ পারদ সংগ্রুক্ত হইবে। এই পারদ ঔবধে বাবহার করিবে। ইহাকে
শারদের উর্দ্ধ পাতন করে। কেই কেই বিহাধর্মন্ত বলেন।

পারদের অধঃপাতব।—পারদের সহিত লাউরা গল্পক ও জার্থীরের রস মিলাইয়া একদিন করিব। উহা পিতারুতি হইলে তাহার সহিত পুকলিরী, সঞ্জিনা, অপামার্থ, লবণ ও বেতসর্বপ পোরণ পূর্বক মিলাইবে। পরে ঐ পিওহারা একটা হতিকার মধাছান লেগন করিবে এবং ঐ হাঁড়ী আর একটা হাঁড়ীর উপর অধ্যেত্ব রাখিবে। পরে নীচের হাঁড়িতে কন দিয়া সৃষ্টিকাহারা সন্ধি কয় করিবে। এই বস্ত একটা গর্বের মধ্যে ছাপন করিতে হইবে। অনন্তর উহার অমিসভাপ দিয়া পুটপাক করিবে। এই একার প্রক্রিয়ারা পারদ নির্মান্ত কলে পড়িয়া হার। ইহাতে পারদ বিভন্ক হয়। ইহাকেই পারদের অধ্যাতন

পারদের ডিগাকুপান্তন প্রণানী।—একটা ঘটের মধ্যে পারদ ছাপন
পূর্বাক আর একটা ঘটে জল স্থানিকে। এই চুইটা ঘট বক্তভাগে একবিত করিরা উহার সন্ধি কর করিরা নিবে। পরে যে ঘটে পারদ আহে,
ভাহার নীচে দ্বাল নিবে। ইহারারা পারদ ভিগাক্তাবে ক্সনের মধ্যে
পুক্রিমান্ত, ইহাতে পারদের দোব দূর হবিরা থাকে, ইহাকেই পারদের
ভিগাক্তাত্ব করে।

ি উদ্পাতন, অধংপাতন ও তির্যাকৃপাতন এই তিন প্রকার প্রাণালীতে গারদের দীসবলাদি লোব দূর হর বাট, কিন্তু ইবাতে পারদ বর্ত্তর গোর প্রাপ্ত হর। এই বতক দোর দূর করিবার জন্য পারদের শোধন করা উচিত।—নারিকেলপাতে কিয়া কাচের পাতে পারদ ছাপন পূর্বক তাহাতে জল দিবে। যেন এই জনবারা পারদ নিম্ম বাকে। অন্তর গুলসন্তপারিমিত একটা গর্ভাগবেধা এই পারিষ্টি তিন দিন পুতিয়া রাখিবে। এইকপ করিকেই পার্দের ষ্ঠছদোর বিদ্বিত হর।
ইয়াকে পারদের বোধন কহে।

হিছুলে যে পারদ খাকে, তাহা'বিশুছ, অভএব সেই হিছুলভাত পারদ উবধে বাবহার করিতে পারে। যে আফারে হিছুল হইছে পারদ লইতে হর তাহা বদা যাইতেছে।—হিসুল আমীরের রগে ও কাগজীলেরর রলে এক দিন ফর্দন করিলা উর্জুপাতদর্মে বিশুছ পারদ আহণ করিবোঁ এই একার করিলে পারদে কোন দোরই খাকে না। এইয়প পারদ সকল কার্বো ব্যবহৃত হয়, কিন্তু অভীকর্মে ব্যবহার করা যায় না। "

্তনাপ্রকারেও হিন্দুল হইতে পার্দ লওরা যাইতে পারে। কিঞ্জিত বিন্দুল হইরা পালিতামান্দারের রুলে এক প্রহর মর্চন করিবে। পরে জামীরের রুলে একপ্রহর মন্দন করিবে। অনন্তর উর্জ্বাতিন বজে পার্দ গ্রহণ করিবে। এই প্রক্রিয়া যারা বিভন্ধ পার্দ লাভ হইরা বাকে।

পারদের মুদ্ধি।—শারদ ও গায়ক একতা মর্জন পুর্যাক কর্জনী করিবে। এইরপ করিলে পারদের চাঞ্চল্যদোব ও গাড়ক বিন্তই হয়। এইরপ পারদের মাব মুদ্ধিতি পারদ। এই পারদ অন্তপাবে প্রয়োগ করিলে আন্ত ফল দর্শে।

পারদের মারণ !—বোলভোলা পার্দ ও আইভোলা গান্ধক একজ রতস্থারীর রসের সহিত তিন সিন্দ ফর্মন করিবে ৷ পরে ভূধরুমতে

পারদের অউকর্য।—স্বেদন, দর্কন, দৃক্ত্র উবাপন, পাতক শোধন, বিরামান ও দীপন এই সকলকে পারদের অঐকর্য করে। করে অইকর্যনার পারদ বিশুল হয়।

একফিন প্রশাক করিছা ধর্ষে । এইরূপ পারদকেই **ম্টিভ পার্** ক্রেঃ

ভূধর্যন্ত ।— একটা গভেঁর যথে। বালুকা পরিপূর্ণ করিলা লেই বালুকার মধে। মুঘামধ্যগত পারদ ছাপনপূর্মক ঘূঁটের অয়িতে পুট-পাক করিবে।

বেত তাকোত রকের মুদের হসের সহিত পারদ তিনদিন স্কন করিবে। পরে অস্কর্থা বস্ত্রে পুটপাকে দল করিবে। এইরপ করি-পেই পারদ ভত্ম হইয়া থাকে।

যোষা, মুড় মুড়ে, কাঁচা ভেঁছুৰ ও পুনৰ্ব। এই সকল ফ্রেয়ের রুসের স্থিত পায়ৰ মৰ্ফন পুন্ধক পুটপাক করিলেও পায়ৰ গায়িত হয়।

সুদ্দিল্য ।—একপল পারদ, তিনপল গছক ও একবাৰ। সীন এই তিব অব্য একর দিনিত করির। বর্ষন করিবে। বর্ষিত হুইলে উহা একটী বোতদের মধ্যে ছাপন করিবে। পরে একথানি বল্লে মৃতিকা লেপন করিয়া সেই বন্ধ ছারা বোতদ বেউন করিবে। পরে চুর্গ ও এছিবারা বোতদের মুখ বন্ধ করিবা দিনে। অনতর এ বোডল একটা ইন্ডির মধ্যে ছাপন পূর্মক লেই ইন্ডিটী বালুকারারা পান্ধিপূর্বণ করিবে। পরে তিন দিন সেই ইন্ডিতে অনিস্কাপনারা পাক করিতে ছইবে। এই প্রকার করিলে পারদ বন্ধু কর্মপের ন্যায় অস্পর্যবর্ধ হইবে। ওই প্রকার করিলে পারদ বন্ধু ক্র্মপের ন্যায় অস্পর্যবর্ধ হইবে। ওই প্রকার করিলে পারদ বন্ধু ক্র্মপের ন্যায় অস্পর্যবর্ধ হইবে। তথ্যই ক্রানিবে যে পারদ কর্ম হইরাছে। এই প্রকার বর্ধায় অস্প্রবর্ধ ক্রমণ আহণ পূর্বাক যথায়খ অনুপানের সহিত সেবন করিলে সকল- আকার রোগা বিদুরিত হর্ম ইহানেই রস্যানজ্যর ক্রেছে।

অন্য প্রকারে রমসিন্ধুর প্রস্তুত প্রধানী।—একপন পারদ, একপন গান্ধক একথে কন্দানী করিরা বটান্ধুরের কাথে ভিনবার ভাবনা দিনে। পারে ঐ কন্দানী একটী বোতদের মধ্যে ছাপন পূর্থক মৃত্তিকালিগু সম্ভারা সেই বোতল বেন্টিত করিবে। পারে একটী ছ্প্তিকাদ্যো বোতপটী ছাপন পূর্থক বালুকাছারা ছাঁড়ি পারপূর্ব করিবে। অবস্তুর ভারি প্রহর পর্যান্ত সেই হাঁড়িতে অ্যান্তাপ দিবে। এইপ্রপ করিলেও অক্থবর্ণ উৎস্কান্ট রস্নিন্ধুর উৎপন্ন হয়।

রদক্র।—লোহাগা, মধু, লাকা, মেবের রোম, খেতএই ও ভ্রমান্তের রম এই সকল বস্তর লহিত পার্দ একদিন মর্দন করিবে। ারে রুমটিন্দ্রোজ বিধানায়সারে পাক করিবে। এইরপ করিকে বে পারদ তার্ম হর, তাহাকেই রুসকপুর কছে। ইছার বর্গ কপুরির ন্যার।

হ্বানিষিরস।—পারদের সহিত ধূলি ও সৈত্রৰ নিজিত করিয়া বর্ষন করিবে। উহা বিমলীভূত হইলে সিজের রসে পুনঃ পুনঃ মর্মন করিবা উহা লেছিপাত্রমধ্যে ছাপন করিবে এবং বড়িবারা মুখ কল্প করত লবণপূর্ণ পাত্রমধ্যে সেই লেছিপাত্র সংস্থাপমপূর্মক একদিন প্রবাজনি পারদ করিবে। এই প্রকারকরিলে সেই লেছিপাত্রের উপরিভাশন্থ পারদ কুলকুর্ম কিছা চক্রের ন্যায় বেতবর্গ ও ভ্রমীভূত হয়। এই জন্ম হয়রতিপ্রমাণ গ্রহণপূর্মক প্রভাবে করার বেতবর্গ ও ভ্রমীভূত হয়। এই জন্ম হয়রতিপ্রমাণ গ্রহণপূর্মক প্রভাবে করা এই করম কেবনাত্রে পুনং প্রনং দীতল জল পান করিবে। এই উম্প একবংসের সেমম করিলে বিবলেন্য দূর ছইরা যার এবং হরমাস পর্বাস্ত একমানা প্রমাণ সেবন করিলে শিলোপ গরল বিন্ত হর। ইহাকে কুমানিধিস্ক কছে। ইহাকেই পারদের বেতভাল্ব বলা বায়।

শর্কাদক্ষরকা।—পারণ ও গার্ক তুদাপরিবাণে সইয়া নাডাদিয় বাঁতিভড়ার রসে ও সুঁই আঘনকীর রসে মর্দন পূর্বক উহা ধ্যায়গো তুপেন করিবে। আনত্তর একটা ছভিকামধ্যে বালুকাকাপুর্ণ করিয়া সেই মুবা ঐ বালুকার অবর্গত করত মৃত্ব অগ্নিতাপে একদিন অহোরাজ পাক করিবে। এই প্রকার করিলে সেই পারেণ পীত্রপ হইয়া ভ্রমীভূত হয়। এই ওলা একরতি প্রহণপূর্বক পালের সহিত গেবল করিবে। ইয়ায়ারা লেহে বলর্দ্ধি হয়, সুখায়্রতি ইয়, চিত্ত আলম ইয় এবং ৠয় ও উদর্বোগ প্রশার হইয়া থাকে।

কৃষ্ণ হল্য।—সমতাগে ধানাত ও পারদ গ্রহণ পূর্বক রমমারক জবোর রসে একদিন মর্দন করিবে। জনস্তর উহার সহিত সেই রস্মারক জবোর কব্দ দিশাইরা বস্তাগতে দেশন করিবে। পরে সেই বজ্র খতারার বিভি করিরা এরও তৈলে ভিজাইরা স্থানাইবে। সেই স্থান্ত বর্তির নীচে য়ওপরিপূর্ণ পাত্র রাখিতে হইবে। এইপ্রকার করিলে কেই জাতে যে পারদ পড়িবে, ভাহা দইরা রসমিমানক জবোর রমে একদিন মর্দন করেও কন্থকনামক কল্যে গাঙ্কন করিবে। এই প্রকার জন্মিন মর্দন করেও কন্থকনামক কল্যে গাঙ্কন করিবে। এই প্রকার

মূনকিরণপদ্ধতি।—চুইতান অন্ধন্ধ তুব, একডান বন্ধীকনু বিকার একডান মধুর, একডান বেতপাবার, একডান নরকেশ এই সকল অব্য একরে করিয়া একপ্রকা বাবং ছানীছুছে পেবর্ণ পূর্বক মুখা প্রস্তুত করিছে। অনতার ঐ মুখা শুল করিছে পুনরার পূর্কনিবিত এবোর কক-বারা লেপন করত বন্ধ করিছে। ইয়াকে ব্যামুখা করে। পারকের বার্থাদিকর্মে এই মুখা ব্যবহার ছয়।

### প্ৰক্লোখন 1

একটা পেছিপাতে হত রাধিরা আ পাত অরিতাগে ছাপন করিছে।
পরে ঐ ইত মত্তর হইলে ভারতি গছকচুর্গ প্রক্রেশ করিছে। যথন
গাছক ত্রবীভূত হইলা ঘাটকে তথন একটা ছয়পূর্ণ পাত্রের মূখ হতাত
ভূজা ক্রেরারা আহত করিলা ভাষার উপরে সেই গছক চালিয়া
ক্রেলিরে। এইপ্রকার করিলে সেই হত্তের ছিত্র দিলা গালিত গছক
হয়মধ্যে পড়িবে। স্থীতির হইলে উহা প্রহণ করিবে। এইরপ করিলেই
সেই ইছক বিশুম্ব হয়।

## शितकरभाषन ।

কটকারির মুলের মধ্যে ধীরক ছাপন পূর্ত্তক সাতদিন দোলাবছে।
পাককরিবে। পরে কোত্তব ও ভূলপ কলার ঐ উভারের কাবে ধোঁত করিমা করিবে। এইরপ করিলেই খীরক বিশুদ্ধ হয় অববা কটকারির মূলমধ্যে ধীরক সংস্থাপন পূর্ত্তক একদিন দোলাযায়ে পাক করিবে। পারে ঐ ধীরক সুশিরা ভাষাতে যোড়ার মূত্ত অথবা সিজের মুগ্ধ দিঞ্চন করিবে। এইরপ করিলেও ধীরক বিশুদ্ধ ধর।

হীরক্যারণপ্রণালী :—জিংবজাত কার্পানস্থকের মূল নইরা তাহা বিবর্মজাত পাবের রূমে বর্মন পূর্মক পিথারাত করিছে। অনন্তর জ পিথানো হীরক সংখ্যাপনপূর্মক গজগুটে পাক করিছে। জই প্রকার স্থানার গজপুটে পাক করিলে হীরক মারিত ও বিশ্বক হয়।

একটা কাংজপাতে গৰ্জভের মৃত্য রাখিরা তাহাতে বন্ধ হীরক রাখিবে। এই প্রকারে একবিংশতিবার দাহন ও গর্জভন্ত প্রকেপ পূর্বক সেই হীরক হরিতাদপিওবংগা সংস্থাপন করত হল করিবে। বধন সেই শিও আছির নায়ে বর্ণবিশিষ্ট ছইবে, তথন পর্যসূত্রে নিকেশ্ ক্রিবে। এই প্রকার করিলে হীরক ডম্মীভূত হয়, ইহারই নাম হীরকজন্ম।

### रेवकास्टब्साधन ।

বীরকণ্ডবির প্রক্রিয়া অসমারে বৈক্রাপ্ত শোধন করিতে হয়। বিশুব বৈক্রাপ্ত অধিতে বধ করিয়া অধ্যুত্তে নিজেপ করিবে। উহা শীতন বইকেই ভাষীভূত হয়।

### অভ্নোধন ।

ভক্রাধির মধ্যে অজ দশ্ব করিয়া ত্রিকলার কার্থ, গোস্তা, হৃত্ত ও আনামিতে নিকেপ করিবে। এই প্রকারে সপ্তবরে দঃহ ও কার্থানিতে নিকেশ করিলে অজশোধন হইরা থাকে।

অত দ্যা করও বদরীর ক্রাথে কেলিয়া দিবে। পশ্বরুর তহু হুইলে হন্তে মর্দন করিলেই অভ শোধন হয়।

অজমারণ। — কল্পীর কারজনে বজুজি ধেতি করিলা একটী হুটিকানধা ছাপন করিবে ও বুঁটের অগ্নিতে পাক করিবে। বে প্রার্থি হুঁটির বহির্দেশ নিক্ষরত্বা লোগিতবর্গ না হয়, তাবং আল নিবে। পরে নেই অজ হুজ্বারা নেচন করত চূর্ণ করিবে। এইপ্রকার করিবেই অজ মারিত হয়।

একজাগ দান্যাত্ত, বুইতাগ সোহাগা, এই উভগ এব্য ককল পেৰণ করত অস্ত্র্যায়ন্ত্যে অবক্ষ করত প্রথম অগ্নিসভাগে প্রতিপাকে দায় করিবে। পরে দীতিক হইগে চূর্ব করিছা দাইবে। এইকপ্রেক্ত অ্যা মারিত হইয়া থাকে।

### হরিতালশোধন।

শ্রমত ব্রিতাশ কুমাতের রলে দোল।যন্ত্রে একপ্রছর পাক করিয়া পরে চূণের জনে ঐতপ একপ্রছর পাক করিকে অবস্কুর তৈলে ঐতপ্র একপ্রছর পাক করিতে হইবে। এইরপ করিলেই ব্রিতাপ বি**তম হ**ত। ভরিতান মারণ।—বিভন্ধ হরিতান স্থান করে করিরা চুলের
ভাবে মর্থন করিবে। অন্তর অপাযার্গমূলের কারজনে মর্থন করত দেই
পরিত হরিতালের উর্ধৃ ও নির্ফাণে মবকারচূর্গ দিবে। পরে উথা
একটী হতিহাম্বালী সংস্থাপনপূর্থক ঐ হতিহা শরাধারা জারত
করিবে ও স্থাত হারা দেই হতিহা পূর্ণ করিয়া মুখ কর করিয়া দিবে।
অন্তর চারিপ্রহর পাক করিলে হরিতান উৎক্রিপ্ত হ্ইয়া উপরিভাগা
ভিতশরতে সংলয় হইয়া মাইবে। ঐ হরিতানচূর্ণ এহণ করিবে।
ইহাকেই মারিত হরিতান বলে।

## লন:লিলা লোখন।

আরম্ভীপাতার রূসে, ভূল্যাজের রূসে অর্থণ রক্তবর্ণ বর্জুনের হলে একদিন দোলাবন্তে পাক করত পরে কাঁজিতে ধ্যেত করিদেই ব্যাধিনা বিভছ হয়।

্ৰত্ব প্ৰহয় যাবন ছাগামূলৈ পাক করিছা কাঁজিতে ধেতি করিলেও মনঃশিকা শোষৰ হইয়া থাকে।

#### খর্পর শোধন।

রক্তবর্ণ অধবা পীত্রবর্ণ শুপারসে ধর্ণার পোষণ পৃথাক মহযোর মুজেন লোমুত্রে ও সৈত্রব মিজিত ধরকাঞ্জিতে সাতদির কিয়া তিব্দিন ভারনা বিশেষ বর্ণার বিভন্ন হয়। ধর্ণরিয়ারণ — ধর্ণরি ভূপ কুরও তৎসহ সম্ভাগ সারদ নিশাইরা একদিন নাসুকারত্রে পাক করিনেই ধর্ণরি মারিত ও ভন্মীভূত হয়।

## ভূঁতেশোধন।

তুদ্যপরিদাণ বিড়াদের বিঠা ভূঁতের সহিত শেষণ করত চতুর্বাংশুও প্রমাণ মধুও সোহাণা মিশাইয়া ডিমবার পুটপার্কে দক্ষ করিবে। এই প্রকার করিবেই ভূঁতে বিশুদ্ধর।

# বিশশশোধন ৷

ক্ষণীরের রল বিমল শির করত থেব শৃলীর রলে কিখা ক্ষণীর রলে
এক দিবস লোলাগন্তে পাক করিলেই বিমল বিশুদ্ধ হর।

## মাক্ষিকশোধন।

তিন তাগ অর্ণমাণিক ও একডাগ সৈশ্বৰ মিজিড করিয়া টাবালের অথবা অধীরের রসে পোহপাতে পাক করিবে। মডকন পাক হইবে, তাবৰ পোহপথ হার। আলোড়ন করিবে। এবন পাত্র খোনিতবর্গ হইবে, তথন উহা নামাইয়া আহণ করিবে। এইরপ করিনেই সাক্ষিক বিশ্বক হয়!

বৰ্ণাক্তিকর সহিত তাহার চতুর্থাংশ পরিধান গন্ধক বিশাইরা ঘর্ষন করিতে হউবে। অনন্তর অরগ্রতিক মিলাইরা চক্রাকার করিবে। অনন্তর উহা অকটী শরার দব্যে রাধিরা আর একটী শরাঘারা আন্তর করত গলপুটে পাক করিবে। যখন ঐ যাক্ষিক সিল্বের ন্যার বর্ণ-বিশিক্ত ও ভাষীভূত হইবে, তথনই উহা গ্রহণ করিবে। এই প্রকারেও মাক্ষিকাবিশ্রম ও মারিও হর।

#### হীরাক্সখোধন।

ভুজরাক্সের রুসে নিন্ধ করিলেই হীরাক্স বিশুভ হর।

## রাজপ্টদোধন।

ব্লাঞ্পন্তিকেই কান্তপাৰাণ কৰে। উহা চূৰ্প কয়ত গৰায়ত ও মাছিব হুল্লের সন্থিত দেখিবগাঁতে পাক করিবে। পাঁতে সৈত্বৰ, বৰকায় ও সন্ধি- দার রস একনিত করিরা ভগবে প্রান্ধুর করিবে। তাদনন্তর অসবং ভাবনা দিরা ধ্বাছর ও মহিবছুরের সছিত কোনায়ন্তে একদিবল পাদ করিতে ছইবে। কান্তপাধাগশোহনে রসকর্য করিতে হয়। এই অকা রেই কান্তপাধাণ বিশুদ্ধ হইয়া থাকে।

# বরাটিকা ( কড়ি ) শোধন।

কৃত্বি কাঁলির সহিত দিনিত করিয়া এক গ্রহর **পর্যান্ত দো**লায়নে ক্ষেদ্র করিদেই কভি বিশু**দ্ধ হ**র।

#### तुमाञ्चमत्माध्य ।

প্রথমতঃ রসাঞ্চন চূর্ণ করত গেঁছোলেবুর রসে একদিন ভাংন নিয়া পরে রোজি তফ করিয়া দইবে। এই থাকার করিলেই যুসার বিশুদ্ধ কইরা পার্কে।

# रिक् मत्भाषम ।

মেবন্ধর সাতবার ভাবনা দিদেই হিছুদ বিশু**দ্ধ হ**য়।

## শিলাক্তুলোধন।

শেহিপাতে শিলাজতু ছাপম পূর্যক গোপ্ততে, তিফলার কার্বে ভূমরাজের স্থান এক এক দিবন মর্চন করিনেই শিলাজতু বিশ্ব ভূমরাজের সংনে এক এক দিবন মর্চন করিনেই শিলাজতু বিশ্ব হুইয়া থাকে ৷

াশবাজকু বিশেষরপে বিশুদ্ধ করিতে হইদে প্রথমতঃ উহা কুন্ত কুন্ত ধ্রপ্ত করিবে। অনস্তর গরম জলে এক প্রহর নিলেপ করিছা রাখিতে হটবে। পরে বদৰে ছাঁকিয়া কৃতিকাপাতে ছাপমপূর্বক রেজি ভা করিবে। এই প্রকার করিলে নিলাজভুর উপরিভাগে বে ঘন একর পরার্থ বাছির হইবে, ভাছা অনা একটী পাত্রে রাখিবে। তুইমাস বাব বার্থায় এই প্রকার করিরা অগ্নিতে নিজেপ করিলে বদি সেই শিসাজ্য হইতে ধূম উদ্যাধি হয়, ভাছা হইলেই জানিবে বে শিশাজভু বিভ হইয়াহে।

# त्रीवीद्राञ्जनासित्यांधन ।

শোণীরাঞ্জন, নোহাগা, শব্দ কলুও ও গৈরিক এই সমত কড়ির বিধানাসুসারে পোষণ করিতে হয় :

কদ্ঠ গৈরিক, শুখ্য নীলাজ্ম, লোহাগা, শুক্তি, বাভিশ্ব। কড়ি, এই সকল ক্রবা জনীয়ের রুসে শেদ দিয়া গ্রম জনে প্রকাদন ক্রিলেই শুক্ত হয়।

সোহাগা একদিন কাঁজিতে ডিজাইরা রাখিতে হইবে। অবস্তর নরমূমে ও গোকৃতে ভিজাইরা একদিন রেডিফারে ভাখনা দিবে। একদিন বিশবে অধীররদে ভিজাইবে। গরে উঠাইরা মরিচচূর্ব মিজিত করত নারিকেনপাত্রে ছাপন করিবে। এই প্রকার করিনেই সোহাগা বিশ্ব হয়।

#### শথংশ(খন।

একশন শত্ব অধিয়াবা সোহাগার সহিত অন্তর্যাধ্য কর করত পাক করিবে। পরে দওবত্তে চুর্ব করিয়া দইবে। এইরপেই সত্তাধ্যের হাইরা থাকে।

### सर्वाका थन ।

বর্ণাদি খাতু সকল গরম করিয়া তৈল, খোল, গোম্র, কাঁজি ও ক্লপ্ কলারের মূলে সাতবার করিয়া নিকেশ করিলেই শুদ্ধ হইয়া খাকে।

প্রথমতঃ অর্থ স্থাতিক। টাবালেবুর রুলে পাঁচদিন তাবনা বিরা স্তিকালন কারা পোধন ও পুটপ্রদান করিবে। ব্যাকস্তিকা, স্থ-ব্য, গৈরিক, ইউক, লন্দ এই পাঁচ প্রকার স্তিকা, অধীররল ও কাজি পেন্দ পূর্বক অর্থালে লেশন করত পাঁচদিন পরে প্টপ্রদান করিলেই অর্থ বিশুক হুইলা বাকে।

অর্থনাকিক, সীমচূর্ণ ও আকম্পের রম এই এখানের অর্থনৈর শেশুক পুর্বাহ্ব পুট্নপ্রদান করিলেই অর্থ ভিন্ম হয়।

গণিত বংগর সৃহিত তাহার বোড়কাংশ স্বীসচ্গ একত করিলঃ লেবুর রমে মর্কন করিতে হুইবে এবং তৎসহ সমস্ভাগা পারদ মিলাইয়া পিথের ব্যার করিবে। অন্তর সকলের সমান গদ্ধকর্ণ তত্ত্পরি স্থাপন পুরুষক সারাবসংপ্ট করত জিলাধানি বনস্টের অগ্নিতে পুটাইদান করিবে। এই প্রকারে দান্তবার পূট প্রদান করিলেই অর্থের নিক্ষতন্ত रह ।

#### রজ্তশ্রেধন ৷

রে পোর সহিত সোহাগা ও সীম্দিশাইরা অথবা সোহাগা 🛎 অন্নমন্ত পাক করিয়া রজত বিশুস্ক করিতে হয়।

রোপাপর, হরিতান ও গড়ক এই ডিন এখা কুনাপরিমাণে এহণ পুরুষ্ক কাগজিদের্র রুসের দহিত মর্চন করিতে, হুইবে। পরে তিনবার প্টপানে দশ্ব করিলেই রোপ্য তত্মীতৃত হইয়া মারিত হয়।

চারিভাগ রোপ্যপত্ত ও একভাগ হরিতান এবন করিবে ৷ এবমে র্জ ছরিতার জমীরের রুদে মর্কন পূর্বাক তাহা দারা রোপ্যগত বেগন করিবে। অনন্তর পুটমধ্যে ক্ষকরত পাঁচশ্বানি বনপুঁচটর অগ্নিতে তিনবার পুটপাক করিবে। প্রতিপুটে গম্বন নিকেপ করিতে হঁইবে, এই প্রকার করিলেই রেপা মারিত হয়।

# তা<u>মুশোখন</u>।

বৈদ্ধৰ ও আৰম্ভ্ৰম একত্ৰ করিয়া তদ্যালা ভাষুণত দেপৰ পুৰ্বক **অগ্নিতে দশ্ব করিবে এবং ঐ ভায়ুগত নিদিন্দাপাতার রলে বিঞ্ন** করিবে। এই প্রকার বারস্বার করিদেই তামু বিশুদ্ধ হয়।

লবণয়ার। ভামুপত্র দেশন করত ভিনদিন রাখিবে। পরে গোমুত্তের সন্ধিত দৃঢ় অগ্রিসতাপে এক এছর পাক করিলেই তাম্ বিভন্ন হয়।

ভাৰুমার্ক।—একভাঁগ পারদ ও ছুইডাগ গল্প একল ছত্তুমারীর ব্রমে একপ্রহর মর্মনকরিতে হইবে। পরে উভ্রের সমান ভামুপত্র লটরা ভাষাতে উক্ত মর্কিত ভ্রমা ঘারা লেপন করিরা একটা হঁমড়ির মধ্যে ব্লামিৰে। পরে ভাষার পারে ওদত ভতা নিকেশ করিলা

ভারি প্রহর পর্যাত্ত পাক করিবে। পাকের সময় ই জির পৃত্তিদেশ গোচন ভারা কেশম পুর্বেক ভারাতে বারধার জন দিতে হইবে। পাকশেকে নামাইরা রাখিবে এবং শীতল হইলে মর্কনপুর্বেক চুর্ব করিবা সইবে। এই প্রকার করিলেই ভামু মারিভ হর।

# নীস ও বহুশোধন।

একটা পাতের মধ্যে আকন্দের হৃত্ত রাধিরা ভাষার উপর একটা ছিত্রহুক্ত পাতৃ রাধিকে, পরে সীস'ও বহু গলাইয়া সেই পাতে চানিরা দিবে। তথন ঐ সকল ছিত্ত হারা গলিত সীস বা বস্থ নিম্নস্থিত আক-লমুক্তে পাড়িবে। তিনবার এইরূপ করিলে সীস ও বস বিশুদ্ধ হয়।

সীন্নারণ।—বক রক্ষের পাতা ওপান একত ঘর্মন পৃত্ত ক তাহাছারা সীসপার দেশন করিতে হইবে। ঐ সীস একটি ছাঁড়ের মধ্যে
ছাপন পৃত্ত ক আন দিবে। যখন সীস গলিয়া ঘাইবে, ওখন তাহাতে
সীসের চতুর্ঘাংশ বাসক ও অপাযাপের ফার দিবে। ছই গ্রহর এই
প্রকার পাক করিয়া বাসকের রসে মর্চন করিবে এবং সাতবার বাসকের
রসে প্রত্থাকে দশ্ব করিবে। এই গ্রহার করিবেই শীস রক্তবর্ণ ও জন্মীভূত হইয়া মারিত হইবে।

বন্ধবারণ I—হরিতাল ও বন্ধ তুল্যপরিমাণে কইয়া প্রথমতঃ আক-লের জীরে হরিতাল গেখণ করত তাখাখারা বন্ধ পেশন করিতে হইবে। জনস্তর শুভ অধ্যবস্থলয়ারা সাত্থার ধেফীন করত পুটপাকে দক্ষ করিবে। এই প্রকার করিলেই বন্ধ ভাষীভূত হব।

# লৌহশোধন ৷

আয়িতে নবেছি সত্ত করত কদলীমূলের রসে সিঞ্চম করিতে ছাইবে। এইপ্রকারে সাতবার সভাত ও কদলীমূলের রমে নিঞ্চম করিতেই ক্ষেত্রিভালি হয়। ইয়া দেখিবের সাধারণ শোধন।

<sup>\*</sup> ভালুগোধনবিধানাছ্লারে কাংলা ও পিতল শোধন করিতে

লেচিছর বিশেষ তামি।—অত্যে পাগদারা দেখিকে নির্মান করিছে: পরে উহাকে পাত্রাস্থতি করিতে হুইবে। ভগনন্তর আমক্ষীর রুসে, বেইর রূপে ও অমবেডাসের রূপে সাতবার করিরা আধ্বা কিরা রে**টি**রা अफ क्रिंदिर । शहर पूरे किया क्रांजियस्था द्वांचित्य, शहर विक्रमावनक গোমুরে পেরণ করত তদ্ধারা ঐ কোহ দেশন পূর্মত রোক্তে শুদ করিবে। তদনত্তর মনাশিলা, বল্লীকড়ডিকা, কুঠারিকাযুদ্ধ, আমলী, খেডদুৰ্জা ও দৈয়ৰ এই সমস্ত কৰা জলৈ পেৰণপূৰ্কক ভাছায়ারা ক্রমীট লেশন করত রেচিয়ে শুক করিখে। এই প্রকারে নির্মণ হইলে ঐ লেছি অধুদধ্যে নিকেশ করিবে। অনন্তর পুনরার গোলুতে পিটে ত্রিকলা ও জনপিট মনঃশিশারা ভাবমা দিয়া ভতাবত্রযারা অগ্নি ভাসিয়া লোহ ভিঞ্জিৎ তত্ত করিবে এবং লোহের বিঞা গতাহত্ত, কাঁতি, लिएक व विकास कारवे मुधेक् भृथेक्त्राण किन किनवान निरक्त করিবে। কিখা পেছি ভগ্ত করিয়া হিঞা কদলীমূলের রলে সাভধার নিঞ্চন করিবেঁ। পারে একরাতি জিলপ রাখিয়া প্রনয়ার কাঁজিতে সিঞ্চন ক্ষিখে। এই প্রকারে গ্রেমি লোখন হয়।

উক্তঞ্জালার বিশুদ্ধ দেখি পাঁচপদ আহণ পূর্মাক মেছির অন্ধাংশ কিছা ৰোড়শাংশ বৰ্ণদাকিকচ্প ত্ৰিকলার কাৰ্থে আলোড়ন করত ভাছাদারা হির ত্রিকলা ও অপরাজিতার বীজ, ছত্তিকর্ণলালের মূল, শতবৃদী, কেওয়ুতে, বান্যসূদ, কুশিকাখুদ, পুনন বা ও জ্লয়াল এই স্বস্ত বস্তু দে/ছের বোড়লাংশপ্রমাণ গ্রন্থপূর্বক পোৰণ করত দে/ছ লেশম করিবে। অবস্তর ধমকাদারা ভাষি স্থানিরা সেই ভাষিতে গড় করিবে। কেছি খলিয়া গেলে ডিফলার কাথে নিকেশ করিবে। যদি এইরণ করিলেও লৌহ মারিত না হয়, তাহা হইলে পুনরার দই করিয়া औ থকার ত্রিকদার কার্থে নিকেশ করিতে হইবে। যদি গ্রাতবার এই-লপ করিলেও পেছি যারিত বা হয়, তাহা হইলে বে এগছি এংগ কব্রিবে না ।

দেখিলাখান বে ত্রিক্লার কাথের কথা উল্লেখ কইল, ঐ ত্রিক্লা-ভাষ প্রস্তুত করিবার প্রধানী।—পাঁচপন দেহিকে কাডখানি পর এছত করিয়া লয় করিবে। বোলপদ ভিক্লা, ভাহার আইওৰ জলে নিৰ করিয়া জনের চতুৰ্বাংশ কৰালন্ত বাকিছে ওছালে ও কৈছিলত নিকেশ করিব। এইপ্রকারে সাভবার কেছিলত হয় ও পাতবার তিকলার কাবে নিকেশ করিলেই লেছি বিশুত ছয়। এই প্রকারে লেছি বিশুত ছয়। এই প্রকারে লেছি বিশুত ছয়। এই প্রকারে লেছি বিশুত ছারা। কেছিব অনশিক ভাগ ভাল্পাকের জন্য রাখিবে। ভাল্পাকারা কেছিব বিক্তীকরণ করিবে। ভাল্পাক, ক্লিটি-পাক ও স্ট্রপাকবারা কেছি মারিত হয়।

ভাষ্পাকবিধি।—বিশ্বর গৌহ এশুরনির্মিত বিশ্বা পৌহগ্রিত
উদ্ধান স্থাপনপূর্বক পৌহর্কার বারা বারধার আহত করিবে
অনস্তর যথন সেই দেছি চূর্ব হবে, তথন তাহাতে জল কিয়া তিক্ষার কার্য দিয়া হাঁকিয়া লইবে এবং বারধার ধোঁত করিয়া অন্ধার
ক্রাব দিয়া হাঁকিয়া লইবে এবং বারধার ধোঁত করিয়া অন্ধার
ক্রাব করিবে। অবতর অহিতাপো অথবা রেভিত্র শুকাইরা কেহিবলে
মর্জন করিবে। পরে তিক্ষার হাথের নহিত রেভিত্র আলোড়নপূর্বক
মন্ত্রাণা পৃথক্ করিবার সময় তিক্ষার হাথে বার্যার আলোড়নপূর্বক
মন্ত্রাণা পৃথক্ করিবা গৌহ গ্রহণ করিতে হর।

ভারশাকের জন্য ও গৌহ গৌত করিবার জন্য নেইছের সমান কিকলা ও তাহার বিশুণ জল এইণপূর্ম ক পাক করিবে। বখন চতুর্থাং-শ্যার জন অবস্থিত থাকিবে, তখন নেই কাম এইণ পূর্ম ক নেহি ধৌত ও ভাল্পাক করিবে। ঐ কাম পোহে কিটা তিন্দিন অনবর্ত ভূগাকিরণে শুভ করিবে। কিখা নেই কাম সাতভাগ করিয়া পৃথক্ পৃথিক এক এক ভাগ দিবে। একভাগ শুকাইলে আর একভাগ দিবে। এই প্রকারে সাতভাগ শুভ ইইলেই ভাল্পাকবিধি সম্পার হইল।

ছাদীপাৰবিধি। আছ্পাক করিব। তংগরে ছাদীপাক করিতে হব। দেহির ভিনতণ তিকলা ও যোলগুণ জলে কাব করিবে। আছিভালের একভাগ অবশিভ থাকিতে তথা এখন পৃথাক ছাদীপাত
করিবে। কাবা এবা নমন্ত মূহ বইলে চারিকণ জলে ধ্যাবির হইলে
আটকা জলে ও কটিব হইলে যোলকা জলে পাক করিব। কেহিছের
স্মান ভাগ এখন করিতে ছইবে। স্থার বর্ণন এবোর শ্রসভার।
ছাদীপাক করিতে ছইবে, তথন কেহিছের পরিমাণে স্থান করিব।
ভাগ অবনা স্থান ছাদীমধ্যে মিরা ভাষ্তে পৃথানিভিত বিভা

দেহিত্বপর কৰিত বিধানাগুলারে পাক করিবে। এই কাথানি উদ্ধ ক্টনেও স্থানীপাকবিধি সমাধা হটল।

ছানীপাকের সময় অথে ছানীমধ্যে বিশুক্ত পেছিচ্প দিয়া জিক-লার রাখে আলোড়ন করত হাজিকর্প পদাশের মূল, শতমূলী, জুকরাজ ও কেশুরতে ইয়াদের রুস পূথক্ পৃথক্ অথবা সকলের রুস একতা দিয়া পাক করিবে। যথন সেই সকল ছামি ও রুস শুদ্ধ ছার্বে, তথন রোগীয় রোগাহ্নারে দোবশান্তিকারক ঔমধির করপ কিছা কাপে প্ররার পাক করিবা নামাইবে।

এই প্রকারে ভালপাক ও শ্বালীপাক সম্পন্ন হইলে বিষল জলয়ার। লোহ প্রকালন করিবে এবং রোগ্রে শুক্ত হইলে চূর্প করিবে। পরে পুটপাকবিধানে পুটপ্রদান করিবে। পুটপাকবিধানে পাক করিলে লোহ নির্দেশিক হর এবং মারিও হইয়া থাকে।

• পটগাকের সংকানিরপণ —বে পৌহবারা ঔষধ প্রস্তুত করিতে ছইবে। দেই দৌহ দশ হইতে একশতবার পথান্ত পুটপাক করিছে। রমারবর্তারো লাভ বইতে সংঅধার পুটপাক করিবে। বাজীকর্মে একশত হইতে পাঁচদতবার পুটপ্রদান করিতে হয়। যে পর্যন্ত দৌছ ছুৰী ভূত ছইছা ছিব্ন জলে ৰংমের ন্যায় না ভালে ভাবংশগান্ত খাত্র-শ্বন্ধ পুটপাক করিনে। পুটপাকের পর যদি দৌহ কেতকীকুদের রেপুর ম্যার হর এবং কাপড়ে ছাঁকিলে লেছি বসন্দের ছিত্র দিয়া পড়ে, তাহা হইলে পুটপাকের সংখ্যার আবক্তক করে না। পুতরাং যে পর্যন্ত পলে পেষণ করিলে কেন্ডকীফুলেন রেগুর মাার চুর্ণ না হর, ভাবন পুনঃ পুনঃ পুটপ্রদান করিবে। তিকলাদিগণ দারা দেবিত্র পুটপাক করিতে ছার। উত্তাদের অরম কিলা কার্য লারা প্রচল্পন করিবে। অরুসের অভাবে কার্য ধারা প্রটিশাক করিতে হর ৷ ত্রিকলাদিগণ, এরপ্রাদিশণ, किंद्राञ्जीमिशन, गुक्रव्यक्षिणन, त्यांक क्रामिशन, भट्टोनाविशन, किरल-কাদিশাও এই সকল জব্য হারা লোহের পুটপাক করিতে হয়। এই नकन खरा थारकारक मुधक मुधक किया नम्छ धकत कतिया स्नीत्यत প্টপাক করিবে। বে পর্যান্ত লৌহ নির্মান না হর, মেই পর্যান্ত বার্ড্যার ষ্টে বাক দৰ্ম করিতে হইবে। চিকিৎসকেরা দশ হইতে হাজার পর্যন্ত

প্রতিপালের স্থাবছা করিয়া খাকেন। যে পর্যান্ত লেছি নতু ছইরা জন্মের উপায়িভাগে হংসবং ভাগিতে না ঝাকে, ভাগৎ বারুষার প্রতিপ্রকাশ করিতে ছইবে। প্রতিপাকের সময় দেটছের সমভাগে প্রতিরোধ পরস্থা শহর করিবে। অরুদের অভাবে লেটছের সমান প্রিনম্লবা এহণ করিয়া ভাষার কাথ করিবে এবং দেই কাথের দহিত লেট্ছচূর্থ মর্থন করিছা পাকবৎ করিবে। পরে ভাষা দেটাইছিড় কিয়া মৃত্তিবানিখিত পালে ছাপন করিয়া ভাষার স্থান অথব পালে ঘারা আরুত করিয়া উভ্যা

লৌহের পুটপাকপ্রণালী।—সৃতিকাতে চারিদিকে একছন্তপরি যিত থাকটা গার্ড করিবে। দেই গর্ডের অর্কভান ঘুঁটে, তুম কিয়া কাঠধারা পুর করিরা ভাষাতে খায়ি প্রদান পূর্বক ভাষার উপারে লৌহপুট ছাপন করিবে। পরে বনঘুঁটে, তুম কিছা কাঠধারা গর্ডের অপর অর্ক্তাংশ পরিপুর্শ করিবে। এই প্রকারে দিনে অথবা রাজিতে চারি প্রহর পুটপাক করিরা লৌহভন্ম করিবে। এক একবার পুটপাকের পর উৎকৃষ্ট প্রভারে দেই চুর্শ করিয়া কেতকীক্লের পরাগের সুন্টা করিবে। যে পর্যন্ত লৌহ উক্তমরূপে মান্তিত না হয়, ভাষা বারবার পুটপাক ও বারহার পাবাণে পেষণ করিবে।

পুটপাকে গর্ভের উর্জে পুটছাপন করিলে অপসম্ভদ্ধেই লেছি ভদ্মীভূত হইরা বায়, তাহাতে লেহৈর পুটপাকজনিত গুণ করে মান কথোভাগে রাখিনে নেহৈর বীর্গের হ্রাস হর, হুডরাং ভাষা নিরুষ্ট হয়। কুতের মধ্যভাগে শরাপুট রাখিনে এবং 'তুষানি ভদ্মাণ হইরা লীভন হইলে নেই ভাদার্ভ নৌহ প্রহণ করিবে, কখন ভঙ্গ লৌহ প্রহণ করিবে, কখন ভঙ্গ লৌহ প্রহণ করিবে, কখন ভঙ্গ

লোছের নিজ্বীকরণ।—লোছের সহিও বিরপঞ্জক \* একজিত করিল পুটপাকে দল্প করিবে। এই প্রকার করিদে যদি লোছ উত্তরত্ব ভ্রমীভূত হয়, ভাষা হইলে সেই লোছের চারি ইতি সেবন করিবে। এইপ ভ্রমকেই নিজ্প করে।

<sup>॰</sup> রত, মধু, ছঁও, দোহাদা ও অগ্তল এই পাঁচনীকৈ মিত্রপৃথিত বলে। ধানুবৈদ্যনে ইংগোর বিশেষ মাহায়া হয়।

মতান্তরে কৌহমারণ।—গে বৃত, গ্রহ ও দৌহ এই প্রশান্তর তুলা-পরিমানে গুরুণ করিয়া তপ্তথানে মৃতকুমারীর রুদের সহিত একদিন মার্কিন করিবে। পিরে উংগ পুটমধ্যে নিক্স করত গাজপুটে পাক করিবে। আই প্রকার করিলে লোহ ভাষ্মীভূত হয়।

রসামনার্থ দৌহওক্ষ করিতে হইলে, রড, মধু, জুঁচ, সোহাধাও শৌহচুর্থ এই সকল সমভাগে এহণ পূর্বক অথিতে দশ্ব করিবে। এইরশ করিবে যদি সম্ভ প্রথ্য উত্তন্ত্রপ মিজিড হইলা যাল, ভাছা হুইলে সেই সৌহ এহণ করিবে।

# मञ्जूरभाषन ।

ৰবেড়াকাটের অন্নিত গণ্র লথ করিছা গোস্তে নিক্সেপ করিবে।
এইপ্রকার আইবার দশ্ব ও আইবার গোস্তে নিক্সেপন করিবে মণ্ডুর
বিভয় হয়।

# মণিযুক্তাদিশোধন।

মণিমুক্তাদি শোধন করিতে হইদে জয়স্তীপাতার ভারদে **একপ্রহর** লোধায**ে** ক্ষেদ প্রদান করিলেই স্থিমুক্তাদি বিশুদ্ধ হয়।

মুক্তা লোখন করিয়া বলে পেশণ পুর্বাক চূর্ব করিবে। পরে সমু-পুরুষ্ট দ্বাক করিলেই মুক্তাভন্ম হর। ক্যান্তর সাহিত প্টগাকে গ্রা করিলে হীরত মারিত ও ভাশীভূত হয়।

যুক্তী, প্রবাদ ও অপরাশের রড়াদি উত্তত করিয়া ছততুমারী ও কুনে নটের কুনে নটের রামে কেনিবে। যুক্তাদির সমান হততুমারী ও কুনে নটের রম গ্রহণপূর্বক প্রান্তাকে সাত্যার সেচম করিবে। এই প্রকার করি-গেই মুক্তাদি ভাষীভূত হয়।

প্রবাদনারণ ।—প্রবাদ নারীছারে ভাবনা দিয়া তাজের সহিত একটা হাঁজির অভ্যন্তরে রাখিবে। পরে ঐ হাঁজির মুখ বহু করিছা চুলীতে বিপ্রবন্ধ পর্যাত স্থান দিবে। এই প্রবাদ করিলে প্রবাদ ভারিত হয়।

# বিষ ও উপবিষ্পোধন।

বিষ্ণার কাথে দোলাগল্প তিন্দিন পাক করিলে সকল প্রকারী বিশ্ব বিশুদ্ধ হয়।

ছাগীদ্ধে তিন্দিৰ পাক করিছে বিবের পোধন হইরা থাকে।
গোপুরপারপূর্ব পাতে দোলায়তে বিব পাক করিবেক, ভাষা হই লেও বিশ্ব বিশ্বত হর।

হ্বপূর্ণপাতে দোলাবন্তে পাক করিলে উপবিধ বিভৰ হয়।

### कप्तभाषात्रम्थन ।

জরপাদবীজের থোকা পরিত্যাগ পূর্ব্বক টুইডাগ করিরে। তাছার মধ্যে যে পার্কুল্য অংশ দেখা ব্যার, তাছা পরিত্যাগ করিয়া নারাংশের অস্ট্রনাংশ লোহাগার চুর্বের সহিত বিপাইবে। পরে কেশবন্তে ভাষনা নিরা হ্রমধ্যে ফেলিয়া তিনদিন পাক করিবে। এইরপ করিছেই জয়পাল বিশুর্ব হর। জরপাল শোধনের সমর সুর্শুনা জরগাদবীজ সূত্রদ শরাতে ঘর্ষণ পূর্বক তাছার ফেহডার্গ দূর করিয়া করবে।

# जुरीकीत्रामाधन।

কুইডোলা ভেঁতুলপাডার রস লইরা ভাছাতি বোলভোরা বিজের কীর বিশাইরা রোজে ভাষনা দিবে । যে পর্যান্ত ভেঁতুলপাভার রম শুদ্ধ না হরঃ ভারণ রোজি রাখিবে, উহা শুদ্ধ কুইনেই কুইকীর বিশ্ববাদ্ধ

# <sup>क</sup> सरमोकारमाध्या।

প্র চীন কলেকি (কোঁক) আনিয়া তামু পাত্রে ছাপন করিতে। পারে আটপল কলে অন্ধতোলা হরিলাচূর্ব মিশাইরা ঐ জন সেই তারু-পাত্রে প্রদান করিবে। এইপ্রকার করিলে জনেকি নাদাত্যাগ করিছে খাতে। নালাবিখীন হুইলেই জলেকি। বিশুদ্ধ কুইল।

### इक्षेत्राज्ञका पिरमाध्य ।

নৈত্বৰ্গদৰিত জনে র্জনারকের বীজ লিক্ত করিয়া রেঁচছে শুড় কুরিতে হবৈনে। পরে অপাদার্গের মূলে নিক্ত করিয়া রেটিয়ে ভারনা বিবে। এইয়প করিনেই মুক্তদারক বিশুক্ত হয়।

েব্রুর বীজ অপামার্গের কাথে মিকেপ পূর্বাক রোজে শুদ্ধ করিবেই বিশুর বইনা থাকে।

শজিনাৰীজ-কাৰ্পানবীজ ও অৰ্থানাৰ্য বীজ টোডো গুৰু করিলেই তথ্য হয়।

কটুকী, কোৰাতকী, দণ্ডী, পটোনী, রাখাদলনা, ডিওলাউ, বে.বা ও কাকতুতী ইহালিগকেও রৌয়ে ওহ করিলে বিভয় হয়।

মাধ্যসক্ষ আমলকীয় রূপে নিকেপ করিয়া রৌত্তে শুদ্ধ করিছেই শুদ্ধ হয় (

করন্তা ও ওত্রকরঞ্জার বীক ভূকরাজের রনে সিক্ত করিরা রেইজে শুরু করিনেই বিশুদ্ধ হয়।

গুলানি মকণথাকার বীক্টসদ্ধ ভিন্ন নরস্থা সিজ করিলা ওক করিপেই বিভন্ন মইলা পাকে।

বিল ও ভেলা নারিকেলোদকে সিক্ত করিয়া শুক্ত করিদেই বিশো-বিভ'বর ।

্ প্রাপ্তন লোখন করিতে ধইলে গুড়ুটীর ঝাথে, জিকলার ঝাথে প্রভান্ত পাক করিয়া দইলে। ভাষা ঘইদেই উলা বিশুদ্ধ হইল।

ৰাজুসুদ্ধির কারণ,—অধিক ব্যারাদ, নারীসহবাস, আখাত, জলে বাম, পত্তব, অবায়ন, যোটকাদি চালন, ভারবধন, আগারণ, অধিক উটিঃ শুভ শাক, শুভ যাংস, স্থানা থানা, উদ্বিধানা, মুগ, বছর, অরহর মাৰ্কলার এই সকল ভোক্তম, উপনাস, অধিক আংহার, বলসুত্রানির বেশু ধারণ এই সকল কারণে বাসু প্রকোপিত হয়।

পিওর্ডির কারণ —রোদ, শৌক রোদন, ভাবন', প্রাস, অসপম, গৈছুল, অগ্নিদাছ, কটু, অস,উন্ধ, সন্মু ত্রব্য ভোলন, ভিল ভৈল, সরিবা বুসিনা, ছাগাবাংস, বেষমাংস, দ্বি, তক্ত, হানা, আমানি, মন্ত ও অসমসমূক ক্লব্য কোন, এই সকল কারণে পিত কুপিত ছইলা ধাকে। শেষা রখির কারণ,—পরিজন তাগেও দিবা নির্মাত জীপন্দ শিক্ষিণ বক্ষানিজনপুর, কল, সবণাক্ষা, শ্রিতস প্রবা দেবন্দ্র বর্ধনাক্ষ্যান্ত জিলচু পিনি ছুত্ত, পরিধার; নাংস, চরিন্ধি; পাণিকত্ব, কেওর, লাউ, ভূষাও ইত্যাদি প্রব্য ভোজন, এই সকল কারণে কল কুলিও ছব। শীওলজিরা ভারাও কক্ষের প্রাথলা বইরা গাঁকে। এডভ্রিন্ন পাহারাজ্যে, লীতকালে, প্রতিকালে, সন্থ্যানময়ে ও বসস্তক্তেল মেখা কুপিত হবলা থাকে।

বার্থনদের উপায়,—আমদকী, প্নর্বা, দেবলাক, ক্রেণ্ড, ছড়, বেষখ্রী, হরিয়া, নীলফিটী, এজপিপালী, গ্রালজা, গনিহারিঃ আকল, শতম্পী, কাপাস, যব, বিচুটী, এরও, এলঞ্চ, অর্জুন, পাইল, কোল, শালিঞা, কুলখ, ফল্খ পঞ্মুলী, রহুৎ পঞ্চসুলী, এ সকল বাসা বাসু প্রশান্ত হইনা বাকে।

পিত উপন্যের উপার,—প্রকৃত্ন, ন্যঞোষানিগন, খেত চলন, ইস্ত চলন, কুমুদ, লতমূলী, বেণামূল, বালা, কাকোলী, তুমি কুলাও, মুর্কা, পল্য দুর্কা, শল্পীক, শেতমূলি ও প্রিয়ক প্রভৃতি হারা শিতের উপান ধর।

ক্ষদৰনোপায়—আনুগ্ৰাদিগণ, স্বলাদিগণ, দাকহরিতা। প্ৰাশ, লাভি, ইলুদী, মউনী, রক্তচন্দ্ৰ হরিতা। অন্তক, শুদ্ৰুড়, মুডিকৰ্, বচাদিগণ, শিশাদী, হৃহৎ শঞ্চ্যুদী, কঠকগণ, স্বশ্লিপ্তি, শুদ্ৰুদ্দীগণ, প্ৰাশ, ভাছা ক্ষ্প্ৰ, স্বলকাৰ্চ, বেপালুল, মুদ্ৰুকাদিগণ, বলীগণ, হৃহভাদিগণ এই স্কল কহু দমন কৰে।

ভাবের গুণ-—কৃষ্ণতিল উষ্ণছলে মিজিত করিরা মান করিলে বালু লমন হর, চকুরোগে উপকার দর্শে, কেল উন্ধান হর। গরম কলে আন করিলে,শরীর নির্মাণ হর, চকু ও মন্তব্যের উপকার হর। শিপাসা, ওঠপোদ, তানুপোদ, চুলকদা, শিরংপীড়া ও পৈতিকরোগা বিদাশ পায়। যে ব্যক্তি লাম দা করে, তাহার দেহ নিরপ্তর উক্ত থাকে। আন ভারা পায়ি র্ছি পায় এবং দেহের লাবণা হর,কেবল চকুরোগা, আর্থিত ক্রোগা, পীনসা, কর্ণুরোগা, ক্রজীপরোগা, ও মুখরোগা এই সকল শীড়ার আন করিবে না। বচ, ধানা ও নিবছাল সহ জগা গ্রম করিয়া বুলি করিশে চক্ষা ক্রোডি: বৃদ্ধি পায়, ক্রক দ্যন হর, লীতের ক্রে পৰে করিলে দেহ শীতৰ হয় ত দুল মূব ইইরা থাকে কেচছ বলাধার ত তেক হয়।

ব্যারামের শ্বণ — বাারাম বারা বারু শিক কল সম্ভাব বারণ করে।
ক্ষেত্র অনি ইছি হর, অনেক কট সভ্ করিতে পারে, বিকল্প ভোজন
করিতে পারে, বকল ভোজন করিলেও ভালা জীর্ণ হর। বাারাম
করিতে পরিতে বধন দেখিখে হে, যাজ, গলা, কণাল, পেট এই সলন
ভালে দর্ম হইতেহে, তখন পরিজ্ঞান করিবে। বসভকালৈ আর
শীতকালে হত প্রভৃতি প্লেছ দ্রবা আহার করিবা বাারাম করিতে হব।
বিভাহ প্রবাদের পক্তে বাংরাম নিবিদ।

তিল মানার ওবং কঠিল মাধিরা মান করিলে শেছে বলংখান হর।
আর দালী লবল ও চাঙা থাকে। কর্পে তৈল দিলে কর্পরোয় বিনাল
পার। মন্তকে তৈল দিলে খির:পুল, খালহরা, টাক এই লকন হংল
ভার, কেল হব ও ক্রবর্গ হর, সুথের জীয়ছি হর আর ইল্লিম মাধ্য
গ্রেল থাকে। পাদতলে তৈল মাধিলে বিলোমর, চক্লুর তেজ বৃদ্ধি
হর এবং পাদরোগ বিনাশ পার, কিন্ত যে বাজি কক্রোমী, ভাষার
পারে তৈল লেপন নিবিদ্ধ। তৈল মাধিলে ধাতু প্রতিব্র, তেজ ও বল
বৃদ্ধি হয় এবং মন গ্রহুল থাকে।

ক্ষাহারীর এবের র নিবিছতা,—লবণ ও কথার রস, বধুর ও অনুরস, করু ব ভিতরস, মধুর ও কথাররস, কটু ও কথাররস, মধুর ও ভিতরস, তিতা ও কথাররস, অন ও কথাররস, এবং অন ও কটুরস, ইছারা রবে, বলে ও পরিপাক বিবরে বিক্ছ জানিধে। স্তুল চাউলের সহিত অথবা এড়, মাধকপার, দরু, চর্বি বা হুছের সহিত মংস ভোজন বিবিছ। মুছের সহিত মাংস, মুধ্যা, লাউ, মুমুছা, জারকল, সরিহা, কথা, জালুডা, আঘড়া ও জুলা কলার কেবন করিতে বাই। কলবী লাকের সহিত ভিগ্রাটা, মধুরহ জল, মধুসহ হুত্র, ওড় বা চিনির সহিত মুধ্যা, বলাসহ বা কাজিসহ বালহুংকের মানস, সুলার সহিত ছুত্ব, কলার সাহিত তিবের নাছু, লাসহ বা চিনির সহিত ছুত্ব, কলার সহিত কাজিয় সহিত তিবের নাছু, লাসহ বা বালার জন, লাগান, কলিয়ার সহিত তিবের নাছু, লাসহ বালার জন, লাগান, কলিয়ার, হুত্ব, বালার জন, লাগান, কলিয়ার, হুত্ব, বালার, কলার, কলিয়ার, হুত্ব, বালার, কলিয়ার, কলিয়ার

ক্ষিত তিল তৈল, কাংসাপাতে হত বা যথু, শদ্য পঞ্চ কুছু ট নাংল। (থাহাকে শিককাৰাৰ বলে) এই সকল আহার নিবিম। শত্যক উল বা শতান্ত শীকল এবা তেজিন করিবে না।

रक्षकृत कर्य-धीषकपूरक शकन खेर्याके द्रमनुषा नव् व स्त्रा হয়, অধিক কি: জল পৰ্যান্ত: কক হইয়া থাকে ৷ এই কারণে ঐ ক্রম क्षरा क्षरमधीतो जीवशास्त्र महीति बाहुत पाविका इस। वर्यालाहम স্পতিজনৈ সিক্ত হয়, আরু জীবটাবেরত দেহ ভিঞা খাকে, জীয় সময়ে যে সুখল বাহিক শীতদ বাতাস মেখে যদিও থাকে, ভাষা বর্ষা মতুতে দেখে বাবি হয়, এই কারণে বাডজন্য রোগ **লখে** ৷ শর্থকালে স্থাপ্ৰওল প্রিচার হয়, কর্ছ্য শুদ্ধ হয় আর ব্র্যাকালে দেছে বে সকল পিত সঞ্চিত পাকে, রেডিডেকে ভাষা সমস্ত পরীরে স্যাপ্ত इत, अक्षम) रेमिकिक (तारा करका। दिवस कबूर्ड केवनि मकम सन्-विश्विके एक क्ल श्रिकांक एक, प्रशिक्त क्य एक, दिववरेडा थ भीखन বাসুধারা জীবের দেহ জড়প্রাল কইরা হাজ; এ জনা এ কাজে আদালীৰ হোগ লাৰ। এই কালে কাজে কাজেই কফের নঞার হইয়া থাকে ৷ শীতকালে গাতে শীতক বাডাস শাগিলে অমিমাৰত काय, अरे कमा माना काकात त्यारगत छेरशकि इत। यमक ककाछ म्बर कड़ीकुछ थेरक, द्वाराया ए या गर्म कर स्टार मिक रह, बहे कारन छात्रा भगछ (गर्द गांच वह । अरे क्या वस्थान सारगंत উৎপত্তি হয়। বর্ষাকালে বাওজন্য রোগেয়। শরংকালে গৈতিক। এখং বসভালালে শ্লেষ্য প্রধান হোচেত্র উপলম করিভে হয় ব

গতিতেদে বার র গুণাদি—বে বার উত্তর দিক্ হইতে প্রবাহিত হর, তল্পারা বার লিডাদি কোন দেবে প্রকৃতিত হর না (কল্প করা নোগা ও বিন রোগার পক্ষে এই বার বিশেষ উপকারী। ইয়া হার। বলাধান হর ও শরীরে কেল ক্ষে। ঐ বার বিষ, শীতক, ফর্লে ও ক্ষার রমর্কা। বে বার দক্ষিণ দিক্ হইতে প্রবাহিত হত, তাহ। ক্ষালিক্সর বা বার প্রকোশক্ষণক হর না। উহা হারা বদর্শি ত এবং চক্র জোতিঃ রুদ্ধি করে ১ ঐ বার সভ্ ও হার্ম এবং হলো রমর্বা। বে সকল ব্যক্তি ককরে। নী, ক্ষারোগী, রেকরোগী বিবরোগী, তাহাদের পকে পুর্বাদিক্ত বাহু অবিভবর। বাহারা আরুরোগী, পরিআন্ত এবং মাহাদের স্বানীয়ের ককের ভাগা তহ হঠনা গিলাহে, তাহাদের পক্ষে উপকারী। এই বারু বিশ্বে, পিছতর রক্তশিতর্থিকর, অন্তর, মধুর ও সংগ্রনগৃত্য। যে বালু পশ্চিম কিন্দু হইতে প্রথাহিত হয়, তাহা ঘারা শ্রীর গুড় হয় এবং প্রাণ বিবক্ত হইলা থাকে। এই বালু বেদপোষ্ট, বলক্ষ্ম কার্ক, প্রীরের ভিকণতা বিনাশক, কক্ষ্ম কর্মপুর্বা, উল্লে, কক্ষোব্যক এবং ভারিন।

রাজি লাগরণ—যাহার। কলরোগী, মেনোরোগা ও বিষ্ণভোগী। জাহাদিয়ের গদ্দে রাজি জাগরণ বিশেষ উপস্থারী।

্ৰেছ মাৰ্জনি—দেহ মাৰ্জনি হার। বর্ষ দূর হর, ক্ষুণা রক্তি হর, কণ্ঠু বিমষ্ট হর, মলা থাকে মা, মুর্গন্ধ দূর হর, দেহ, সৃত্ব বোধ হর এবং দেহের লাবণা রক্তি পার।

গারিক্ত বল্ল ধারণ—পরিক্ত বল্ল। ধারণ করিলে বর প্রক্রন থাকে, অসম্মী দুর বল্ল এবং উদেগ বিনাশ পাল ।

ত্তব্যের মাত্রা—রোগ, বল, অভাব এবং অগ্নি বিবেচনা করিবা তব্য প্ররোগ করিতে হর। অধিক প্রমাণে ঔহধ প্ররোগ করিবে রোগ ভূর বইবার সপ্তব বটে, কিছু ভাষা যারা অন্য কোন উৎকট লীয়া জ্বিবার সপ্তব এমন কি, রোগার প্রাণ নই ছইতে পারে। অভাক শিশু ঘাহারা ঔবধ মেবন করিতে পারে না, ভাষাদিগোর রোগা নিযারণার্য ঔব্ধের কক প্রন্মীর ভবে মাধাইরা সেই শুন পান করাইতে হর। যে সকল মুখ্যপোধ্য বালক ক্যার ঔবধ সেনন করিছে লা পারে, ভাষাদিগোর জননীকে সেই ঔবধ সেবন করাইবে। একমান ব্যায় বালকের ঔব্ধের পরিমাণ এক রতি, উহা মনু চিনি ইভ ইভ্যাদির স্থিতে মাধিয়া লেহন ক্রাইতে হর। তথ্যর মুইমান হইতে এক বংলর ব্যাক্রম পর্যান্ত এক এক রতি করিবা ছব্ছি করিবে। এক বংলর বইতে মোজুল বর্ষ যায়ক্রম পর্যান্ত প্রতি বংলর বার রতি করিবা মুক্তি করিতে হয়। যোল বংলর ছইতে সভর বংলর পর্যান্ত মুইভোলা প্রাণা লিবে। তথ্যরে প্ররোধ খলিকের শান্ত ঐন্ধ্যের যাত্রা নির্মণণ করিতে হয়। বাংগ্রেখানিগণ—ইহারা গেগনিবানী, গ্রন্থনিবিনানী, বনসংগ্রে কারক দাধনিবাশক জয় অভিবালক ও এণরোগাপহারী। যোক শাবড়া, কেন্ড্রা, চোরকটুকী ডেলপ্র, শিরাক, বনলাম, বেডক, কল্প গাব্য লোক্ত, মানুকী ডেলা, মাবর্লোধ, প্রান্ত, নন্দীগাহ্য বইগাহ্য বল্লভুষুর, অথখা, পাতুড়, আনু, আন, কুন, কটুকী, বউষগ্র ও অপ্রি ইহাদিগোরই নান ন্যাগ্রোধাদিগণ।

লোরাদিশণ—লোধ, কমনী, অলোক, সাধর লোধ, প্রাণা, পোণী। বাসনহাসী, কট্ফল, এলবালুক, প্রৃকী, বঞ্জি, করব ও বাল ইয়া। সের নাম লোরাদিশণ।

 বশ্যাদিগশ—অভিবলা, অখগদ্ধা, বিদ্যাদী, ক প ও প্রসারশী ইহাদের নাথ বল্যাদিগণ।

ৰচাদিশণ—বচাৰিপণ বারা বাতাদি দোষের পারপাক ও আমাতি-লার বিন্যুগ পার এবং জনা খোগন বইরা বাকে। বচ, মুখা, হরীতকী। আতিদ্য দেবধাক ও নাপকেশর ইহাদের নাম বচাদিশণ।

আরগুমানিগ্র—সোঁনালু, বন্ধখন, গেরারুল, কুর্চি, আক্নারি পাকন, কাঁটা বেগুন, কুর্মা, ইজন্ব, দাড়িন, নিক পীত্রিকী, গুলঞ্চ, চিতা, বহাকরঞ্জ, ডছর করঞ্জ, কাঁটা করঞ্জ, করলা, চিরতা ও প্রটোল ইহানের নাম আরগ্যাদিগ্রন।

শিলালাদিশন—শিশনী, শিশনীযুল, হৈ, চিডানিক্ত, তওঁী,
বন্ধীচ, গলপিশনী, মুর্বা, ২চ, বড় ওলাইচ, জীরা, রেগুড়, বন্ধন্থী,
আক্রাদি, ইক্সব, বোড়া নিখকন, হিং, সর্বণ আতিত, বিড়ক, বান্ধভাটা ও কটকী ইহাকের নাম শিশান্যাদিগন।

মুহকাদিগণ—ইহারারা পদারী, শর্করা, গুজনোক, বেলার্গোগ, পাতু, অর্ল ও মেহ বিদাপ পার। ঘণ্টাপাকণী, লিগু, ত্রিকলা, অনুনাসিঞ্জ, প্রাপ, সর্বা, ডিডা ও বাধরা ইহানের মান মুক্ত-কাদিগণ!

প্রসাধিষণ-ত্রনা গাঁচ নীপ শেকানিকা, বেত শেকালিকা, হোট পুণনী, বার্ই সুনদী, গ্রহণ, রস বার্ই, রক পুননী, রক মুদনী, আপাং, কাদকান্দ্রা, বিজ্ঞ, কুদিরা থাড়া, কটকল, বিনিজ্ঞ, বিষ্ণানী, সুদ্র লোকা, বিষ্যুটি জুখ, ফাক্ষাটী, বান্সহালী ও বাটীংল শীক ইংচের নাম হরনালিগণ (-

রহত্যাদির্গণ—ইহাধারা বাতাদির কোপ দ্যন হর এবং অকচি, ব্রহণা, ও ভলাল বিনাপ পার। রহতী, ব্রিবগু, ইপ্রবং, করী-কারি ও আক্নামি ইহাদের নাথ রহত্যাদির্গা।

বিদারী থক্ক জুবিকুমাও, আলকুনী, মালপানি, গোরক চারুলিরা, মতেপুলী, বিচুলি, বেডেলা, পুরর্থনা, কুর্মানি, রুইডী, অবফ, জনতমুদ্ধ, শাবানি, জীবক, এরওমূল, মামানভাগ কন্টকারি ও গোরোলিরা কন্তা ইয়াদের নাম বিধারী গড়।

প্ৰস্থান-বিশ্বান, শেলিছান, গান্তারীছান, পাইনছক, গণি-মারিছক, শানপানি, চাতুলিয়া, ব্যাকুড়, কটকারি ও গোক্ষু ইছাটোরই এনি বশমুক্ষ

ক্ষারবর্গ—লোপ্রাধিগণ, অর্থন্তাদিগণ, ন্যাত্রাধানিশণ, প্রিরজ্ব বকুল, ভিত্তক, কভকলাক, বিকলা, পারাণভেলী, আমু, পুলাকুর। গাঁহের ফল ও পুনা, উড়িধানা, শুবলী পাক, কুকবক, জীবন্তী, বিল, কাক্ষর সাধ্ ও পালং লাক ইবাদের মাণ ক্ষারবর্গ।

বকণাদিশন ইহাছারা দেদ, কল, শির্পুন, গুলাও বিজ্ঞান্তি বিনাল পার। বকণগাড়, লক্ষিনা, বীলবিক্টী, লগভী, রক্ত সজিনা, আকল্য করন্তা দেবপুনী, নাটাকর্ম, গগৈরারি, মুর্বা, ভেলাকুরা, শীতবিক্টী, কটকারি, প্রাণিশানী, রহতী, চিতা, বিদু, পত্তৃনী ও কুল ইহারাই বকণাদিশন।

পঞ্জপ—ইফা মারা পিড বিবাধ পাঁর ধবং হ্রড সহ দেবন করিলে মুক্ত পাঁরিভার হল ও রক্তপিত সুদ্ধ করে। হুলা, কেশে, শ্বন, ক্তম ইক্ষু ও উত্ত ইফাদের নাম পঞ্চ ভূধ।

ভিজ্ঞান-ইয়া কচিও দীবিজনক, ইয়াবারা শিশানা, স্বর, কও<sub>ুই</sub> কুছাঁঃ কোঁৱ এই সকল নিনাশ শাল। ইয়া বল, সূত্র, ক্লেড, বেধ্ন বনা ইত্যাবিদ্ধ লোগন কারক, ইয়া অধিক পারিনানে দেবন করিলে লিওঃ-কো কেন, তান, হতুশানবিজ্ঞাশ, সন্যান্তক্ত, সুখনৈরদা এই নকল ছায়ে। বাবাতে তিজ সুস আহে, ভাষাসুই নাম ডিজ সুস, নিম, প্রগত্তি, উল্ছে, আফিং, চিম্বভা ইত্যানি।

লবণরস্ক-ইছা ছারা দেছের শিথিনতা, রেন, বিলেব, পরিপাক, সংশোধন এই সকল ছন। যদি অধিক বেখন কর। বারা, তারা হইলে বাঙরক্ত, অলোকারি, শোষ, কতু, তান, রক্তণিভ, বজকল, বিষর্থতা, ইন্দ্রিরতাশ এই সকল রোগ হন। সৈত্বৰ খচ্ছ, বিট্-পাঞ্জা, সান্তার, নারুত্র, যধকীয়, সোধকান, উবভার,ও পান্তিব ইছারাই লবণবর্ম।

কটু রন—ইয়াবারা কিনি, সুষ্ঠ ও কও বিনাশ পার এবং অস্তি। ব্লক্তি, স্থান্তি, পার্ক্তাক ও কফ অল্প হয়। যাহাতে কাল বেংধ হয়। ভাষাই কটুরন। মধা—লকা, আদা, দরীত, পোরাজ, বচ ইত্যাদি।

আহমন—ইহা নামান্য পরিষাণে সেবন করিলে পরিপাক করে,
জীব ধরে ও বারু দদন করে। ইহা দ্বকচিকর, বিদাহী ও বহিভাবো শীওলকর। বদি অধিক পরিমাণে দেবন করা কাম, ভাহা
ভারেল দঙ্গর্ব, নেরসংঘিদন, শারীরের পৈথিলা ও ক্ল ভারদ
হয়, রগাদি থাকিলে পাকিরা উঠে। যাধাতে টক রম আছে, ভাষারই
নাম আমান। বধা—কদ্বেল, আদজ্য, ভানিন, তেকুল, দৈ ইভাানি।

मधूत नम-देशनात्ती (मरहत तम छ त्यानिए इक्ति एत, या विकित्स इक्ति शात; त्रकः अकि मकः, एकः, त्यम, यारम छ छन्छ छ है मकन इक्ति करतः यणाधान इतः, मृक्तिलिक इतः। देशे यानकः, इक्त छ कीत्मत गर्दक छेशकाति। देशे पात्रां एको, माधः मृक्ति विनाम शोतः इति छ कर्ण इक्ति शातः। यवि अधिक शितिपारण स्मयन कतः। यातः छादा इदेश्य अत्रुष्णः, किसि, काम, याम, जामन्त्रः, मूर्यमाधूनिः व्यव्याखिनाव, गमगणः, रागमः, त्यद्धारो अहे मकन शीवा जादा। जारकाणामित्रानः, इषः, इकः यमाः मक्ताः भामिधानाः विकासाः बाह्य एकः, भागः, यनः, भावकमातः शानियनः द्वरुतः, ममाः, आदिः, वेश्वरुः, छत्रपूषः, विकेशानः, भावति क्याः शाविकाः द्वरुतः, प्रतिक्यः राज्याः, त्राप्ताः, क्षीकरः, छानः, नातित्वनः व्यक्तः, प्रतिक्यः व्यक्तः, त्राप्ताः, क्षीकरः, छानः, नातित्वनः व्यक्तः प्रतिक्यः। विक्तिः, स्थाशः, विकेशानः, यदे भवन महुत्र तम् विताः क्षिणः। অপ্য পঞ্চুল—শালপাণিঃ চাকুলিয়া, বহতী, কট্ডারি: গোডুর ইয়াদের নাম ক্পোক্ষুল।

রত্থপঞ্জুল--বিলু, নোণা গান্তারী, পাকদ, গণিয়ারি **ইহার** নাম হুহুৎ পঞ্জুল।

পঞ্জনির—নিমের পত্ত, কড়, কন, ফুন ও স্বুলকে পঞ্চ নিম নলে 1 ইয়া বদর্শী করে। স্থানাশ্যক ও কুঠাপিলারক।

পঞ্চৰণ—নৈত্ৰ, সামুত্ৰ, বিচ্ছু, সেবিচ্চত ও উল্লিষ্ ইংটাই পঞ্চৰৰ I

পঞ্চকাল পিপানী, পিপানীৰূপ, হৈচ, চিডা ও শুণ্ডী ইয়াই প্ৰকোন।

পঞ্চ ক্যার—অরস, কবিত, কক্ষা, গৃত ও কান্ট ইয়াই পঞ্ ক্ষার। অরস অর্থাৎ টাটকা ক্ষর বিপায়িত্ব হারা বে রস নির্গত হর। ভাছার নাম হরস ; টাটকা বস্ত পোবণ করিয়া যে রস নির্গত হর ভাছার নাম কল্ক। শিলাতে পোবণ পূর্থক কিছা ত্রাতিকালে হিন্দে রাখিক পর দিল বে রস বাহির করা যায়, ভাছার নাম কবিত ও ইও প্রয়া উব্ধ গারহ জালে নিজেপ করিয়া কির্থক্ষণ পারে কেই জল ওছন ক্ষিমে ভাছার নাম কান্ট।

मध-उक् मापि कृष्ठेन कड़क कान निष कड़ित्र। वेत्रवद्या शिक्षित्र क्रेस्स केत्वानम भूक्षक कैं।किडा नदेत्र। धण यन या यक ठडन ना शृह है वेदानुदे नाथ प्रश्रो

যৰকার--ইয়া পাঁচক, দেবা ও শুক্রবিনাশক, সর্গান্ধীয়া ও একানা-শক। মধ্যে শুয়া কল্ম করিয়াযে লবগ হয়, ডাহাতে নধকার করে।

স্যতিকার—ইহা পর্দাঞ্জন্মগ্রীয়া করু ও ওক্ষ দ্বনকারী। ইহাকেই প্রাক্তিয়াটা করে।

কাৰ্য—যে বস্তৰ কাৰ্য প্ৰায়ন্ত কৰিছে হয়, সেই বস্ত হুই ভোলা আহন পূৰ্মক অৰ্ছ টেঁটা কৰিয়া গোলগুণ জলে ভৃত্তিকাপাতে দিয়া কৰিবে। এক চতুৰ্ব ধেশ পাতিতে নাথাইতে হয়। ইবাকেই লাখ কছে।

ৰতিক্ৰিয়া—শুৰ্ণপ্ৰহণ জলের সহিত মিশাইরা দেই জন উদুদ্ধ জেলিয়া ভ্ৰমণো রোগীকে ব্যাদকে বতিকর্ম কছে। ক্ষানী—সমস্তার্গে পারণ ও গর্ক মিপাইতে হর: উত্তর্গরণ মার্মিত ও ক্ষাবর্ণ হইলে এবং পারণের চিমুনাত্রও দেখা বা গেলে কৃষ্ণনী হইল।

কাঞি নিৰ্বাণ—সমে কল দিহা দেই কণ অতাহ কোন পাৰে চালিবে। কিছু দিনে দেই পাৰ্ত পূৰ্ব হাবে সৃতিকাৰ প্ৰোধিত কয়িবে। হয় বাস পরে উহা উচাইতে হয়ও ইহারই বাম প্রকৃত কাঁজি।

কার প্রস্তান্ত বে প্রবাস কার করিতে হইবে, গেই তাবা পরিছে ক্রমাকরত ভাষার চতুও ও বা অঞ্চত্তণ অব দিরা একথানা বজে খোলাবজে করিয়া ঢালিবে পার উঠাইবে। সাভবার এরণ করিয়া সেই জন মাটির পাতে অগ্নিতে ছাল দিয়া গাড় করত চুব করিয়া নামাইবে। ইহাকেই কার বলে। ৩

চালুনির জল প্রস্তেত—গুইতোলা আতপ ওপুন দইরা এক হটাক জলে আদযকী কচনাইরা ধধন দেখিবৈ যে, তঞুল সামানারপ ক্ষি-কাছে তথ্য হাঁকিয়া সেই জল নইবে। ইহাই মধার্ম চালুমির জল।

ক্রিনিরির গণ—জীবক, খবভা মেদ, মহামেদ, কাকোলী, ক্রীর বিজ্ঞালী, মুগালি, মাহাণী জীহন্তী ও মন্তিমধু ইহার নাম জীবলীরগণ। ঔবংগর ওজন,—ঔবধ লবোর ওজনের নিরম হর সর্বণে এক থব; উল ধবে এক রতি; বরি রভিতে এক মাবা; চারি মাবার এক শাণ; তুই শালে এক ভোলা; মুই তোগোর এক কর্ম ; মুই কর্মে এক শাণ; ইই শুন্তিতে এক পদ; মুই পুলে এক প্রসূতি; মুই প্রস্তৃতিতে এক কুড়বঃ মুই কুড়বে এক লবাব; মুই লার্নামে এক প্রান্ধ; চারি প্রক্রে এক আচুক; চারি আরুকে এক জোলা; মুই জোণে এক মুক্ত। হই মুক্তে এক পোলা; চারি জোলাতি এক ধারী; মুই শাত প্রস্থা এক ভার; এক শতি পাল এক ভুলা বা নাড়েবার সের।

শোলাবস্থ—একখনি বজের চারি<sup>নি</sup> কোণে চারিদী কার্ম্ত বন্ধক ঐ কাঠা করেকটা স্ভিকার আোখিও করিরা ভরিছে একটা বৃহৎ
কৃতিকাপাত্র ছাপন পুর্মাক ঐ কাপাছের উপর চালিয়া দিবে। ইহাকেই
লোগাবস্থ কহে।